"किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के सन्दर्भ में एक अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से
मनोविज्ञान विषय में
पी-एच०डी० की उपाधि हेतु प्रस्तुत

दिसम्बर 2002
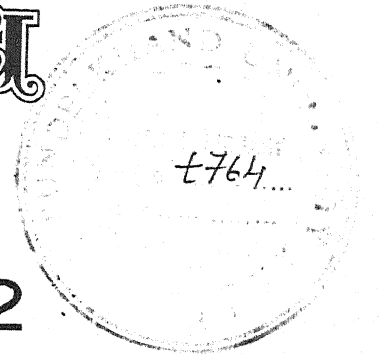
शोध निदेशक :
डॉ० सतीश चन्द्र शर्मा
पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष-मनोविज्ञान विभाग
गाँधी महाविद्यालय, उरई

शोधकर्ता :
कु० साधना गुप्ता
एम.ए. (मनोविज्ञान)
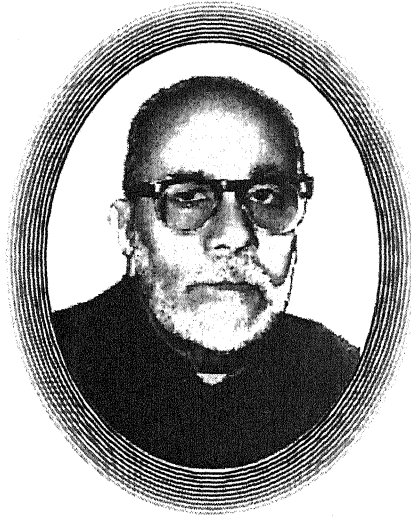
परमाराध्य सर्वसमर्थ
सद्गुरु भगवान ब्रह्मलीन
परम संत डा० चतुर्भुज सहाय जी
के श्रीचरण कमलों में
सादर समर्पित

ब्रह्मलीन प्रातः स्मरणीया परमपूज्या प्रेमस्वरूपा ''जिया माँ''

ब्रह्मलीन आचार्य प्रवर गृहस्थ संत पूज्य श्री मिहीलाल जी शर्मा ''चाचा जी''

ब्रह्मलीन डा0 बृजेन्द्र स्वरूप जी कुलश्रेष्ठ

ब्रह्मलीन श्री नरेन्द्र कुमार जी कुलश्रेष्ठ

ब्रह्मलीन श्री मनमोहन लाल जी ''बाबू जी''

ब्रह्मलीन श्री श्यामजी श्रीवास्तव

ब्रह्मलीन श्री ओमप्रकाश जी ''विरल''

परम पूज्य हेमेन्द्र कुमार जी कुलश्रेष्ठ

परम पूज्य कृष्णकान्त जी शर्मा

परम पूज्य प्रभूदयाल जी शर्मा

एवं

समस्त गुरूजनों की वंदना करती हूँ।

वंदऊ गुरुपद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रवि कर निकरि॥

''गुरूधाम''
श्री रामाश्रम सत्संग
साधन प्रेस डैम्पियर नगर
मथुरा

- कु0 साधना गुप्ता

घोषणा-पत्र

मैं साधना गुप्ता घोषणा करती हूं कि पी–एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत यह शोध प्रबन्ध जिसका शीर्षक– ''किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के संदर्भ में एक अध्ययन'' है, मेरे स्वयं के प्रयासों का परिणाम है। यह एक मौलिक प्रस्तुति है। जो सामग्री जिन स्रोतों से प्राप्त की गई है उसका उल्लेख उचित स्थान पर कर दिया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध भाषा के दृष्टिकोंण से और साथ ही साथ विषय–वस्तु के प्रस्तुतीकरण के संदर्भ में भी सन्तोषप्रद है। मैने निर्देशन प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने शोध परिवेक्षक के साथ कम से कम दो सौ दिन व्यतीत किये हैं।

साधना गुप्ता
16.12.2002

कु0 साधना गुप्ता

एम.ए. मनोविज्ञान

प्रमाण-पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु0 साधना गुप्ता, एम.ए. मनोविज्ञान, पी-एच0डी0 उपाधि हेतु शोध अध्ययन शीर्षक- ''किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के संदर्भ में एक अध्ययन'' के मध्य निरन्तर मेरे संपर्क में रही और मेरे द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन किया है। मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि इनका यह शोध कार्य मौलिक, उपयोगी तथा विश्वविद्यालय परिनियमावली द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप है। साधना गुप्ता ने कम से कम दो सौ दिन तक शोध निर्देशन प्राप्त किया है।

शोध निर्देशक

सतीश चन्द्र शर्मा
16.12.2002

डॉ0 सतीश चन्द्र शर्मा
(सेवानिवृत्त)
रीडर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग
गाँधी महाविद्यालय, उरई

आभार

अपने गुरूजनों, मार्गदर्शकों, समीक्षकों, अध्येताओं एवं हितैषियों के मार्गदर्शन, सुझावों, सहयोगों और आशीर्वादों के बिना, किसी भी विषय में ज्ञान की प्राप्ति और प्राप्त–ज्ञान की सम्यक प्रस्तुति संभव नहीं होती। अतः मैने अपनी सीमित बौद्धिक क्षमता के लघु प्रयास से ज्ञान के अपरिसीम क्षेत्र से जो कुछ भी प्राप्त कर पाया, उसकी प्राप्ति में जिन गुरूजनों, पथदर्शकों, मनीषियों, शिक्षाविदों, शुभाकांक्षियों और सहयोगियों से निर्देशन, परिमार्जन, पथ दर्शन, आशीष व सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है, उनके प्रति कृतज्ञता की भावना से अभिभूत अंतस से निसृत आभारानुभूति समर्पित करने की कर्तव्य–बोधिनी आकांक्षा शब्दों को गति देने को आतुर हो उठी थी, अतः यह आभार–भावांजलि प्रस्तुत करने में मैं अपने को परम सौभाग्यशालिनी अनुभव कर रही हूं।

मैं अपने शोध निर्देशक एवं गुरूदेव आदरणीय डा0 सतीशचन्द्र शर्मा पूर्व रीडर, अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, गाँधी महाविद्यालय उरई और वर्तमान में प्राचार्य श्री अमृत कुंवर महाविद्यालय अटरा कलां, जालौन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। जिन्होंने उप स्मारक आदि सन्दर्भ ग्रन्थ संकलित करवाने के अतिरिक्त इस शोध कार्य के दौरान सदैव उत्साह वर्धन करते रहे एवं सहर्ष समय प्रदान करते रहे। आपके असीम योगदान एवं कुशल मार्गदर्शन के फलस्वरूप ही प्रस्तुत शोध प्रबंध को साकार रूप प्रदान करने में समर्थ हो सकी हूं।

गुरूवर्य की धर्मपत्नी आदरणीया श्रीमती सुधा शर्मा का सहयोग एवं प्रोत्साहन विविध रूपों में प्राप्त हुआ है यह शोध कृति उनके आशीर्वाद का ही फल है।

मैं डा0 यशवीर सिंह रीडर एवं अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग सेन्ट जोन्स कालेज आगरा एवं डा0 एन0के0 सक्सेना पूर्व प्राचार्य पी0पी0एन0 कालेज कानपुर की आभारी हूं जिनसे मुझे विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान डा0 तारेश भाटिया रीडर मनोविज्ञान विभाग, श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता गाँधी डिग्री कालेज उरई एवं कु0 श्रुति मिश्रा के सहयोग के प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करती हूं।

इस शोध कार्य की प्रेरणा देने वाले हमारे बाबा डा0 पूर्णचन्द्र गुप्त, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर एवं अध्यक्ष रसायन विज्ञान, इलाहाबाद यूनीवर्सिटी को मैं सदा श्रद्धा स्मरण करती हूं। और यह शोध कार्य उनके आशीर्वाद का फल है।

मैं श्री मानिकचन्द्र जी शर्मा एवं श्रीमती शीला शर्मा प्रबंधक गांधी महाविद्यालय उरई को आभार व्यक्त करती हूं। जिनका स्नेह एवं आशीर्वाद सदैव हमारे साथ रहता है।

मैं श्री गिरजा कुमार दुबे संस्थापक सनातन धर्म बालिका महाविद्यालय उरई एवं प्राचार्य डा0 अमिता सिंह की विशेष आभारी हूं। जिनके सहयोग के फलस्वरूप यह शोध ग्रन्थ पूर्णता प्राप्त कर सका है।

मैं अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति कृतज्ञ हूँ। श्री वीरपाल सिंह एडवोकेट जिन्हें हम प्यार से डैडी कहते हैं एवं आदरणीय चाचा जी श्री सुरेश कुमार गुप्त एवं श्रीमती विमला गुप्ता बड़ी दीदी सीमा पहारिया एवं जीजा श्री धर्मेन्द्र पहारिया के प्रति कृतज्ञता अर्पित करती हूं जिनकी प्रेरणा और आशीर्वाद के फलस्वरूप यह शोध पूर्ण हो सका है।

मैं अपनी छोटी बहिनों कु0 संध्या स्वॉती दीप्ती एवं भाई सचिन की आभारी हूँ जिनका सक्रिय सहयोग सदैव मिलता रहा है।

मैं अपने पितृ तुल्य भावी स्वसुर श्री रामप्रकाश जी गुप्त एवं मातृ तुल्य सासु जी श्रीमती शीला गुप्ता के स्नेहिल प्रोत्साहन एवं सहयोग के प्रति नतमस्तक हूँ और ईश्वर से कामना करती हूँ कि उनका वरदहस्त भावी जीवन की परीक्षाओं का मार्ग इसी तरह प्रशस्त करता रहे।

मैं अपने भावी पति श्री आर0एस0 गुप्त जी का, जिन्होंने महत्वपूर्ण दस्तावेजों के संकलन में सहयोग कर इस कृति को पूर्णता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भावी नंदेऊ श्री संजीव गुप्ता एवं ननद श्रीमती सुमन गुप्ता तथा देवर श्री मनोज गुप्ता की अभारी हूँ, जिन्होंने प्रोत्साहन एवं स्नेहयुक्त सम्वल प्रदान किया है।

मैं अपने धर्मपरायण पिता श्री रामकुमार गुप्त एवं ममतामयी माँ श्रीमती कुसुम गुप्ता ने जीवन में संघर्ष करके हम सभी बहिनों को शिक्षा के क्षेत्र में उच्चतर स्तर पर पहुंचाया है यह शोध उनकी हार्दिक आकांक्षा एवं आशीर्वाद का फल है। इन्हें इस कृति को देखकर हार्दिक सुख और सन्तोष होगा ऐसा मेरा अपना विश्वास है।

कु0 ममता स्वर्णकार की बहुत आभारी हूँ जिन्होने इस शोध कार्य की पूर्णता में सहयोग प्रदान किया है।

सुन्दर आकर्षक छपाई के लिये श्री पंकज गुप्ता एवं सर्वेश गुप्ता पूर्वी कम्प्यूटर्स, उरई का विशेष आभार व्यक्त करती हूं व जिनके विशेष सहयोग से यह कार्य सम्भव हो सका है।

साधना गुप्ता

विषय अनुक्रम

अध्याय-प्रथम

अध्याय–१

प्रस्तावना

समस्या :

व्यक्ति और उसके वातावरण के मध्य प्रभाव पूर्ण सन्तुलन बनाये रखने की प्रक्रिया को ही समायोजन कहते हैं। समायोजन की प्रक्रिया में एक ओर प्राणी अपनी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि तथा दूसरी ओर इन स्थितियों के प्रति तालमेल बैठाने का प्रयास करता है जो उसकी आवश्यकताओं को प्रभावित करती है। इस प्रकार एक व्यक्ति के समायोजन से उसकी विशिष्ट कार्य पद्धति का बोध होता है। जिसके द्वारा वह जीवन की मुख्य समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने के साथ ही साथ सामन्जस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

मानव व्यक्तित्व एक स्थिर अपरिवर्तन शील इकाई नहीं बल्कि विभिन्न मनोदैहिक गुणों का एक गत्यात्मक संगठन है। अतः मानव व्यवहार को समझने के लिए व्यक्तित्व के गत्यात्मक पक्ष की जानकारी होना आवश्यक है और इसमें समायोजन प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति की कुछ ऐसी सामाजिक आवश्यकतायें होती हैं। जो उसके व्यक्तित्व के सन्तुलन के लिये आवश्यक होती हैं। इन्हें व्यक्तित्व आवश्यकतायें कहा जाता है। इनमें विविधता की मात्रा अधिक होती है। क्योंकि ये आवश्यकतायें व्यक्ति के सीखने के प्रकार, माता–पिता के जीवन मूल्यों तथा सामान्य प्रक्रियाओं पर आधारित होती है। एक व्यक्ति की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में सामाजिक उपलब्धि की आवश्यकता आत्म सम्मान, असुरक्षा, उपर्युक्तता आदि ये सभी आवश्यकता सामान्य सामाजिक अर्न्तःक्रिया का परिणाम होती हैं। इन आवश्यकताओं की सन्तुष्टि में बाधा पड़ने पर व्यक्ति में तनाव उत्पन्न होता है। जिससे व्यक्ति में गतिशीलता उत्पन्न होती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति इन

आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु क्रियाशील होता है। व्यक्तित्व सम्बन्धी आवश्यकतायें अचेतन अथवा अर्धचेतन रूप से व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। सामान्य व्यक्ति में ये आवश्यकतायें सन्तुलित होती है अर्थात कोई एक या अधिक प्रेरणायें दूसरी प्रेरणाओं से उपर्युक्त प्रकार में बाधा नहीं डालती। यदि इन्हें ठीक से अभिव्यक्त होने दिया जाय तो समस्या उत्पन्न नहीं होती किन्तु इन आवश्यकताओं की अति अभिव्यक्ति या न्यून अभिव्यक्ति व्यक्तित्व विकास में बाधा पहुंचाती है। फलतः व्यक्ति का समायोजन विगड़ने लगता है। तब व्यक्ति अप्रत्यक्ष साधनों का सहारा लेता है। फलतः व्यक्ति में चिन्ता, तनाव, नैराश्य के लक्षण परिलक्षित होने लगते हैं।

आत्म व्यक्तित्व के विकास की एक केन्द्रीय और मौलिक विशेषता है। इसकी उत्पत्ति भाषा के विकास के साथ होती है और कुछ समय के बाद यह मनुष्य के व्यवहार का एक विशेष रूप ग्रहण करता है। आत्म व्यक्तित्व का एवं व्यक्ति के व्यवहार का महत्वपूर्ण निर्धारक है। आत्म का विश्वास सदैव सामाजिक संदर्भ में होता है। न्यूकाम्ब ने आत्मा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुये लिखा है कि "आत्म अधिक विस्तृत प्रत्यय है जिसका सम्बन्ध व्यक्ति के स्वयं के प्रत्यक्षीकरण से है। यह प्रत्यक्षीकरण सामाजिक सन्दर्भ में किया जाता है। बालक अपने चारों ओर के वातावरण में जैसा अपने आपको देखता है और जिस प्रकार उसके परिवार के लोग और परिचित उसे देखते हैं। इसी आधार पर वह अपने आत्म प्रत्यय का निर्माण करता हैं यही कारण है कि आत्म प्रत्यय को दर्पण प्रतिमा भी कहा गया है। आत्म प्रत्यय में दो प्रकार की आत्म प्रतिमायें पायी जाती हैं। पहली प्रकार की आत्म प्रतिमायें मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के संदर्भ में होती हैं। इन प्रतिमाओं में साहस, ईमानदारी, स्वतंत्रता, आत्म विश्वास, आंाकाक्षायें आदि विशेषतायें व योग्यतायें होती हैं। इन प्रतिमाओं में समायोजन का गुण भी सम्मिलित होता है। एक बार आत्म प्रत्यय बनने के बाद यद्यपि ये स्थिर होते हैं। परन्तु नये अनुभवों के बैठने के साथ–साथ इसमें संशोधन व परिवर्धन भी होता है। आत्म प्रत्ययों में क्रमबद्धता भी पाई जाती है।

सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने कई प्रकार के व्यक्तित्व की चर्चा की है। युग ने गुणों के आधार पर व्यक्तित्व का विभाजन किया है। युंग का विभाजन निम्न है–

(1) अन्तर्मुखी, (2) बहिर्मुखी

अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के लोग अपना अधिक समय कल्पना और चिन्तन में बिताते हैं। ऐसे व्यक्ति एकान्त में रहना पसन्द करते हैं। इनमें भावुकता अधिक पायी जाती है। ये व्यक्ति नियमित जीवन बिताने वाले होते हैं। ये व्यक्ति अपने कार्यो को योजनाबद्ध करते हैं। ये किसी प्रकार का जोखिम नहीं उठाना चाहते हैं। नैतिकता का बड़ा ख्याल रहता है अतः ये विश्वसनीय होते हैं। ये लोगों से अलग–अलग रहते हैं और निराशावादी होते हैं। अधिकांश दार्शनिक व कलाकार अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं। बहिर्मुखी व्यक्तित्व ऐसे व्यक्ति संस्था व समूह में रहना पसन्द करते हैं। और व्यवहार कुशल होते हैं। विभिन्न परिस्थितियों में कुशलता और साहस के साथ समस्या का समाधान निकाल लेते हैं। इनमें भावुकता कम व सक्रियता अधिक पाई जाती है। बहिर्मुखी व्यक्ति प्रायः हास्यप्रद, हाजिर जबाब, परिवर्तन प्रिय व निश्चित प्रकृति के होते हैं। साथ ही संवेगशील होते हैं और प्रायः क्रोध व आक्रोश के शिकार हो जाते हैं आमतौर से राजनैतिक नेता और समाज सुधारक सेना तथा पुलिस के अधिकारी बहिर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं।

मनोस्नायुविकृति शब्द का अर्थ उन विचारों से है जो केवल मानसिक कारणों से ही उत्पन्न होते हैं। ऐसे विकारों से पीड़ित व्यक्ति के जीवन में असमायोजन संवेगात्मक असन्तुलन विश्वासहीनता व हीनता की भावना निरन्तर घर किये रहती है। जीवन के संघर्षो कठिनाइयों उत्तरदायित्वों व चुनौतियों से ऐसे व्यक्ति बचने का भरसक प्रयास करते हैं। वे अपनी कमजोरियों व न्यूनताओं को भली भाँति जानते हुये भी उन पर नियंत्रण स्थापित करने में अपने आप को असमर्थ पाते हैं। शारीरिक स्तर पर ऐसे विकारों से पीड़ित व्यक्तियों को सिर दर्द, पेट दर्द, निद्रा, अभाव, भूख अभाव, शक्ति अभाव, थकान व दिल की घड़कन तेज जैसी शिकायत साधारणतया बनी रहती है। ऐसे विकारों के अन्तर्गत व्यक्ति में असुरक्षा, अनिश्चितता, आत्म केन्द्रिता, अप्रसन्नता, अपराध भावना तथा आत्म भर्तसना जैसी अनेक नकारात्मक भाव घर किये रहते हैं। ये व्यक्ति पर्यावरण के साथ समायोजन नहीं कर पाते लेकिन इनमें कोई गम्भीर दोष दृष्टिगत नहीं होता।

आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति तनाव चिन्ता और प्रतिबल परिस्थितियों से ग्रस्थ है जिसके कारण उसमें कुण्ठा की आवृत्ति और मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कुण्ठा की परिस्थिति में व्यक्ति तनाव व परेशानी का अनुभव करता है। इस प्रकार कुण्ठा संवेगात्मक प्रतिबल की वह अतिरंजित अवस्था है। जिसमें व्यक्ति तनाव परेशानी चिन्ता व दबाव का मिले जुले रूप का अनुभव करता है। इसकी मुख्य विशेषता व्याकुलता क्लेश और क्रोध है। प्रेरणात्मक व्यवहार व लक्ष्य प्राप्ति व्यवहार के कठिन व असम्भव बाधाओं के कारण कुण्ठा की उत्पत्ति होती है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्ति की अपेक्षाकृत रूप से वह स्थायी प्रवृत्ति है। जो उपलब्धि या सफलता प्राप्ति के सम्बन्ध में होती है। ये प्रेरणायें जिन लोगों में अधिक होती हैं वह लोग ऐसे कार्यों को करना अधिक पसन्द करते हैं। जिसमें उनकी प्रशंसा हो अध्ययनों में यह देखा गया है कि इस अभिप्रेरणा की अधिकता वाले लोगों में दो प्रकार की प्रवृत्तियां साथ–साथ सक्रिय रूप से देखी जाती हैं। (1) सफलता प्राप्ति प्रवृत्ति (2) विफलता परिहार प्रवृत्ति। इस उपलब्धि से सम्बन्धित निष्पादनों को इन दो प्रवत्तियों के अतिरिक्त परिस्थितिपरक कारक भी निर्धारित करते हैं। इन कारकों में दो प्रमुख हैं। प्रयोज्य को दिया गया कार्य तथा दूसरा है इस कार्य से सम्बन्धित लक्ष्य प्रोत्साहन मूल्य यहां लक्ष्य प्रोत्साहन मूल्य से तात्पर्य कि दिये हुये कार्य का निष्पादन करने के बाद कार्य के फलस्वरूप व्यक्ति को कितनी गर्व लाभ या कितनी वाह–वाह प्राप्त होती है।

उपयुक्त संदर्भ में प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व प्रकार किस प्रकार आत्म प्रत्यय को प्रभावित करते हैं। अतः अनुसंधान कर्ता ने निम्नलिखित शोध समस्या का चयन किया है–

"किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के संदर्भ में एक अध्ययन"।

व्यक्तित्व का विकास काफी हद तक प्रारम्भिक वर्षों में हुये विकास पर निर्भर करता है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि बालक को जो कुछ भी बनना होता

है वह अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में ही बन जाता है। जीवन के प्रारम्भिक वर्ष जीवन रूपी भवन की नींव होते हैं। यदि नींव कमजोर हो गई तो, भवन निश्चित रूप से कमजोर होगा। बीज से अंकुर निकलते ही यदि उसकी सुरक्षा नहीं हुयी तो आगे चलकर उसका विकास बाधित होगा ही। फ्राइड तथा अन्य मनोवैज्ञानिकों ने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों को बाद के मनोवैज्ञानिक विकास के लिये महत्वपूर्ण माना है।

फ्राइड का मत है कि शिशु के सामान्य मनोयोनिक विकास में बाधा डालने वाली शैशवकालीन अतृप्त इच्छायें बाद में उत्पन्न विभिन्न मानसिक रोगों के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है। विकृत पारिवारिक स्थितियों का भी प्रभाव बालक के विकास पर पड़ता है। शिशु जैसे–जैसे बढ़ता है। वह समाज में माँ के अतिरिक्त अन्य लोगों के संपर्क में आता है। अतः यह आवश्यक है कि उसमें समायोजन की क्षमता का भी विकास हो।

मनोस्नायुविकृति के अन्तर्गत हल्की मानसिक व्याधियां निहित होती हैं। अतः मनोस्नायुविकृति के रोगी के लक्षण हल्के और साधारण प्रकार के होते हैं। यदि इन रोगियों की मानसिक चिकित्सा की जाये तो ये शीघ्र ही ठीक हो जाते हैं। कोई आवश्यक नहीं कि इन्हें अस्पताल में भर्ती किया जाये।

वह प्रायः अर्न्तद्वन्द से युक्त रहता है। इसी कारण से उसे कहीं–कहीं अपना समायोजन कर सकने में कठिनाई पड़ती रहती है। और जब कहीं साधारण सा प्रतिबल आ जाता है तो उसका साहस उसके हाथ से छूटता हुआ प्रतीत होता है। तात्पर्य यह है कि मनोस्नायुविकृति का रोगी का व्यवहार असमायोजित होता है। वास्तविकता से इनका सम्बन्ध कम ही रहता है। व्यक्तित्व में हल्का सा विघटन सम्भावित रहता है। ये चिन्ता, खेद एवं अपराध भावना से ग्रस्त रहते हैं। व्यवहार में ये प्रभाविकता पूर्ण होते हैं। आत्म सम्मान, स्नेह और सुरक्षा के अभाव से ग्रसित रहते हैं। दूसरों की समस्याओं का समाधान कौन कहे, वह अपनी ही समस्याओं के समाधान में व्यस्त रहता है। असहायता एवं असुरक्षा की भावना उससे दूर नहीं हटती। उसकी अपनी आशायें होती हैं, भावनायें होती है, महत्वाकांक्षायें होती हैं। वह आत्म केन्द्रित रहता है। इसलिये दूसरों की परवाह नहीं करता, फिर भी अपने

को नितांत असहाय एवं असुरक्षित समझकर दूसरों का संरक्षण और कृपा प्राप्त करना चाहता है।

परिवर्तियों का वर्णन :

प्रस्तुत अध्ययन में चार परिवर्तियों का अध्ययन किया गया है। यह चार परिवर्तिय निम्नलिखित हैं।

1. आत्म प्रत्यय
2. मनोस्नायुविकृति
3. उपलब्धि अभिप्रेरणा
4. व्यक्तितत्व

उपरोक्त परिवर्तियों का विस्तृत विवरण नीचे दिया जा रहा है

1. आत्म प्रत्यय :

व्यक्ति के विकास में तौर तरीकों शिष्टाचार बोलचाल उठना बैठना आदि सामाजिक व्यवहार के साथ–साथ आत्म या अहम के विकास का बड़ा महत्व है। यह सब सामाजिकता से ही होता है। सामाजीकरण की इस प्रक्रिया में व्यक्ति में प्रत्येक सामाजिक सम्बन्धों का योगदान है। व्यक्ति अनुकरण सुझाव तथा सहानुभूति द्वारा एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक संस्थायें और समितियां भी व्यक्ति का सामाजीकरण करते हैं।

व्यक्तितत्व के विकास में सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य उसके स्वः का विकास है इसी के विकास में व्यक्ति का सामाजीकरण होता है। इसी से उसमें आत्म चेतना और सामाजिक चेतना उत्पन्न होती है। यह आत्म व्यक्तितत्व का केन्द्र है और इस प्रकार व्यक्तितत्व के विभिन्न तत्वों को संगठित रखता है।

आत्म प्रत्यय से तात्पर्य अन्य व्यक्तियों से अर्न्तक्रिया के परिणाम स्वरूप हमारी कार्यों व विचारों की चेतना से है। मनुष्य एक सामाजिक परिवेश में रहता है।

व्यक्तित्व के क्रमशः विकास में उसकी अन्य व्यक्तियों से अन्तः क्रिया होती है। यह अन्तः क्रिया सामाजिक समूहों में उसके पदों और उसके अनुकूल भूमिकाओं से निर्धारित होती है। इस अन्तः क्रिया के परिणामस्वरूप यह विशिष्ठ प्रकार से सोचता व व्यवहार करता हैं इसके मूल में जो चेतना है वह आत्म चेतना और समाज चेतना दोनों से मिलकर बनी है। यही व्यक्ति का आत्म है। इस प्रकार आत्म जन्म–जात नहीं होता। सामाजिक परिस्थितियों से और अन्य व्यक्तियों से अर्न्तक्रिया के द्वारा आत्म का विकास होता है। ये संयुक्त भी होती है और विभाजित भी।

आत्म का उदय तादात्म और प्रत्याशा से होता है। तादात्म व प्रत्याशा की सबसे पहली अभिव्यक्ति बालक व माता की अन्तः क्रिया में होती है। शिशु की समस्त शारीरिक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकतायें उसकी माता से पूरी होती हैं। अतः वह अपनी माता से तादात्म कर लेता है। तादात्म से तात्पर्य मनोवैज्ञानिक दृष्टि से एक रूप हो जाने से ही वह माता के संकेतों को समझता हैं और उनके अनुकूल प्रत्याशी प्रतिक्रियायें दिखलाता है। उदाहरण के लिये शिशु यह समझता है कि कब उसकी माता उसे दूध पिलायेगी कब सुलायेगी इत्यादि और माता में इस उद्देश्य की क्रिया दिखाई देते ही शिशु प्रत्याशी प्रतिक्रियायें करने लगता है। यही स्वः का उदय है। वह समझ जाता है कि माता किस व्यवहार से संतुष्ठ है और किस व्यवहार से असन्तुष्ट है।

जीवन के प्रथम वर्ष के अन्त तक वह अपने आपको एक अलग प्राणी के रूप में समझने लगता है। वह अपनी आवाज से पहले अपनी माँ की आवाज पहचानता है। इसी प्रकार से वह शीशे में अपनी शक्ल से दूसरो की शक्ल पहले पहचानना सीखता हैं हरलॉक का विचार है कि "छोटा बच्चा प्राथमिक रूप से आत्म केन्द्रित होता है। अतः इसमें अपने सम्बद्ध में प्रत्यय का निर्माण पहले और दूसरे के सम्बद्ध में प्रत्यय का निर्माण बाद में विकासित होता है।"

बालकों के आत्म प्रत्यय में दो प्रकार की प्रतिमायें होती हैं। पहली आत्म प्रतिमायें शारीरिक आत्म–प्रतिमायें हैं। इन आत्म–प्रतिमाओं का विकास पहले होता है। इनका सम्बन्ध बालकों की शारीरिक बनाबट और रंग रूप से है। दूसरी आत्म प्रतिमायों में बालकों की भावनायें, विचार, संवेग, साहस, ईमानदारी, स्वतंत्रता,

आत्म–विश्वास, योग्यतायें तथा आँकाक्षायें आदि सम्मिलत होती हैं। बालक की आयु जैसे–जैसे बढ़ती जाती है। वैसे वैसे शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रतिमायें आपस में एक दूसरे से सात्मीकृत हो जाती है।

फ्रैन्क और फ्रैन्क (1956) एक छोटा बालक अपने सम्बन्ध में सोचना और अनुभव करना उसी प्रकार सीखता है। जैसे की अन्य लोग उसको परिभाषित करते हैं। अपने प्राइवेट संसार में मनुष्य कर्ता के रूप में कार्य करने के लिये अपने आत्म के सम्बन्ध में उसी प्रकार की प्रतिमा को विकसित करता है जैसा कि उसके माता–पिता, अध्यापक और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति उसको समझते हैं और उसके बारे में बोलते हैं। इन लोगों के द्वारा दिया गया दण्ड प्रशंसा और प्रेम उसकी इस प्रतिमा विकास को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है।

बालक अपने चारों ओर के वातावरण में जैसा अपने आपको देखता है और जैसा उसके परिवार के लोग और परिचित उसे देखते हैं। इसी आधार पर वह अपने आत्म प्रत्यय का निर्माण करता है। यही कारण है कि आत्म प्रत्यय को दर्पण प्रतिमा कहा गया है। हरलॉक का विचार है कि जब कभी–कभी परिवार के लोग बालक को शैतान समझने लगते हैं तथा खेल के साथी भी इसी प्रकार का मत बना लेते हैं तो बालक का आत्म प्रत्यय भी इसी प्रकार का बनता है। जिसमें वह अपने आपको एक शैतान के बच्चे के रूप में देखता है। चूंकि बच्चा कम अनुभवों वाला होता है इसलिये दूसरे लोग उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं। एक बार आत्म–प्रत्यय बनने के बाद यद्यपि यह स्थिर होते हैं, परन्तु नये अनुभवों के बढ़ने के साथ–साथ इनमें भी संशोधन और परिवर्धन होता है। आत्म प्रत्यय में क्रमबद्धता पाई जाती है। बालक के प्रारम्भिक अवस्था में जो आत्म प्रत्यय बनते हैं उन्हें प्राथमिक आत्म प्रत्यय कहा जाता है। यह आत्म प्रत्यय माता–पिता के शिक्षण के आधार पर अथवा परिवार के सदस्यों के शिक्षण के आधार पर बनते हैं। इन प्राथमिक आत्म प्रत्यय में भी शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दोनों प्रकार की आत्म प्रतिमा पाई जाती है। जब बालक दूसरे बालकों के साथ खेलना प्रारम्भ करता है, स्कूल जाना प्रारम्भ करता है। जब उसमें पहले से बने प्राथमिक प्रत्ययों का संशोधन और परिवर्धन होने लगता है। इस

अवस्था के आत्म प्रत्यय, उद्दीपक आत्म प्रत्यय कहे जाते हैं। इस प्रकार के आत्म प्रत्यय बहुधा इस बात पर आधारित होते हैं कि दूसरे लोग बालक को किस प्रकार और किस दृष्टि से देखते हैं। बहुधा यह देखा गया है कि बालकों का प्राथमिक आत्म प्रत्यय अधिक अनूकूल होता है और द्वितीयक आत्म प्रत्यय उतना उनके अनुकूल नहीं होता। अध्ययनों में यह देखा गया है कि समय–समय पर बालक अपने आत्म प्रत्ययों में अपने सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों के मूल्यों नियमों और प्रतिमानों के अनुसार संशोधन करते रहते हैं।

लगभग तीन–चार वर्ष की अवस्था तक बालक सेक्स सम्बन्धी अन्तर समझने ही नहीं लगता है, बल्कि वह बालों और कपड़ों के रखरखाव के आधार पर लड़के–लड़कियों और स्त्री–पुरूषों को अलग–अलग पहचानने लगता। जब वह स्कूल जाना प्रारम्भ करता है तो उसके यह अन्तर और अधिक स्पष्ट हो जाते हैं, परन्तु वयःसन्धि अवस्था में वह दो सेक्स के अन्तर को पूर्णतः पहचान जाता है। बालक जब स्कूल जाना प्रारम्भ करता है उस समय तक स्त्री व पुरूष सेक्स के कार्यों को भी जानने लग जाता है। लगभग चार साल का बालक अपने जातीय और प्रजातीय अन्तरों को भी इसलिये पहचानने लग जाता है कि खेल के साथी और दूसरे लोग उससे उसकी जाति और प्रजाति के अनुसार व्यवहार करने लग जाता है। जब वह स्कूल जाने लग जाता है तब वह अपने परिवार की प्रतिष्ठा और अपने परिवार के सामाजिक और आर्थिक स्तर का भी ज्ञान प्राप्त कर लेता है। स्कूल जाने तक वह यह समझने लगता है कि परिवार की और उसकी प्रतिष्ठा तथा सामाजिक आर्थिक स्तर माता–पिता के व्यवसाय से निर्धारित होता है। वह इन अर्थों को अपने आत्म प्रत्यय से जोड़ लेता है।

आत्म प्रत्यय वह सामान्य पद है जिसका अर्थ है व्यक्ति के गुणों और व्यवहार आदि के सम्बन्ध में उसका मत एक व्यक्ति अपने गुणों और व्यवहार आदि के सम्बन्ध में जो मत रखता है वही उसका आत्म प्रत्यय है। प्रत्येक व्यक्ति का आत्म प्रत्यय उसके विचारों पर आधारित होता है तथा उस व्यक्ति के लिये यह आत्म प्रत्यय बहुत महत्वपूर्ण होता है। मनोविज्ञान ने आत्म प्रत्यय से सम्बन्धित शोध

अध्ययन को सन् 1950 के आस–पास से बहुत अधिक महत्व दिया जा रहा है। आत्म प्रत्यय व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु है। व्यक्तित्व की तुलना साइकिल के पहिये से की जाये तो कहा जा सकता है कि साइकिल के पहिये में लगा हुआ हब आत्म प्रत्यय है तथा हब से जुड़ी हुयी तीलियाँ व्यक्तित्व के विभिन्न लक्षण या शील गुण हैं।

उपर्युक्त विवेचना क्रम में आत्म प्रत्यय को निम्नलिखित परिभाषाओं से व्यक्त किया जा सकता है–

'आत्म प्रत्यय व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु है'। (कैटेल)

''व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं और गुणों के सम्बन्ध में उसकी अभिवृत्ति निर्णयों और मूल्यों के योग को ही आत्म प्रत्यय कहते हैं।'' (आइजनेक)

आत्म प्रत्यय के अवयव : आत्म प्रत्यय के तीन प्रमुख अवयव हैं।

1. **प्रत्यक्षपरक अवयव :** इस अवयव के अन्तर्गत उसके शरीर की प्रतिमा आती है तथा दूसरों पर क्या छाप छोड़ता है यह भी उसके प्रत्यक्ष परक अवयव के अन्तर्गत आता है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति शारीरिक रूप से कितना आकर्षक है। इस अवयव को शारीरिक–आत्म प्रत्यय भी कह सकते हैं।

2. **प्रत्यात्मक अवयव :** इसके अन्तर्गत उसकी वह विशेषतायें आती हैं इसके कारण वह दूसरे से भिन्न है। इसके अन्तर्गत उसकी योग्यताओं और अयोग्यताओं भी आती हैं। इसके अन्तर्गत जीवन के समायोजन से सम्बन्धित विशेषतायें भी आती हैं। जैसे ईमानदारी, आत्म विश्वास, स्वतंत्रता, साहस अथवा इन गुणों के विपरीत गुण इस अवयव को मनोवैज्ञानिक आत्म प्रत्यय भी कहते हैं।

3. **अभिवृति परक अवयव :** इसके अंतर्गत व्यक्ति के स्वयं के प्रतिभाव आती है। इसके अन्तर्गत यह अभिवृतियां भी आती हैं जो इसके आत्म–सम्मान, आत्म उपागम, गर्व आदि से सम्बन्धित होती हैं। इसके अन्तर्गत उसके विश्वास धारणायें और विभिन्न प्रकार के मूल्य, आदर्श और आकाँक्षायें भी आते हैं।

आत्म प्रत्यय के प्रकार : आत्म प्रत्यय मुख्यतः दो प्रकार का हो सकता है।

1. वास्तविक आत्म प्रत्यय
2. आदर्श आत्म प्रत्यय

वह क्या बनना चाहता है यह आत्म प्रत्यय ही आदर्श आत्म प्रत्यय है। उपर्युक्त दोनों प्रकार का आत्म प्रत्यय प्रायः दो–दो प्रकार का हो सकता है।

1. शारीरिक आत्म प्रत्यय
2. मनोवैज्ञानिक आत्म प्रत्यय

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने निम्नलिखित प्रकार के आत्म प्रत्यय भी बताये हैं।

1. **गुणात्मक आत्म प्रत्यय** : यह आत्म प्रत्यय अस्थिर होता है। यह What I think of my self कथन पर आधारित होता है।
2. **वस्तुनिष्ठ आत्म प्रत्यय** : यह आत्म प्रत्यय अपेक्षाकृत स्थिर होता है। यह What others think of me कथन पर आधारित होता है। किसी भी प्रकार का आत्म प्रत्यय इन दो प्रकार में से किसी एक प्रकार का हो सकता है।

आत्म प्रत्यय को प्रभावित करने वाले कारक :

बालकों के आत्म प्रत्यय का विकास अनेक कारकों पर आधारित है। इन्हीं कारकों के प्रभावों के परिणामस्वरूप बालकों में आत्म प्रत्यय का विकास होता है। कुछ महत्वपूर्ण कारक निम्न प्रकार से हैं।

1. परिपक्वता
2. बौद्धिक योग्यतायें जैसे बुद्धि, तर्क, कल्पना, स्मृति और चिन्तन आदि
3. सीखने के अवसर
4. बालक के परिवार का आर्थिक–सामाजिक स्तर
5. अनुभव, विशेष रूप से मूर्त अनुभव
6. लिंग, आयु बढ़ने के साथ–साथ यह कारक आत्म प्रत्यय निर्माण को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है।

7. सूचना प्रतिपूर्ति
8. समायोजन
9. सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक वातावरण आदि कुछ प्रमुख कारक हैं।

2. मनोस्नायुविकृति :

आज का युग संघर्षशील है। सामाजिक दृष्टिकोंण से मानसिक रोग एक जटिल समस्या है। वैसे तो मानसिक रोग का इतिहास काफी प्राचीन है। परन्तु वैज्ञानिक स्तर पर मानसिक रोगों को समझने का प्रयास कुछ समय पूर्व ही हुआ है। 14वीं शताब्दी में सर्वप्रथम अमेरिका में एक मानसिक अस्पताल की स्थापना हुयी तथा यहीं से ही वैज्ञानिक स्तर पर मानसिक रोग के कारण एवं उसके उपचार पर अनुसंधान शुरू हुये मुख्यतः मानसिक रोगों को दो भागों में बांटा गया है।

1. मनोस्नायुविकृति
2. मनोविकृति

सामान्यतः मनोस्नायुविकृति जीवन शैली का गलत अनुकूलन है जिसके चिन्ता व छुटकारा दो प्रमुख लक्षण होते हैं। इस प्रकार के रोगियों की जीवन शैली में दो प्रमुख विकृतियां पायी जाती हैं।

1. वास्तविकता का गलत मूल्यांकन तथा समस्याओं के समाधान के स्थान पर उससे बचने की पद्धति।
2. अपने आपसे हार जाने की प्रकृति से पीड़ित रहना यह ज्ञानात्मक, संवेगात्मक व प्रक्रियाओं से सम्बन्धित मानसिक विकृतियों का हल्का प्रकार है। दूसरे शब्दों में यह मानसिक एवं स्नायु से सम्बन्धित विकृतियां हैं जिसमें रोगी मानसिक रूप से तो अस्वस्थ्य रहता है लेकिन उसे आस–पास के वातावरण आदि के बारे में पूर्ण ज्ञान होता है। चिकित्सा के दृष्टिकोंण से भी यह एक साधारण मानसिक रोग है। इसका साधारण डाक्टर के इलाज की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक उपाय अधिक उपयोगी है। ये विकृतियां मनोवैज्ञानिक कारणों से उत्पन्न होती हैं। इन रोगियों का सम्बन्ध वातावरण की वास्तविकता से बना रहता है। इनका व्यवहार सामाजिक आदर्शों के

अनुरूप ही होता है। रोगी अन्य रोगों की दुखी चिन्तन व आन्तरिक अर्न्तद्वन्द आदि में घिरा नहीं होता ऐसे रोगियों की मृत्यु बहुत कम होती है। इन्हें मानसिक चिकित्सालयों में भर्ती कराने की अपेक्षा एक मनोचिकित्सक की अधिक आवश्यकता होती है। इस सम्बन्ध में ब्राउन का कथन है कि–

''वे व्यक्ति जो चेतन व अचेतन संघर्षो के कारण कुछ ऐसे कार्य नहीं कर पाते जो कि एक सामान्य व्यक्ति अपनी योग्यता व संस्कृति के कारण करने की क्षमता रखता है। इसका सम्बन्ध सामाजिकता से होता है।'' हर्मी (1937) ने बताया कि बहुत सी प्रतिक्रियायें जो कि हमें एक संस्कृति में मनोस्नायुविकृति से सम्बन्धित दिखाई पड़ती हैं तो दूसरी संस्कृति में वे पूर्णतः सामान्य क्रियायें होती हैं। अतः मनोस्नायुविकृति व्यक्ति वह होता है जो इस प्रकार का व्यवहार करता है जो व्यवहार उस संस्कृति में अन्य व्यक्ति नहीं करते हैं। प्रो0 रोजन एवं ग्रेगरी का मत है– कि जहाँ व्यक्ति स्नेह सुरक्षा व आत्म सम्मान आदि से सम्बन्धित आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। वहाँ साथ–साथ एक सीमा तक चिन्ता व अपराध की भावना से भी मुक्त रहना चाहता है। पर्याप्त मात्रा में उपयुक्त आवश्यकताओं के संतुलन में जिस व्यक्ति में कमी होती है। वे इस रोग के अंतर्गत आते हैं। इस प्रकार के रोगी व्यक्ति अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति या सामना करने में सुरक्षात्मक दृष्टिकोंणों को अपनाता है। यह बुद्धि व विवेक के साथ बात करता है। संक्षेप में मनोस्नायुविकृतियां में प्रायः व्यक्ति आंशिक रूप से कार्य करने में अयोग्य हो जाता है तथा उसके मौलिक लक्षणों का सम्बन्ध चिन्ता से होता है। क्योंकि यह एक हल्के प्रकार की विकृति है तथा इस प्रकार के अधिकांश रोगियों को मानसिक अस्पताल में भर्ती कराने की आवश्यकता नहीं होती है। अतः इसकी निश्चित संख्या का अनुमान लगाना असम्भव है। जहाँ तक भारत का प्रश्न है। यह कहना कठिन है कि इस प्रकार के रोगियों की संख्या कितनी है क्योंकि भारत मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान न के बराबर दिया जाता है। अमेरिका में प्रथम बार जो मानसिक रोगी मानसिक अस्पतालों में प्रवेश करते हैं उसमें 45 प्रतिशत रोगी मनोस्नायुविकृति के रोगी होते हैं।

कौलमैन ने कैटिल व स्किनर तथा मैकमिलन के सर्वेक्षण के आधार पर बताया कि अमेरिका में करीब 10000000 से भी अधिक व्यक्ति इस रोग से पीड़ित

हैं। कॉलमैन ने यह भी बताया कि जितने भी व्यक्ति शारीरिक शिकायतों को लेकर डॉक्टर के पास जाते हैं उनमें से आधे से अधिक व्यक्ति मनोस्नायुविकृति के रोग से पीड़ित होते हैं यह रोग पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक तथा आयु के दृष्टिकोण से पूर्ण यौवनावस्था में अधिक होता है।

जैसा कि हम जानते हैं कि मनोस्नायुविकृति एक रोग न होकर मानसिक व स्नायु सम्बन्धी सरल विकृतियां हैं। ये समाज से सम्बन्धित होती हैं तथा एक सामाजिक संस्कृति में जो प्रतिक्रियायें मनोस्नायुविकृति के समान लगती हैं तो वही प्रतिक्रियायें अन्य संस्कृति में सामान्य लोगों की प्रतिक्रियायें होती हैं। अतः निश्चित रूप` मनोस्नायुविकृति के सामान्य लक्षणों का पता नहीं लगाया जा सकता लेकिन इसके विकास क्रम में पर्याप्त समानता दिखाई पड़ती है इसके विकास क्रम पर संक्षेप में प्रकाश डालने के बाद प्रमुख सामान्य लक्षणों की विवेचना करेंगे। कॉलमैन के अनुसार इसका विकास क्रम निम्न प्रकार है–

1. व्यक्तित्व का दोषपूर्ण विकास जैसे अपरिपक्वता विरूपण आदि जिसके फलस्वरूप व्यक्तित्व संरचना में विशिष्ट दोषों का समावेश हो जाता है।
2. व्यक्ति जीवन की साधारण कठिनाइयों का सामना करने में भी हिचकिचाता है उसे डर सा लगने लगता है।
3. इस स्थिति के कारण व्यक्ति में तीव्र चिन्तायें जागृत होने लगती हैं।
4. इस स्थिति से बचाव करने के प्रयास में अनेक प्रकार की मनोस्नायुविकृति लक्षणों की उत्पत्ति हो जाती है।
5. इसके कारण व्यक्ति की कार्यक्षमता में ह्रास, थकान एवं असन्तोष आदि अन्य गौण लक्षण हो जाते हैं।

मनोस्नायुविकृति का विकास क्रम :

मनोस्नायुविकृति का विकासक्रम निम्न क्रमानुसार होता है–

1. **चिन्ता एवं भयावह :** अनेक मनोवैज्ञानिकों ने चिन्ता को मनोस्नायुविकृति का प्रमुख लक्षण माना है। रोगी इसमें बिना कारण के ही भयात्मक स्थिति में विचरण करता है। जिसका स्वरूप वास्तविक भय से भिन्न होता है। इस प्रकार के रोगी के रोग का मुख्य कारण चिन्ता से बचाव करने का प्रयास होता है। मनोस्नायुविकृति में रोगियों को अधिकतर यह आशंका सताती है कि कहीं मेरे आन्तरिक अर्न्तद्वंद व भय प्रकट न हो जायें। यही कारण है कि रोगी सदैव अनेक कारण भय यथा—दुर्घटनाग्रस्त होने, बीमार पड़ जाने व पागल हो जाने आदि से त्रस्त रहता है।

2. **अनुपयुक्तता एवं हीनता :** इन रोगियों का व्यक्तित्व अपरिपक्व व असन्तुलित हो जाता है जिसके कारण रोगी अपने आपको साधारण से साधारण अवस्था में भी अनुपयुक्त समझने लगता है तथा अन्य लोगों की अपेक्षा अपने को हीन समझने लगता है। इस प्रकार के व्यक्तियों में प्रायः दो प्रकार की स्थिति पायी जाती है।

   (1) या तो वे पूर्ण रूप से दूसरों पर ही निर्भर रहते हैं।

   (2) यह प्रत्येक कार्य स्वतन्त्र रूप से करना चाहते हैं।

3. **आत्म केन्द्रिता :** प्रायः ये रोगी अपने ही विचारों भावनाओं आदि में खोये रहने के कारण जीवन के संघर्षों का सामना एक सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा कठिनाई के साथ कर पाते हैं। दूसरे शब्दों में ये रोगी मुख्यतः अपनी समस्याओं में उलझे रहते हैं तथा अन्य व्यक्तियों की समस्या से इनका कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

4. **तनाव एवं अतिसंवेदनशीलता :** क्योंकि ये रोगी आत्म केन्द्रित होते हैं। छोटे—छोटे संघर्षों तथा चिन्ताओं से सुरक्षा करने के लिये व्यर्थ की चिन्ताओं में लीन रहते हैं। अतः ये व्यक्ति हमेशा एक तनावपूर्ण स्थिति में जीवन यापन करते हैं इसमें संवेगशीलता सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक होती है और बात ही बात में इन्हें गुस्सा आ जाता है।

5. **अर्न्तदृष्टि की कमी :** क्योंकि छोटे–छोटे संघर्षों का सामना उपयुक्त क्रियाओं से नहीं कर पाते अतः इसमें मानसिक तनाव संघर्ष भय आदि की स्थिति बनी ही रहती है। जिसके परिणाम स्वरूप इनमें सूझ की कमी रहती है। आत्म संयम, आत्म निर्भरता आदि का अभाव दिखाई पड़ता है। व्यवहार में स्वाभाविक लोच का अभाव रहने के कारण वह अपने को अत्यन्त निराशाजनक स्थिति में पाता है।

6. **पारस्परिक सम्बन्ध व सामाजिकता की कमी :** रोगी आत्म केन्द्रित व अनुपयुक्तता से घिरे होने के कारण अन्य व्यक्तियों एवं अनेक सामाजिक परम्पराओं व रीति–रिवाजों के प्रति उदासीन रहता है क्योंकि उसमें या तो यह भावना रही है कि स्वतंत्र रूप से कार्य करो या पूर्ण रूप से दूसरों पर निर्भर रहे जिसके कारण अन्य व्यक्ति ऐसे व्यक्तियों से शीघ्र ही ऊब जाते हैं तथा दूर रहने का प्रयास करते हैं।

7. **थकान और अन्य शारीरिक कष्ट :** मानसिक तनाव, चिन्ता, संघर्ष भय आदि के कारण इसकी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति व्यर्थ में ही नष्ट होती रहती है। फलतः यह थकान तथा अन्य शारीरिक कष्ट आदि से पीड़ित रहते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों को पेट सम्बन्धी रोग, सिरदर्द शरीर में अस्पष्ट वेदना आदि कष्ट सताते हैं।

8. **अन्य मानसिक लक्षण :** इन रोगियों में उपयुक्त लक्षणों के अलावा अनेक अन्य मानसिक लक्षण यथा– परेशानी, असन्तुलन, ध्यान की एकाग्रता में कमी आदि भी पाये जाते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह बात पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है कि मनःस्नायु विकृति एक साधारण कोटि का रोग है जिसमें रोगी के शरीर को अधिक कष्ट नहीं होता है तथा चिन्तन एवं बोलने आदि क्रियायें युक्ति संगत होती है। व्यामोह व विभ्रम के लक्षण नहीं मिलते हैं तथा रोगी सामान्य व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है और सामाजिक रीतियों का पालन करता है लेकिन इससे यह भी नहीं समझना चाहिये कि मनोस्नायुविकृति कोई मानसिक विकृति नहीं है। वास्तविक बात तो यह

है कि मनोस्नायुविकृति मानसिक रोगी की पृथक्करण श्रृंखला है तथा इन्हीं लक्षणों या विकृतियों के अतिरंजित रूप से व्यक्ति अन्य खतरनाक मानसिक रोग से ग्रस्त हो सकता है।

मनोस्नायुविकृति के सामान्य कारक :

मनोस्नायुविकृतियों के अनेक कारक है। जिनका पूर्णरूपेण वर्णन करना कठिन है। अतः हम यहाँ इनके सामान्य कारकों की व्याख्या प्रस्तुत करेंगे।

1. **जैविक कारक :** इस सम्बन्ध में अनेक अध्ययन हुये जो इस तथ्य के प्रमाण है कि मनोस्नायुविकृति को उत्पन्न करने में जैविक कारक भी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इस प्रकार के रोगियों के परिवार में सामान्य परिवारों की अपेक्षा यह विकृति अधिक संख्या में घटित होती है। हेनरी इन्धम आदि द्वारा ऐसे भी अध्ययन किये गये हैं जिनके अनुसार जो माता–पिता मनोस्नायुविकृति के रोगी हैं, उनके उचित पालन–पोषण, व्यवहार का वातावरण उपस्थित नहीं कर पाते चाहे कुछ भी हो, जैविक कारकों का इस रोग का पूर्ण उत्तरदायी कारक न तो माना जा सकता है और न ही इन कारकों को इस रोग से पूर्णता पृथक ही किया जा सकता है। अन्य जैविक कारक– लिंग, आयु, मस्तिष्क, कोष व विभिन्न ग्रन्थि क्रियायें हैं।

2. **मनोवैज्ञानिक कारक :** विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारकों की खोज की है जिनका वर्णन यहां करना उचित प्रतीत होता है।

(अ) अनेक विद्वानों का मत है कि सभी प्रकार के मनोस्नायुविकृतियों का कारण समायोजन उत्पन्न करने वाली क्रियाओं को सीखना है। इस मत के प्रमुख समर्थक आइजेन्क है। उदाहरण के लिये दुर्भीत एक प्रकार से भय के प्रति सम्बद्ध प्रतिक्रिया है। आइजेन्क के अनुसार दुर्भीत का रोगी जो प्रतिक्रियायें करता है। उससे उसके तनाव व चिन्ता दूर होती है। आइजेन्क के इस मत को मनोस्नायुविकृति सम्बन्धी व्यवहारवादी दृष्टिकोण कहते हैं।

(ब) अनेक मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मनोस्नायुविकृति का कारण दबाव पूर्ण

मनोवैज्ञानिक परिस्थितियां जैसे अवास्तविक, महत्वाकांक्षायें, अवांछित इच्छायें आदि हैं। एडॉल्फ मेयर का मत है कि जब व्यक्ति अपने को उपयुक्त नहीं समझते तथा योग्यता व क्षमता से अधिक जीवन लक्ष्य बनाते हैं। तब मनोस्नायुविकृति उत्पन्न होती है। एडलर भी मेयर के मत का समर्थन करता है। उसका मत है कि आज का समाज जटिल व प्रतिस्पर्धात्मक है, जिसमें व्यक्ति अपनी योग्यताओं का यर्थात रूप से मूल्यांकन नहीं कर पाता तथा उच्चता की भावना की पूर्ति सही ढंग से नहीं कर पाता। इसी के परिणाम स्वरूप उसकी अपनी हीनता की भावना की क्षतिपूर्ति विभिन्न प्रकार के मनोस्नायुविकृति के लक्षणों के माध्यम से होती है।

(स) मनोवैज्ञानिक कारकों के अन्तर्गत तीसरा वर्ग उन मनोवैज्ञानिकों का आता है, जो इनसे उत्पन्न होने का कारण जीवन की सार्थकता व आशा की कमी को मानते हैं। थार्न (1963) का मत है कि जब व्यक्ति के जीवन में किसी भी क्षेत्र में सार्थकता की कमी तथा काल्पनिक बातों की अधिकता हो जाती है तब उसे अपने अस्तित्व की चिन्ता उत्पन्न हो जाती है। इसी के परिणामस्वरूप वह उचित व समायोजित रूप से जीवन यापन नहीं कर पाता। जब उसकी असफलतायें स्थायी हो जाती है तब उनमें मनोस्नायुविकृति के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। बेकर (1962) का कहना है– कठिनाई की स्थिति में व्यक्ति दो मुख्य कार्य करता है–

अ. अपने आत्म बोध की निरंतरता की रक्षा

ब. परिस्थितियों का सामना करने के लिये प्रयास करते रहना।

जब उसके दो कार्य ही असम्भव हो जाते हैं। तब उसमें मनोविकृति के लक्षणों का उत्पन्न हो जाना स्वभाविक हो जाता है। मॉवरर का मत है कि अपरिपक्वता व अपराध भाव ही इसके उत्पन्न होने के प्रमुख कारक हैं।

3. **सामाजिक कारक :** वैसे तो इस प्रकार के रोगी प्रत्येक समाज के वर्ग में पाये जाते हैं, परन्तु फिर भी कुछ ऐसी विशिष्ट सामाजिक स्थितियां होती हैं, जो विभिन्न प्रकार की मनोविकृतियों को एक विशिष्ट रूप प्रदान करती है।

जैसे– छोमोन्माद के रोगी उन क्षेत्रों में अधिक मिलते हैं। जो आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से पिछड़े होते हैं। विशेष प्रकार की संस्कृति व जाति भी इस रोग को उत्पन्न कराने में सहायक हैं। जैसे हण्ट ने अपने अध्ययन में पाया कि नीग्रो व्यक्तियों की अपेक्षा अमेरिकन गोरे व्यक्तियों में मनोविकृति का रोग सापेक्षिक रूप से कम होता है।

मनोस्नायुविकृति के मुख्य प्रकार –

(1) चिन्ता मनोस्नायुविकृति

(2) मनोग्रस्तता बाध्यता मनोस्नायुविकृति

(3) छोमोन्माद

(4) दुर्भीत

(5) मनः श्रान्ति

3. उपलब्धि अभिप्रेरणा :

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का मत है कि प्रत्येक के व्यवहार की व्याख्या अभिप्रेरणाओं और 'अर्न्तर्नोद' के द्वारा की जा सकती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का यह भी विचार है कि कोई भी अभिप्रेरणा या अर्न्तर्नोद मूल और शुद्ध रूप से अकेले प्राणियों के व्यवहार का संचालन नहीं करते हैं। बल्कि विभिन्न अभिप्रेरणाओं और अर्न्तर्नोदों की अन्तः क्रिया प्राणी के व्यवहार के संचालन के लिये उत्तरदायी है। अभिप्रेरणा एक उपकल्पनात्मक प्रक्रिया है जो व्यवहार के निर्धारण से सम्बन्धित होती है। अभिप्रेरणा शब्द से प्राणी की सभी प्रकार की अभिप्रेरणात्मक प्रक्रियाओं या प्रक्रमों का बोध होता है। मैक्डोनल्ड (1952) ने अभिप्रेरणा को परिभाषित करते हुये लिखा है– ''व्यक्ति के अन्दर होने वाला शक्ति परिवर्तन ही अभिप्रेरणा है, जो प्रभावात्मक उदोलन और पूर्वानुमान लक्ष्य अनुक्रियाओं द्वारा वर्णित होता है।'' गिलफर्ड (1957) के मतानुसार– ''अभिप्रेरक एक विशेष आन्तरिक कारक अथवा स्थिति है, जो किसी क्रिया को शुरू करने एवं जारी रखने की प्रवृति रखता है।''

अभिप्रेरणा एक आन्तरिक कारक या स्थिति अथवा तत्परता है जो किसी क्रिया या व्यवहार को आरम्भ करने की प्रवृत्ति जागृत करती है। यह व्यवहार की दिशा तथा मात्रा भी निश्चित करती है। अभिप्रेरणा के सम्बन्ध में वैज्ञानिक अध्ययनों का प्रारम्भ मैग्यूगल से (1908) प्रारम्भ होता है। इसके अनुसार अभिप्रेरित व्यवहार का कारण मूल प्रवृत्तियां हैं। इस सिद्धान्त की पुष्टि को लेकर अनेक प्रायोगिक अध्ययन हुये और इस अध्ययन श्रृंखला के फलस्वरूप अर्न्तर्नोद सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ।

आवश्यकता, अर्न्तर्नोद तथा प्रलोभन :

प्रत्येक प्राणी की कुछ न कुछ आवश्यकतायें होती हैं। आवश्यकताओं की सन्तुष्टि और असन्तुष्टि से व्यक्ति का व्यवहार प्रभावित होता है। भोजन, पानी, यौन, हवा, नींद आदि कुछ मौलिक आवश्यकतायें हैं, जिनकी सन्तुष्टि आवश्यक है। यह देखा गया है कि जब प्राणी को इन आवश्यकताओं से वंचित रखा जाता है तो प्राणी की क्रियाशीलता बढ़ जाती है। बोरिंग और उसके साथियों के अनुसार आवश्यकता शरीर की कोई जरूरत या अभाव है। जिसके कारण शारीरिक तनाव या असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है। इस तनाव में ऐसा व्यवहार उत्पन्न करने की प्रवृत्ति होती है जिससे आवश्यकता के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाला असन्तुलन समाप्त जाता है। अर्न्तर्नोद व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करता है, परन्तु दिशा नहीं व्यवहार को दिशा वे आदते प्रदान करती है। जो एक दी हुई परिस्थिति में कार्यरत् है। हिल्गार्ड और बोवर (1966) ने आवश्यकता अर्न्तर्नोद और प्रलोभन में अन्तर स्पष्ट करते हुये कहा है कि आवश्यकता– अर्न्तर्नोद को जन्म देती है। अर्न्तर्नोद बढ़े हुये तनाव की वह दशा है जो कार्य और आरम्भिक व्यवहार को अग्रसर करती है। उद्दीपक बाह्य वातावरण की वह कोई भी वस्तु है जो आवश्यकता को सन्तुष्ट करती है और इस प्रकार की क्रिया के द्वारा अर्न्तर्नोद को कम कर देती है।

अभिप्रेरणा और उदोलन :

व्यक्ति के समस्त व्यवहार का कारण केन्द्रीय नाडी संस्थान का विशेष रूप से सक्रियकरण अथवा उदोलन होना है। प्रत्येक व्यक्ति में प्रत्येक समय में कुछ न कुछ मात्रा में सक्रियकरण या उदोलन पाया जाता है। यह देखा गया है कि व्यक्ति

जागृत अवस्था में अधिक सर्तक, सजग, सक्रिय तथा क्रियाशील होता है। दूसरी ओर निद्रावस्था में उसकी ये विशेषतायें कम या समाप्त हो जाती है। प्रत्येक अभिप्रेरित व्यवहार के लिये एक निश्चित मात्रा में उदोलन की आवश्यकता होती है। अतः उदोलन की अनुपस्थिति में व्यक्ति का अभिप्रेरित व्यवहार असम्भव है। प्राणी की प्रत्येक क्रिया उदोलन के कारण ही प्रारम्भ होती है। प्राणी विशिष्ठ दिशा में व्यवहार विशिष्ठ उद्दीपक संकेतों के कारण करता है। उदोलन अनेक कारकों तथा उनकी अन्तः क्रियाओं पर निर्भर करता है। बाह्य उद्दीपक आन्तरिक संवेग तथा संज्ञानात्मक तत्व आदि कुछ प्रमुख कारक हैं जो उदोलन को प्रभावित करते हैं। लक्ष्य प्राप्ति में बाधक उद्दीपक अथवा व्यक्ति के लिये महत्वपूर्ण या सार्थक उद्वीपक उसके उदोलन को बढ़ावा देते हैं। सक्रियकरण वादी मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि भिन्न–भिन्न कार्य निष्पादनों के लिये भिन्न–भिन्न स्तर के सक्रियकरण की आवश्यकता होती है। यदि सक्रियकरण इस आवश्यक स्तर से कम होता है तो व्यक्ति कार्य निष्पादन करने में असमर्थ रहता है। उदोलन स्तर और व्यवहार कुशलता को यदि ग्राफ पेपर पर प्रदर्शित किया जाये तो उल्टे यू अक्षर के समान वक्र प्राप्त होता है। उदोलन के दैहिक आधारों के सम्बन्ध में अनेक अध्ययन हुये जिनके कई महत्वपूर्ण तथ्यों का पता चला है। उदाहरण के लिये लिण्डस्ले (1951) के अनुसार मस्तिष्क का एक विशेष भाग, जिसे Reticular Formation या जलीय आकार कहते हैं। यह भाग उदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह आकार मेडयूला से हाइपोथैलेमस तक फैला होता है। ज्ञानवाही नाड़ियों में सूचना प्राप्त होने पर यह भाग उदोलित या सक्रिय होताहै। रेटीकुलर भाग का सम्बन्ध कार्टेक्स से भी होता है। अतः रेटीकुलर के सक्रिय होने से कार्टेक्स का सक्रिय होना स्वभाविक है। फ्रैन्च (1955) ने इस दिशा में अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि कार्टेक्स और रेटीकुलर दोनों भाग पारस्परिक सम्बद्धता के आधार पर कार्य करते हैं।

ग्रास मैन (1960) ने अपनी अध्ययनों के आधार पर सिद्ध किया कि बाह्य उदीपकों के कारण उदोलन में रेटीकुलर फारमेशन महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है जबकि आन्तरिक उद्दीपकों (संवेग और अभिप्रेरणा) के कारण उत्पन्न उदोलन में मस्तिष्क के Limbic Region की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

एटकिन्सन तथा फेदर (1966) ने उपलब्धि अभिप्रेरक को परिभाषित करते हुये लिखा कि ''उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्ति की अपेक्षाकृत रूप से वह स्थायी प्रवृत्ति है जो उपलब्धि या सफलता प्राप्ति के सम्बन्ध में होती है।''

यह देखा गया है कि यह प्रेरणा जिन लोगों में अधिक मात्रा में पाई जाती है। वह लोग ऐसे कार्यों को करना पसन्द करते हैं जिससे उनकी प्रशंसा या वाह–वाह हो। इस अभिप्रेरणा को सर्वाधिक महत्व मैक्लीलैण्ड तथा एटकिंसन ने दिया है। इस अभिप्रेरक के कारण व्यक्ति अनेक प्रकार के व्यवहार करने के लिये सक्रिय हो सकता है। जैसे–

(1) व्यवहार के किसी क्षेत्र में Level of Excellence के लिये प्रयास कर सकता है।

(2) कुछ चुने हुये क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के लिये प्रयास कर सकता है।

(3) किसी भी प्रतियोगिता में वह सर्वोच्च स्थान पाने के लिये प्रयास कर सकता है।

(4) अपने जीवन को अधिक उन्नत बनाने के लिये भी प्रयास करता है।

(5) अपनी सफलता पर प्रसन्न हो सकता है और गर्व कर सकता है।

(6) उपलब्धि के लिये प्रयास में यदि उसे विफलता मिलती है तो वह इसके लिये भी स्वयं को उत्तरदायी मानता है।

चित्रों की सहायता से इस अभिप्रेरक को मापने की एक मात्रात्मक प्रविधि का विकास मैक्लीलैण्ड (1953) तथा उनके सहयोगियों ने किया है। इस अभिप्रेरणा का मापन वाचक सूचियों द्वारा भी किया है। इस अभिप्रेरक की अधिकता में व्यक्ति उन्हीं कार्यों को अधिक करते हैं। जिसमें वह अपनी Excellency दिखा सकते हैं।

हैक्हाउसन (1967) ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह सिद्ध किया कि यदि किसी कार्य विशेष का उत्तरदायित्व इस प्रकार के व्यक्ति पर है जिससे उपलब्धि प्रेरणा उच्च स्तर की है तो ऐसे व्यक्ति ऐसे कार्यों को करना अधिक पसन्द करते हैं।

महोन (1960) ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययन में देखा कि वह व्यक्ति यथार्तवादी व्यवसायिक आकांक्षा का प्रदर्शन करते हैं जिन व्यक्तियों में सफलता प्रवृत्ति अधिक तथा साथ ही विफलता परिहार भी अधिक होता है। एंट किन्सन तथा फेदर (1966) ने अपने एक प्रयोगात्मक अध्ययन में यह देखा कि इस अभिप्रेरणा की अधिकता वाले लोगों में दो प्रकार की प्रवृत्तियां साथ–साथ सक्रिय देखी जाती हैं।

1. सफलता प्राप्ति प्रवृत्ति
2. विफलता परिहार प्रवृत्ति

इस उपलब्धि से सम्बन्धित निष्पादनों को इन दो प्रवृत्तियों को अतिरिक्त परिस्थितिपरक कारक निर्धारित करते हैं। इन परिस्थितिपरक कारकों में दो कारण प्रमुख हैं।

पहला– प्रयोज्य को दिया गया कार्य

दूसरा– इस कार्य से सम्बन्धित लक्ष्य प्रोत्साहन मूल्य

यहां लक्ष्य प्रोत्साहन मूल्य का तात्पर्य है कि दिये हुये कार्य का निष्पादन करने के बाद कार्य के फलस्वरूप व्यक्ति को कितना गर्व, लाभ या कितनी वाह–वाह प्राप्त होगी। अपने इस अध्ययन निष्कर्ष को इन मनोवैज्ञानिकों ने निम्न समीकरण के रूप में प्रस्तुत किया है–

$$Ts = Ms \times Ps \times Is$$

उपर्युक्त समीकरण में

Ts = सफलता प्राप्ति प्रवृत्ति

Ms = सफलता प्राप्ति से सम्बन्धित अभिप्रेरक

Ps = सफलता प्राप्ति की सम्भावना

Is = सफलता प्राप्ति से सम्बन्धित लक्ष्य का प्रोत्साहन मूल्य का गणनात्मक प्रकार्य

इस समीकरण से स्पष्ट है कि सफलता प्राप्ति प्रवृत्ति, सफलता प्राप्ति अभिप्रेरक, सफलता प्राप्ति की सम्भावना तथा लक्ष्य प्रोत्साहन मूल्य के गुणनफल पर निर्भर करती है। उपर्युक्त समीकरण में केवल सफलता प्राप्ति प्रवृत्ति और इसके

कारकों के सम्बन्ध को दर्शाया गया है। उपलब्धि अभिप्रेरणा में सक्रिय दूसरी प्रवृति विफलता परिहार प्रवृति को निम्न समीकरण द्वारा प्रदर्शित कया गया है–

Tf = Maf X Pf X If

उपर्युक्त समीकरण में

Tf = विफलता परिहार प्रवृति

Maf = विफलता परिहार से सम्बन्धित प्रगट चिन्ता

Pf = विफलता सम्भावना

If = विफलता प्रोत्साहन मूल्य

समीकरण का अर्थ स्पष्ट है कि विफलता परिहार प्रवृति तीन कारकों के गुणनफल पर निर्भर करती है। = Maf, Pf तथा If इस समीकरण में प्रगट चिन्ता का अर्थ विफलता के कारण उत्पन्न लज्जा अथवा संकोच से है। इस व्यक्ति की उपलब्धि अभिप्रेरक से सम्बन्धित निष्पादन कितना होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि इस व्यक्ति में सफलता प्राप्त प्रवृति Ts तथा विफलता परिहार प्रवृति Tf कितनी मात्रा में है। अतः कहा जा सकता है कि Ts + Tf का मान धनात्मक है तो अच्छा होगा। वह मान जितना ही अधिक और धनात्मक होगा, व्यक्ति का उपलब्धि अभिप्रेरक से सम्बन्धित निष्पादन उतना ही अधिक होगा दूसरी ओर इन दोनों का यदि ऋणात्मक मान आता है तो निष्पादन दुर्बल होगा इन दो प्रवृत्तियों के आधार पर इस अभिप्रेरक से युक्त व्यक्तियों के चार मुख्य वर्ग बनाये जा सकते हैं।

1. Ts तथा Tf समान हो तथा प्रबल या धनात्मक हों
2. Ts तथा Tf समान ही परन्तु ऋणात्मक या दुर्बल हों
3. Ts धनात्मक हों और Tf ऋणात्मक हों
4. Ts ऋणात्मक हों तथा Tf धनात्मक हों

एंटकिंसन तथा लिटविन (1960) ने अपने एक अध्ययन में, जिसमें प्रयोज्य तथा कार्य 15 फीट की दूरी से एक खूँटी में चूड़ी उछालकर या फेंककर डालनी थी। एक प्रयोज्य यह कार्य करता था तथा शेष प्रयोज्य दर्शक का कार्य करते थे जब किसी प्रयोज्य का चूड़ी फेंकने का नम्बर आता था तब उसे यह कहकर उत्साहित किया जाता था कि देखें, यह कार्य आप कितनी दक्षता से कर सकते हैं। इस

अध्ययन में यह देखा गया कि जिन व्यक्तियों में Ts प्रबल मात्रा में होता है और Tf ऋणात्मक स्तर का होता है, वह उन कार्यों में सफलता के लिये अधिक समय तक प्रयास करते हैं जो कार्य उनके लक्ष्य से सम्बन्धित होते हैं।

हैक्हाउसन (1963) ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि जिन व्यक्तियों में Ts प्रबल मात्रा में होता है उनका निष्पादन औसत स्तर का होता है परन्तु जिनमें Tf प्रबल मात्रा में होता है उनका निष्पादन या तो बहुत उच्च या बहुत निम्न स्तर का होता है इस प्रकार के परिणाम औसत से तथा जोखिम उठाने से सम्बन्धित कार्यों और आकांक्षा स्तर से सम्बन्धित कार्यो से सम्बन्धित है।

4. व्यक्तित्व :

लगभग 2000 वर्ष पूर्व व्यक्तित्व के लिये Persona शब्द का उपयोग किया जाता था। Persona शब्द का अर्थ है। नकाव (Mask) अथवा वेश–भूषा। Persona शब्द के अनुसार व्यक्तित्व का अर्थ वाह्य गुणों से लगाया जाता है। व्यक्तित्व से सम्बन्धित सैंकड़ों परिभाषायें जिनका वर्णन आलपोर्ट (1937) ने किया है। आलपोर्ट ने इन परिभाषाओं को छः समूहों में बांटा है।

''व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो व्यक्ति के वातावरण के प्रति अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है'' –'आलपोर्ट' (1937)

उपर्युक्त परिभाषाओं में आलपोर्ट की परिभाषा उन सभी सीमाओं को दूर कर देती है जो सामाजिक मूल्य के रूप में व्यक्तित्व को परिभाषित करने से उत्पन्न होती है। इस परिभाषा की कुछ महत्वपूर्ण विशेषतायें है–

(अ) इस परिभाषा में व्यक्तित्व को गत्यात्मक संगठन के रूप में स्वीकार किया गया है। यह देखा गया है कि संसार की प्रत्येक वस्तु में कुछ न कुछ परिवर्तन होते रहते हैं। अतः कहा जा सकता है संसार परिवर्तनशील है। व्यक्तित्व भी इस गुण से प्रभावित है। किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व स्थिर नहीं होता उसमें समय–समय पर वातावरण की अन्तः क्रियाओं के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं।

(ब) इस परिभाषा की द्वितीय महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें व्यक्तित्व को मनोदैहिक गुणों के रूप में स्वीकार किया गया है। मनोदैहिक में मानसिक व शारीरिक दोनों प्रकार के गुण सम्मिलित हें।

(स) इस परिभाषा में व्यक्तित्व को निर्धारक के रूप में स्वीकार किया गया है। व्यक्तित्व व्यक्ति की अनुक्रियाओं को प्रभावित करता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के समायोजन आदि को भी प्रभावित करता है।

(द) व्यक्तित्व व्यक्ति के वातावरण के प्रति समायोजन को अपूर्व ढंग से करवाता है। यह देखा गया है कि वातावरण की विभिन्न परिस्थितियों में सभी व्यक्तियों का समायोजन समान नहीं होता है। वातावरण की विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्रत्येक व्यक्ति का समायोजन उनके व्यक्तित्व के अनुसार भिन्न भिन्न प्रकार से होता है। मन की परिभाषा आलपोर्ट की परिभाषा का एक अंग है। मन ने विभिन्न मनोदैहिक गुणों को अपनी परिभाषा में लिखा है, साथ ही साथ यह स्वीकार किया जाता है कि व्यक्तित्व इन मनोदैहिक गुणों का अत्यधिक विशेषता पूर्ण संगठन है।

परिभाषा के साथ ही एक और महत्वपूर्ण परिभाषा आइजनेक (1970) की भी है—

''व्यक्ति की अभिप्रेरणात्मक व्यवस्थाओं का व्यक्तित्व सापेक्ष रूप से वह स्थिर संगठन है जिसकी उत्पत्ति जैविक अर्न्तनोंद, सामाजिक तथा भौतिक वातावरण की अन्तः क्रिया के फलस्वरूप होती है।'' —'आइजनेक' (1970)

व्यक्तित्व की यदि विस्तृत रूप से परिभाषा की जाये तो यह व्यक्ति के व्यवहार की सम्पूर्ण विशेषता है, जिसका दर्शन उसके विचारों, आदतों, अभिव्यक्ति के ढंग, अभिवृतियों, रूचियों, कार्य करने के ढंग तथा जीवन के प्रति व्यक्तिगत दार्शनिक दृष्टिकोणों के द्वारा होता है। उपर्युक्त व्यक्तित्व की परिभाषा से यदि पूर्णता और वैज्ञानिक दृष्टिकोंण से देखी जाये तो आलपोर्ट (1937) तथा आइजनेक (1970) की परिभाषायें अधिक उपयुक्त प्रतीत होती हैं। उपर्युक्त परिभाषाओं से यह काफी कुछ स्पष्ट हो जाता है। कि व्यक्तित्व में किस प्रकार के गुण सम्मिलित हैं।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व में शारीरिक और संज्ञानात्मक दोनों प्रकार के गुण सम्मिलित हैं परन्तु उसमें अधिकांश और मुख्य गुण प्रभावोत्पादक संज्ञानात्मक गुण, स्थायी भाव, अभिवृत्तियां, मानसिक ग्रन्थियां तथा अचेतन मनोरचनायें रूचियां और विचार आदि होते हैं। ये सभी गुण व्यक्ति के विशिष्ट तथा भिन्न दिखाई देने वाले व्यवहार का निर्धारण करते हैं।

व्यक्तित्व के प्रकार :

युंग का वर्गीकरण–

युंग एक सुविख्यात मनोवैज्ञानिक है उसने मानसिक वृतियों के आधार पर व्यक्तित्व के प्रकारों का गहन अध्ययन करके अपने सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तियों को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता हैं

1. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व
2. बहिर्मुखी व्यक्तित्व

1. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व :

अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के लक्षणों, स्वभाव, आदतें, अभिवृत्तियां और अन्य चालक वाह्य रूप से प्रगट नहीं होते इसलिये इनको अन्तर्मुखी कहा जाता है। इनका विकास वाह्य रूप से न होकर आन्तरिक रूप में होता है।

इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले मनुष्य अपने आप में अधिक रूचि रखते हैं। इनका झुकाव अन्दर की तरफ होता है वे अपने को बाह्य रूप से प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करने में असफल होते हैं। उनमें आन्तरिक विश्लेषण की मात्रा बहुत अधिक होती है। उनकी मानसिक शक्ति का विशेष रूप से विकास होता है वे दूसरे लोगों और बाह्य वातावरण से एक विशेष प्रकार से ही अपना अनुकूलन कर पाते हैं। वे संकोची होने के कारण अपने विचारों से ही अपना अनुकूलन कर पाते हैं। वे संकोची होने के कारण अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में कठिनाई का अनुभव

करते हैं। उनके और साथियो के बीच में एक प्रकार की दीवार एक तरह का पर्दा होता है। वे आवश्यकता से अधिक शर्मीले व झेपने वाले होते हैं। उनमें अर्न्तक्रियात्मक प्रक्रिया सदैव गतिशील अवस्था में विद्यमान रहती है वे कल्पना के संसार में उड़ान लेते हैं और कभी कभी आदर्शवादी बन जाते हैं। इस व्यक्तित्व के मनुष्य दार्शनिक और विचारक भी होते हैं।

2. बहिर्मुखी व्यक्तित्व :

बहिर्मुखी व्यक्तित्व का मनुष्य अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्य के विपरीत होता है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्यों का झुकाव वाह्य तत्वों की ओर होता हैं वे अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं। वे संसार के भौतिक और सामाजिक लक्ष्यों में विशेष रूचि रखते हैं। यद्यपि इनका अपना आन्तरिक जीवन होता है। पर वे वाह्य पक्ष को और अधिक आकर्षित रहते हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व के मनुष्य वाह्य सामंजस्य के प्रति सदैव सचेत रहते हैं। और कार्यो एवं कथनों में अधिक विश्वास रखते हैं। इस व्यक्तित्व के लोग अधिकांश रूप में सामाजिक, राजनैतिक या व्यापारिक नेता होते हैं।

युंग ने व्यक्तित्व को अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी भागों को पुनः चार–चार उपभागों में विभाजित किया है।

1. **अन्तर्मुखी विचारशील :** इस प्रकार के व्यक्ति संसार में अधिक रूचि नहीं रखते व व्यवहारिक नहीं होते उनहें सांसारिक बातों, धन–दौलत आदि से किसी प्रकार का लगाव नहीं होता वे अपने ही विचारों, कल्पनाओं और आदर्शों में निमग्न रहते हैं।

2. **अन्तर्मुखी भावुक :** इस प्रकार के व्यक्ति अपनी भावनाओं और उद्वेगों में निमग्न दिवास्वप्न देखते रहते हैं। वे शान्तप्रिय होते हैं और इसलिये बाह्य जगत के कोलाहल से बचना चाहते हैं।

3. **अन्तर्मुखी संवेदी :** इस प्रकार के व्यक्ति अपने आप में केन्द्रित रहते हैं। वे संसार के प्रत्येक व्यक्ति और वस्तुओं को अपने ही अनुसार देखते हैं।

4. **अन्तर्मुखी अर्न्तज्ञानी :** इस प्रकार के व्यक्ति अपने आप में ही मग्न रहते हैं। इनकी अपनी स्वयं की प्रतिमायें होती हैं और उन्हीं से वे संकेत लेते हैं। वे संसार में किसी की चिन्ता नहीं करते। पैगम्बर, साधू, कलाकार आदि इसी प्रकार के लोगों में आते हैं।

5. **बहिर्मुखी विचारशील :** इस प्रकार के लोग अपनी भावनाओं और उद्वेगों को तनिक भी महत्व नहीं देते वे संसार से संवेदना ग्रहण करके उस पर तर्क पूर्ण ढंग से विचार करते हैं।

6. **बहिर्मुखी भावना शील :** इस प्रकार के लोग दूसरे व्यक्तियों की भावनाओं से शीघ्र ही सामंजस्य कर लेते हैं। वे सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने में विश्वास करते हैं। और इसलिये समाज के सभी नियमों का दृढ़ता से पालन करते हैं वे परिस्थितियों को समझते हैं और उन्हीं के अनुसार कार्य करते हैं। इस प्रकार में स्त्रियां अधिक आती हैं।

7. **बहिर्मुखी संवेदी :** इस प्रकार के लोग अत्यधिक व्यवहार कुशल होते हैं। वे जैसा समाज में देखते हैं। वैसा ही करते हैं और इस प्रकार जीवन का अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयास करते हैं।

8. **बहिर्मुखी अर्न्तज्ञानी :** इस प्रकार के लोग संसार के व्यक्तियों और वस्तुओं को ध्यान से देखते हैं। पर उनके अनुसार कार्य न करके अपनी इच्छा के अनुसार ही काम करते हैं।

युंग के इस सुझाव का पुष्टिकरण आइजनेक (1947) ने किया बाद में युंग ने इस वर्गीकरण में एक अन्य प्रकार जोड़ा गया, यह प्रकार है ''उभयमुखी'' व्यक्तित्व। उभयमुखी व्यक्तित्व वह है जिनमें अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी दोनों व्यक्तित्व प्रकारों की विशेषतायें पायी जाती हैं। तथा ये कुछ परिस्थितियों में अन्तर्मुखी व्यक्तित्व से सम्बन्धित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। तथा अन्य परिस्थितियों में बहिर्मुखी व्यक्तित्व से सम्बन्धित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।

अध्ययन का महत्व :

आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति तनाव चिन्ता और प्रतिबल परिस्थितियों से ग्रस्त है। जिसके कारण उसमें कुण्ठा की आवृत्ति और मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कुण्ठा की परिस्थिति में व्यक्ति तनाव व परेशानी का अनुभव करता है। इस प्रकार कुण्ठा संवेगात्मक प्रतिबल की वह अतिरंजित अवस्था है जिससे व्यक्ति तनाव परेशानी चिन्ता व दबाव का मिले जुले रूप का अनुभव करता है। इसकी मुख्य विशेषता व्याकुलता क्लेस और क्रोध है। प्रेरणात्मक व्यवहार व लक्ष्य प्राप्ति व्यवहार के कठिन व असम्भव बाधाओं के कारण कुण्ठा की उत्पत्ति होती है। जो कि केवल मानसिक कारणों से ही उत्पन्न होते हैं ऐसे विकारों से पीड़ित व्यक्ति के जीवन में अपसमायोजन संवेगात्मक असन्तुलन विश्वासहीनता व हीनता की भावना निरंतर घर किये रहती है। जीवन के संघर्षो, कठिनाइयों उत्तरदायित्वों व चुनौतियों से ऐसे व्यक्ति बचने का भरसक प्रयास करते हैं। ये अपनी कमजोरियों व न्यूनताओं को भलीभांति जानते हुये भी उन पर नियंत्रण स्थापित करने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं। शारीरिक स्तर पर ऐसे विकारों से पीड़ित व्यक्तियों को सिर दर्द, पेट दर्द, निद्रा अभाव, भूख अभाव, शक्ति अभाव, थकान व दिल की धड़कन तेज जैसी शिकायत साधारणतया बनी रहती है। ऐसे विकारों के अन्तर्गत व्यक्ति में असुरक्षा, अनिश्चिता आत्म केन्द्रित, अप्रसन्नता, अपराध भावना तथा आत्म भर्त्सना जैसी अनेक नकारात्मक भाव घर किये रहते हैं। ये व्यक्ति पर्यावरण के साथ समायोजन नहीं कर पाते लेकिन इनमें कोई गम्भीर दोष भी दृष्टिगत नहीं होता।

प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश्य किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) के प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अनुसंधान के द्वारा जो परिणाम प्राप्त होगें। वे परिणाम किशोर छात्रों को अधिक उत्तम प्रकार से समझने में सहायक सिद्ध होगें। अतः प्रस्तुत अनुसंधान का महत्व बहुत अधिक है।

लक्ष्य एवं उद्देश्य : प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. अध्ययन करना कि व्यक्तित्व आत्म प्रत्यय को प्रभावित करता हैं

परिकल्पना : उपर्युक्त लक्ष्य एवं उद्देश्य के अनुसार निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

(1) किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(2) किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(3) व्यक्तित्व का प्रकार किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है।

(4) किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(5) किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व प्रकारों का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(6) किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलबिध अभिप्रेरणा व व्यक्तित्व प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन की सीमायें :

प्रस्तुत अध्ययन में किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा व व्यक्तितत्व के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन का उद्‌देश्य व्यवहार की नैदानिक व्याख्या करना नहीं है।

– प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के जनपद जालौन के भौगोलिक क्षेत्र से सम्बन्धित है।

– प्रस्तुत अध्ययन में इण्टरमीडिएट कक्षाओं में अध्ययनरत् 15 से 18 वर्ष की आयु वर्ग के छात्र छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

अध्याय-द्वितीय

अध्याय–2

साहित्य का पुनरावलोकन

अनन्त (1970) ने आगरा, दिल्ली तथा बनारस की विभिन्न जातियों के 239 शहरी प्रयोज्यों पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में सिन्हा तथा सिन्हा (1967) द्वारा निर्मित रूढ़िवादिता चैक लिस्ट सूची के 88 लक्षणों का प्रशासन किया गया। अध्ययन में ब्राह्मणों को लालची, धार्मिक, जातीय तथा उदार जबकि क्षत्रियों को बहादुर दृढ़ साहसिक तथा राष्ट्र भक्त पाया गया। वैश्यों का डरपोक, बेईमान, कंजूस, गप्पी, लालची आदि लक्षणों के रूप में प्रत्यक्षीकरण किया गया। अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को शराबी, जड़, पिछड़ा, डरपोक आदि लक्षणों से युक्त पाया गया।

प्रसाद और सिन्हा (1978) ने उपलब्धि आवश्यकता आत्म को निर्धारित करती है, के संदर्भ में अध्ययन हेतु 16 से 19 आयु वर्ग के 200 छात्रों का चयन किया। अधिकांश छात्र ग्रामीण क्षेत्र के थे। परिवार का आकार और सामाजिक, आर्थिक स्तर से उनमें समानता थी। मैक्लीलैण्ड का उपलब्धि आवश्यकता–परीक्षण और वारसेल का आत्म–सक्रियता परीक्षण का प्रशासन किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान, प्रमाणिक–विचलन, टी परीक्षण द्वारा किया गया परिणाम बताते हैं। (1) उच्च और निम्न उपलब्धि आवश्यकता वाले प्रयोज्यों के वास्तविक आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं थी। (2) उच्च उपलब्धि आवश्यकता वाले प्रयोज्य में वास्तविक आदर्श–आत्म सार्थक रूप से कम था।

त्रिपाठी (1978) ने पिथौरागढ़ के भोटिया समुदाय के 15 से 17 आयु वर्ग के 508 शिक्षित किशोरों पर सिन्हा की आत्म–प्रदर्शन–अनुसूची और कैटिल का बहु व्यक्तित्व–कारक–परीक्षण का प्रशासन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि उच्च और निम्न आत्म–प्रदर्शन करने वाले प्रयोज्यों में D,E,H,J और 0 कारकों में अन्तर पाया

गया आत्म प्रदर्शन का सम्बन्ध स्वस्थ्य व्यक्तित्व से है। उच्च आत्म–प्रदर्शन वाले व्यक्ति मृदु स्वभाव के, आश्रित, अति सुरक्षित और संवेदनशील होते हैं। जबकि निम्न आत्म प्रदेर्शन करने वाले व्यक्ति बेलोच, आत्म–विश्वासी और यथार्तवादी होते हैं।

जय कन्थम (1979) ने आत्म और शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्धों का अध्ययन किया। तमिल और अंग्रेजी माध्यम से मद्रास नगर में दसवीं कक्षा में 107 बालिकाओं एवं 66 बालकों का चयन किया गया, परिणाम बताते हैं कि :

1. दसवीं कक्षा में अध्ययनरत् छात्र अपने वास्तविक और आदर्श आत्म से पूर्ण परिचित हैं।
2. बालकों की तुलना में बालिकाओं का आत्म प्रत्यय उच्च है।
3. आत्म प्रत्यय और उपलब्धि में उच्च और सार्थक सम्बन्ध है।
4. उच्च उपलब्धि वाले बालकों का आत्म प्रत्यय बालिकाओं की तुलना में ज्यादा है।
5. अधिक आयु वर्ग के परिवारों की तुलना में निम्न आयु वर्ग के बालकों का आत्म प्रत्यय उच्च पाया गया जबकि बालिकाओं के संदर्भ में परिणाम इसके विपरीत आये।

सिंह, गुप्ता एवं गर्ग (1980) ने अपने एक अध्ययन में पाया कि उच्च और निम्न उपलब्धि वाले बालकों के आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर था। उच्च उपलब्धि वाले बालकों का आत्म प्रत्यय सार्थक रूप से अधिक था। आवास का क्षेत्र, परिवार का आकार और आय आत्म–प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र के उच्च उपलब्धि वाले बालकों के आत्म प्रत्यय का सार्थक सम्बन्ध उनके पिता के व्यवसाय से पाया गया।

दीक्षित और मूरजानी (1981) ने आत्म प्रत्यय और आकांक्षा स्तर का अध्ययन सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़े बालकों पर किया जोधपुर नगर के विद्यालयों से 9 से 12 आयु वर्ग के 300 बालकों का चयन किया गया जो सामाजिक

आर्थिक स्तर में निम्न थे। इसी आयु वर्ग 700 ऐसे बालकों का चयन किया जो सामाजिक–आर्थिक स्तर से सम्पन्न थे। परिणाम बताते हैं कि दोनों समूहों के आत्म प्रत्यय और आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर था। उच्च सामाजिक आर्थिक समूह के बालकों का आत्म प्रत्यय और वंचित समूह की तुलना में सार्थक रूप से अधिक था।

श्रीवास्तव (1981) ने भारतीय शैक्षिक पर्यावरण में छात्रों में ऐलीनेशन पर आत्मसम्मान और शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव को ज्ञात करने के लिये कानपुर नगर में एक अध्ययन किया। मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के परिवारों से 18 से 20 आयु वर्ग के स्नातक स्तर में अध्ययनरत् 62 बालकों पर आत्म सम्मान मापनी और एलिनेसन मापनी का प्रशासन किया गया सांख्यकीय विश्लेषण हेतु 2x2 कारक विश्लेषण का प्रयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि (1) आत्म सम्मान का प्रभाव मुख्य रूप से देखा गया। आत्म–सम्मान और शैक्षिक उपलब्धियों में अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव भी था। (2) उच्च आत्म–सम्मान वाले प्रयोज्यों की तुलना में निम्न आत्म–सम्मान वाले प्रयोज्यों में उच्च स्तर की एलीनेसन पाया गया।

गुप्ता (1982) ने यह ज्ञात करने के लिये कि चिन्ता और उपलब्धि अभिप्रेरणा का आत्म–प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ता है। करनाल नगर के पांच विद्यालयों से चयनित पांच हाईस्कूलों से कक्षा 10 में अध्ययनरत् 50 छात्रों का चयन किया गया और उन पर चिन्ता परीक्षण (सिन्हा) उपलब्धि अभिप्रेरणा अनुसूची (प्रयाग मेहता) और व्यक्तित्व शब्द सूची (प्रतिभादेव) का प्रकाशन किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये प्रसरण विश्लेषण, शतासीय मान और मध्यमान की विधि अपनाई गई। परिणाम बताते हैं कि (1) उपलब्धि अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों का आत्म प्रत्यय का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। (2) चिन्ता के विभिन्न स्तरों का आत्म प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

गुप्ता (1982) ने हरियाणा प्राप्त के हाईस्कूल में अध्ययनरत् क्षेत्रों के आत्म–प्रत्यय पर सामाजिक–आर्थिक कारकों के प्रभाव का एक अध्ययन किया। करनाल नगर के पांच हाईस्कूल से 150 छात्रों का चयन किया गया। सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी एवं आत्म–प्रत्यय परीक्षण का प्रकाशन किया गया। परिणाम बताते हैं कि

परिवार का आकार और सामाजिक–आर्थिक स्तर आत्म प्रत्यय को प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन के शैक्षिक उपयोग के संदर्भ में अनुसंधानकर्ता का सुझाव है कि आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से पिछड़े छात्रों को पर्याप्त आर्थिक सहायता दी जानी चाहिये।

जोगावर (1982) ने 13 से 20 वर्ष की उम्र के किशोरों का आत्म प्रत्यय मापने का प्रयास किया। परिणाम बताते हैं कि 14 से 18 और 18 से 20 आयु वर्ग के समूह के बालकों के आत्म प्रत्यय में सांख्यकीय रूप से महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया।

गुप्ता (1982) ने स्वनिर्मित आत्म प्रत्यय मापनी एवं वर्मा के सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी का प्रशासन 80 पुरूष छात्राध्यापक एवं 70 महिला छात्राध्यापकों पर किया । परिणाम बताते हैं कि आत्म प्रत्यय में महत्वपूर्ण लैगिंक भेद पाये गये एवं सामाजिक आर्थिक स्तर पर प्रभाव देखा गया।

मुखर्जी (1982) ने माँ आधारित परिवारों के बालकों के आत्म–प्रदर्शन का अध्ययन किया। भागलपुर नगर के स्नातक स्तर में अध्ययनरत् 18 से 25 आयु वर्ग के 25 पिता आधारित और 25 माता आधारित बालकों का चयन किया गया। मुखर्जी की आत्म–प्रदर्शन अनुसूची का प्रशासन किया गया। परिणाम बताते हैं कि दोनों समूहों के आत्म–प्रदर्शन में सार्थक अन्तर था। पिता आधारित बालकों का आत्म–प्रत्यय माता आधारित बालकों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक था।

जैन, तिवारी (1983) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 240 छात्रों पर रस्तोगी का आत्म प्रत्यय परीक्षण, सिंह और तिवारी का आकांक्षा परीक्षण एवं सिंह व सक्सेना की सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी का प्रशासन किया। परिणामों से स्पष्ट होता है कि निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र सार्थक रूप से कम आत्म प्रत्यय रखते हैं।

गुप्ता (1983) ने आत्म प्रत्यय पर चिन्ता और उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करनाल जिले के दसवीं कक्षा में पढ़ने वाले 50 छात्रों पर अध्ययन किया। प्रयाग मेहता की उपलब्धि अभिप्रेरणा प्रश्नावली, सिन्हा की चिन्ता मापनी और प्रतिभा देव की आत्म प्रत्यय मापनी का प्रकाशन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ

कि (1) चिन्ता के विभिन्न स्तरों का आत्म प्रत्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। (2) उपलब्धि अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों का आत्म प्रत्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। (3) उपलब्धि अभिप्रेरणा और चिन्ता के तीनों स्तरों का सम्मिलित रूप से आत्म प्रत्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

प्रताप एवं भार्गव (1983) ने व्यक्तित्व के संदर्भ में आत्म प्रदर्शन का अध्ययन करने के लिये 16 से 24 वर्ष के 600 स्त्री और पुरूषों पर मनोस्नायुविकृति मापनी और आत्म प्रदर्शन प्रश्नावली का प्रशासन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि (1) मनोस्नायुविकृति प्राप्तांक और आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं था। (2) जब कि इन दोनों के विविधता प्राप्तांक और आत्म–प्रदर्शन में सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

राज और थामस (1984) ने अपने अध्ययन में बताया कि आत्म सम्मान वैयक्तिक और सामाजिक समायोजन पुरूषों प्रयोज्यों से सार्थक रूप से सम्बन्धित था।

सिंह और चौहान (1985) ने पारिवारिक पृष्ठभूमि का आत्म प्रदर्शन पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिये आगरा नगर में अध्ययनकृत 14 से 18 आयु वर्ग के 200 हाईस्कूल छात्रों का यादिच्छक विधि से चयन किया और उन पर आत्म प्रदर्शन प्रश्नावली का प्रकाशन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि (1) परिवारों का आकार और व्यवसाय बालकों के आत्म प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। (2) लेकिन परिवारों की आर्थिक स्थिति आत्म प्रदर्शन का सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है।

पाल और तिवारी (1985) ने आत्म प्रत्यय और आकांक्षा स्तर के संदर्भ में एक अध्ययन किया। रस्तोगी की आत्म प्रत्यय मापनी, सिंह और तिवारी की आकांक्षा स्तर मापनी और सिंह, सक्सेना की सामाजिक स्तर मापनी का प्रशासन 240 छात्र–छात्राओं पर किया गया परिणाम बताते हैं। कि (1) उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में ज्यादा अच्छा था। (2) लिंग भेद और सामाजिक आर्थिक स्तर, आकांक्षा स्तर को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

सन्धु (1986) ने उच्च शिक्षा और खेलकूद और उच्च उपलब्धि पाने वाले प्रयोज्यों में आत्म सम्मान का अध्ययन किया, उच्च शैक्षिक स्तर वाली 58 महिला और खेलकूद में उच्च स्तर वाली महिलाओं पर रोजन वर्ग के आत्म सम्मान मापनी का प्रयोग किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि (1) शैक्षिक क्षेत्र अथवा खेलकूद के क्षेत्र में प्राप्त उच्च उपलब्धि का आत्म सम्मान से कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं था। (2) महिला प्रयोज्य का आत्म सम्मान औसत स्तर का पाया गया।

क्षेत्रपाल और अनीता गुप्ता (1986) ने अपने एक अध्ययन में ज्ञात किया कि आत्म प्रत्यय के संदर्भ में होस्टल (छात्रावासों) में रहने वाले छात्र छात्राओं और छात्रावासों में न रहने वाले छात्र छात्राओं में कोई अन्तर नहीं होता। यह अध्ययन 14 से 17 आयु वर्ग के कक्षा 11 से 12 कक्षा में अध्ययनरत् 120 छात्र छात्राओं पर किया गया था।

माथुर (1986) ने आत्म प्रदर्शन और उपलब्धि अनुप्रेरणा के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करने के लिये आगरा नगर के चार इण्टर कालेजों से हाईस्कूल कक्षाओं में अध्ययनरत् 13 से 17 आयु वर्ग के 100 बालक और 100 बालिकाओं का चयन किया। उपलब्धि अनुप्रेरणा परीक्षण (प्रयाग मेहता) और आत्म प्रदर्शन अनुसूची (वीरेन्द्र मेहता) का प्रकाशन किया गया। परिणाम से ज्ञात हुआ कि उच्च आत्म प्रदर्शन वाली बालिकाओं में उपलब्धि अनुप्रेरणा सार्थक रूप से अधिक थी जबकि निम्न आत्म प्रदर्शन वाली बालिकाओं में उपलब्धि अनुप्रेरणा कम थी।

सिंह (1987) ने उपलब्धि और आत्म प्रत्यय सम्बन्ध अपने एक अध्ययन में पाया कि विज्ञान के छात्रों में आत्म प्रत्यय और शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर धनात्मक और सार्थक सम्बन्ध था। शहरी क्षेत्रों का आत्म प्रत्यय ग्रामीण बालकों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक था।

सिंह और कुमार (1988) ने अपने आत्म–प्रत्यय, सामाजिक–आर्थिक स्तर व संवेगात्मक सुरक्षा सम्बन्धी अध्ययन से यह परिणाम निकाले कि आत्म प्रत्यय और सामाजिक आर्थिक स्तर का परस्पर कोई महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।

गौतम एवं सिंह (1992) ने आत्म प्रत्यय तथा व्यक्तित्व के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन किया गया। यह अध्ययन हिमांचल प्रदेश के नवोदय विद्यालय के मेधावी बालकों पर किया गया। अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि आत्म प्रत्यय तथा शैक्षिक प्रेरणा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। यद्यपि मेधावी बालकों में आत्म प्रत्यय तथा शैक्षिक प्रेरणा के मध्य ऋणात्मक सह सम्बन्ध पाया गया जबकि धनात्मक सह सम्बन्ध निम्न योग्यता रखने वाले बालकों में पाया गया।

एलेग्जेण्डर तथा राजेन्द्र (1992) ने विद्यार्थियों के समायोजन तथा आत्म प्रत्यय का अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामों से प्राप्त हुआ कि उच्च आत्म प्रत्यय रखने वाले विद्यार्थियों का समायोजन अधिक अच्छा था जबकि निम्न आत्म प्रत्यय रखने वाले विद्यार्थियों का समायोजन निम्न स्तर का पाया गया। अध्ययन में यह भी ज्ञात हुआ कि पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं का समायोजन अधिक अच्छा था। तथा पढ़े लिखे शहरी अविवाहकों के बालकों का समायोजन ग्रामीण बालकों की अपेक्षा उत्तम पाया गया।

वर्मा और ठाकुर (1993) ने अपने एक अध्ययन में पाया कि नकारात्मक दृष्टिकोंण वाले व्यक्ति का आत्म प्रत्यय उन व्यक्तियों की तुलना में किसी भी तरह निम्न स्तर का नहीं होता जो सकारात्मक दृष्टिकोंण रखते हैं।

रंगकप्पा (1994) ने गणित उपलब्धि में आत्म प्रत्यय के प्रभाव का अध्ययन किया और तीन निष्कर्ष प्राप्त किये। (1) सामान्य आत्म प्रत्यय समूहों की तुलना में उच्च आत्म प्रत्यय वाले छात्रों की गणतीय उपलब्धि अधिक थी। (2) निम्न आत्म प्रत्यय वाले समूहों की तुलना में उच्च आत्म प्रत्यय वाले छात्रों की गणितीय उपलब्धि सार्थक रूप से अच्छी थी। (3) निम्न आत्म प्रत्यय वालू समूहों की तुलना में सामान्य आत्म प्रत्यय वाले छात्रों की गणितीय उपलब्धि अधिक थी।

श्रीवास्तव (1994) ने मूल्य, व्यक्तित्व तथा आत्म प्रत्यय के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामों में प्राप्त हुआ कि विभिन्न प्रकार के मूल्यों तथा व्यक्तित्व विशेषताओं के मध्य संतोषजनक सम्बन्ध का अभाव है।

अध्ययन द्वारा यह भी ज्ञात हुआ कि आत्म प्रत्यय के साथ विभिन्न प्रकार के मूल्यों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

अंजली (1995) ने दलित छात्रों के आत्म प्रत्यय पर हीनता और तनाव का अध्ययन करने के लिए 14 से 18 वर्ष के 400 दलित छात्रों पर सिन्हा की आत्म प्रदर्शन मापनी का प्रशासन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि दलित छात्रों की प्रगति में धन का अभाव प्रमुख बाधा थी। ये छात्र रूढ़िवादिता और जुआं जैसी दो मुख्य बुराईयों से ग्रसित थे, किन्तु जाति आधारित भेदभाव का उन्मूलन और समानता उनकी दो प्रमुख इच्छायें थीं।

करूणानिधि तथा अन्य (1996) ने 14 से 16 आयु के 71 छात्राओं तथा 108 छात्रों के आत्म सम्मान का अध्ययन किया। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का आत्म सम्मान अधिक ज्ञात हुआ तथा समस्याओं तथा आत्म सम्मान के मध्य सार्थक सम्बन्ध ज्ञात हुआ।

मिश्रा (1997) ने उपलब्धि अभिप्रेरणा का चिन्ता पर क्या प्रभाव पड़ता है। 183 प्राथमिक विद्यालयों के बालकों पर अध्ययन किया गया। अपने अध्ययन द्वारा उन्होंने निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये। (1) जिन विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक थी उनका शैक्षिक निष्पादन उच्च स्तर का प्राप्त हुआ। ऐसे विद्यार्थियों का चिन्ता स्तर भी निम्न स्तर का पाया गया। (2) विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का सार्थक प्रभाव चिन्ता पर पड़ता है। (3) शैक्षिक उपलब्धि तथा चिन्ता के मध्य ऋणात्मक सह सम्बन्ध प्राप्त हुआ।

विजय लक्ष्मी (1997) ने पिता की शैक्षिक उपलब्धियों का बालकों के आत्म प्रत्यय के संदर्भ में अध्ययन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि पिता की शैक्षिक उपलब्धियों का बालकों के शैक्षिक आत्म प्रत्यय और शैक्षिक अनुप्रेरणा पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

सेन और सक्सेना (1997) ने उच्च जाति और अनुसूचित जातियों के स्कूल छात्रों के आत्म प्रत्यय का एक अध्ययन किया। दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों

में अध्ययनरत् 13 से 18 वर्ष के 125 छात्रों का चयन किया गया। छात्रों को चार उप समूहों में विभाजित किया गया। सवर्ण जाति के बालक, बालिकाओं और अनुसूचित जाति के बालक, बालिकाओं परिणामों से ज्ञात हुआ कि (1) अनुसूचित जाति और सवर्ण जाति के समूहों में सिर्फ संवेगात्मक और नैतिक आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर था। (2) शारीरिक आत्म प्रत्यय में उच्च जाति की बालिकाओं की तुलना में अनुसूचित जाति की बालिकाओं का मध्यमान प्राप्तांक सार्थक रूप से ज्यादा था।

टिक्कू और जगदीश (1997) ने सीनियर सैकेन्डरी स्कूल के 100 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना था। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध होता है।

मैखुरी एवं पाण्डे (1997) ने शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में आत्म प्रत्यय का अध्ययन किया। 100 बालक व बालिकाओं पर प्रतिभादेव का आत्म प्रत्यय मापनी का प्रकाशन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि शैक्षिक उपलब्धि और आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

शक्ति नानावल (1998) ने खेलकूद के स्कूल तथा बिना खेलकूद के स्कूल से सम्बन्धित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि खेलकूद स्कूल से सम्बन्धित विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा तुलनात्मक रूप से अधिक उच्च स्तर को प्राप्त हुयी। जबकि बिना खेलकूद स्कूल से सम्बन्धित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर की प्राप्त हुयी।

ज्ञानानी (1999) ने कक्षा नौ के 230 विद्यार्थियों (170 छात्रा तथा 123 छात्र) के आत्म प्रत्यय का अध्ययन किया यह अध्ययन आगरा के आठ इण्टीमीडिएट कालेज के विद्यार्थियों पर किया गया। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का आत्म प्रत्यय अधिक उच्च स्तर का प्राप्त हुआ किन्तु यह अन्तर सांख्यकीय दृष्टि से सार्थक प्राप्त नहीं हुआ।

लाथर, गोयल एव भार्गव (2000) 18 से 20 आयु वर्ग के 25 छात्र और 25 छात्राओं पर आत्म विश्वास मापनी और सुरक्षा असुरक्षा प्रश्नावली का प्रकाशन किया। दोनों समूहों के अन्तं की सार्थकता टी परीक्षण द्वारा ज्ञात की गयी। परिणामों से ज्ञात हुआ कि उच्च सुरक्षा स्तर से उच्च आत्म विश्वास होता है। सुरक्षा और असुरक्षा के सम्बन्ध में दोनों समूहों में कुछ सार्थक अन्तर नहीं था जबकि आत्म विश्वास के सन्दर्भ में दोनों समूहों में अन्तर था छात्रों के आत्म विश्वास के प्राप्तांक छात्राओं की तुलना में सार्थक रूप से अधिक थे।

अध्याय-तृतीय

अध्याय–3

अनुसंधान पद्धति

अनुसंधान समस्या का उल्लेख प्रथम अध्याय में किया जा चुका है। इस अध्याय में अनुसंधान पद्धति का वर्णन निम्न शीर्षकों के अर्न्तगत किया जा रहा है।

1. जनसंख्या
2. प्रतिदर्श
3. अनुसंधान अभिकल्प
4. परीक्षण विवरण
5. प्रदत्तों का विवरण
6. सांख्यकीय विश्लेषण

1. जनसंख्या :

जनसंख्या के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के जनपद जालौन के शहरी क्षेत्रों में अध्ययनरत् इण्टरमीडिएट कक्षाओं में (कक्षा 11 एवं 12) में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

2. प्रतिदर्श :

प्रस्तुत अनुसंधान में 300 छात्र और 300 छात्राओं को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया है। प्रतिदर्श का चयन हेतु क्रमबद्ध यादिच्छक पद्धति का प्रयोग किया गया है। निम्नलिखित तालिका में प्रतिदर्श चयन का प्रदर्शन किया गया है।

तालिका–1 प्रतिदर्श चयन का प्रदर्शन

जनपद के सभी क्षेत्रों से प्रतिदर्श का चयन किया गया है। तालिका 2 में उन महाविद्यालयों की सूची है जिनसे प्रदत्तों का संकलन किया गया है। न्यादर्श चयन हेतु विद्यालय रजिस्टर से प्रत्येक पांचवे छात्र/छात्राओं का चयन किया गया।

तालिका नं0–2 प्रतिदर्श चयन हेतु विद्यालयों की सूची

क्रं.सं.	विद्यालयों के नाम	छात्र	छात्रायें
1.	राजकीय बालिका इण्टर कालेज, उरई	–	60
2.	आर्य कन्या इण्टर कालेज, उरई	–	60
3.	सनातन धर्म इण्टर कालेज, उरई	60	–
4.	डीए0वी0 इण्टर कालेज, उरई	60	–
5.	श्री कृष्णा इण्टर कालेज, पिरौना	–	60
6.	ठक्कर बाबा इण्टर कालेज, कालपी	60	–
7.	अमरचन्द्र माहेश्वरी इण्टर कालेज, कोंच	60	–
8.	कमला नेहरू इण्टर कालेज, कोंच	–	60
9.	आर्य कन्या इण्टर कालेज, जालौन	–	60
10.	बुन्देलखण्ड इण्टर कालेज, माधौगढ़	60	–
	योग	**300**	**300**

3. अनुसंधान अभिकल्प :

प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश्य आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के सन्दर्भ में अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के प्रभाव से सम्बन्धित होने के कारण एक्स पोस्ट फैक्टो प्रकार का अध्ययन है। अर्थात प्रस्तुत अध्ययन अन्वेषक प्रकृति का है। स्वतंत्र परिर्वत पहले से ही विद्यमान है तथा अन्वेषक का कार्य आश्रित परिवर्त का परीक्षा के साथ प्रारम्भ होता है। स्वतंत्र परिवर्त का अध्ययन आश्रित परिवर्त के साथ पारस्परिक सम्भावित सम्बन्धों के संदर्भ में किया जाना है।

स्वतंत्र परिवर्त–

(1) मनोस्नायुविकृति

(2) उपलब्धि अभिप्रेरणा

(3) व्यक्तित्व

आश्रित परिवर्त :

(1) आत्म प्रत्यय

4. परीक्षण विवरण :

परिकल्पना निर्माण और प्रतिदर्श के चयन के पश्चात प्रदत्त संग्रह हेतु अगला आवश्यक पद उपर्युक्त परीक्षण का चयन है। उपयुक्त परीक्षण का चयन समस्या के उद्देश्यों पर निर्भर करता है। प्रस्तुत अध्ययन का सम्बन्ध इण्टरमीडिएट कक्षाओं में अध्ययनरत् 15 से 18 वर्ष के आयु वर्ग की छात्र/छात्राओं से है। अतः निम्नलिखित परीक्षणों का उपयोग प्रदत्त संग्रह हेतु किया गया है।

(1) आत्म प्रत्यय मापनी (तारेश भाटिया, सुमन त्रिपाठी)

(2) मनोस्नायुविकृति परीक्षण (ओनियाल और विष्ट)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण (तारेश भाटिया)

(4) व्यक्तित्व अनुसूची (तारेश भाटिया)

(1) आत्म प्रत्यय मापनी : (तारेश भाटिया और सुमन त्रिपाठी) :

प्रस्तुत मापनी में आठ क्षेत्र हैं। इन आठों क्षेत्रों में से सातवें क्षेत्र को पांच उप भागों में विभक्त किया गया है। ये अपने आप स्वतंत्र भाग है। इन आठों क्षेत्र योग भी एक अपने आप में एक क्षेत्र है। जो सम्पूर्ण आत्म प्रत्यय को प्रदर्शित करता है। इस परीक्षण द्वारा आत्म प्रत्यय के निम्नलिखित प्रकारों का मापन होता है।

1. बौद्धिक योग्यता तथा शैक्षिक स्तर
2. आत्म विश्वास
3. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव
4. सामाजिकता
5. संवेगात्मक स्थिरता
6. मानसिक स्वास्थ्य
7. स्वभावगत गुण
   (अ) प्रभुत्वशाली
   (ब) सक्रिय
   (स) शान्त
   (द) उत्तरदायित्व
   (ध) लक्ष्य प्राप्ति तक जुटे रहना
8. श्रेष्ठता की भावना

प्रस्तुत आत्म प्रत्यय मापनी में 80 पद हैं। इनका प्रशासन समूह में अथवा व्यक्तिगत रूप से किया जा सकता है। समय की कोई निश्चित सीमा नहीं है। फिर भी प्रयोज्यों से उम्मीद की जाती है कि वे लगभग 30 मिनट में आत्म प्रत्यय मापनी में दिये गये पदों का उत्तर देगें। परीक्षण प्रशासन से पूर्व प्रयोज्यों को निम्न निर्देश दिये जाते हैं।

निर्देश : आपके दैनिक व्यवहार व परिस्थितियों से सम्बन्धित कुछ कथन दिये गये हैं। प्रत्येक कथन के पांच विकल्प दिये गये हैं। अत्यधिक सहमत, सहमत अनिश्चित, असहमत, अत्यधिक असहमत। जिस विकल्प को आप सही समझते हैं उस पर सही का चिन्ह (✓)लगा दें। इनमें कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है। कृपया उत्तर भरते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखें–

1. कृपया अपना नाम कहीं न लिखें।
2. कृपया सभी प्रश्नों के उत्तर सही चिन्ह (✓) लगाकर दें।
3. प्रश्नों के उत्तर उसी क्रम में दें, जिसमें वे प्रकाशित हों, यद्यपि आपको ऐसा लग सकता है कि कहीं–कही प्रश्न दोहरा दिये गये हैं।

4. कृपया उत्तर देते समय किसी दूसरे से सलाह न लें।
5. किसी प्रश्न पर अत्यधिक समय न लगायें। आपके मस्तिष्क में जो उत्तर तुरन्त एवं सर्वप्रथम आता हो, उसे ही दें।

पद विश्लेषण : प्रारम्भ में इस परीक्षण में आठों क्षेत्रों में 15 से 20 पदों को लिखा गया था इस प्रकार इस परीक्षण में 145 पद थे। इन पदों को पांच व्यक्ति को मूल्यांकन करने के लिये दिया। उन्होने 100 प्रतिशत ज्ञात करने वाले 110 पदों को रखा तथा 35 पदों को बाहर निकाल दिया।

इस परीक्षण के पदों की शुद्धता के लिये निर्देश देकर प्रतिदर्श रूप 250 विद्यार्थियों (पुरूष तथा स्त्रियों) पर किया, इनका आयु अन्तर 15 से 21 वर्ष के बीच था। प्रयोज्यों से इस पद से सहमत अथवा असहमत की प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिये कहा गया था। सभी पदों में पांच बिन्दु मापनी पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णतः असहमत थी। बाद में इसमें 30 पदों को हटा दिया गया, इसमें 80 पद रह गये हैं।

विश्वसनीयता एवं वैधता : इस परीक्षण की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिये पुर्न परीक्षण विधि का प्रयोग किया है। परीक्षण को दूसरी बार निर्देश देकर साथ 35 दिन के अन्तर में 200 प्रयोज्य पर पुर्न परीक्षण किया। पुर्न परीक्षण विधि द्वारा प्रत्येक क्षेत्र की विश्वसनीयता इस प्रकार ज्ञात हुयी जो निम्न है–

क्रमांक	क्षेत्र	पुर्न परीक्षण विधि द्वारा विश्वसनीयता
1.	बौद्धिक योग्यता तथा शैक्षिक स्तर	.81
2.	आत्म विश्वास	.84
3.	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव	.75
4.	सामाजिकता	.79
5.	संवेगात्मक स्थिरता	.78
6.	मानसिक स्वास्थ्य	.82
7.	स्वभावगत गुण	.74
8.	श्रेष्ठता की भावना	.83

वैधता : आन्तरिक संगति द्वारा परीक्षण की निर्मित वैधता ज्ञात की गयी।

फलांकन : प्रस्तुत परीक्षण में धनात्मक पद का अंक निर्धारण पांच से एक तक तथा ऋणात्मक पद का अंक निर्धारण एक से पांच के क्रम में अंक प्रदान किये जाते हैं। निम्नलिखित तालिका में आत्म प्रत्यय के क्षेत्र, पद संख्या एवं धनात्मक तथा ऋणात्मक पदों का विवरण अंकित है।

क्रमांक	क्षेत्र	पद संख्या	धनात्मक पद 5—4—3—2—1	ऋणात्मक पद 1—2—3—4—5
1.	बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर	10	1,9, 65	17, 25,33, 41,49, 57, 73
2.	आत्म विश्वास	10	2,10,18,26,42, 50,58,66,74	34
3.	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव	10	3,11,19,35	27,43,51,59,67 75
4.	सामाजिकता	10	4,12,28,36,44 52,60,63,76	20
5.	संवेगात्मक स्थिरता	10	21	5,13,29,37,45, 53,61,69,77
6.	मानसिक स्वास्थ्य	10	6,14,22,.30, 38,46,54,62, 70,78	
7.	स्वभावगत गुण			
	अ. प्रभुत्वशाली	02	7,15	
	ब. सक्रिय	02	23,31	
	स. शान्त	02	39,47	
	द. उत्तरदायित्व	02	55,63	
	य. लक्ष्य प्राप्ति तक निरंतर जुटे रहना	02	71,79	
8.	श्रेष्ठता की भावना	10	8	16,24,32,40,48, 56,64,72,80

2. **मनोस्नायुविकृति** : (एम0पी0 ओनियाल तथा आभा रानी विष्ठ)

प्रस्तुत परीक्षण के द्वारा मनोस्नायुविकृति के निम्नलिखित छः क्षेत्रों का मापन किया जाता है।

(1) **चिन्ता प्रतिक्रिया** : इस क्षेत्र के अंतर्गत व्यक्ति की चिन्तास्नायुविकृति का मापन किया जाता है।

(2) **वियोजनात्मक प्रतिक्रिया** : इस क्षेत्र के अंतर्गत व्यक्ति के वियोजनात्मक व्यवहार जैसे बाधित स्मृति, निद्राभ्रमण आदि का मापन किया जाता है।

(3) **रूपान्तरित प्रतिक्रिया** : इस क्षेत्र के अंतर्गत व्यक्ति शारीरिक लक्षणों के साथ अस्वास्थ्य होता है लेकिन इस अस्वस्थ्यता का कारण शारीरिक नहीं होता है जैसे हिस्टीरिया आदि।

(4) **असंगत भय** : इस क्षेत्र के अंतर्गत व्यक्ति किसी वस्तु के प्रति असंगत भय रखता है। जैसे पानी से डरना, ऊंचे स्थान से डरना आदि।

(5) **मनोग्रस्थ बाध्यता प्रतिक्रिया** : इस क्षेत्र के अन्तर्गत व्यक्ति न चाहते हुये किसी बात को बार–बार सोचता है (मनोग्रस्थता) तथा किसी कार्य को न चाहते हुये बार–बार करता है।

(6) **विषादात्मक प्रतिक्रिया** : इस क्षेत्र के अन्तर्गत व्यक्ति अनुभव करता है दुख, निराशा, अकेलेपन का आदि।

प्रस्तुत मापनी के अंतर्गत कुल 70 पद हैं जिसमें से 15 पद सकारात्मक हैं जबकि 19 पद नकारात्मक हैं। प्रत्येक पद के साथ एक पांच बिन्दु मापनी दी गयी है। प्रयोज्य को किसी एक बिन्दु पर सहमति का एक चिन्ह लगाना है।

फलांकन विधि : सकारात्मक पद के लिये निम्नलिखित प्रकार से फलांकन किया जायेगा।

सदैव	बहुधा	कभी कभी	बहुत कम	कभी नहीं
5	4	3	2	1

नकारात्मक पदों की निम्नलिखित प्रकार से फलांकन किया जाता है।

सदैव	बहुधा	कभी कभी	बहुत कम	कभी नहीं
1	2	3	4	5

विश्वसनीयता एवं वैधता : प्रस्तुत परीक्षण की विश्वसनीयता पुर्नपरीक्षण विधि द्वारा एक माह के अन्तराल तथा 45 दिन के अन्तराल से क्रमशः .90 तथा .89 प्राप्त हुयी। प्रस्तुत मापनी की वैधता कुन्डु के मनोस्नायुव्यक्तित्व सूची के परिणामों के साथ ज्ञात की गयी।

3. **उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण** (तारेश भाटिया) :

प्रस्तुत परीक्षण में प्रारम्भिक स्तर पर 40 पद निर्मित किये गये। प्रत्येक पद के उत्तर **A** तथा **B** दो विकल्प के रूप में दिये जाने हाते हैं। दोनों ही विकल्प उपलब्धि अभिप्रेरणा उन्मुख होते हैं। किन्तु उनमें से एक विकल्प अन्य उपलब्धि उन्मुखता को प्रदर्शित करता है। व्यक्ति को किसी एक विकल्प पर सही (✓) का चिन्ह लगाने के लिये कहा जाता है जिस विकल्प को वह अधिक पसन्द करता है। परीक्षण को 15 से 20 वर्ष के 300 छात्र/छात्राओं पर पद विश्लेषण के उद्देश्य से प्रकाशित किया गया प्राप्त अंकों के आधार पर उच्च अंक प्राप्त करने वाले तथा निम्नतम अंक प्राप्त करने वाले दो समूहों का निर्धारण किया गया। दोनों समूहों के बीच प्रत्येक पद की विभेद शक्ति की गणना टी परीक्षण के आधार पर की गयी। इस आधार पर 40 पदों में से उच्च विभेदन शक्ति रखने वाले 25 पदों का चयन किया गया। इस प्रकार परीक्षण अन्तिम रूप में 25 पदों तथा प्रत्येक पद के दो विकल्पों के साथ उपलब्धि अभिप्रेरणा का मापन करता है।

विश्वसनीयता एवं वैधता : प्रस्तुत परीक्षण की विश्वसनीयता 30 दिन के अन्तराल के बाद पुर्नपरीक्षण विधि द्वारा की गयी जो कि .82 प्राप्त हुयी परीक्षण की विश्वसनीयता अर्धबिच्छेदन विधि द्वारा भी ज्ञात की गयी जो कि .86 प्राप्त हुयी। इस प्रकार यह दोनों ही प्रकार की विश्वसनीयता स्पष्ट करती है कि परीक्षण उच्च रूप से विश्वसनीय है।

प्रस्तुत परीक्षण की वैधता राव के उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण के परिणामों के साथ की गयी। इसके आधार पर परीक्षण की वैधता .88 प्राप्त हुयी।

फलांकन : परीक्षण की फलांकन विधि अत्यन्त सरल है। परीक्षण के 25 पद हैं। प्रत्येक पद के दो विकल्प हैं। यदि व्यक्ति उच्च उपलब्धि प्रेरक से सम्बन्धित विकल्प पर सही (✓) का चिन्ह लगाता है तब उसे दो अंक दिये जाते हैं। अन्यथा उसे शून्य अंक दिया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक पद में प्राप्त अंकों का योग किया जाता है। प्राप्त योग ही व्यक्ति की उपलब्धि अभिप्रेरणा प्राप्तांक कहा जाता है।

विवरण पुस्तिका में दी गई तालिका के अनुसार सही प्रतिक्रिया को दो अंक प्रदान किये जाने हैं। निम्नलिखित तालिका में A प्रतिक्रिया के सही कथन वाले पद एवं B प्रतिक्रिया के सही कथनों को अंकित किया गया है।

सही विकल्प	सही प्रतिक्रिया वाले कथन	कुल संख्या
A प्रतिक्रिया विकल्प	1,4,5,8,9,12,13,16,17,20,21,24,25	13
B प्रतिक्रिया विकल्प	2,3,6,7,10,11,14,15,18,19,22,23	12
	कुल पद	**25**

अधिकतम प्राप्तांक 50 हो सकते हैं। प्राप्तांकों की अधिकता उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रदर्शित करती है।

4. **अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व मापनी** (तारेश भाटिया) :

प्रस्तुत अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी सूची द्वारा व्यक्तित्व का अध्ययन हाँ अथवा नहीं के रूप में प्राप्त उत्तरों द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत परीक्षण की विश्वसनीयता पुर्नपरीक्षण विधि द्वारा .76 प्राप्त हुयी तथा अर्धबिच्छेदन विधि द्वारा .82 प्राप्त हुयी जिससे परीक्षण की उच्च विश्वसनीयता स्पष्ट होती है। परीक्षण की वैधता ज्ञात करने के उद्देश्य से परीक्षण के परिणामों की तुलना बाह्य कसौटी के रूप में डा0 जयप्रकाश द्वारा निर्मित परीक्षणों के परिणामों से की गई जो कि .85 प्राप्त हुयी।

फलांकन विधि : प्रस्तुत सूची के अन्तर्गत कुल 30 पद हैं जिनका उत्तर प्रयोज्य को हाँ अथवा नहीं में देना होता है। निम्नलिखित प्रतिक्रिया के अनुरूप प्रत्येक पद में (1) एक अंक प्रदान किया जाता है अन्यथा (0) शून्य अंक प्रदान किया जाता है। बाद में सभी अंकों का योग कर तालिका में प्रयोज्य के व्यक्तित्व प्रकार का निरीक्षण किया जाता है।

प्रतिक्रिया	कथन	कुल संख्या
हाँ प्रतिक्रिया वाले कथन	4,5,6,7,9,11,17,18,22,23,25	11
नहीं प्रतिक्रिया वाले कथन	1,2,3,8,10,12,13,14,15,16, 19,20,21,24,26,27,28,29,30	19
	कुल पद	**30**

अधिकतम प्राप्तांक 30 हो सकते हैं। प्राप्तांकों की अधिकता बहिर्मुखी व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है।

प्राप्तांक	व्यक्तित्व प्रकार
26 तथा अधिक	अत्यधिक बहिर्मुखी
22 से 25	बहिर्मुखी
10 से 21	उभयमुखी
5 से 9	अन्तर्मुखी
4 तथा कम	अत्यधिक अन्तर्मुखी

5. प्रदत्त संग्रह :

अध्ययन हेतु वांछित प्रतिदर्श का चयन जिन विद्यालयों से किया गया है। उनकी सूची ऊपर दी जा चुकी है। छात्र/छात्राओं का चयन समान संख्या में किया गया है। सर्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाचार्य से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित करके उन्हें अध्ययन का महत्व और उपयोगिता समझाई गई सभी प्रधानाचार्य और साथ ही साथ अध्यापकों ने प्रस्तुत अनुसंधान के प्रति अपनी रूचि प्रकट की और प्रदत्तों के संग्रह हेतु सभी आवश्यक सुविधायें उपलब्ध करायी।

प्रदत्त संग्रह हेतु निम्न प्रक्रिया का अनुपालन किया गया। सबसे पहले अनुसंधानकर्ता ने छात्रों/छात्राओं के एक समूह को लक्ष्योन्मुख भाषण दिया। उन्हें शोध अध्ययन के उद्देश्य के विषय में बतलाया गया। उपस्थित पंजिका से प्रत्येक पांचवे छात्र/छात्रा का चयन किया गया। छात्र/छात्रा के समूह पर आत्म प्रत्यय अनुसूची, का मनोस्नायुविकृति परीक्षण, उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण व व्यक्तित्व परीक्षण का प्रशासन किया गया। छात्रों को यह विश्वास दिलाया गया कि उनके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रखे जायेगें। इसलिये सभी छात्र निर्भय होकर निसंकोंच सही सूचनायें दें।

इस प्रकार उपर्युक्त सभी चारों परीक्षण के प्रशासन में लगभग दो घन्टे का समय लगा। अनुसंधानकर्ता ने शोध कार्य में एकरूपता बनाये रखने के उद्देश्य से प्रशासन और फलांकन स्वयं ही की, फलांकन प्रक्रिया विवरण पुस्तिका में ही अंकित निर्देशों के अनुसार ही की गयी। सबसे पहले छात्रों के समूह को आत्म प्रत्यय परीक्षण दिया गया। छात्रों से कहा कि वे उत्तर पत्र पर सामान्य सूचनाओं की पूर्ति करें और परीक्षण में दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें इसके पश्चात अनुसंधानकर्ता ने भी निर्देशों को पढ़कर सुनाया और सभी सन्देह दूर किये। इस परीक्षण के प्रशासन में लगभग 40 मिनट का समय लगा। प्रशासन के पश्चात छात्रों से परीक्षण वापस लिया गया। इसके पश्चात प्रयोज्यों को डा० तारेश भाटिया का बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी परीक्षण दिया गया और कहा गया कि परीक्षण में दिये गये निर्देशों को पढ़ें। इस परीक्षण में 30 प्रश्न है जिनके दो सम्भावित उत्तर हैं। उनमें से किसी केवल एक जिससे भी आप अधिक सहमत हों के आगे बने आयत में सही (✓) का निशान लगायें और दूसरे को खाली छोड़ दें। इस परीक्षण के प्रशासन में 10 मिनट का समय लगा। अगला परीक्षण देने से पूर्व छात्रों को 10 मिनट का विश्राम दिया गया।

इसके पश्चात प्रयोज्यों को उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण दिया गया। छात्रों से कहा गया कि वे मुख पृष्ठ पर दी गयी वांछनीय सूचनाओं को भर लें व निर्देशों को भी ध्यान से देख लें। परीक्षण में 25 कथन हैं जिनके दो सम्भावित उत्तर हैं।

छात्र अपने से सम्भावित कथन पर सही (✓) का निशान लगायें समय की कोई सीमा न होने के बावजूद भी छात्रों ने इस परीक्षण को 10 मिनट में पूरा कर लिया। इसके पश्चात छात्रों को डा0 ओनियाल और विष्ठ का मनोस्नायुविकृति परीक्षण दिया गया। छात्रों से कहा गया कि वे उत्तर पत्र पर सामान्य सूचनाओं की पूर्ति करें व परीक्षण में दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें। परीक्षण में 70 प्रश्न हैं। जिनके पांच सम्भावित उत्तर हैं। सदैव, बहुदा कभी–कभी, बहुत कम, कभी नहीं। छात्र जिस प्रकार से भी अधिक सहमत हों उसके आगे बने आयत में सही (✓) का निशान लगा दें। इस परीक्षण प्रशासन में लगभग 40 मिनट का समय लगा। सम्पूर्ण प्रदत्तों का संकलन करने के पश्चात सांख्यकीय गणना के आधार पर निष्कर्षों को ज्ञात करने के लिये अनुसंधानकर्ता अब तत्पर हो गया।

6. सांख्यकीय विश्लेषण :

प्रस्तुत अध्ययन की सांख्यकीय गणनाओं में वर्णात्मक और आनुमानिक दोनों ही सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। वर्णात्मक सांख्यकीय तकनीकी के अंतर्गत मध्यमान, प्रामाणिक विचलन और चतुर्थांश विचलन की गणना की गई है। आनुमानिक सांख्यकीय के अंतर्गत टी मान और एफ अनुपात की गणना शामिल है। मनोस्नायुविकृति परीक्षण उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण एवं व्यक्तित्व परीक्षण की स्थानीय व्याख्याओं और वर्गीकरण हेतु चतुर्थांश विचलन का प्रयोग किया गया। आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव जानने के लिये टी मान की गणना की गयी। जब कि उपरोक्त में से किन्हीं दो परिवर्तियों का आत्म प्रत्यय पर अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण का प्रयोग किया गया है।

अध्याय-चतुर्थ

अध्याय–४

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्याय में प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण उनका विश्लेषण, व्याख्या व परिणाम प्रस्तुत किये गये हैं। प्रदत्तों का विश्लेषण और उनकी व्याख्या के लिये 'टी' परीक्षण एवं 'एफ' अनुपात की साँख्यकीय विधि अपनायी गयी है। प्राप्त प्रदत्तों का साँख्यकीय विश्लेषण निम्नलिखित दो भागों के अन्तर्गत किया गया है।

भाग–अ : इस भाग में आत्म प्रत्यय पर तीन परिवर्त्य मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा व्यक्तित्व के प्रभाव का अलग–अलग अध्ययन किया गया है। अतः प्रस्तुत भाग को निम्नलिखित तीन उपभागों में विभाजित किया गया है।

(1) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव
(2) आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव
(3) आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व का प्रभाव

भाग–ब : इस भाग में आत्म प्रत्यय पर तीनों परिवर्त्यों (मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व) के अन्तर्क्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस सन्दर्भ में प्रस्तुत भाग को पुनः तीन उप भागों में विभाजित किया गया है।

(1) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का अन्तर्क्रियात्मक प्रभाव
(2) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का अन्तर्क्रियात्मक प्रभाव
(3) आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व का अन्तर्क्रियात्मक प्रभाव

भाग-अ : आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त आत्म प्रत्यय मापनी के द्वारा आत्म प्रत्यय के आठ प्रकारों का मापन किया गया है। अतः अग्रान्कित पृष्ठों में आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति के प्रभावों का अध्ययन निम्नलिखित नौ शीर्षकों में किया गया है।

(1) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव
(2) बौद्धिक योग्यता पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव
(3) आत्म विश्वास पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव
(4) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव
(5) सामाजिकता पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव
(6) संवेगात्मक स्थिरता पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव
(7) मानसिक स्वास्थ्य पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव
(8) स्वभावगत विशेषताओं पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव
(9) श्रेष्ठता की भावना पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव

प्रथम और तृतीय चतुर्थांश विचलन (Q_1 एवं Q_3) के आधार पर मनोस्नायुविकृति के प्राप्तांकों को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा गया है।

(1) निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक (N= 241)
(2) औसत मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक (N= 261)
(3) उच्च मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक (N= 98)

मनोस्नायुविकृति, आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है। यह ज्ञात करने के लिये मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांकों के मध्य 'एफ' अनुपात और 'टी' परीक्षण की सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया। 'एफ' अनुपात के माध्यम से तीनों समूहों के मध्य एक साथ तुलना की जा सकती है। जबकि 'टी' परीक्षण दो समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये एक शक्तिशाली परीक्षण है।

(1) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव :

मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.1 में किया गया है।

तालिका 4.1 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	मनोस्नायु विकृति के स्तर	आत्म प्रत्यय			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	241	290.69	27.84		t_{1-2}= 3.96*
2	औसत	261	281.31	24.93	15.78*	t_{2-3}= 2.29**
3.	उच्च	98	273.91	28.07		t_{1-3}= 4.99*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.1 से प्रदर्शित है कि निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय का मध्यमान प्राप्तांक 290.69, प्रा0वि0 27.84, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 281.31, प्रा0वि0 24.93 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 273.91, प्रा0वि0 28.07 है। इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 15.78 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। 'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत व निम्न–उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 3.96, t_{1-3}=4.99) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं जबकि औसत–उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{2-3}=2.29) 0.05 स्तर पर सार्थक है।
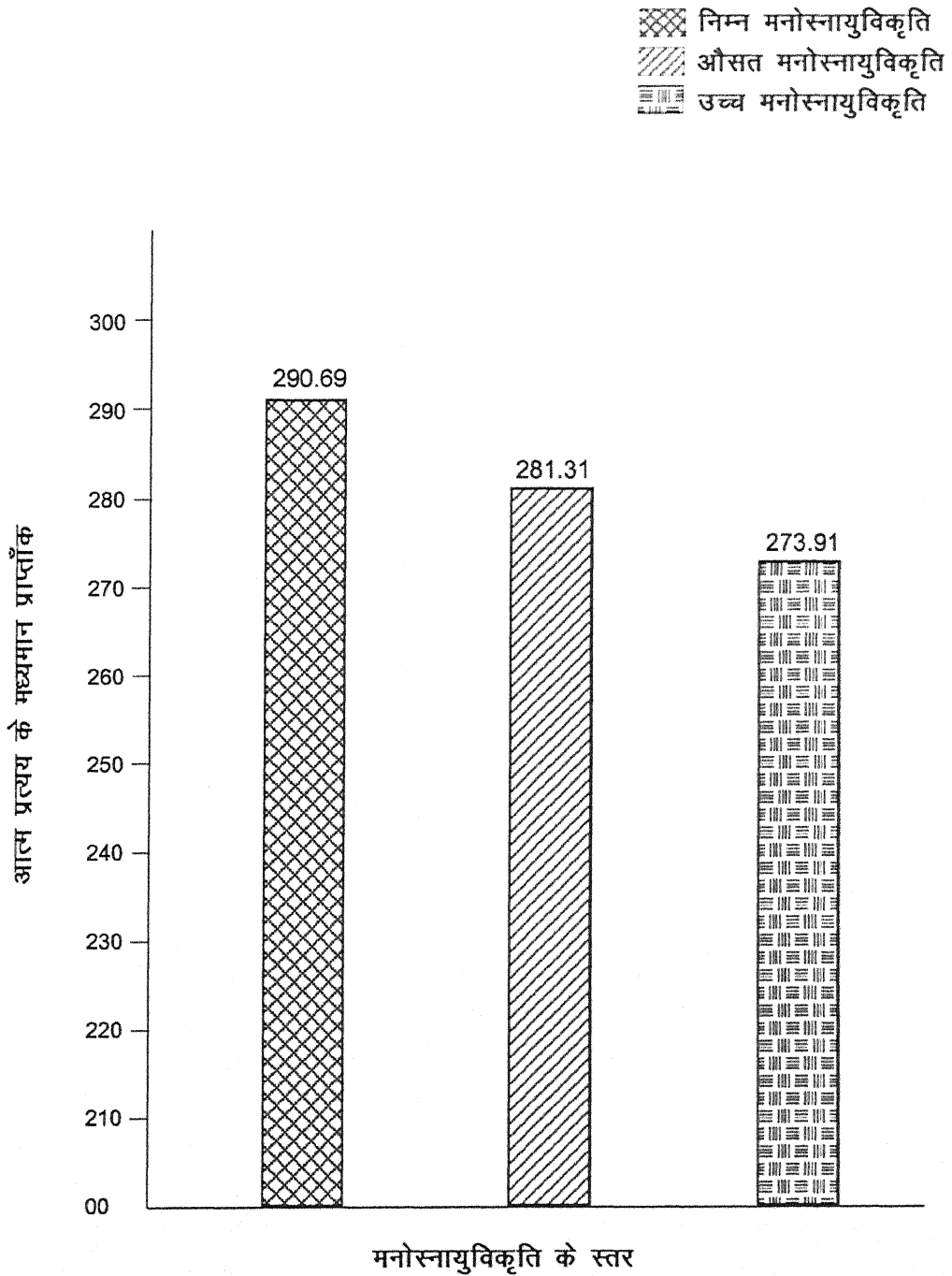
चित्र–1 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्ताँक

बौद्धिक योग्यता पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव :

मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.2 में किया गया है।

तालिका 4.2 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	मनोस्नायु विकृति के स्तर	बौद्धिक योग्यता			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	241	36.31	6.07		t_{1-2}= 4.65*
2	औसत	261	33.80	6.01	19.44*	t_{2-3}= 2.26**
3.	उच्च	98	31.97	7.15		t_{1-3}= 5.29*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.2 से प्रदर्शित है कि निम्न मनोस्नायुविकृति पर बौद्धिक योग्यता का मध्यमान प्राप्तांक 36.31, प्रा0वि0 6.07, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 33.80, प्रा0वि0 6.01 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 31.971, प्रा0वि0 7.15 है। इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 19.44 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य है है कि मनोस्नायुविकृति बौद्धिक योग्यता को 0.01 स्तर पर ार्थक रूप से प्रभावित करती है। 'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत व निम्न–उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}=4.65, t_{1-3}=5.29) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं इसी प्रकार औसत– उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य प्राप्त बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांकों के बीच प्राप्त 'टी' मान (t_{2-3}=2.26) 0.05 स्तर पर सार्थक है।
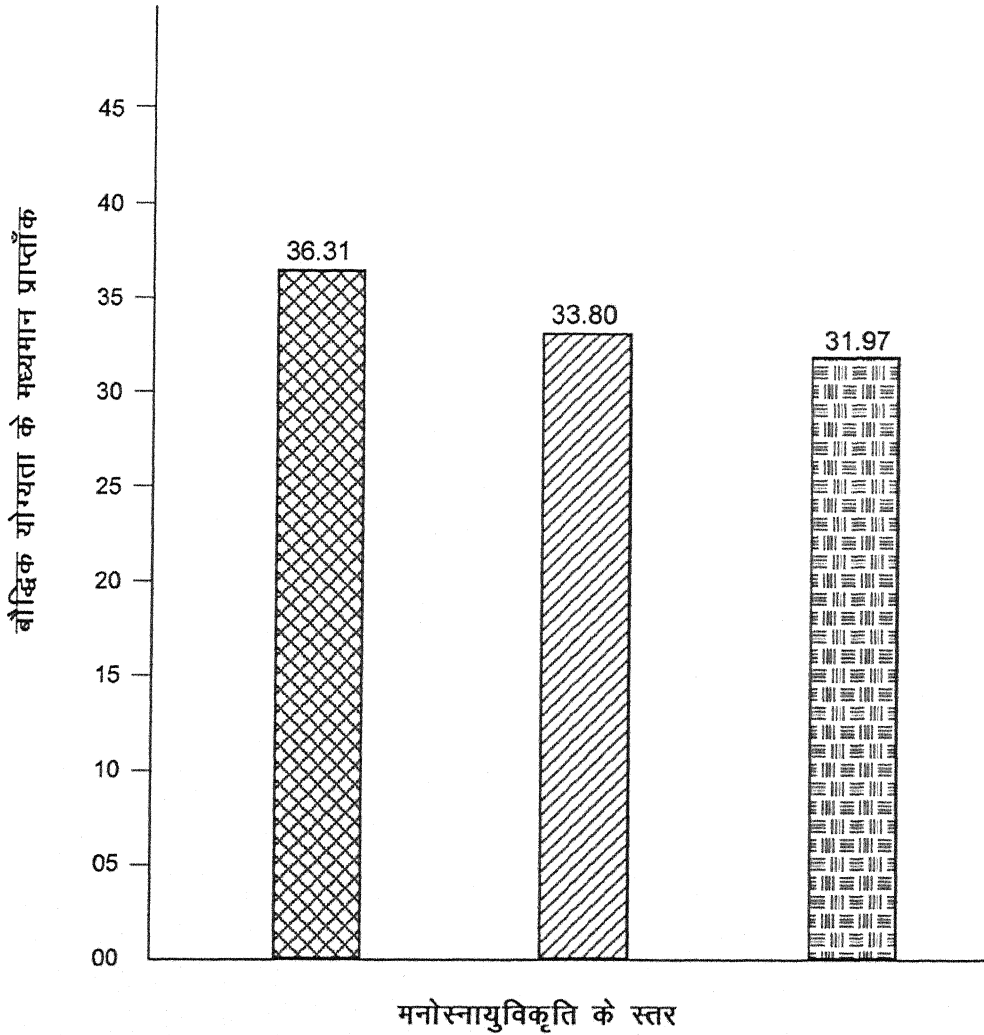
चित्र–1 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्ताँक

आत्म विश्वास पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव :

मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.3 में किया गया है।

तालिका 4.3 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	मनोस्नायु विकृति के स्तर	आत्म विश्वास			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	241	39.34	5.91		t_{1-2}= 3.08*
2	औसत	261	37.77	5.49	5.29**	t_{2-3}= 0.23
3.	उच्च	98	37.63	5.49		t_{1-3}= 2.59*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.3 से प्रदर्शित है कि निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्ययः आत्म विश्वास का मध्यमान प्राप्तांक 39.34, प्रा0वि0 5.91, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 37.77, प्रा0वि0 5.49 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 37.63, प्रा0वि0 5.49 है। जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य है है कि मनोस्नायुविकृति आत्म विश्वास को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत व निम्न–उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 3.08, t_{1-3}=2.59) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं जबकि औसत– उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य प्राप्त आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{2-3}=0.23) 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
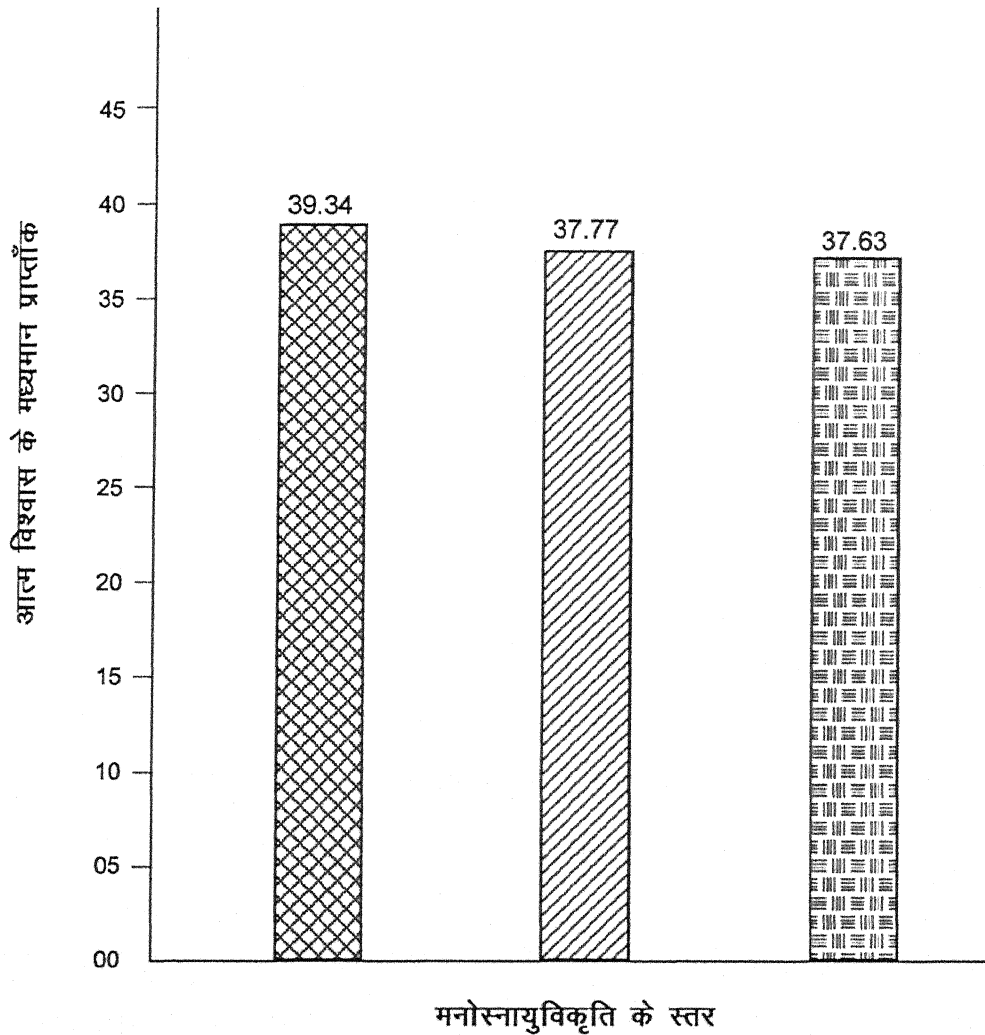
चित्र–1 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्ताँक

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शोष्ठव पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव :

मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.4 में किया गया है।

तालिका 4.4 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित स्वास्थ्य एवं शारीरिक शोष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	मनोस्नायु विकृति के स्तर	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	241	39.94	5.08		t_{1-2}= 4.89*
2	औसत	261	34.59	5.55	16.0*	t_{2-3}= 1.16
3.	उच्च	98	33.73	6.45		t_{1-3}= 4.39*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.4 से प्रदर्शित है कि निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्ययः स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव का मध्यमान प्राप्तांक 39.9, प्रा0वि0 5.08, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 34.5, प्रा0वि0 5.55 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 33.73, प्रा0वि0 6.45 है। और इनके मध्य प्राप्त 'एफ अनुपात 16.0 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य है है कि मनोस्नायुविकृति आत्म प्रत्ययः स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत व निम्न–उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य प्राप्त आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांकों के बीच प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 4.89, t_{1-3}=4.39) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं जबकि औसत– उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों के बीच प्राप्त 'टी' मान (t_{2-3}=1.16) है जो 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है।
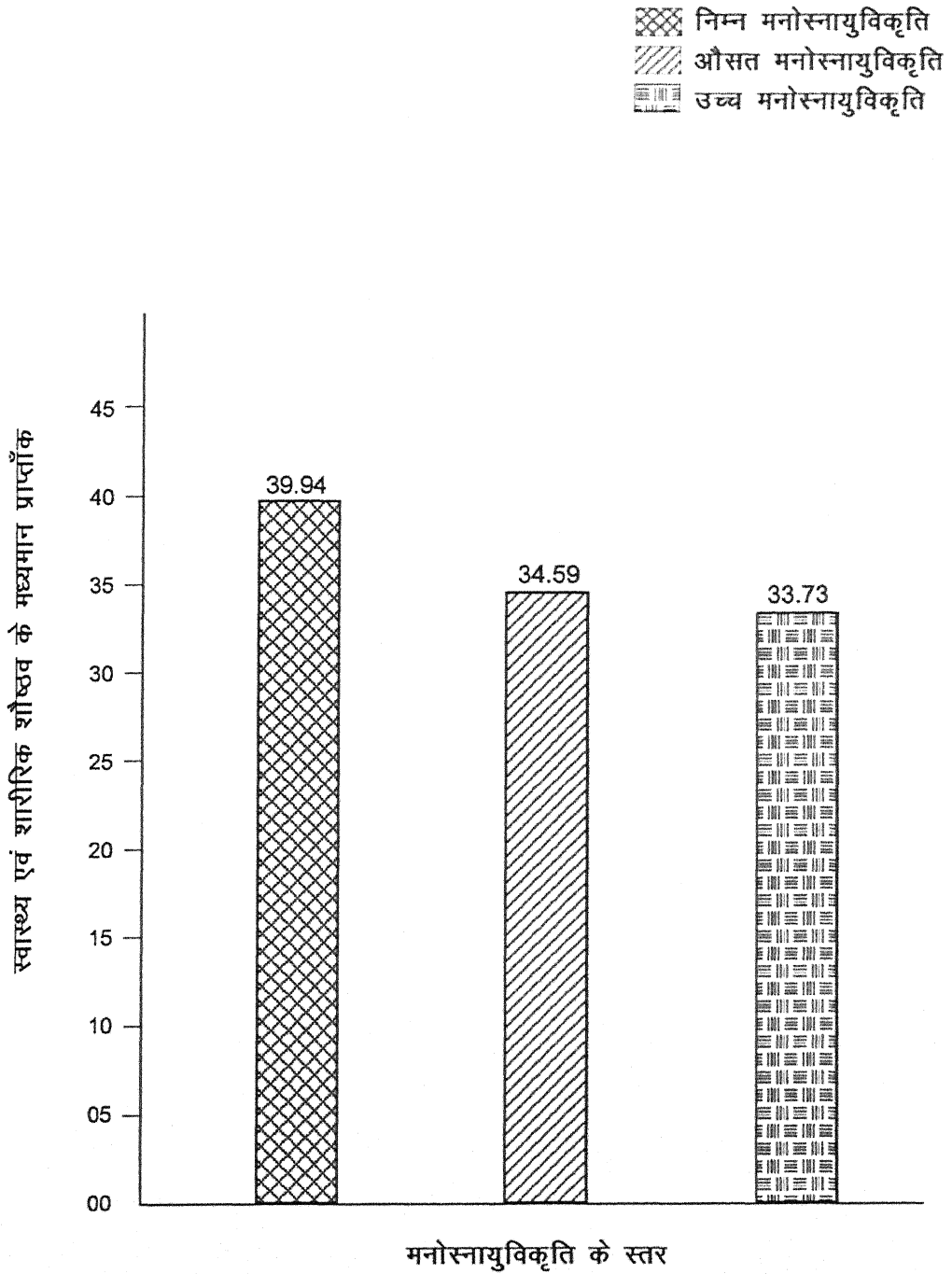
चित्र–1 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्ताँक

सामाजिकता पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव :

मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.5 में किया गया है।

तालिका 4.5 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रमाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	मनोस्नायु विकृति के स्तर	सामाजिकता			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	241	39.15	5.02		t_{1-2}= 2.07**
2	औसत	261	38.20	5.47	2.85	t_{2-3}= 2.44**
3.	उच्च	98	37.71	4.90		t_{1-3}= 0.82

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.5 से स्पष्ट है कि निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्ययः सामाजिकता का मध्यमान प्राप्तांक 39.15, प्रा0वि0 5.02, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 38.20, प्रा0वि0 5.47 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 37.71, प्रा0वि0 4.90 है। और इनके मध्य प्राप्त 'एफ अनुपात 2.85 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका तात्पर्य है है कि मनोस्नायुविकृति आत्म प्रत्ययः सामाजिकता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है।

'टी' मूल्यों की गणना से स्पष्ट है कि निम्न–औसत व निम्न–उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य प्राप्त आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांकों के बीच प्राप्त 'टी' मान क्रमशः (t_{1-2}= 2.07, t_{1-3}=2.44) 0.05 स्तर पर सार्थक हैं किन्तु निम्न–उच्च मनोस्नायुविकृति के मध य प्राप्त मध्यमान प्राप्तांक (t_{2-3}=0.82) है जो 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है।
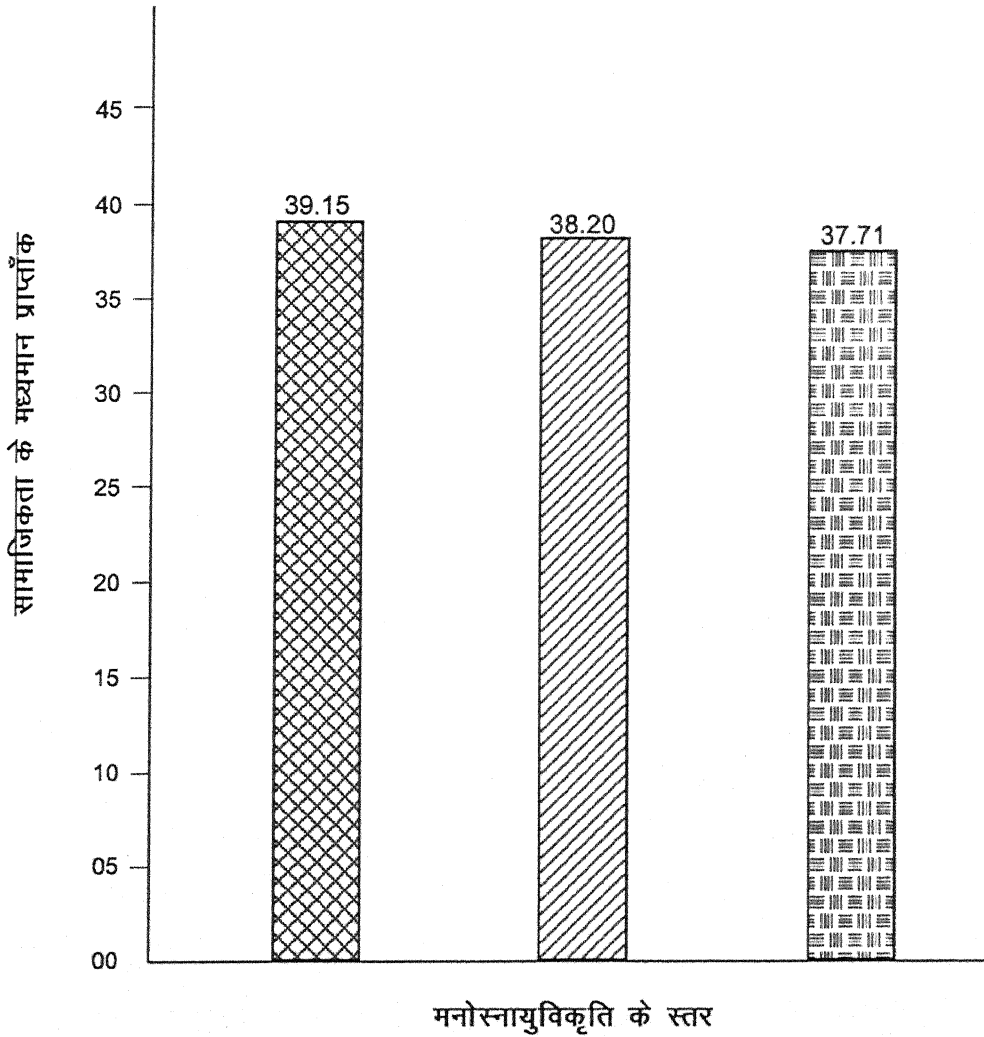
चित्र–5 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्ताँक

संवेगात्मक स्थिरता पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव :

मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.6 में किया गया है।

तालिका 4.6 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	मनोस्नायु विकृति के स्तर	संवेगात्मक स्थिरता			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	241	32.86	5.91		t_{1-2}= 4.36*
2	औसत	261	30.68	5.49	8.77*	t_{2-3}= 1.81
3.	उच्च	98	31.88	5.59		t_{1-3}= 1.44

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.6 से स्पष्ट है कि निम्न मनोस्नायुविकृति पर संवेगात्मक स्थिरता का मध्यमान प्राप्तांक 32.86, प्रा0वि0 5.91, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 30.68, प्रा0वि0 5.49 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 31.88, प्रा0वि0 5.59 है। और इनके मध्य प्राप्त 'एफ अनुपात 8.77 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य है है कि मनोस्नायुविकृति आत्म प्रत्ययः संवेगात्मक स्थिरता को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'टी' मूल्यों की गणना से स्पष्ट है कि निम्न–औसत मनोस्नायुविकृति के मध्य 'टी' मान क्रमशः (t_{1-2}= 4.36) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं किन्तु औसत–उच्च एवं निम्न–उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य प्राप्त 'टी' मान क्रमशः (t_{2-3}=1.81, t_{1-3}=1.44,) है जो 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है।
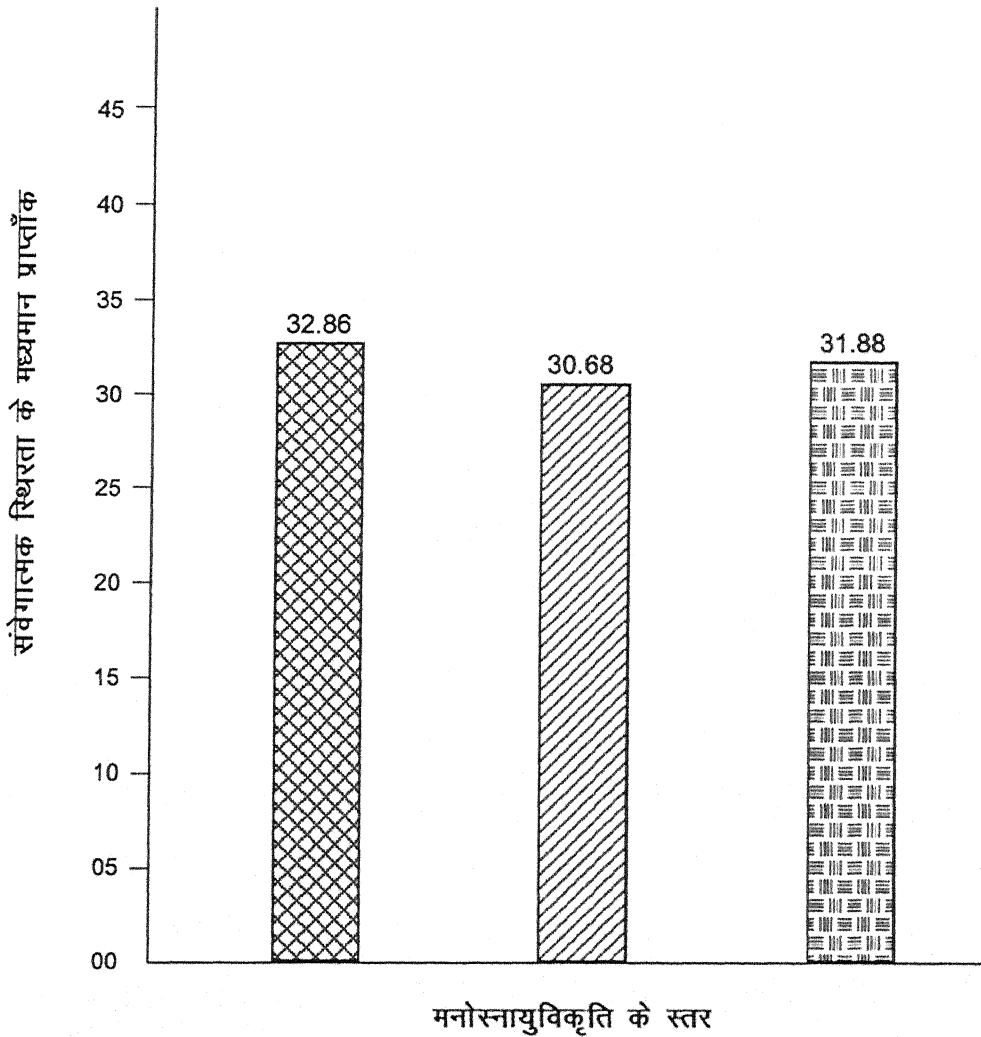
चित्र–6 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्ताँक

मानसिक स्वास्थ्य पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव :

मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.7 में किया गया है।

तालिका 4.7 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	मनोस्नायु विकृति के स्तर	मानसिक स्वास्थ्य			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	241	41.12	6.59		t_{1-2}= 1.15
2	औसत	261	40.44	6.65	1.05	t_{2-3}= 1.89
3.	उच्च	98	39.85	5.13		t_{1-3}= 0.89

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.7 से स्पष्ट है कि निम्न मनोस्नायुविकृति पर मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान प्राप्तांक 41.12, प्रा0वि0 6.59, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 40.44, प्रा0वि0 6.65 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 39.85, प्रा0वि0 5.13 है। और इनके मध्य प्राप्त 'एफ अनुपात 1.05 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि मनोस्नायुविकृति मानसिक स्वास्थ्य को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत, निम्न–उच्च एवं औसत–उच्च मनोस्नायुविकृति पर प्राप्त मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्राप्त मध्यमान प्राप्तांक (t_{1-2}= 1.15, t_{1-3}=1.89 एवं t_{2-3}=0.89) है जो 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है।
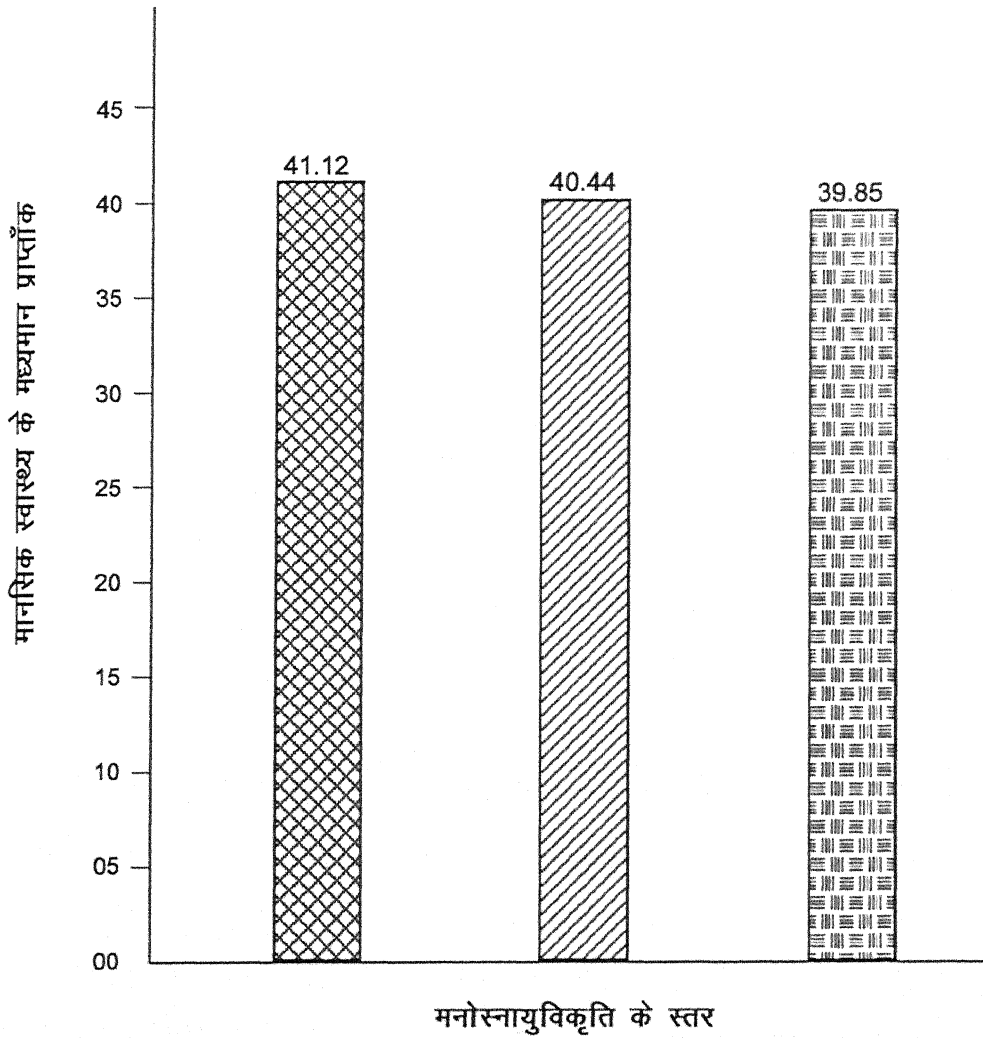
चित्र–7 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्ताँक

स्वभावगत विशेषताओं पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव :

मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.8 में किया गया है।

तालिका 4.8 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	मनोस्नायु विकृति के स्तर	स्वभावगत विशेषतायें			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	241	38.56	5.71		t_{1-2}= 0.22
2	औसत	261	38.46	4.33	15.99*	t_{2-3}= 4.21*
3.	उच्च	98	34.88	8.00		t_{1-3}= 5.18*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.8 से स्पष्ट है कि निम्न मनोस्नायुविकृति पर स्वभावगत विशेषतायें का मध्यमान प्राप्तांक 38.56, प्रा0वि0 5.71, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 38.46, प्रा0वि0 4.33 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 34.88, प्रा0वि0 8.00 है। और इनके मध्य प्राप्त 'एफ अनुपात 15.99 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि मनोस्नायुविकृति आत्म प्रत्ययः स्वभावगत विशेषताओं को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' मान (t_{1-2}= 0.22) 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। किन्तु औसत–उच्च तथा निम्न–उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्तांकों के बीच 'टी' मान क्रमशः (t_{2-3}= 4.21, t_{1-3}=5.18) है जा 0.01 स्तर पर सार्थक है।
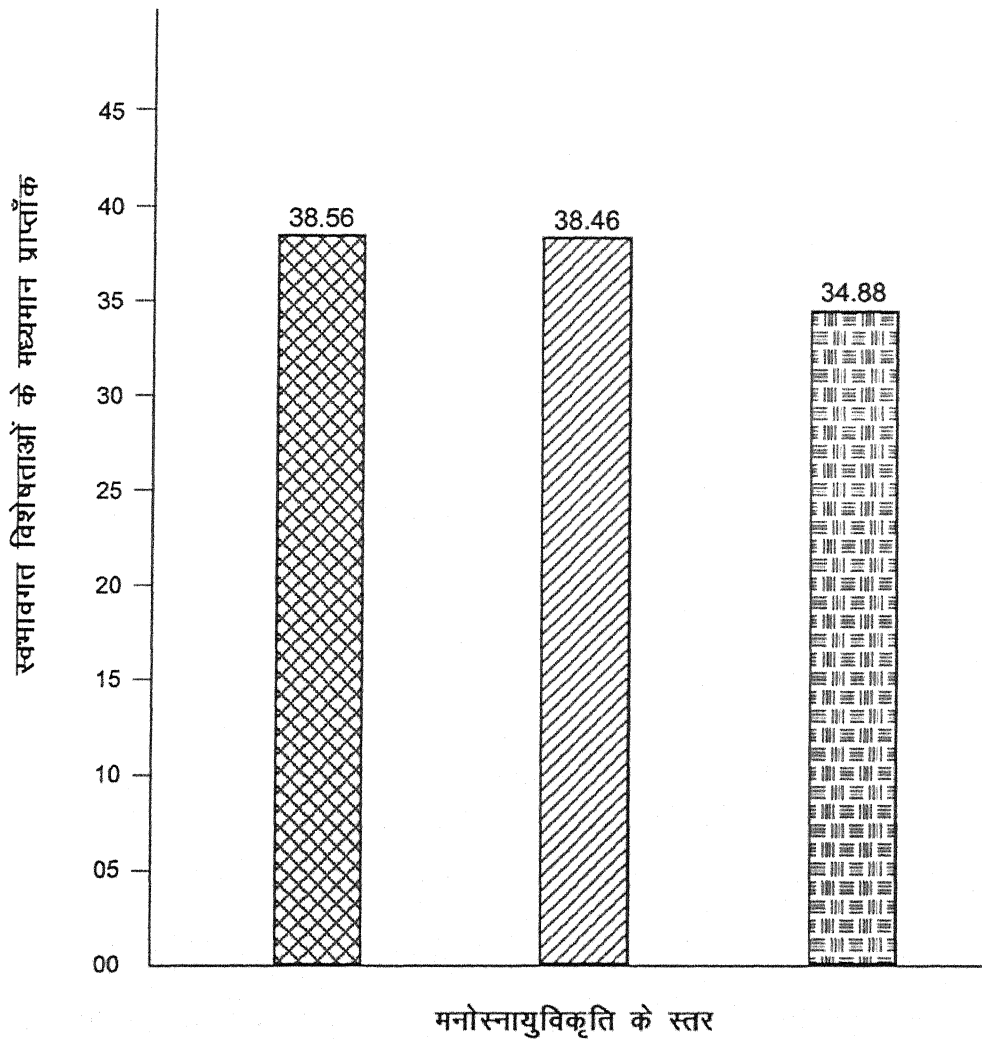
चित्र–8 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्ताँक

श्रेष्ठता की भावना पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव :

मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.9 में किया गया है।

तालिका 4.9 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	मनोस्नायु विकृति के स्तर	श्रेष्ठता की भावना			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	241	27.65	5.89		t_{1-2}= 3.02*
2	औसत	261	26.11	5.58	4.68*	t_{2-3}= 0.91
3.	उच्च	98	25.5	5.72		t_{1-3}= 3.16*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.9 से प्रदर्शित है कि निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्ययः श्रेष्ठता की भावना का मध्यमान प्राप्तांक 27.65, प्रा0वि0 5.89, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 26.11, प्रा0वि0 5.58 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 25.5, प्रा0वि0 5.72 है। इनके मध्य प्राप्त 'एफ अनुपात 4.68 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि मनोस्नायुविकृति श्रेष्ठता की भावना को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत एवं निम्न–उच्च मनोस्नायुविकृति पर प्राप्त श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांकों के बीच प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 3.02, t_{1-3}= 3.16) 0.01 स्तर पर सार्थक है। जबकि औसत–उच्च तथा निम्न–उच्च मनोस्नायुविकृति के मध्य श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य 'टी' मान (t_{2-3}= 0.91) है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
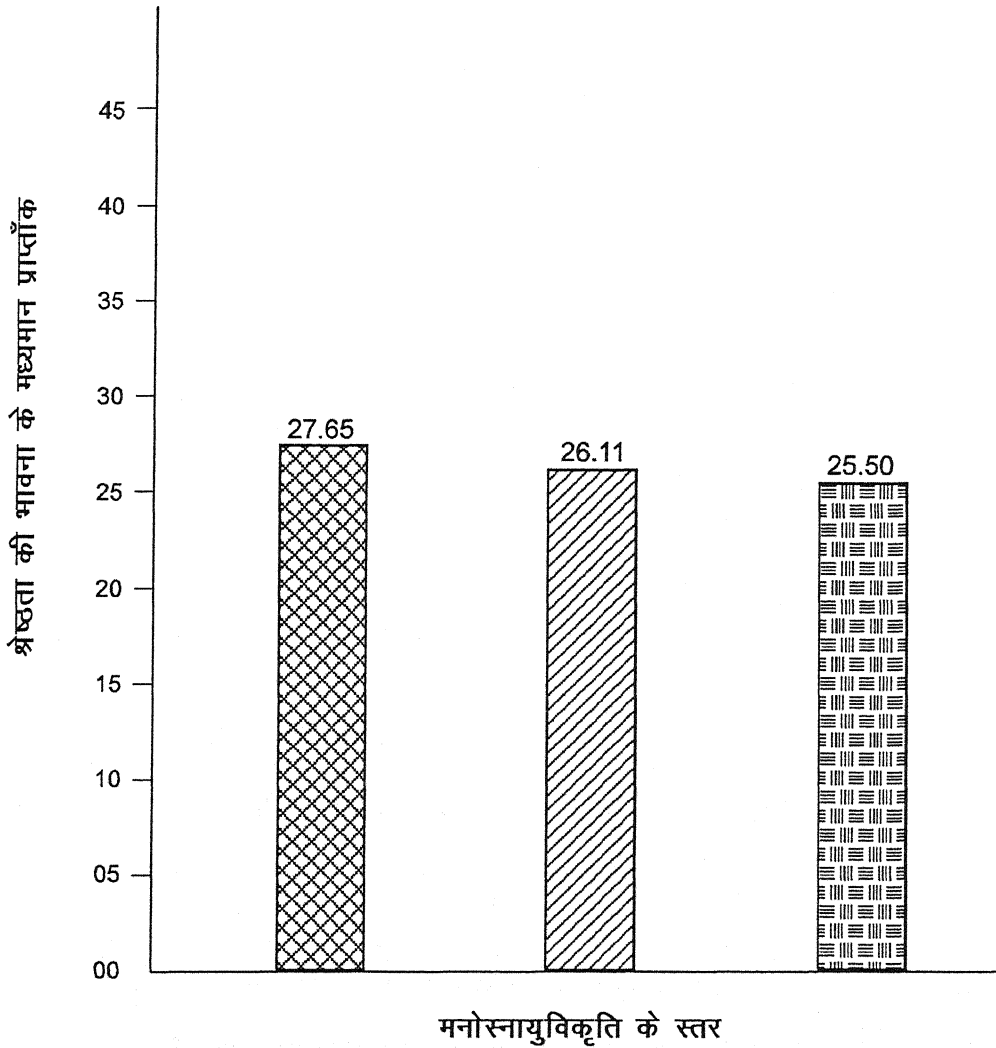
चित्र–9 : मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्ताँक

2- आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

अग्रान्कित पृष्ठों में आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभावों का अध्ययन निम्नलिखित नौ शीर्षकों में किया गया है।

(1) आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

(2) बौद्धिक योग्यता पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

(3) आत्म विश्वास पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

(4) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

(5) सामाजिकता पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

(6) संवेगात्मक स्थिरता पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

(7) मानसिक स्वास्थ्य पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

(8) स्वभावगत विशेषताओं पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

(9) श्रेष्ठता की भावना पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

प्रथम और तृतीय चतुर्थांश विचलन (Q_1एवं Q_3) के आधार पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा गया है।

(1) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक (N= 221)

(2) औसत उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक (N= 280)

(3) उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक (N= 99)

उपलब्धि अभिप्रेरणा, आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है। यह ज्ञात करने के लिये मनोस्नायुविकृति के तीनों स्तरों पर प्राप्त आत्म प्रत्यय के प्राप्तांकों के मध्य 'एफ' अनुपात और 'टी' परीक्षण की सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया। 'एफ' अनुपात के माध्यम से तीनों समूहों के मध्य एक साथ तुलना की जा सकती है। जबकि 'टी' परीक्षण दो समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये एक शक्तिशाली परीक्षण है।

आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.10 में किया गया है।

तालिका 4.10 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	उपलब्धि अभि0 के स्तर	आत्म प्रत्यय			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	221	277.32	26.26		t_{1-2}= 2.43**
2	औसत	280	283.27	28.50	5.19*	t_{2-3}= 1.32
3.	उच्च	99	287.57	29.48		t_{1-3}= 2.97*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.10 से स्पष्ट है कि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय का मध्यमान प्राप्तांक 277.32, प्रा0वि0 26.26, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 283.27, प्रा0वि0 28. 50 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 287.57, प्रा0वि0 29.48 है। इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 5.19 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}=2.43) 0.05 स्तर पर सार्थक है जबकि औसत उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{2-3}= 1.32) 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं हैं पर निम्न–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-3}=2.97) 0.01 स्तर पर सार्थक है।
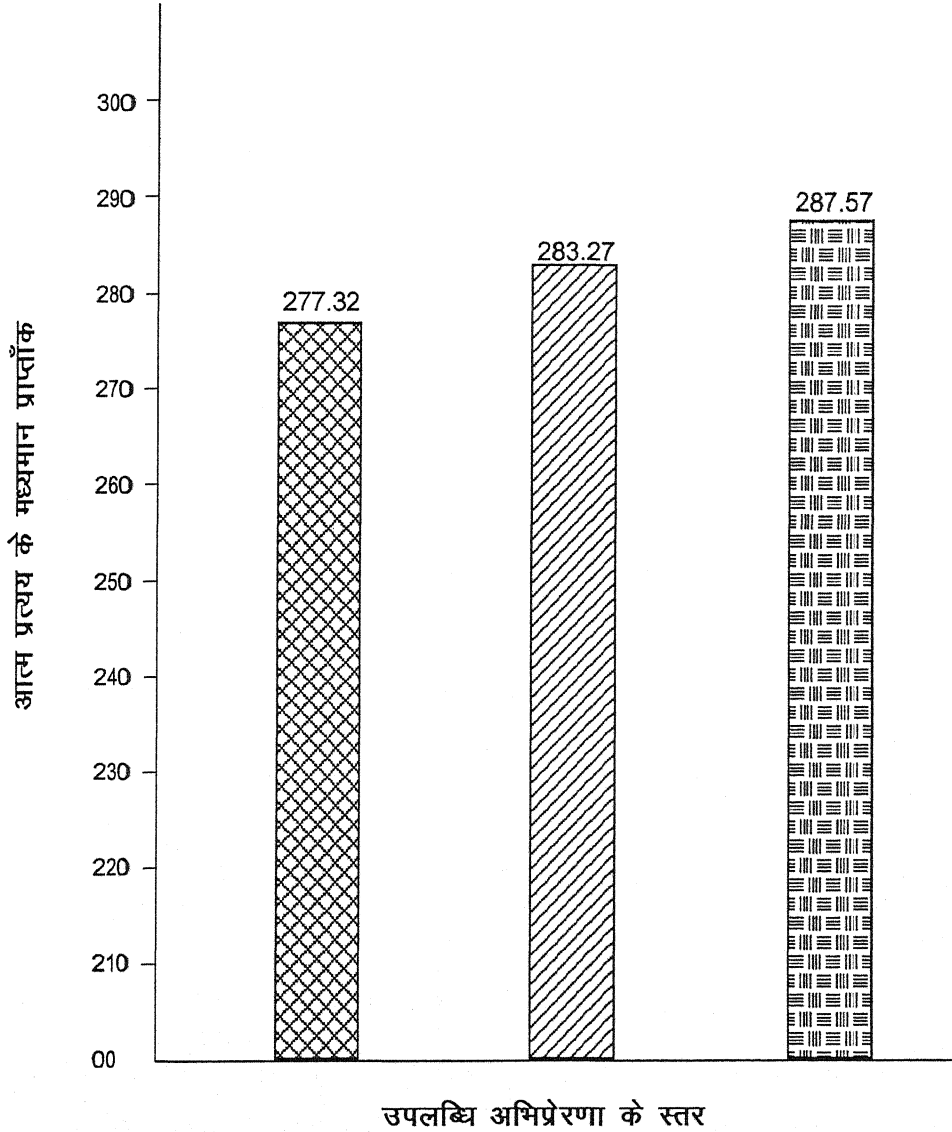
चित्र–10 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्ताँक

बौद्धिक योग्यता पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.11 में किया गया है।

तालिका 4.2 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	उपलब्धि अभि0 के स्तर	बौद्धिक योग्यता			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	221	33.40	5.72		t_{1-2}= 2.72*
2	औसत	280	34.87	6.30	6.22*	t_{2-3}= 0.93
3.	उच्च	99	35.65	7.52		t_{1-3}= 2.66*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.11 से प्रदर्शित है कि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर बौद्धिक योग्यता का मध्यमान प्राप्तांक 33.40, प्रा0वि0 5.72, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 34.87, प्रा0वि0 6.30 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 35.65, प्रा0वि0 7.52 है। इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 6.30 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य है है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा बौद्धिक योग्यता को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत व निम्न–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्तय के मध्यमान प्राप्तांक के मध्य प्राप्त 'टी' मान क्रमशः (t_{1-2}= 2.72, t_{1-3}=2.66) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं किन्तु औसत– उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{2-3}=0.93) 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
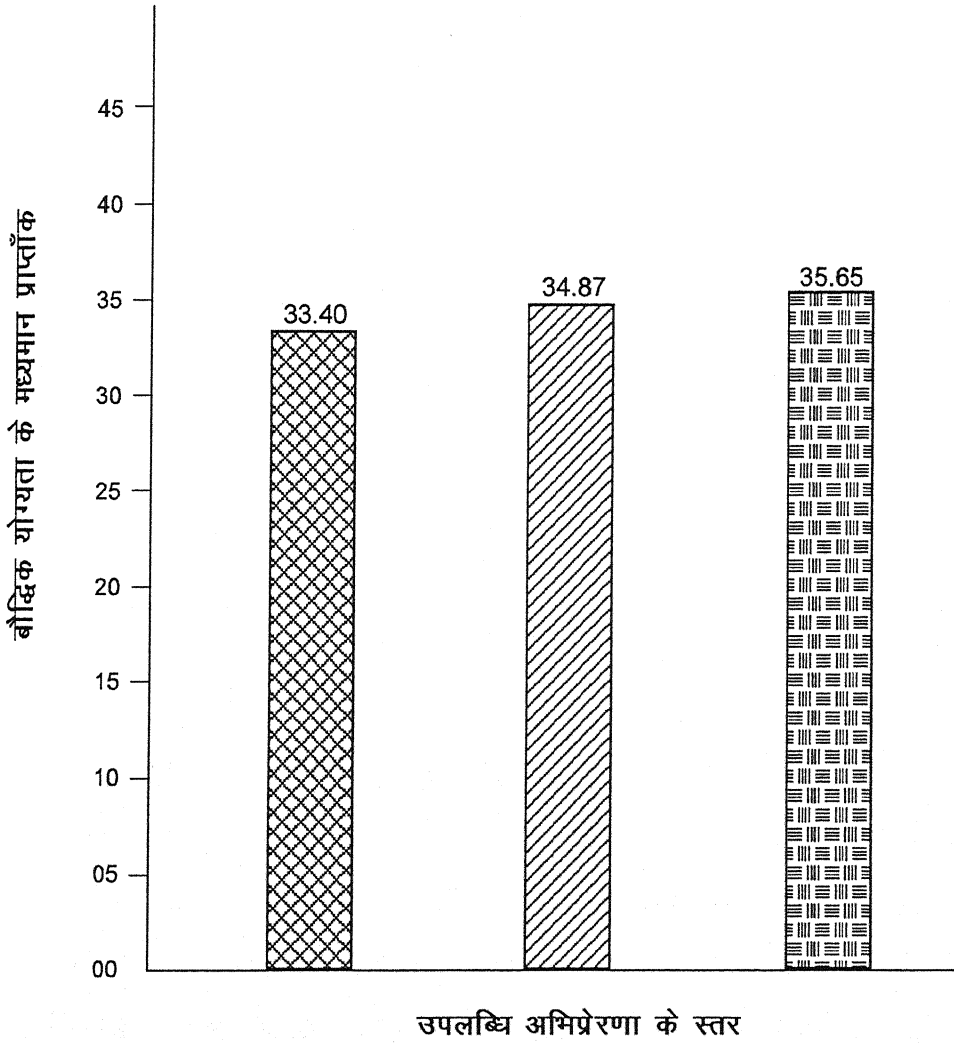
चित्र–11 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्ताँक

आत्म विश्वास पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.12 में किया गया है।

तालिका 4.12 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	उपलब्धि अभि0 के स्तर	आत्म विश्वास			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	221	38.62	5.00		t_{1-2}= 0.90
2	औसत	280	38.18	5.90	1.35	t_{2-3}= 1.49
3.	उच्च	99	39.44	4.70		t_{1-3}= 2.17**

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.12 से स्पष्ट है कि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्ययः आत्म विश्वास का मध्यमान प्राप्तांक 38.62, प्रा0वि0 5.00, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 38.18, प्रा0वि0 5.90 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 39.44, प्रा0वि0 4.70 है। इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 1.35 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म विश्वास को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत व औसत–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 0.92, t_{2-3}= 1.49) 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं हैं जबकि निम्न–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-3}=2.17) 0.05 स्तर पर सार्थक है।
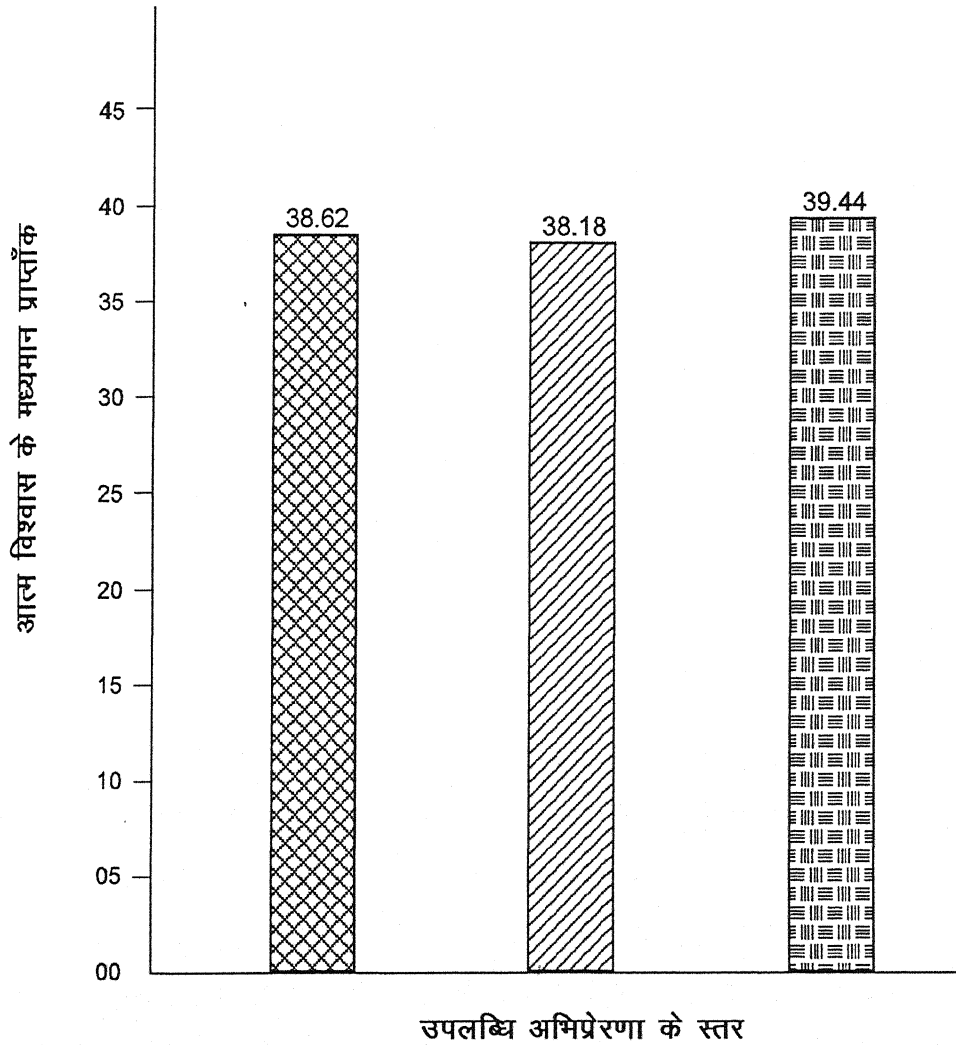
चित्र–12 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्ताँक

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.13 में किया गया है।

तालिका 4.13 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	उपलब्धि अभि0 के स्तर	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	221	34.77	5.49		t_{1-2}= 3.23*
2	औसत	280	36.32	5.19	7.51*	t_{2-3}= 0.47
3.	उच्च	99	35.94	5.29		t_{1-3}= 1.8

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.13 से स्पष्ट है कि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्ययः स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव का मध्यमान प्राप्तांक 34.77, प्रा0वि0 5.49, औसत स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 36.32, प्रा0वि0 5.19 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 35.94, प्रा0वि0 5.29 है। इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 7.51 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्ययः स्वास्थ्य एवं शारीरिक शोष्ठव को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 3.23) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं किन्तु औसत–उच्च व निम्न–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{2-3}=0.47, t_{1-3}=1.8)0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
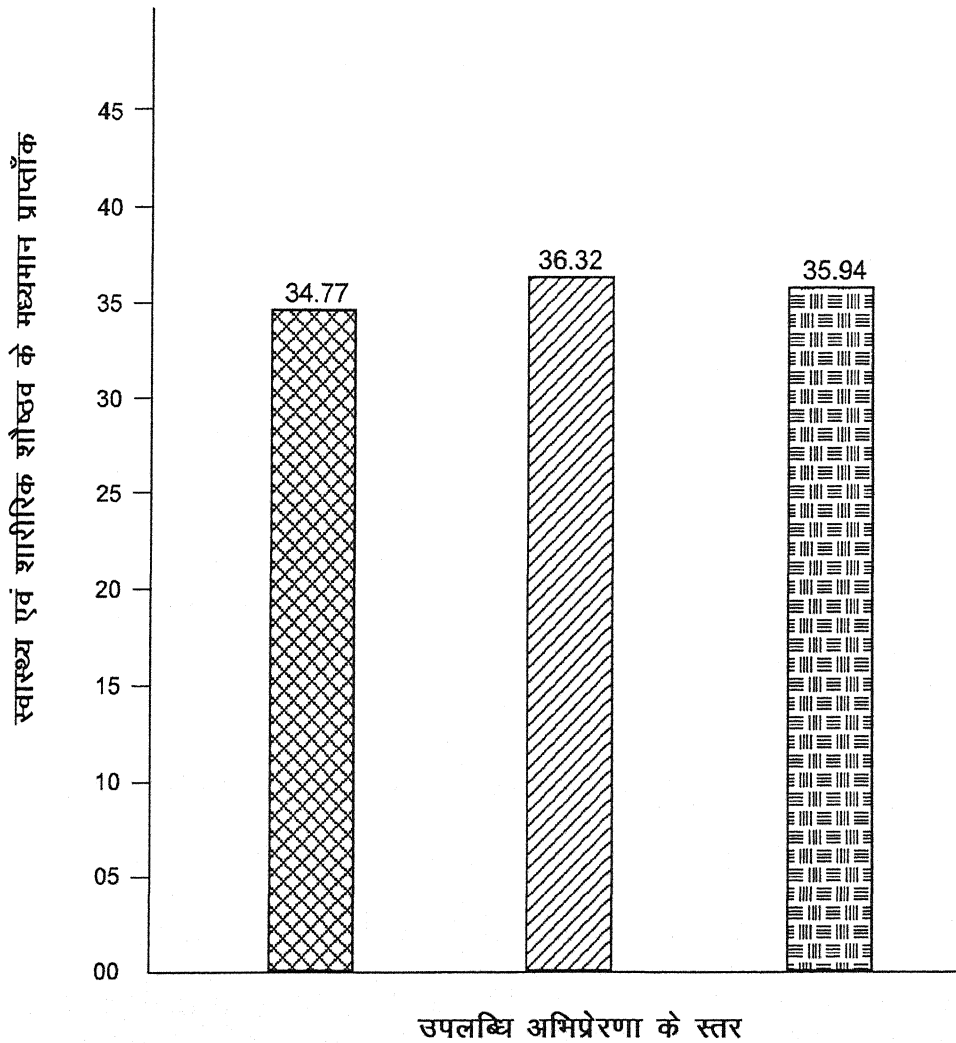
चित्र–13 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्ताँक

सामाजिकता पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.14 में किया गया है।

तालिका 4.14 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	उपलब्धि अभि0 के स्तर	सामाजिकता			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	221	38.96	5.31		t_{1-2}=1.02
2	औसत	280	38.49	4.70	0.18	t_{2-3}= 0.05
3.	उच्च	99	38.52	5.05		t_{1-3}= 0.70

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.14 से प्रदर्शित है कि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर सामाजिकता का मध्यमान प्राप्तांक 38.96, प्रा0वि0 5.31, औसत स्तर पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांक 38.49, प्रा0वि0 4.70 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 38.49, प्रा0वि0 4.70 और उच्च स्तर पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांक 38.52 प्रा0वि0 5.05 है। इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 0.18 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा सामाजिकता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है।

'टी' मान की गणना से स्पष्ट है कि निम्न–औसत, औसत–उच्च एवं निम्न–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 1.02, t_{2-3}= 0.05, t_{1-3}= 0.70) 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं हैं।
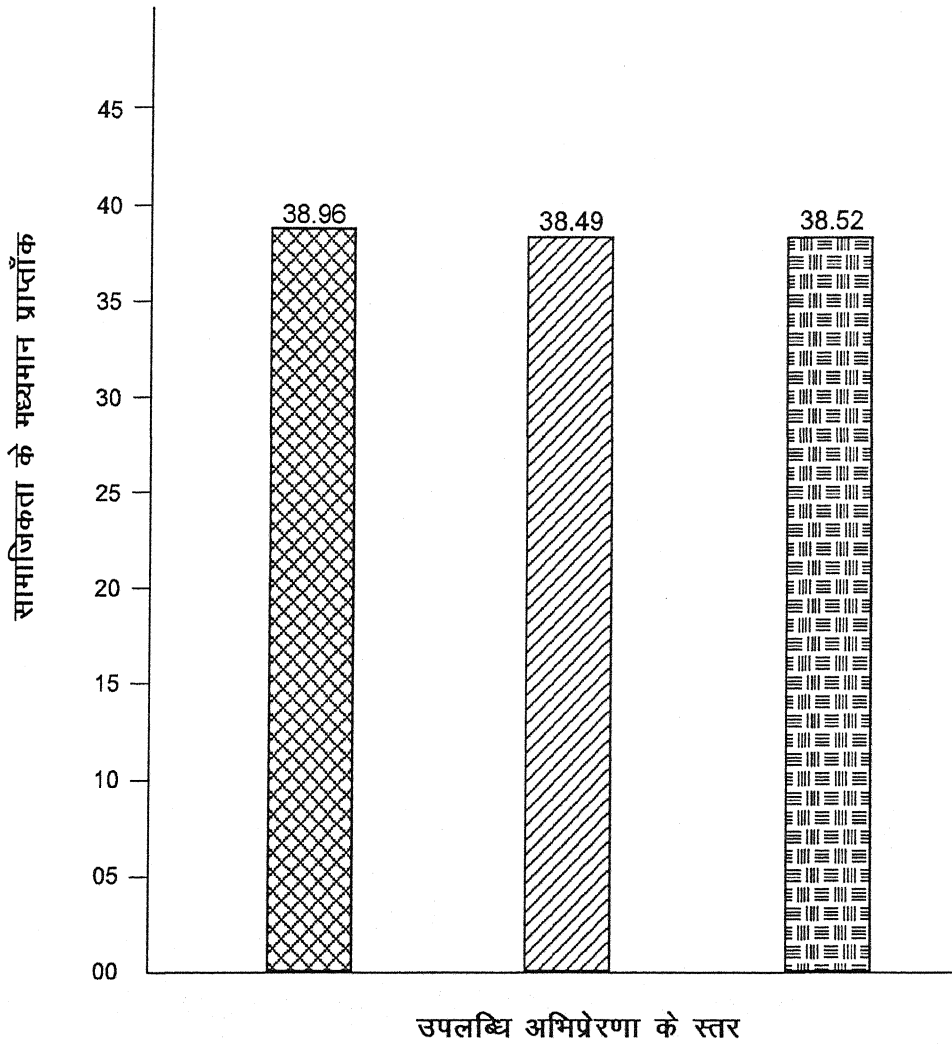
चित्र–14 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्ताँक

संवेगात्मक स्थिरता पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.15 में किया गया है।

तालिका 4.15 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित संवेगात्मक अस्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	उपलब्धि अभि0 के स्तर	संवेगात्मक स्थिरता			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	221	30.91	5.57		t_{1-2}=1.72
2	औसत	280	31.77	5.50	1.37	t_{2-3}= 0.26
3.	उच्च	99	31.95	5.88		t_{1-3}= 1.49

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.15 से स्पष्ट है कि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर संवेगात्मक स्थिरता का मध्यमान प्राप्तांक 30.91, प्रा0वि0 5.57, औसत स्तर पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांक 31.77, प्रा0वि0 5.50 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 31.95, प्रा0वि0 5.88 है इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 1.37 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा संवेगात्मक स्थिरता को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि टी परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत, औसत–उच्च एवं निम्न–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 1.72, t_{2-3}= 0.26, t_{1-3}= 1.49) 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं हैं।
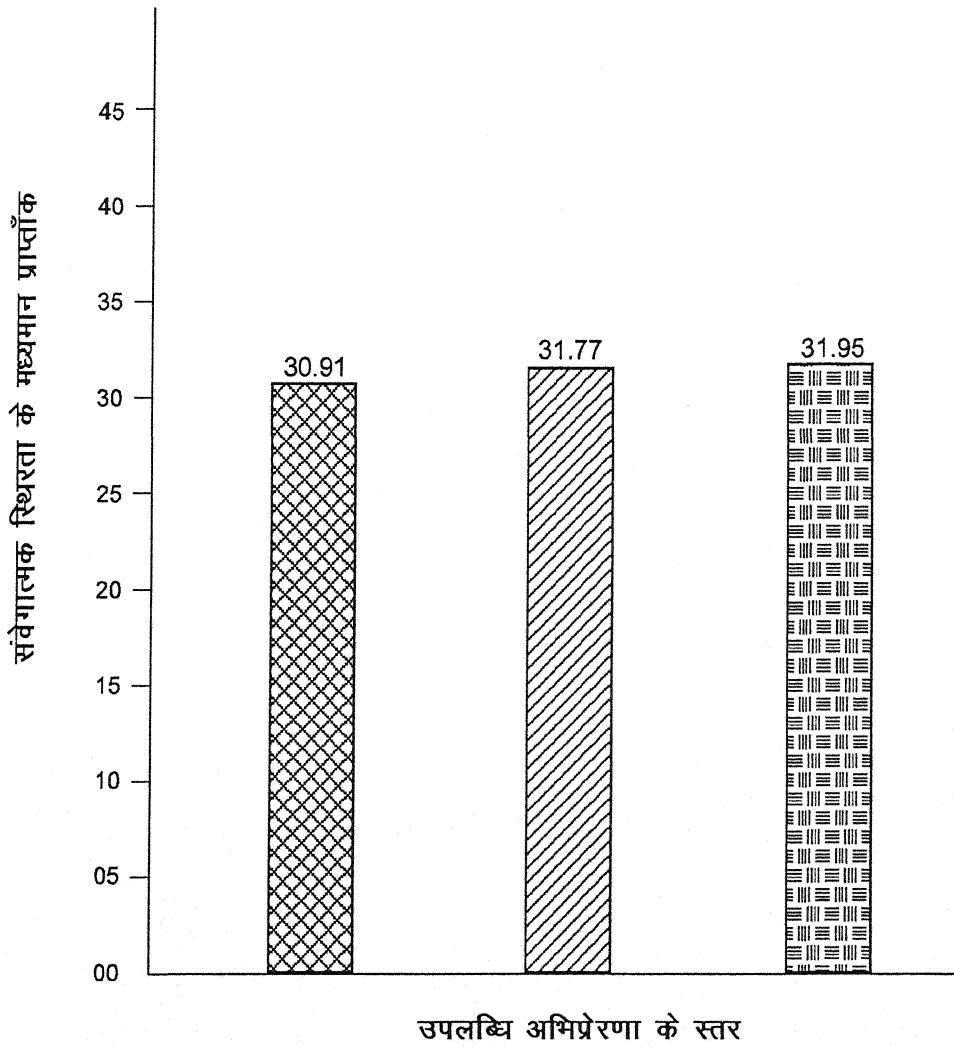
चित्र–15 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्ताँक

मानसिक स्वास्थ्य पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.16 में किया गया है।

तालिका 4.16 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	उपलब्धि अभि0 के स्तर	मानसिक स्वास्थ्य			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	221	40.77	6.12		t_{1-2}=0-59
2	औसत	280	40.8	5.08	0.15	t_{2-3}= 0.94
3.	उच्च	99	41.40	5.67		t_{1-3}= 0.9

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.16 से प्रदर्शित है कि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान प्राप्तांक 40.77, प्रा0वि0 6.12, औसत स्तर पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांक 40.8, प्रा0वि0 5.08 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 41.40, प्रा0वि0 5.67 है इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 0.15 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा मानसिक स्वास्थ्य को 0.05 सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' मूल्यों से भी हो रही है। निम्न–औसत, औसत–उच्च एवं निम्न–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य प्राप्त मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांकों के बीच प्राप्त प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 0.59, t_{2-3}= 0.94, t_{1-3}= 0.9) 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं हैं।
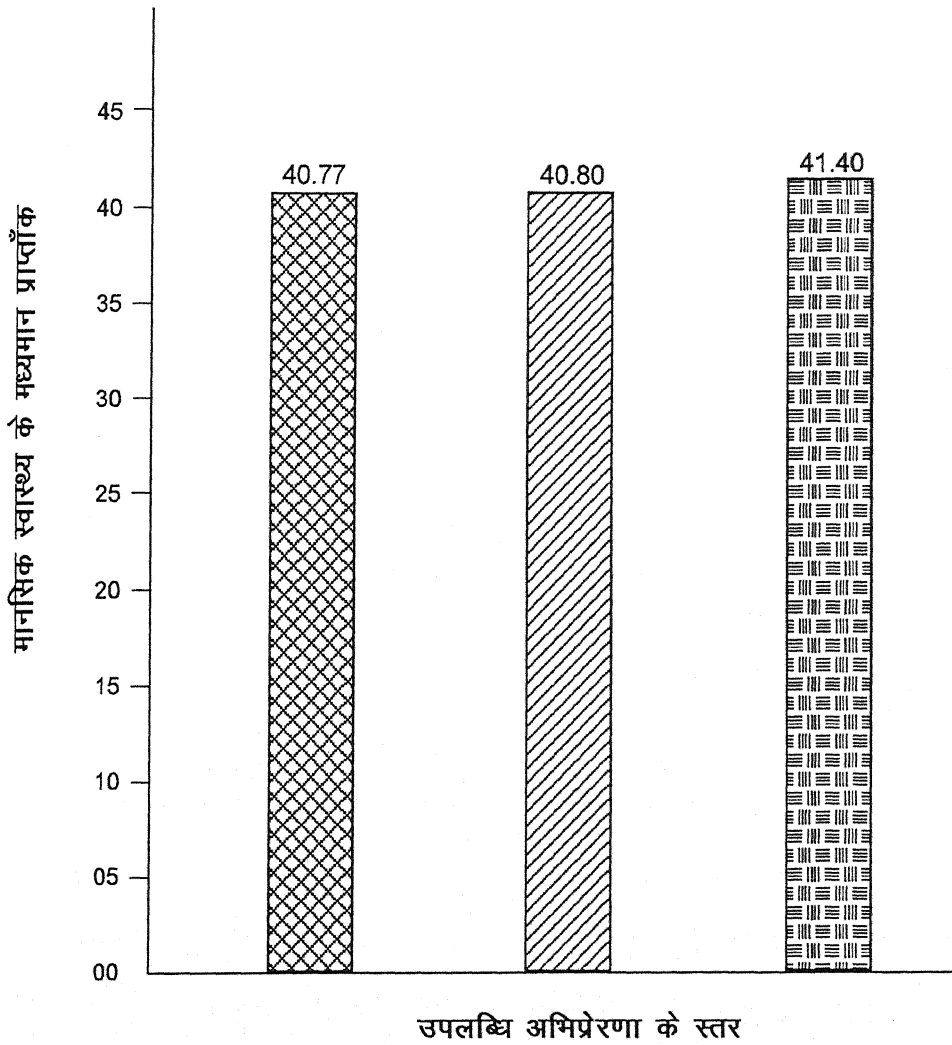
चित्र–16 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्ताँक

स्वभावगत विशेषतायें पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.17 में किया गया है।

तालिका 4.17 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	उपलब्धि अभि0 के स्तर	स्वभावगत विशेषतायें			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	221	37.94	6.83		t_{1-2}=0.84
2	औसत	280	38.40	5.14	0.04	t_{2-3}= 0.19
3.	उच्च	99	38.53	5.76		t_{1-3}= 0.79

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.17 से स्पष्ट है कि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर स्वभावगत विशेषतायें का मध्यमान प्राप्तांक 37.94, प्रा0वि0 6.83, औसत स्तर पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांक 38.40, प्रा0वि0 5.14 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 38.53, प्रा0वि0 5.76 है इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 0.04 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा स्वभावगत विशेषतायें को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत, औसत–उच्च एवं निम्न–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त प्राप्त 'टी' मान क्रमशः (t_{1-2}= 0.84, t_{2-3}= 0.19 एवं t_{1-3}= 0.79) 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं हैं।
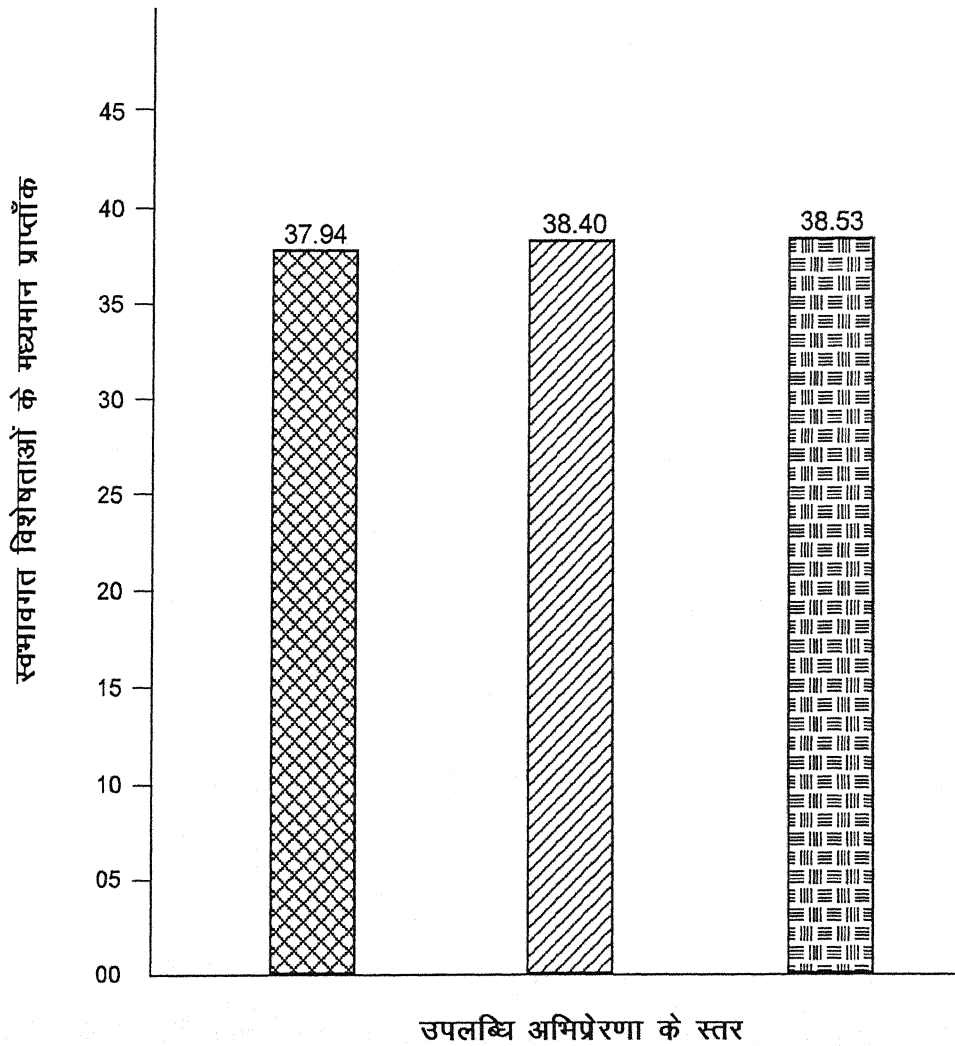
चित्र–17 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्ताँक

श्रेष्ठता की भावना पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.18 में किया गया है।

तालिका 4.18 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत एवं उच्च) से सम्बन्धित श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	उपलब्धि अभि0 के स्तर	श्रेष्ठता की भावना			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	निम्न	221	25.92	5.81		t_{1-2}=1.5
2	औसत	280	26.70	5.84	9.78*	t_{2-3}= 1.93
3.	उच्च	99	27.84	4.72		t_{1-3}= 3.09*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.18 से स्पष्ट है कि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर श्रेष्ठता की भावना का मध्यमान प्राप्तांक 25.92, प्रा0वि0 5.81, औसत स्तर पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांक 26.70, प्रा0वि0 5.84 और उच्च स्तर पर मध्यमान प्राप्तांक 27.84, प्रा0वि0 4.72 है इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 9.78 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा श्रेष्ठता की भावना को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। निम्न–औसत, औसत–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्ययः श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त प्राप्त 'टी' मान क्रमशः (t_{1-2}= 1.5, t_{2-3}= 1.93) 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं हैं। जबकि निम्न–उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-3}= 3.09) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।
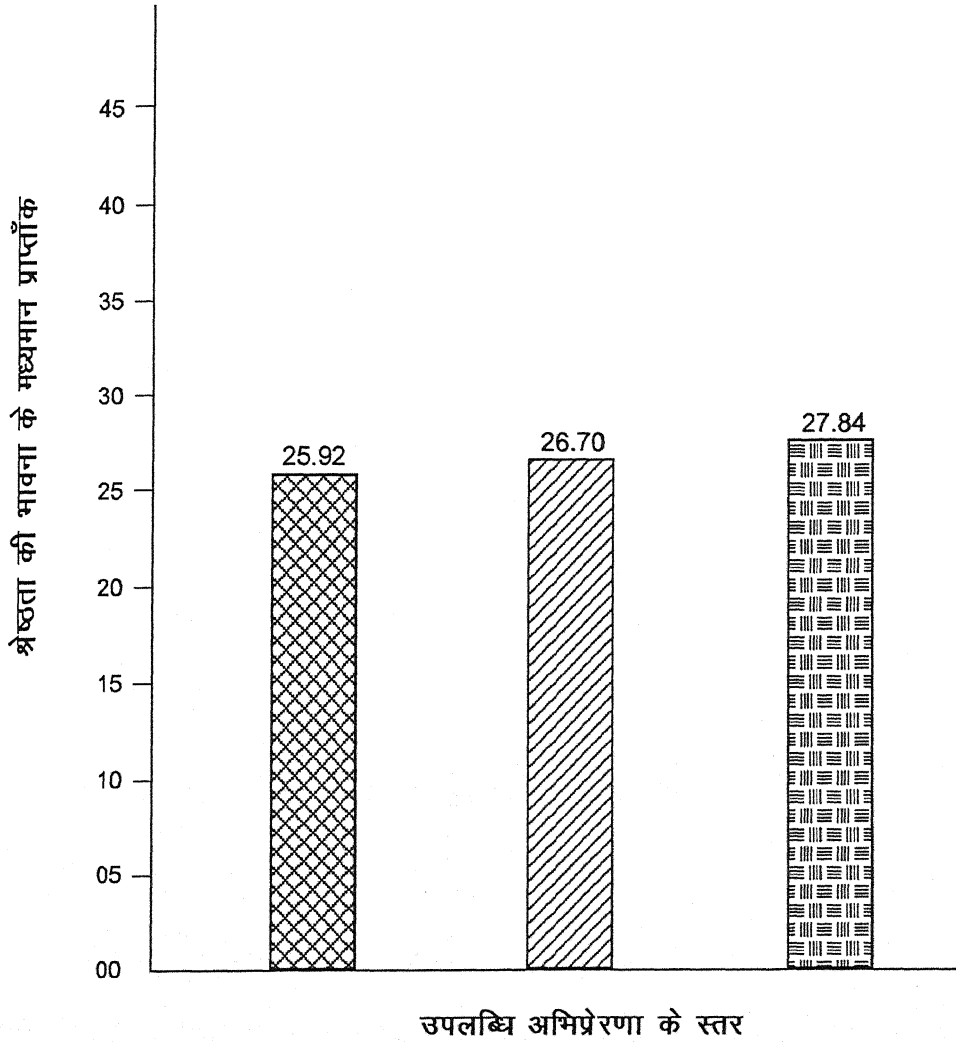
चित्र–18 : उपलब्धि अभिप्रेरणा के तीनों स्तरों (निम्न, औसत, उच्च) पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्ताँक

3- आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व का प्रभाव

अग्रान्कित पृष्ठों में आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व के प्रभावों का अध्ययन निम्नलिखित नौ शीर्षकों में किया गया है।

(1) आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व का प्रभाव

(2) बौद्धिक योग्यता पर व्यक्तित्व का प्रभाव

(3) आत्म विश्वास पर व्यक्तित्व का प्रभाव

(4) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर व्यक्तित्व का प्रभाव

(5) सामाजिकता पर व्यक्तित्व का प्रभाव

(6) संवेगात्मक स्थिरता पर व्यक्तित्व का प्रभाव

(7) मानसिक स्वास्थ्य पर व्यक्तित्व का प्रभाव

(8) स्वभावगत विशेषताओं पर व्यक्तित्व का प्रभाव

(9) श्रेष्ठता की भावना पर व्यक्तित्व का प्रभाव

प्रथम और तृतीय चतुर्थांश विचलन (Q_1एवं Q_3) के आधार पर व्यक्तित्व के प्राप्तांकों को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा गया है।

(1) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक (N= 183)

(2) उभयमुखी व्यक्तित्व पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक (N= 239)

(3) बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक (N= 178)

व्यक्तित्व प्रकार, आत्म प्रत्यय को प्रभावित करता है। यह ज्ञात करने के लिये व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी एवं बहिर्मुखी) पर प्राप्त आत्म प्रत्यय के प्राप्तांकों के मध्य 'एफ' अनुपात और 'टी' परीक्षण की सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया। 'एफ' अनुपात के माध्यम से तीनों प्रकारों (अर्न्त, उभय एवं बर्हि) मध्य एक साथ तुलना की जा सकती है। जबकि 'टी' परीक्षण दो समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये एक शक्तिशाली परीक्षण है।

आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व का प्रभाव :

व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी एवं बहिर्मुखी) पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.19 में किया गया है।

तालिका 4.19 : व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी, बहिर्मुखी) से सम्बन्धित आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	व्यक्तित्व प्रकार	आत्म प्रत्यय			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	अन्तर्मुखी	183	272.61	31.42		t_{1-2}= 4.00*
2	उभयमुखी	239	284.14	26.48	30.59*	t_{2-3}= 4.46*
3.	बहिर्मुखी	178	296.22	28.27		t_{1-3}= 7.52*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.19 से प्रदर्शित होता है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर आत्म प्रत्यय का मध्यमान प्राप्तांक 272.61, प्रा0वि0 31.42, उभयमुखी व्यक्तित्व पर आत्म प्रत्यय का मध्यमान प्राप्तांक 284.14, प्रा0वि0 26.48 और बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर आत्म प्रत्यय का मध्यमान प्राप्तांक 296.22, प्रा0वि0 28.27 है। और इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 30.59 है, जो 0. 01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व प्रकार (अर्न्त, उभय एवं बर्हि) आत्म प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करते है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। अन्तर्मुखी–उभयमुखी, उभयमुखी–बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 4.00, t_{2-3}= 4.46 एवं t_{1-3}= 7.52) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।
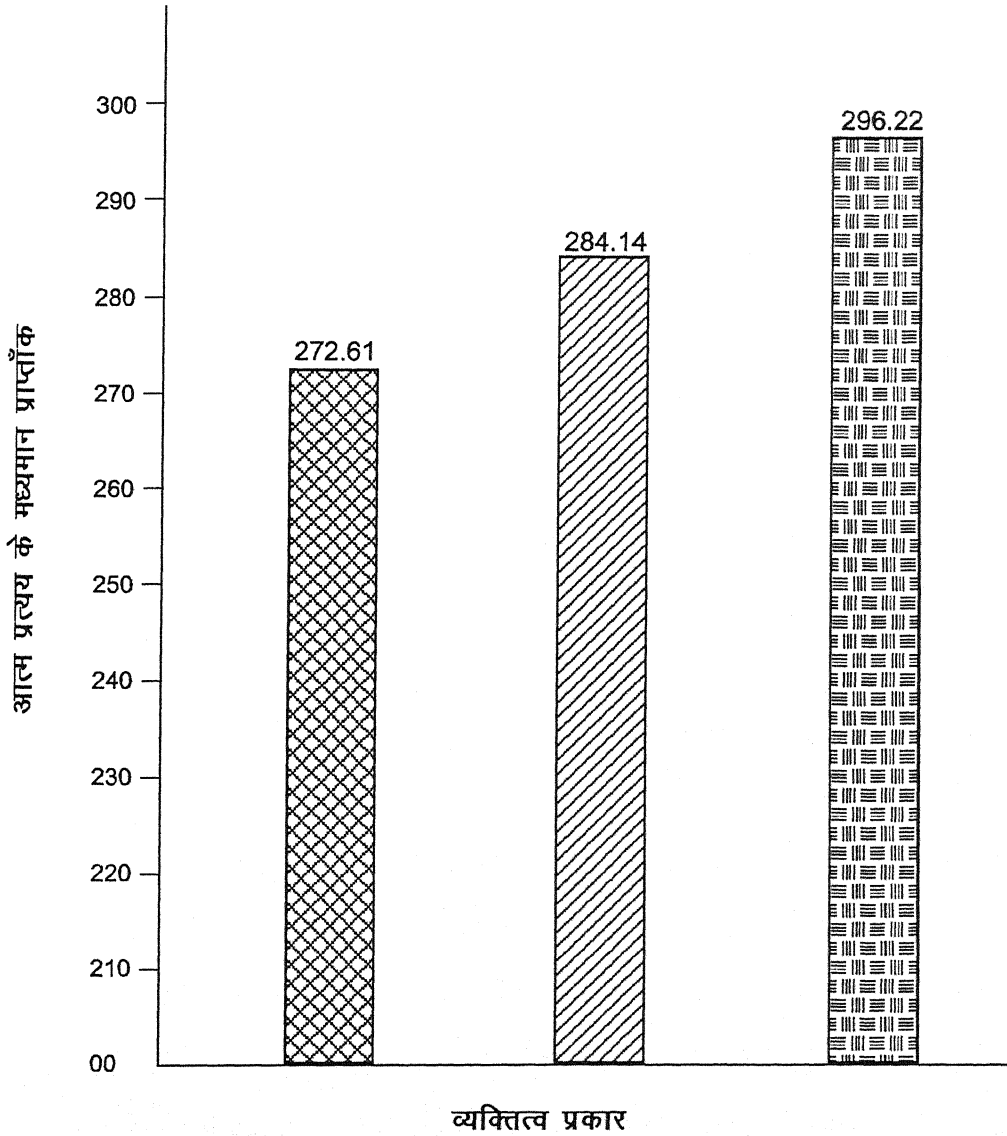
चित्र–19 : व्यक्तित्व प्रकारों (अर्न्त, उभय एवं बर्हि) पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्ताँक

बौद्धिक योग्यता पर व्यक्तित्व का प्रभाव :

व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी एवं बहिर्मुखी) पर बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.20 में किया गया है।

तालिका 4.20 : व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी, बहिर्मुखी) से सम्बन्धित बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	व्यक्तित्व प्रकार	बौद्धिक योग्यता			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	अन्तर्मुखी	183	32.00	6.26		t_{1-2}= 4.42*
2	उभयमुखी	239	34.74	6.30	31.67*	t_{2-3}= 2.82*
3.	बहिर्मुखी	178	36.57	6.65		t_{1-3}= 7.49*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.20 से प्रदर्शित होता है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर बौद्धिक योग्यता का मध्यमान प्राप्तांक 32.00, प्रा0वि0 6.26, उभयमुखी व्यक्तित्व पर बौद्धिक योग्यता का मध्यमान प्राप्तांक 34.74, प्रा0वि0 6.30 और बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर बौद्धिक योग्यता का मध्यमान प्राप्तांक 36.57, प्रा0वि0 6.65 है। और इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 31.67 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व प्रकार (अन्र्त, उभय एवं बर्हि) बौद्धिक योग्यता को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। अन्तर्मुखी–उभयमुखी, उभयमुखी–बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 4.42, t_{2-3}= 2.82 एवं t_{1-3}= 7.49) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।

चित्र–20 : व्यक्तित्व प्रकारों (अर्न्त, उभय एवं बहिर्मुखी) पर
बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्ताँक

आत्म विश्वास पर व्यक्तित्व का प्रभाव :

व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी एवं बहिर्मुखी) पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.21 में किया गया है।

तालिका 4.21 : व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी, बहिर्मुखी) से सम्बन्धित आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	व्यक्तित्व प्रकार	आत्म विश्वास			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	अन्तर्मुखी	183	37.08	5.78		t_{1-2}= 2.19**
2	उभयमुखी	239	38.22	4.84	14.49*	t_{2-3}= 3.53*
3.	बहिर्मुखी	178	40.02	5.54		t_{1-3}= 4.98*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.21 से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर आत्म विश्वास का मध्यमान प्राप्तांक 37.08, प्रा0वि0 5.78, उभयमुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 38.22, प्रा0वि0 4.84 और बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 40.02, प्रा0वि0 5.54 है। और इनके मध्य प्राप्त 'एफ' अनुपात 14.49 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व प्रकार (अन्र्त, उभय एवं बर्हि) आत्म विश्वास को 0.01 स्तर पर प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। उभयमुखी–बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{2-3}= 3.53 एवं t_{1-3}= 4.98) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। जबकि अन्तर्मुखी–उभयमुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त टी मान (t_{1-2}= 2.19) 0.05 स्तर पर सार्थक है।

अन्तर्मुखी व्यक्तित्व
उभयमुखी व्यक्तित्व
बर्हिमुखी व्यक्तित्व
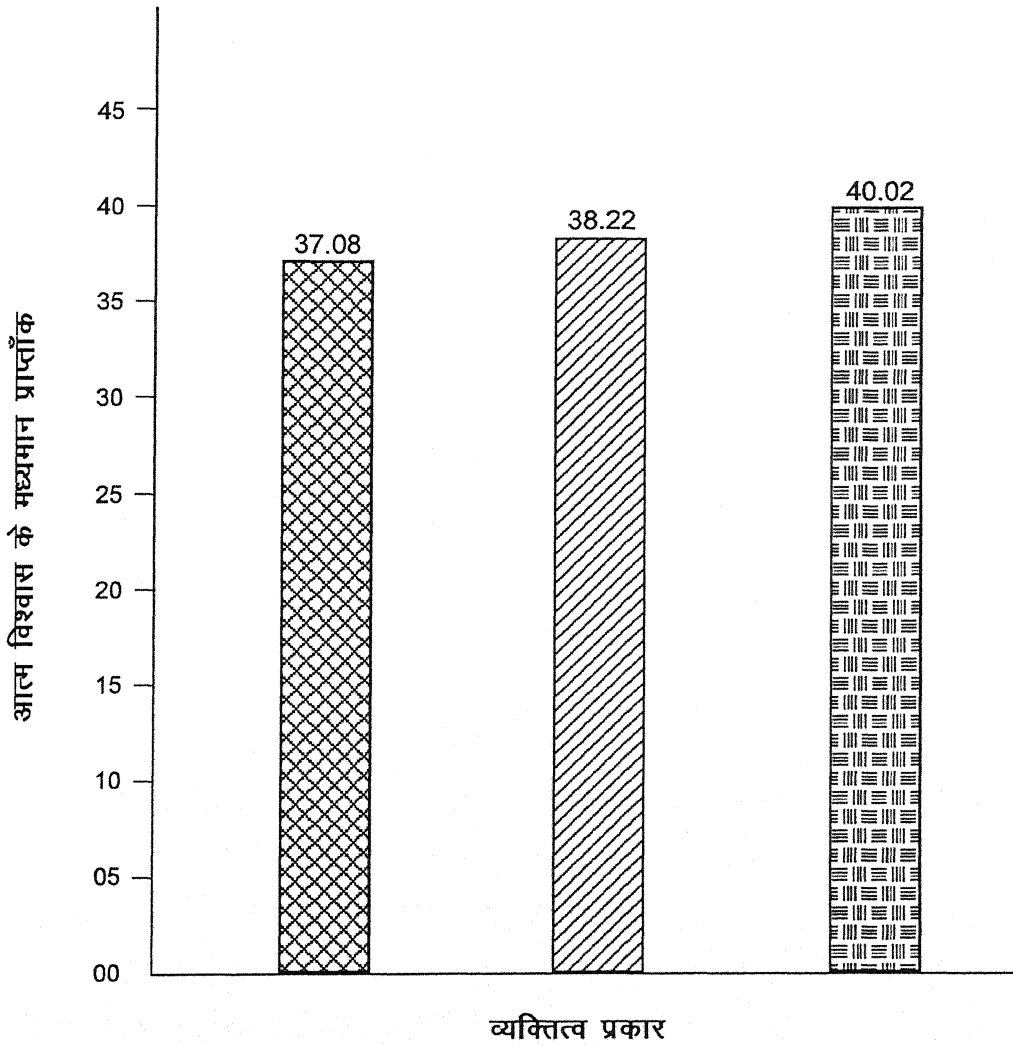
चित्र–21 : व्यक्तित्व प्रकारों (अर्न्त, उभय एवं बहिर्मुखी) पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्ताँक

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर व्यक्तित्व का प्रभाव :

व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी एवं बहिर्मुखी) पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.22 में किया गया है।

तालिका 4.22 : व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी, बहिर्मुखी) से सम्बन्धित स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	व्यक्तित्व प्रकार	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	अन्तर्मुखी	183	34.03	5.02		t_{1-2}= 3.06*
2	उभयमुखी	239	35.56	5.14	10.41*	t_{2-3}= 2.05**
3.	बहिर्मुखी	178	36.75	6.46		t_{1-3}= 4.46*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.22 से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक 34.03, प्रा0वि0 5.02, उभयमुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 35.56, प्रा0वि0 5.14 और बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 36.75, प्रा0वि0 6.46 है। और इनके मध्य (अर्न्त, उभय, बर्हि) प्राप्त 'एफ' अनुपात 10.41 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व प्रकार (अर्न्त, उभय एवं बर्हि) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.01 स्तर पर प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। अन्तर्मुखी–उभयमुखी एवं अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 3.06 एवं t_{1-3}= 4.46) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। जबकि उभयमुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त टी मान (t_{2-3}= 2.05) 0.05 स्तर पर सार्थक है।

चित्र–22 : व्यक्तित्व प्रकारों (अर्न्त, उभय एवं बहिर्मुखी) पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्ताँक

सामाजिकता पर व्यक्तित्व का प्रभाव :

व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी एवं बहिर्मुखी) पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.23 में किया गया है।

तालिका 4.23 : व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी, बहिर्मुखी) से सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	व्यक्तित्व प्रकार	सामाजिकता			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	अन्तर्मुखी	183	36.66	4.50		t_{1-2}= 3.13*
2	उभयमुखी	239	38.10	4.99	22.73*	t_{2-3}= 4.15*
3.	बहिर्मुखी	178	40.26	5.55		t_{1-3}= 6.79*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.23 से प्रदर्शित है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक 36.66, प्रा0वि0 4.50, उभयमुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 38.10, प्रा0वि0 4.99 और बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 40.26, प्रा0वि0 5.55 है। और इनके मध्य 'एफ' अनुपात 22.73 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व प्रकार (अर्न्त, उभय एवं बर्हि) सामाजिकता को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। अन्तर्मुखी–उभयमुखी, उभयमुखी–बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 3.13, t_{2-3}= 4.15 एवं t_{1-3}= 6.79) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।
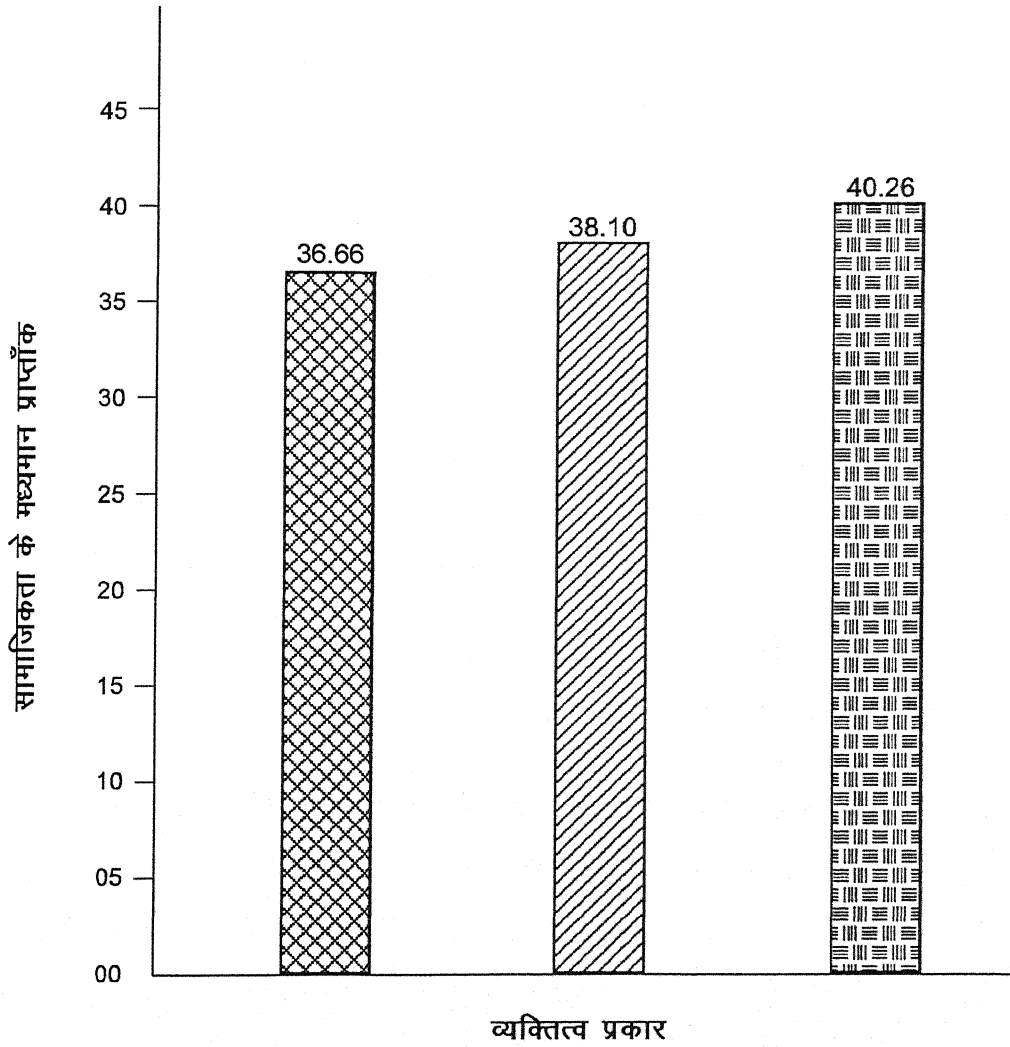
चित्र–23 : व्यक्तित्व प्रकारों (अन्र्त, उभय एवं बहिर्मुखी) पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्ताँक

संवेगात्मक स्थिरता पर व्यक्तित्व का प्रभाव :

व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी एवं बहिर्मुखी) पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.24 में किया गया है।

तालिका 4.24 : व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी, बहिर्मुखी) से सम्बन्धित संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	व्यक्तित्व प्रकार	संवेगात्मक स्थिरता			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	अन्तर्मुखी	183	29.73	5.51		t_{1-2}= 2.28**
2	उभयमुखी	239	31.05	6.39	11.25*	t_{2-3}= 2.86*
3.	बहिर्मुखी	178	32.71	5.46		t_{1-3}=5-14*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.24 से प्रदर्शित है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक 29.73, प्रा0वि0 5.51, उभयमुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 31.05, प्रा0वि0 6.39 और बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 32.71, प्रा0वि0 5.46 है। और इनके मध्य 'एफ' अनुपात 11.25 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि संवेगात्मक स्थिरता व्यक्तित्व प्रकारों को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। उभयमुखी–बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{2-3}= 2.86 एवं t_{1-3}= 3.14) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। जबकि अन्तर्मुखी–उभयमुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त टी मान (t_{1-2}= 2.28) 0.05 स्तर पर सार्थक है।
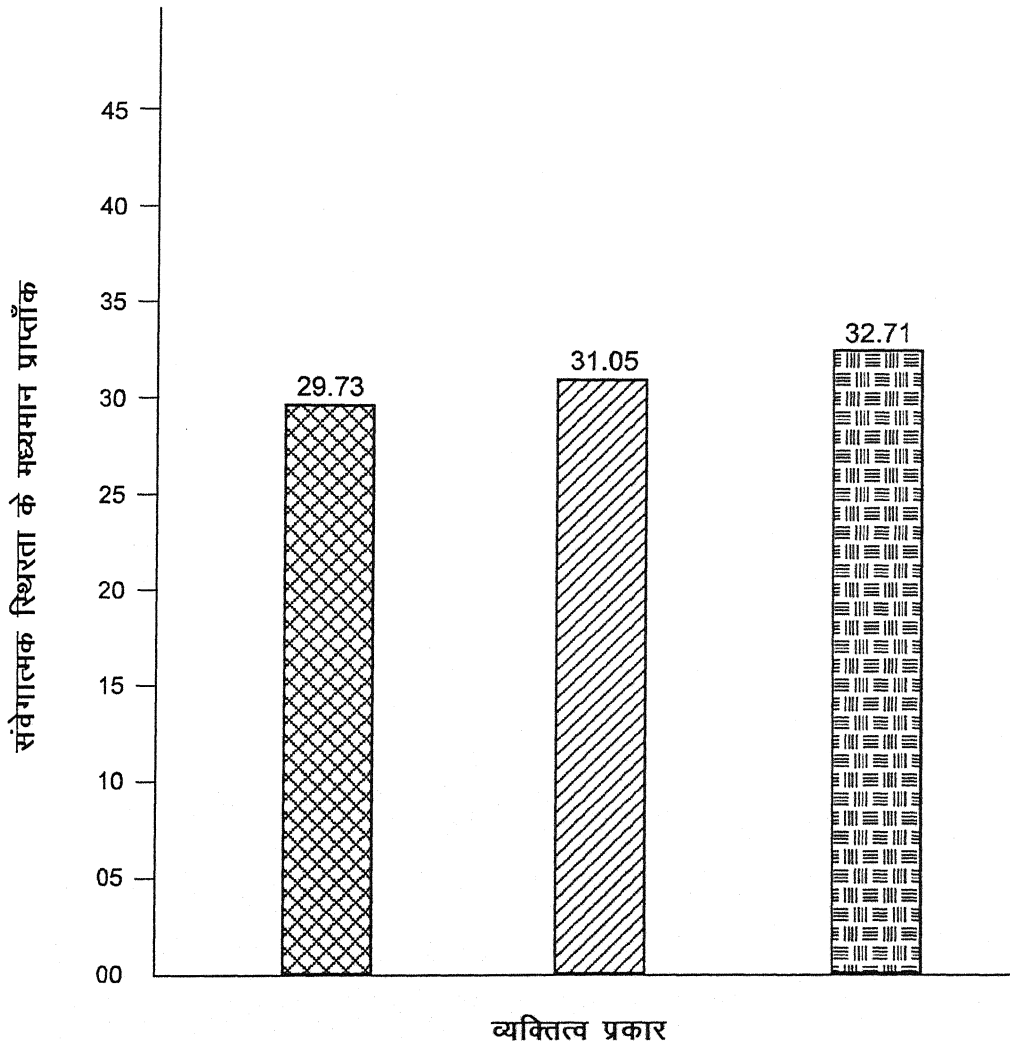
चित्र–24 : व्यक्तित्व प्रकारों (अन्र्त, उभय एवं बहिर्मुखी) पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्ताँक

मानसिक स्वास्थ्य पर व्यक्तित्व का प्रभाव :

व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी एवं बहिर्मुखी) पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.25 में किया गया है।

तालिका 4.25 : व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी, बहिर्मुखी) से सम्बन्धित मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	व्यक्तित्व प्रकार	मानसिक स्वास्थ्य			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	अन्तर्मुखी	183	40.06			t_{1-2}= 0.73
2	उभयमुखी	239	40.42	5.44	12.25*	t_{2-3}= 3.96*
3.	बहिर्मुखी	178	42.44	5.06		t_{1-3}=4.67*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.25 से प्रदर्शित है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक 40.06, प्रा0वि0 4.69, उभयमुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 40.42, प्रा0वि0 5.44 और बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 42.44, प्रा0वि0 5.06 है। और इनके मध्य 'एफ' अनुपात 12.25 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व प्रकार मानसिक स्वास्थ्य को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। अन्तर्मुखी–उभयमुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 0.73) 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि उभयमुखी–बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{2-3}= 3.96 एवं t_{1-3}= 4.67) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।
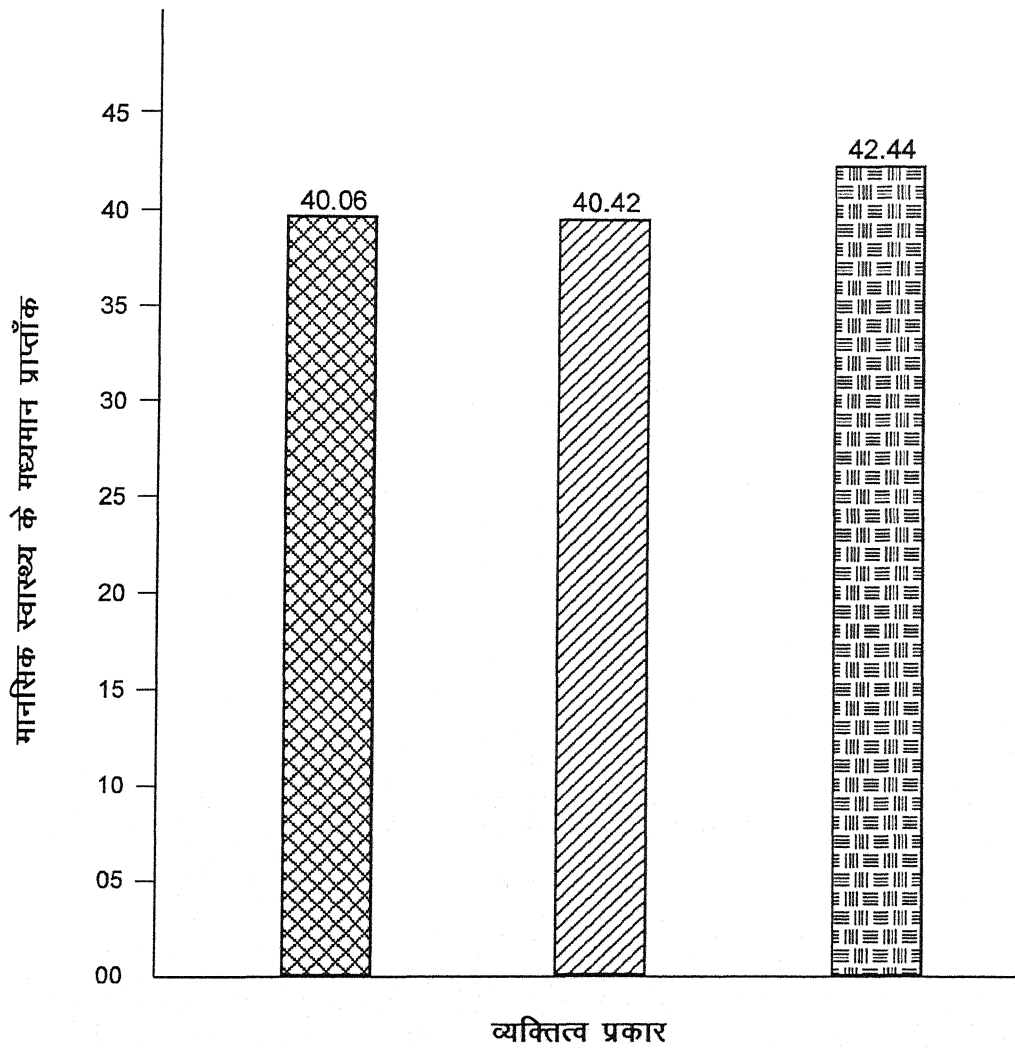
चित्र–25 : व्यक्तित्व प्रकारों (अर्न्त, उभय एवं बहिर्मुखी) पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्ताँक

स्वभावगत विशेषतायें पर व्यक्तित्व का प्रभाव :

व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी एवं बहिर्मुखी) पर स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.26 में किया गया है।

तालिका 4.26 : व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी, बहिर्मुखी) से सम्बन्धित स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	व्यक्तित्व प्रकार	स्वभावगत विशेषतायें			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	अन्तर्मुखी	183	36.80	7.89		t_{1-2}=1.52
2	उभयमुखी	239	37.85	5.81	7.16*	t_{2-3}= 2.79*
3.	बहिर्मुखी	178	39.44	5.65		t_{1-3}=3.67*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.26 से प्रदर्शित है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक 36.80, प्रा0वि0 7.89, उभयमुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 37.85, प्रा0वि0 5.81 और बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 39.44, प्रा0वि0 5.65 है। और इनके मध्य 'एफ' अनुपात 7.16 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व प्रकार स्वभावगत विशेषताओं को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। अन्तर्मुखी–उभयमुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान विशेषताओं के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 1.52) 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। जबकि उभयमुखी–बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान क्रमशः (t_{2-3}=2.79 एवं t_{1-3}= 3.67) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।
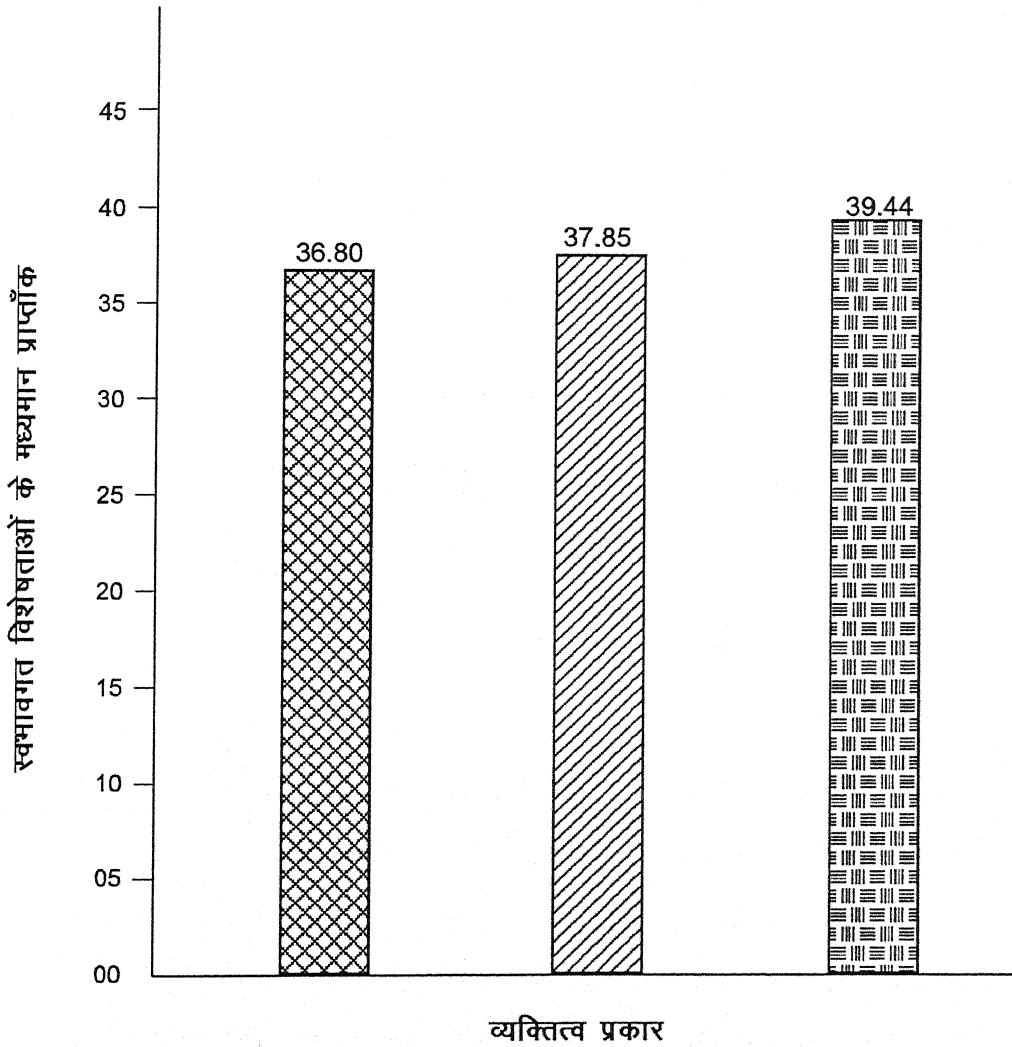
चित्र–26 : व्यक्तित्व प्रकारों (अर्न्त, उभय एवं बहिर्मुखी) पर स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्ताँक

श्रेष्ठता की भावना पर व्यक्तित्व का प्रभाव :

व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी एवं बहिर्मुखी) पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक, प्रा0वि0, 'एफ' अनुपात तथा 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन तालिका नं0 4.27 में किया गया है।

तालिका 4.27 : व्यक्तित्व के तीनों प्रकारों (अन्तर्मुखी, उभयमुखी, बहिर्मुखी) से सम्बन्धित श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन, 'एफ' अनुपात और 'टी' मूल्यों का प्रदर्शन

क्र0 सं0	व्यक्तित्व प्रकार	श्रेष्ठता की भावना			'एफ' अनुपात	'टी' मूल्य
		कुल संख्या	मध्यमान प्रा0	प्रा0वि0		
1	अन्तर्मुखी	183	25.85	6.15		t_{1-2}=1.54
2	उभयमुखी	239	26.71	5.36	4.65*	t_{2-3}= 1.92
3.	बहिर्मुखी	178	27.73	5.39		t_{1-3}=3.13*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4.27 से प्रदर्शित है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक 25.85, प्रा0वि0 6.15, उभयमुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 26.71, प्रा0वि0 5.36 और बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर मध्यमान प्राप्तांक 27.73, प्रा0वि0 5.39 है। और इनके मध्य 'एफ' अनुपात 4.65 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व प्रकार श्रेष्ठता की भावना को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

'एफ' अनुपात से प्राप्त परिणामों की पुष्टि 'टी' परीक्षण से भी हो रही है। अन्तर्मुखी–उभयमुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान (t_{1-2}= 1.54, t_{2-3}= 1.92) 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। जबकि अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य प्राप्त 'टी' मान क्रमशः (t_{1-3}= 3.13) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।
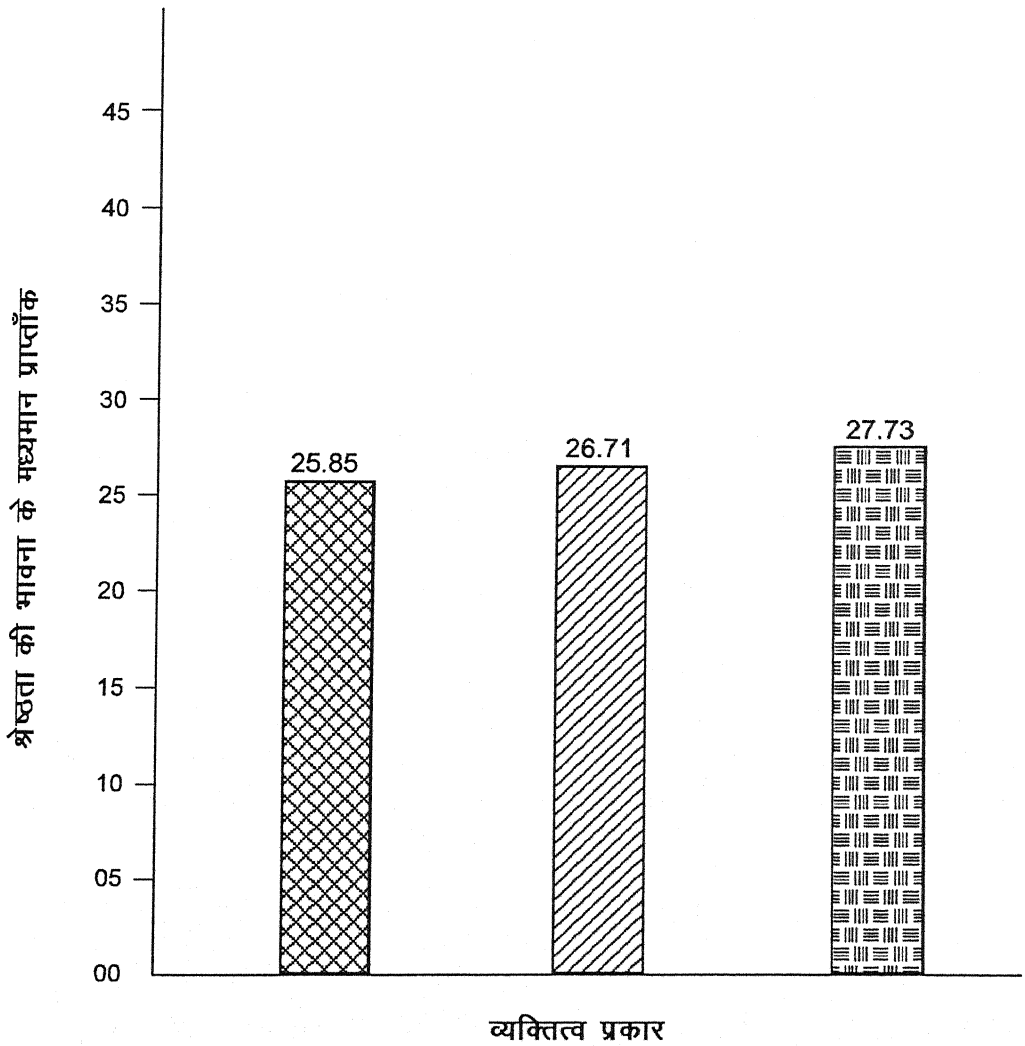
चित्र–27 : व्यक्तित्व प्रकारों (अर्न्त, उभय एवं बहिर्मुखी) पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्ताँक

भाग-ब : आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

इस भाग में सभी तीन परिवर्ती– मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व का आत्म प्रत्यय पर अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अतः इस भाग को तीन उप भागों में विभाजित किया गया है–

(अ) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

(ब) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

(स) आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

(अ) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव :

आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। Q_1और Q_3 के मूल्यों के आधार पर निम्न चार समूह प्राप्त किये गये हैं।

(1) निम्न मनोस्नायुविकृति और निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा (N= 82)

(2) निम्न मनोस्नायुविकृति और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा (N= 49)

(3) उच्च मनोस्नायुविकृति और निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा (N= 42)

(4) उच्च मनोस्नायुविकृति और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा (N= 13)

अनुसंधानकर्ता जानना चाहता है कि मनोस्नायुविकृति (निम्न / उच्च) और उपलब्धि अभिप्रेरणा (निम्न / उच्च) का आत्म प्रत्यय और आत्म प्रत्यय के आठ प्रकारों पर क्या प्रभाव पड़ता है। और साथ ही साथ इन दोनों परिवर्तियों का आत्म प्रत्यय पर अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव क्या है।

(1) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

तालिका 4.28 में मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित आत्म प्रत्यय के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.28 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

उपलब्धि अभिप्रेरणा		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
उच्च	कुल संख्या	13	49	62
	मध्यमान प्रा0	282	294.7	293.38
	प्रा0वि0	31.20	32.17	31.41
निम्न	कुल संख्या	42	82	124
	मध्यमान प्रा0	272.3	291.70	281.87
	प्रा0वि0	21.76	24.83	41.71
योग	कुल संख्या	55	131	186
	मध्यमान प्रा0	270.12	292.89	282.83
	प्रा0वि0	41.48	27.91	47.50

तालिका 4.28 से स्पष्ट है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 292.89) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों के आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 270.12) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक (मध यमान = 293.38) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 281.87) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 294.7) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्रा0 (मध्यमान = 272.3) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।

आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तॉक

300
290
280
270
260
250
240
230
220
210
00

282.00
294.70
272.30
291.70
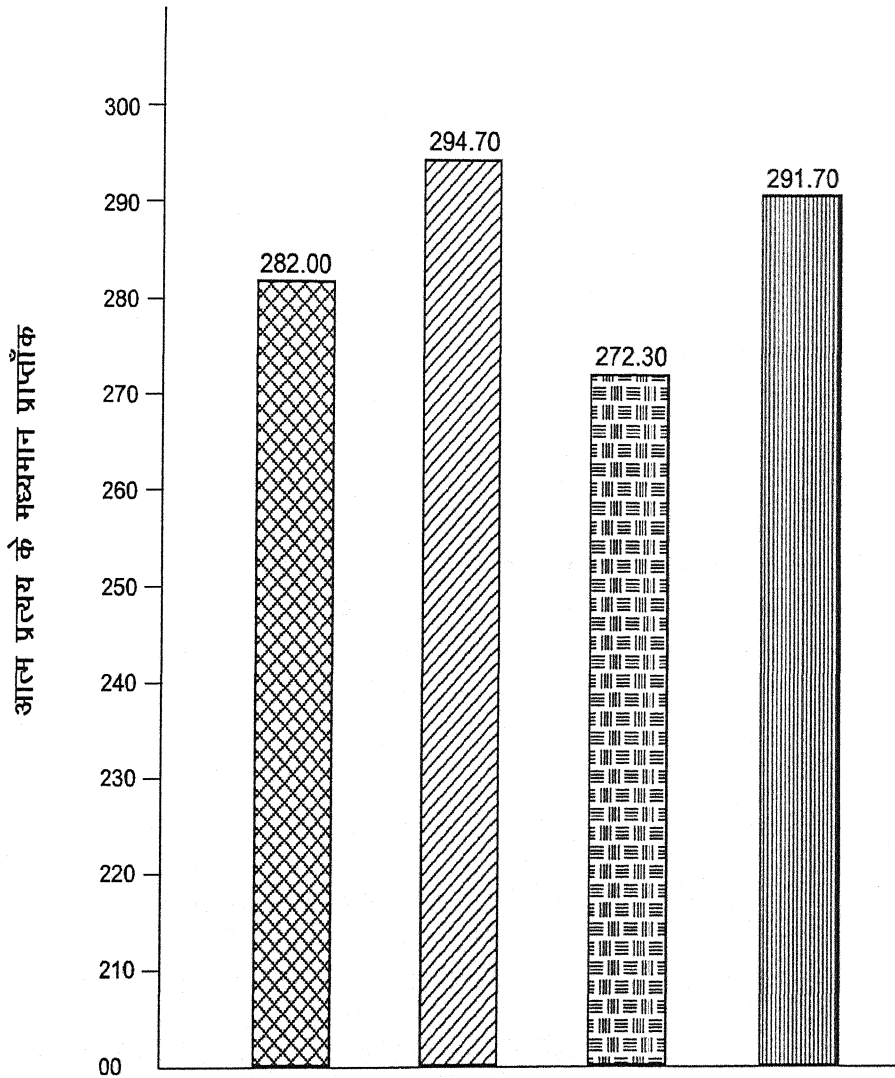
मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभि0 के स्तर

चित्र–28 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) और उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का आत्म प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया। परिणाम तालिका 4.28 में दिये गये हैं।

तालिका 4.28 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) का आत्म प्रत्यय पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न)	1243.1	1	1243.1	0.21
B मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न)	7926.4	1	7926.4	1.37
अर्न्तक्रिया : AxB	344.6	1	344.6	0.06
समूहान्तर्गत	1061755.1	183	5801.9	0.05 स्तर पर 3.90 0.01 स्तर पर 6.81

तालिका 4.28 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) आत्म प्रत्यय को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.21)

(2) मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) आत्म प्रत्यय को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता (एफ अनुपात = 1.37)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव आत्म प्रत्यय को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात = 0.06)

बौद्धिक योग्यता पर मनोस्नायुविकृति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

तालिका 4.29 में मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित बौद्धिक योग्यता के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.29 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

उपलब्धि अभिप्रेरणा		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
उच्च	कुल संख्या	13	49	62
	मध्यमान प्रा0	32.6	37.53	36.4
	प्रा0वि0	7.5	6.22	6.7
निम्न	कुल संख्या	42	82	124
	मध्यमान प्रा0	31.26	34.88	33.2
	प्रा0वि0	7.00	5.24	7.13
योग	कुल संख्या	55	131	186
	मध्यमान प्रा0	32.05	35.4	34.4
	प्रा0वि0	6.01	6.9	7.006

तालिका 4.29 से ज्ञात होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 35.4) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों के बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 32.05) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 36.4) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 33.2) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 37.53) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्रा0 (मध्यमान = 31.26) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
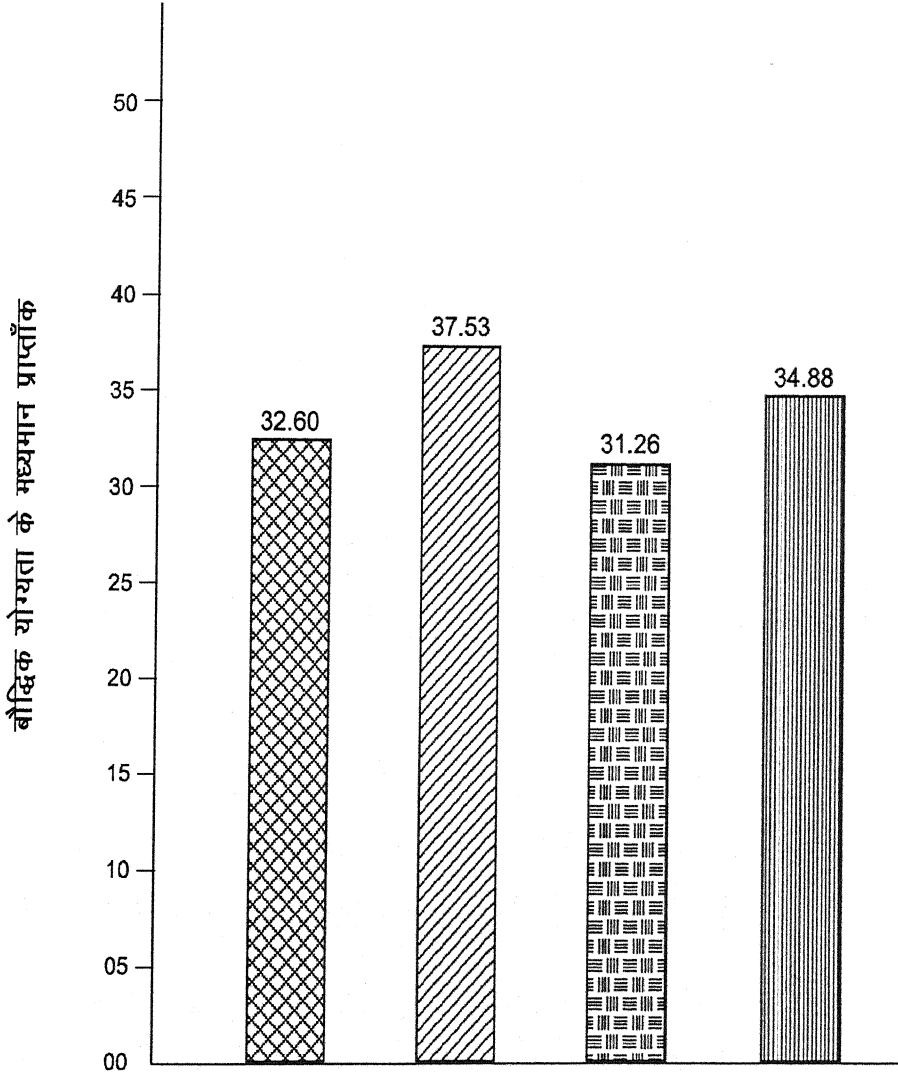
चित्र–29 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) और उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) पर बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का बौद्धिक योग्यता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया। परिणाम तालिका 4.29 में दिये गये हैं।

तालिका 4.29 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) का बौद्धिक योग्यता पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	120.93	1	120.93	0.014
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	560.94	1	560.94	0.065
अर्न्तक्रिया : AxB	16.92	1	16.92	0.002
समूहान्तर्गत	1573143.41	183	8596.46	0.05 स्तर पर 3.90 0.01 स्तर पर 6.81

तालिका 4.29 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) बौद्धिक योग्यता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.014)

(2) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) बौद्धिक योग्यता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 0.065)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव बौद्धिक योग्यता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात = 0.002)

आत्म विश्वास पर मनोस्नायुविकृति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

तालिका 4.30 में मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित आत्म विश्वास के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.30 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

उपलब्धि अभिप्रेरणा		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
उच्च	कुल संख्या	13	49	62
	मध्यमान प्रा0	39.3	40.24	39.9
	प्रा0वि0	4.7	4.5	4.6
निम्न	कुल संख्या	42	82	124
	मध्यमान प्रा0	33.04	39.74	38.9
	प्रा0वि0	6.9	4.9	5.10
योग	कुल संख्या	55	131	186
	मध्यमान प्रा0	34.8	39.1	39.3
	प्रा0वि0	6.4	7.4	5.4

तालिका 4.30 से ज्ञात होता है निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्मविश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 39.1) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों के आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 34.8) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 39.9) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.9) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 40.24) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान प्रा0 (मध्यमान = 33.04) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
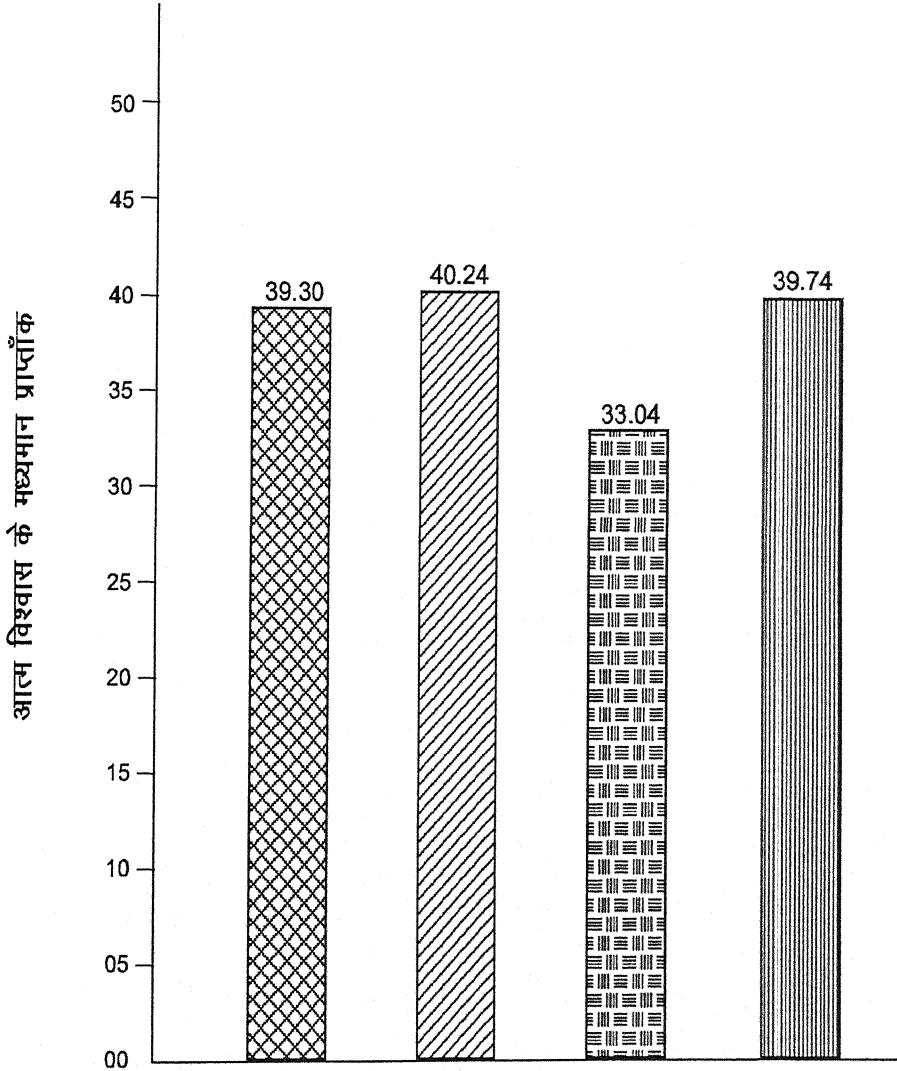
चित्र–30 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) और उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का आत्म विश्वास पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया। परिणाम तालिका 4.30 में दिये गये हैं।

तालिका 4.30 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) का आत्म विश्वास पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	58.46	1	58.46	0.039
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	104.61	1	104.61	0.071
अर्न्तक्रिया : AxB	212.93	1	212.93	0.14
समूहान्तर्गत	269271.4	1863	1471.43	0.05 स्तर पर 3.90 0.01 स्तर पर 6.81

तालिका 4.30 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) आत्म विश्वास को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.039)

(2) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) आत्म विश्वास को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 0.075)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव आत्म विश्वास को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात = 0.14)

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर मनोस्नायुविकृति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

तालिका 4.31 में मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) से सम्बन्धित स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.31 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) से सम्बन्धित स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक और प्रा0वि0 के मान

उपलब्धि अभिप्रेरणा		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
उच्च	कुल संख्या	13	49	62
	मध्यमान प्रा0	35.4	36.67	36.41
	प्रा0वि0	5.0	5.9	5.57
निम्न	कुल संख्या	42	82	124
	मध्यमान प्रा0	31.92	36.5	35.19
	प्रा0वि0	6.9	5.16	5.69
योग	कुल संख्या	55	131	186
	मध्यमान प्रा0	33.2	36.31	35.27
	प्रा0वि0	5.59	5.97	6.52

तालिका 4.31 से स्पष्ट है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 36.31) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 32.2) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 36.41) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 35.19) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 36.67) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्रा0 (मध्यमान = 31.92) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
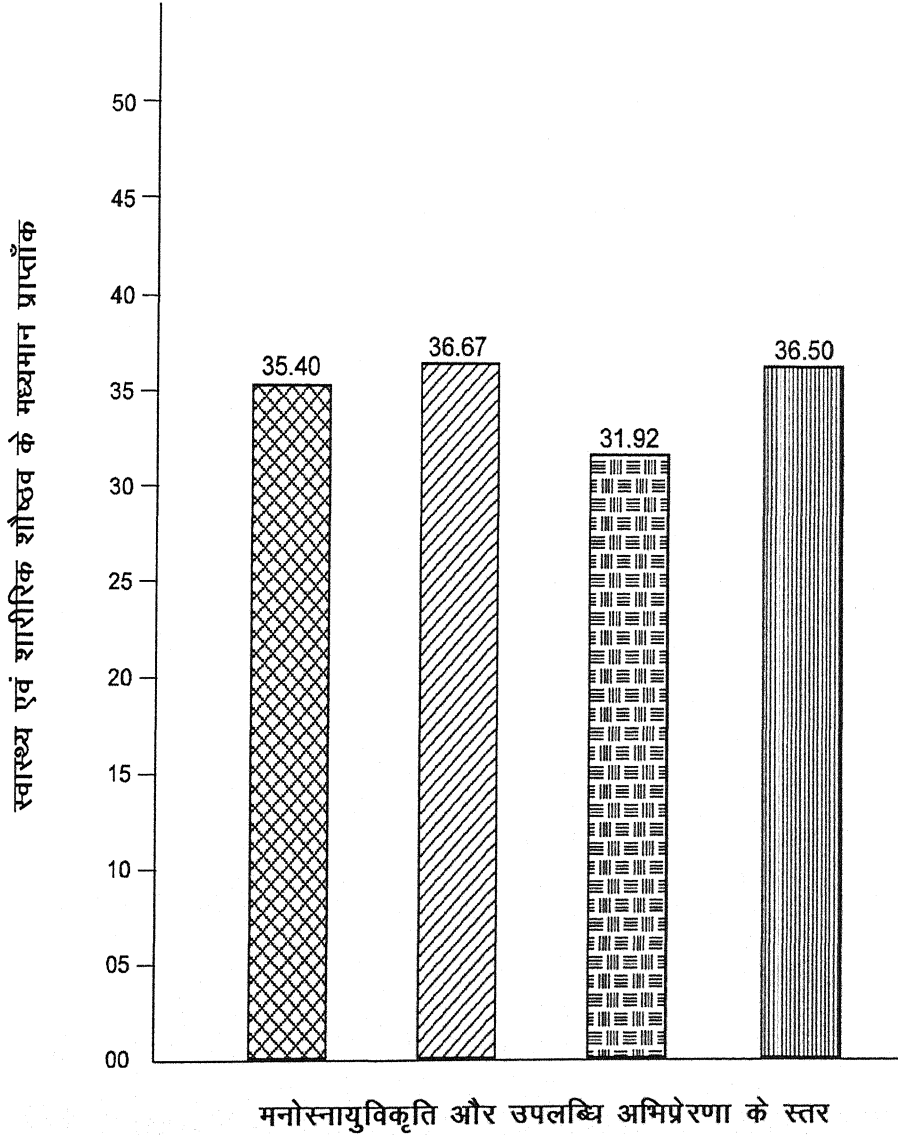
चित्र–31 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) और उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया। परिणाम तालिका 4.31 में दिये गये हैं।

तालिका 4.31 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	101.54	1	101.54	0.09
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	258.47	1	258.47	0.23
अर्न्तक्रिया : AxB	92.31	1	92.31	0.08
समूहान्तर्गत	210207.6	183	1148.7	0.05 स्तर पर 3.90 0.01 स्तर पर 6.81

तालिका 4.31 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.09)

(2) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 0.23)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात = 0.08)

सामाजिकता पर मनोस्नायुविकृति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

तालिका 4.32 में मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित सामाजिकता के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.32 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

उपलब्धि अभिप्रेरणा		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
उच्च	कुल संख्या	13	49	62
	मध्यमान प्रा0	41.15	38.26	37.58
	प्रा0वि0	3.5	4.96	7.91
निम्न	कुल संख्या	42	82	124
	मध्यमान प्रा0	34.79	39.41	38.78
	प्रा0वि0	10.4	5.84	5.17
योग	कुल संख्या	55	131	186
	मध्यमान प्रा0	38.41	38.32	38.55
	प्रा0वि0	4.40	7.63	5.80

तालिका 4.32 से स्पष्ट है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.32) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों के सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.41) दोनों ही मध्यमान, प्राप्तांक समान हैं।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 37.58) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.78) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.26) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान प्रा0 (मध्यमान = 34.79) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
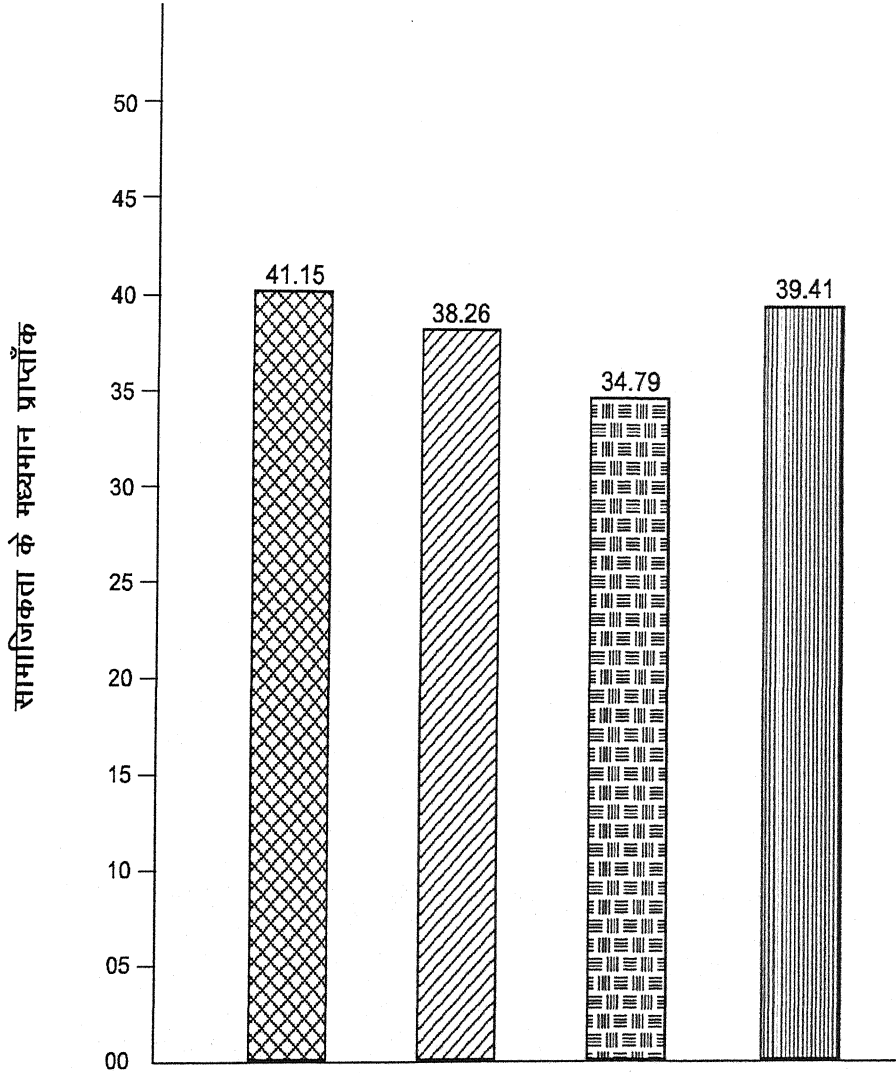
चित्र–32 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) और उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का सामाजिकता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया। परिणाम तालिका 4.32 में दिये गये हैं।

तालिका 4.32 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) का सामाजिकता पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	208.93	1	208.93	0.16
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	22.46	1	22.46	0.017
अर्न्तक्रिया : AxB	431.1	1	431.1	0.32
समूहान्तर्गत	243911.7	183	1332.9	0.05 स्तर पर 3.90 0.01 स्तर पर 6.81

तालिका 4.32 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) सामाजिकता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.16)

(2) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) सामाजिकता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 0.017)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव सामाजिकता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात = 0.32)

संवेगात्मक स्थिरता पर मनोस्नायुविकृति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

तालिका 4.33 में मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) से सम्बन्धित संवेगात्मक स्थिरता के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.33 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) से सम्बन्धित संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

उपलब्धि अभिप्रेरणा		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
उच्च	कुल संख्या	13	49	62
	मध्यमान प्रा0	28.2	33.10	32.11
	प्रा0वि0	6.6	5.65	6.20
निम्न	कुल संख्या	42	82	124
	मध्यमान प्रा0	28.73	32.59	31.27
	प्रा0वि0	5.2	5.60	5.78
योग	कुल संख्या	55	131	186
	मध्यमान प्रा0	28.2	32.29	31.52
	प्रा0वि0	5.98	6.63	5.94

तालिका 4.33 से प्रदर्शित होता है निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 32.29) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों के संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 28.2) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 32.11) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 31.26) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 33.10) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्रा0 (मध्यमान = 28.73) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
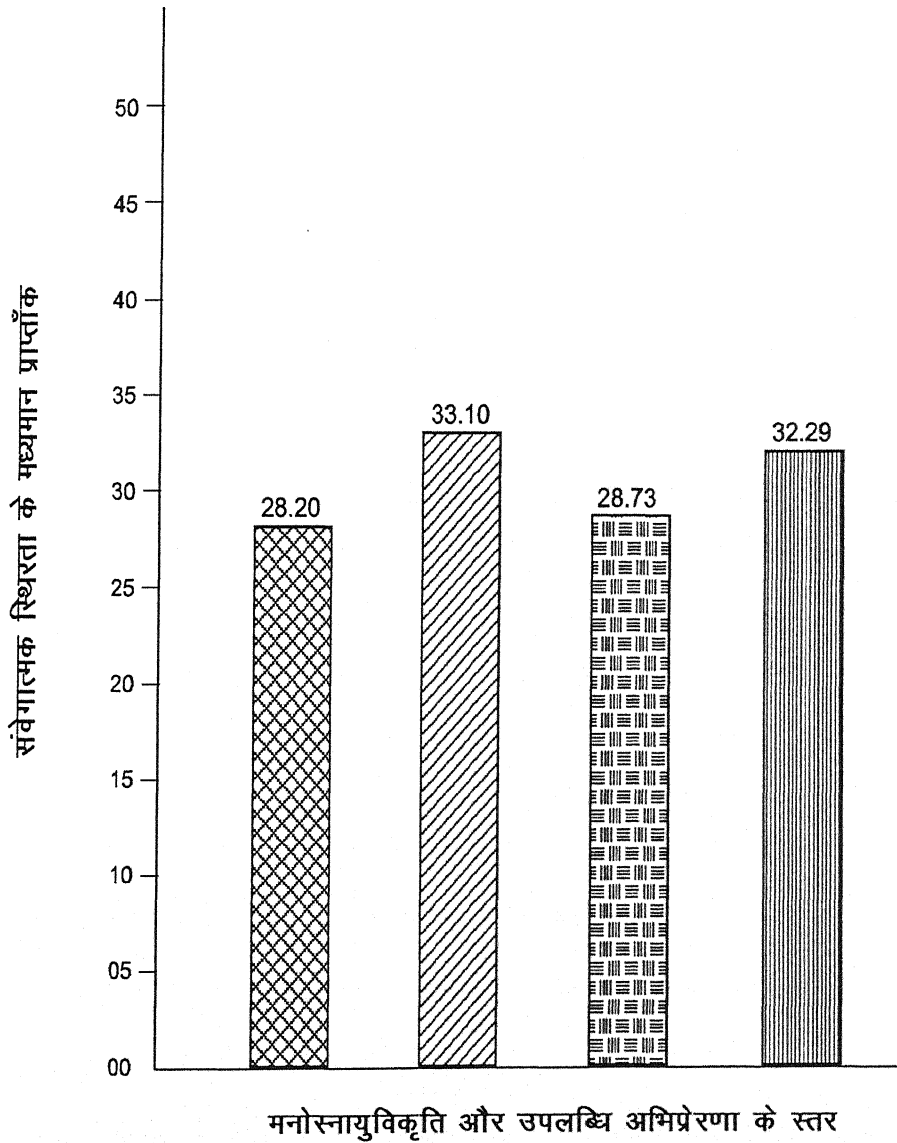
चित्र–33 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) और उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का संवेगात्मक स्थिरता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया। परिणाम तालिका 4.33 में दिये गये हैं।

तालिका 4.33 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) का संवेगात्मक स्थिरता पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	263.1	1	263.1	0.29
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	591.1	1	591.1	0.65
अर्न्तक्रिया : AxB	273.24	1	273.24	0.30
समूहान्तर्गत	166643.2	183	910.6	0.05 स्तर पर 3.90 0.01 स्तर पर 6.81

तालिका 4.33 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) संवेगात्मक स्थिरता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.29)

(2) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) संवेगात्मक स्थिरता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 0.65)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव संवेगात्मक स्थिरता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात = 0.30)

मानसिक स्वास्थ्य पर मनोस्नायुविकृति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

तालिका 4.34 में मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.34 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

उपलब्धि अभिप्रेरणा		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
उच्च	कुल संख्या	13	49	62
	मध्यमान प्रा0	41.8	41.22	41.24
	प्रा0वि0	5.2	5.78	5.68
निम्न	कुल संख्या	42	82	124
	मध्यमान प्रा0	39.16	42.17	41.41
	प्रा0वि0	4.6	4.84	4.90
योग	कुल संख्या	55	131	186
	मध्यमान प्रा0	39.03	40.78	40.5
	प्रा0वि0	7.19	6.83	6.32

तालिका 4.34 से प्रदर्शित होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 40.78) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 39.03) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 41.24) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 41.41) दोनों के मध्यमान, प्राप्तांक समान हैं।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 41.22) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्रा0 (मध्यमान = 39.16) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
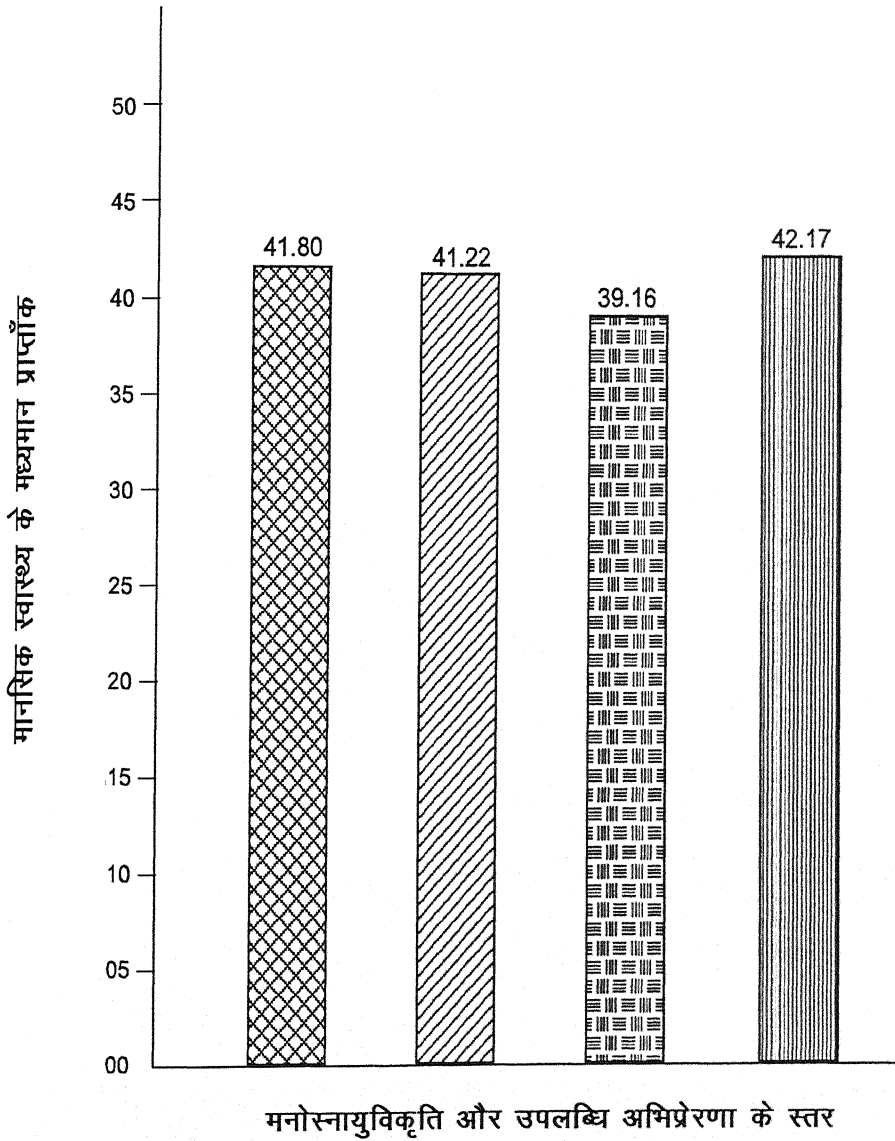
चित्र–34 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) और उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया। परिणाम तालिका 4.34 में दिये गये हैं।

तालिका 4.34 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	167.39	1	167.39	0.16
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	145.85	1	145.85	0.14
अर्न्तक्रिया : AxB	2313.24	1	313.24	0.29
समूहान्तर्गत	191127.1	183	1044.4	0.05 स्तर पर 3.90 0.01 स्तर पर 6.81

तालिका 4.34 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) मानसिक स्वास्थ्य को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.16)

(2) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) मानसिक स्वास्थ्य को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 0.14)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात = 0.29)

स्वभावगत विशेषताओं पर मनोस्नायुविकृति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

तालिका 4.35 में मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित स्वभावगत विशेषताओं के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.35 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) से सम्बन्धित स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

उपलब्धि अभिप्रेरणा		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
उच्च	कुल संख्या	13	49	62
	मध्यमान प्रा0	38.8	39.46	38.83
	प्रा0वि0	4.5	4.9	6.04
निम्न	कुल संख्या	42	82	124
	मध्यमान प्रा0	36.21	39.02	38.89
	प्रा0वि0	10.08	4.34	4.60
योग	कुल संख्या	55	131	186
	मध्यमान प्रा0	37.56	38.51	38.17
	प्रा0वि0	7.91	6.23	6.99

तालिका 4.35 से स्पष्ट है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.51) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों के स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 37.56) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.83) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.89) दोनों ही प्राप्त मध्यमान, प्राप्तांक समान हैं।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 39.46) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्रा0 (मध्यमान = 36.21) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
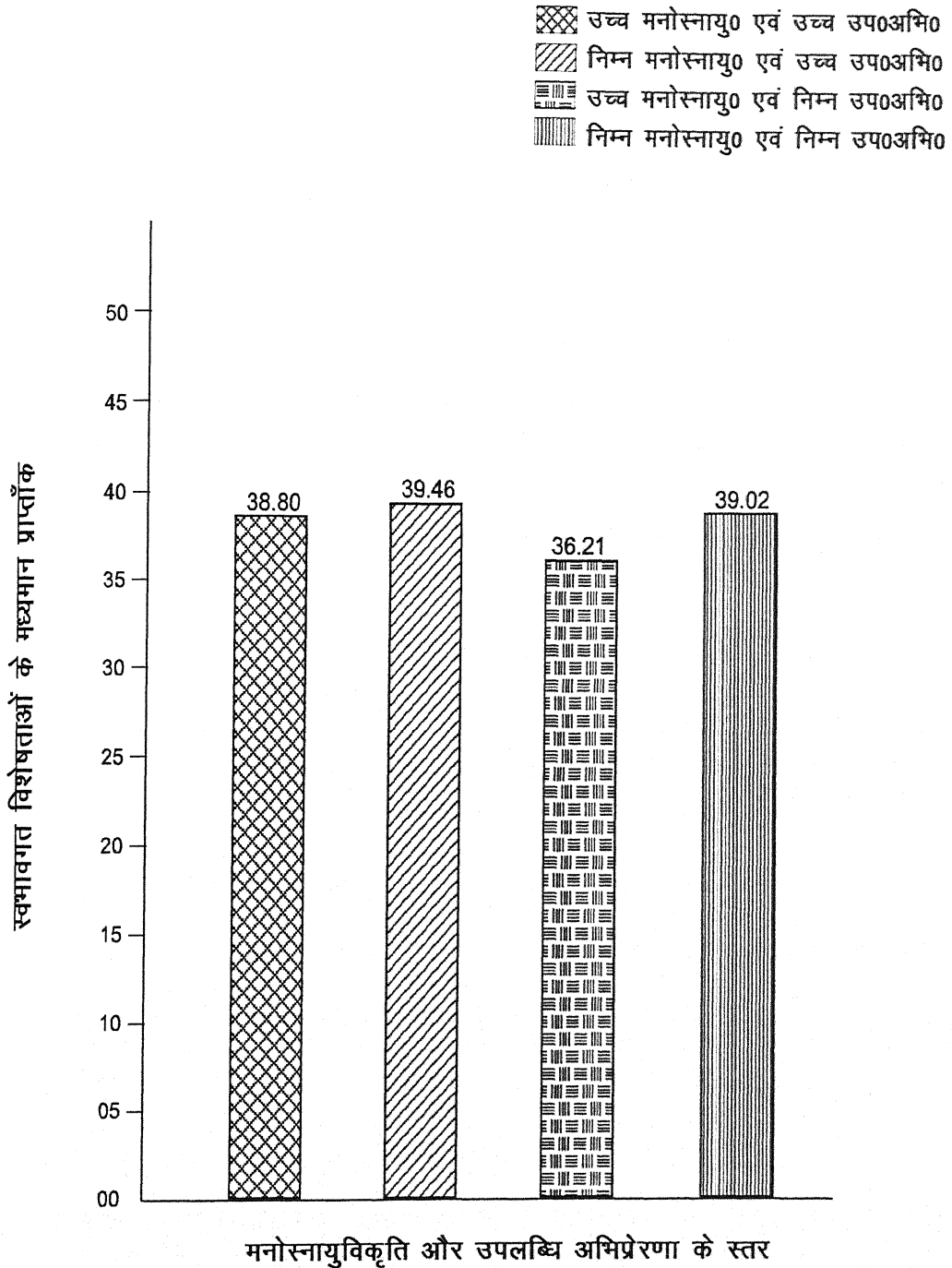
चित्र–35 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) और उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) पर स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का स्वभावगत विशेषतायें पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया। परिणाम तालिका 4.35 में दिये गये हैं।

तालिका 4.35 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) का स्वभावगत विशेषतायें पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	40.00	1	40.00	0.033
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	86.16	1	86.16	0.071
अर्न्तक्रिया : AxB	52.31	1	52.31	0.043
समूहान्तर्गत	221214	183	1208.8	0.05 स्तर पर 3.90 0.01 स्तर पर 6.81

तालिका 4.35 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) स्वभावगत विशेषतायें को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.033)

(2) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) स्वभावगत विशेषतायें को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 0.071)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव स्वभावगत विशेषतायें को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात = 0.043)

श्रेष्ठता की भावना पर मनोस्नायुविकृति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

तालिका 4.36 में मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) से सम्बन्धित श्रेष्ठता की भावना के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.36 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) से सम्बन्धित श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

उपलब्धि अभिप्रेरणा		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
उच्च	कुल संख्या	13	49	62
	मध्यमान प्रा0	24.7	28.82	26.73
	प्रा0वि0	5.4	4.14	7.32
निम्न	कुल संख्या	42	82	124
	मध्यमान प्रा0	25.76	26.58	26.36
	प्रा0वि0	7.8	5.19	6.18
योग	कुल संख्या	55	131	186
	मध्यमान प्रा0	26.05	27.69	28.20
	प्रा0वि0	6.34	5.00	16.87

तालिका 4.36 से प्रदर्शित होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 27.69) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों के श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 26.05) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 26.72) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 26.36) से अधिक है।

उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 28.82) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्रा0 (मध्यमान = 25.76) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
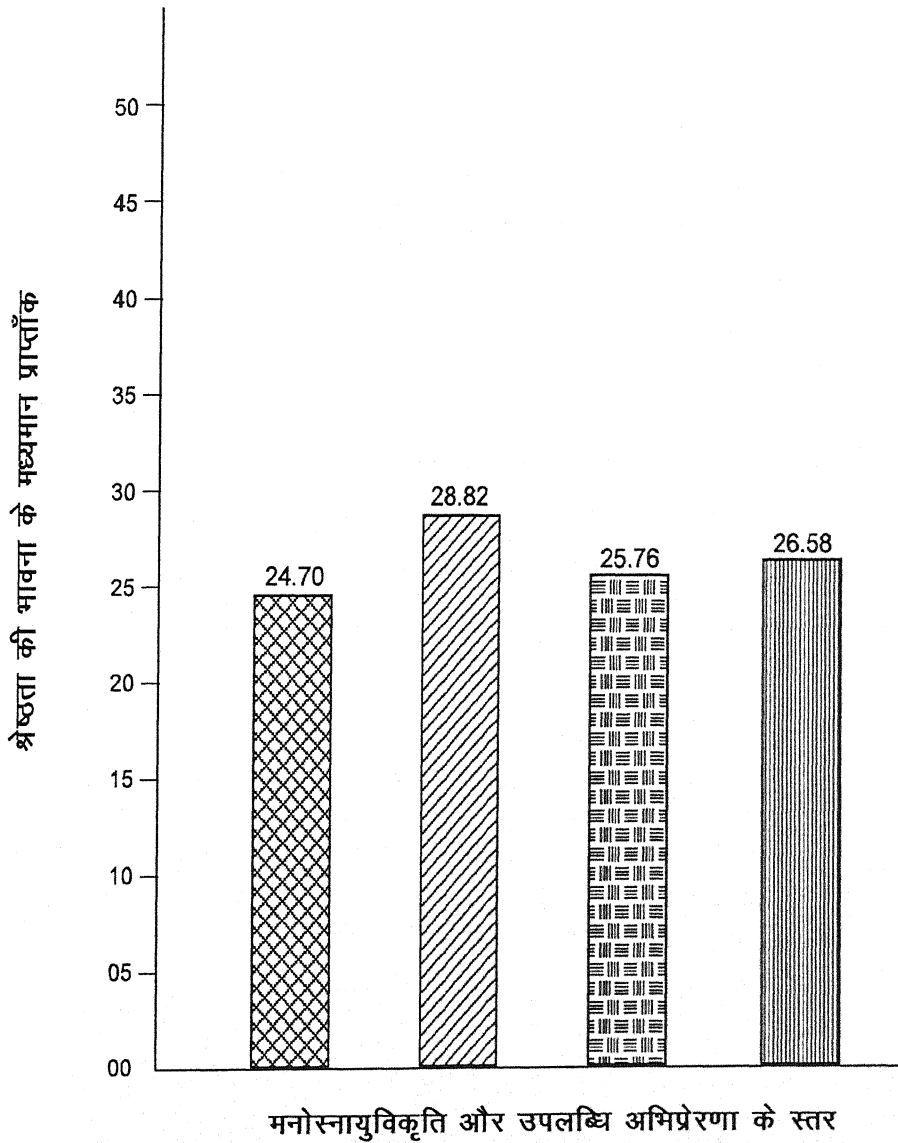
चित्र–36 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) और उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का श्रेष्ठता की भावना पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया। परिणाम तालिका 4.36 में दिये गये हैं।

तालिका 4.36 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) का श्रेष्ठता की भावना पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	55.39	1	55.39	0.087
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	123.1	1	123.1	0.19
अर्न्तक्रिया : AxB	150.77	1	150.77	0.24
समूहान्तर्गत	116614.2	183	637.2	0.05 स्तर पर 3.90 0.01 स्तर पर 6.81

तालिका 4.36 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) श्रेष्ठता की भावना को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.087)

(2) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) श्रेष्ठता की भावना को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 0.087)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा और मनोस्नायुविकृति का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव श्रेष्ठता की भावना को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात = 0.24)

2- आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) का अध्ययन करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। Q_1 और Q_3 के मूल्यों के आधार पर निम्न चार समूह प्राप्त किये हैं।

(1) निम्न मनोस्नायुविकृति एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व (N= 82)

(2) उच्च मनोस्नायुविकृति एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व (N= 49)

(3) निम्न मनोस्नायुविकृति एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व (N= 42)

(4) उच्च मनोस्नायुविकृति एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व (N= 13)

अनुसंधानकर्ता जानना चाहता है कि मनोस्नायुविकृति (निम्न / उच्च) और व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) का आत्म प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ता है। और साथ ही साथ इन दोनों परिवर्तियों का आत्म प्रत्यय पर अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव क्या है।

आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.37 में मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) से सम्बन्धित आत्म प्रत्यय के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.37 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
	कुल संख्या	49	12	61
बहिर्मुखी	मध्यमान प्रा0	307.73	279.83	303.1
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	31.01	26.25	33.9
	कुल संख्या	35	17	52
अन्तर्मुखी	मध्यमान प्रा0	283.5	276.5	280.4
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	24.7	23.2	25.17
	कुल संख्या	84	29	113
योग	मध्यमान प्रा0	297.2	276.9	292.2
	प्रा0वि0	31.6	25.1	31.3

तालिका 4.37 से स्पष्ट होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 297.6) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 276.9) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 303.1) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 280.4) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 307.73) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 276.5) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
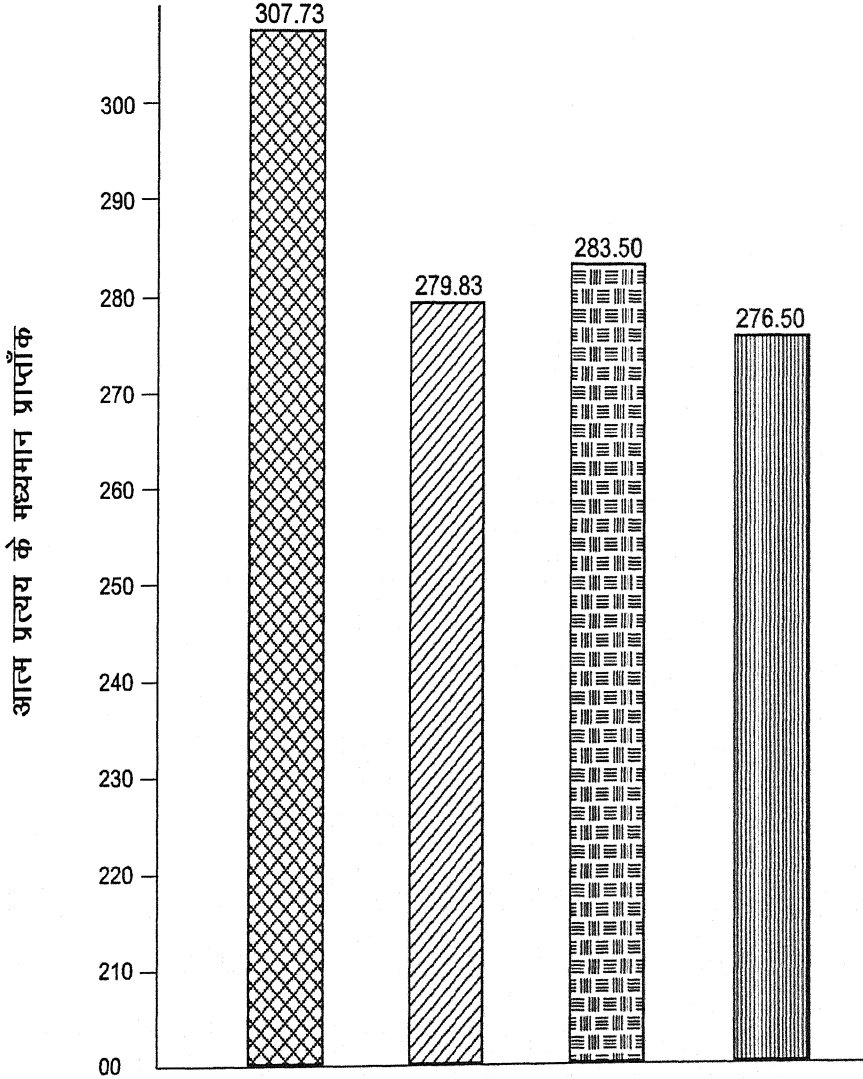
चित्र–37 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक

मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का आत्म प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.37 में दिये गये।

तालिका 4.37 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का आत्म प्रत्यय पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	4010.0	1	4010.0	2.39
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	5203.6	1	5203.6	3.10
अर्न्तक्रिया : AxB	3012.3	1	3012.3	1.79
समूहान्तर्गत	184633.5	110	1678.5	0.05 स्तर पर 3.94 0.01 स्तर पर 6.90

तालिका 4.37 से ज्ञात होता है कि–

(1) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) आत्म प्रत्यय को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 3.10)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) आत्म प्रत्यय को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 2.39)

(3) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव आत्म प्रत्यय को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 1.79)

बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर पर मनोस्नायुविकृति एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.38 में मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) से सम्बन्धित बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.38 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
	कुल संख्या	49	12	61
बहिर्मुखी	मध्यमान प्रा0	38.7	32.33	37.8
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	7.9	7.59	7.28
	कुल संख्या	35	17	52
अन्तर्मुखी	मध्यमान प्रा0	34.7	23.7	33.76
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	4.5	11.6	4.91
	कुल संख्या	84	29	113
योग	मध्यमान प्रा0	37.5	31.7	35.9
	प्रा0वि0	7.04	6.30	7.33

तालिका 4.38 से स्पष्ट होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 37.5) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 31.7) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 37.8) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 33.76) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.7) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 23.7) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
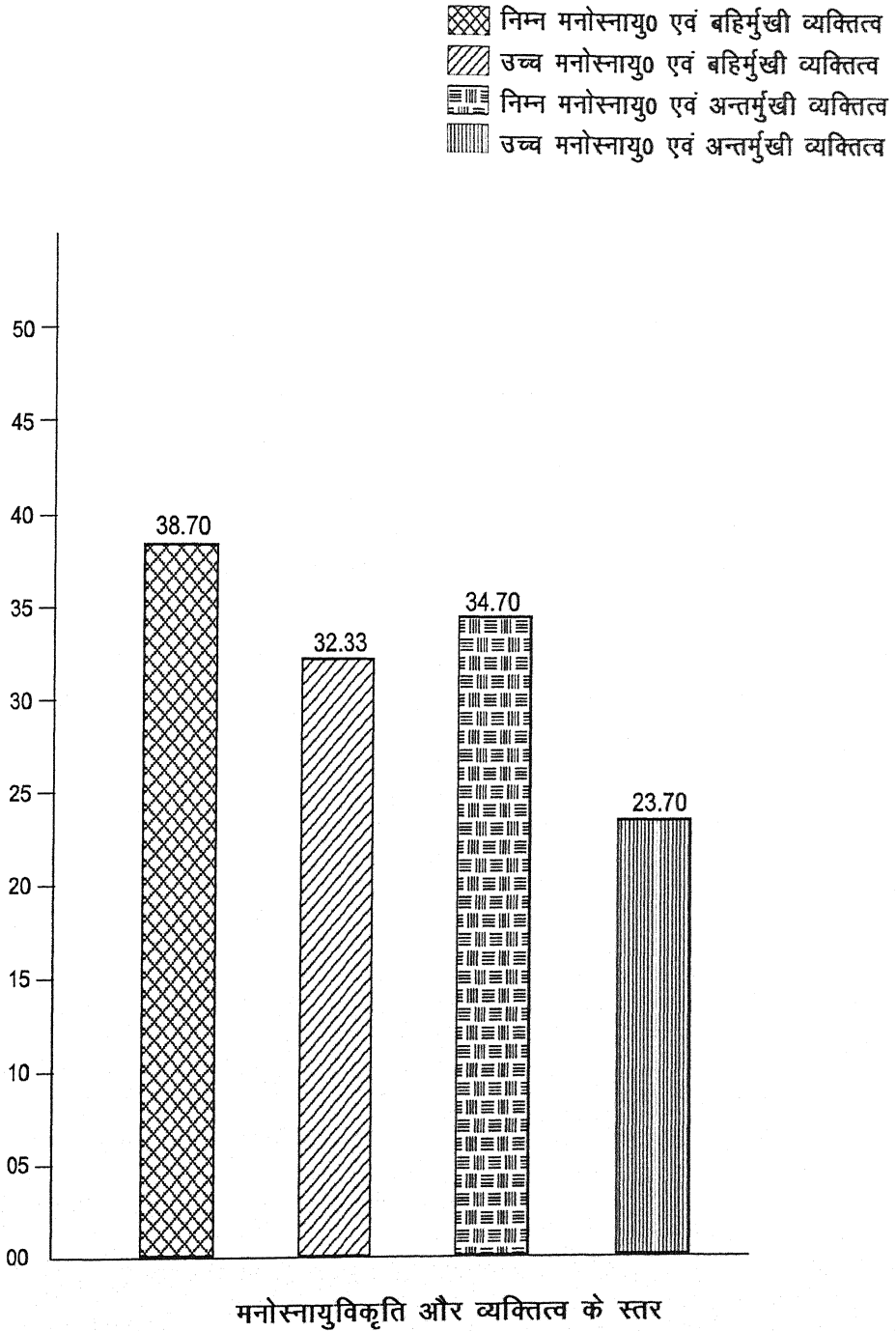
चित्र–38 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अन्तर्बर्हि) पर बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर के मध्यमान प्राप्तांक

मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का बौद्धिक योग्यता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.38 में दिये गये।

तालिका 4.38 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का बौद्धिक योग्यता पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	839.9	1	839.9	13.66
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	1589.3	1	1589.3	25.84
अर्न्तक्रिया : AxB	111.57	1	111.57	1.81
समूहान्तर्गत	6765.3	110	61.50	0.05 स्तर पर 3.94 0.01 स्तर पर 6.90

तालिका 4.38 से ज्ञात होता है कि–

(1) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) बौद्धिक योग्यता को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 25.84)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) बौद्धिक योग्यता को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 13.66)

(3) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव बौद्धिक योग्यता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 1.81)

आत्म विश्वास पर मनोस्नायुविकृति एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.39 में मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) से सम्बन्धित आत्म विश्वास के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.39 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
	कुल संख्या	49	12	61
बहिर्मुखी	मध्यमान प्रा0	41.9	40	41.5
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	4.6	4.94	4.77
	कुल संख्या	35	17	52
अन्तर्मुखी	मध्यमान प्रा0	35.5	38.2	38.5
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	4.5	4.09	4.22
	कुल संख्या	84	29	113
योग	मध्यमान प्रा0	40.5	39	39.8
	प्रा0वि0	4.87	4.54	6.13

तालिका 4.39 से स्पष्ट होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 40.5) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 39) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 41.5) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 38.5) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 41.9) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.2) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
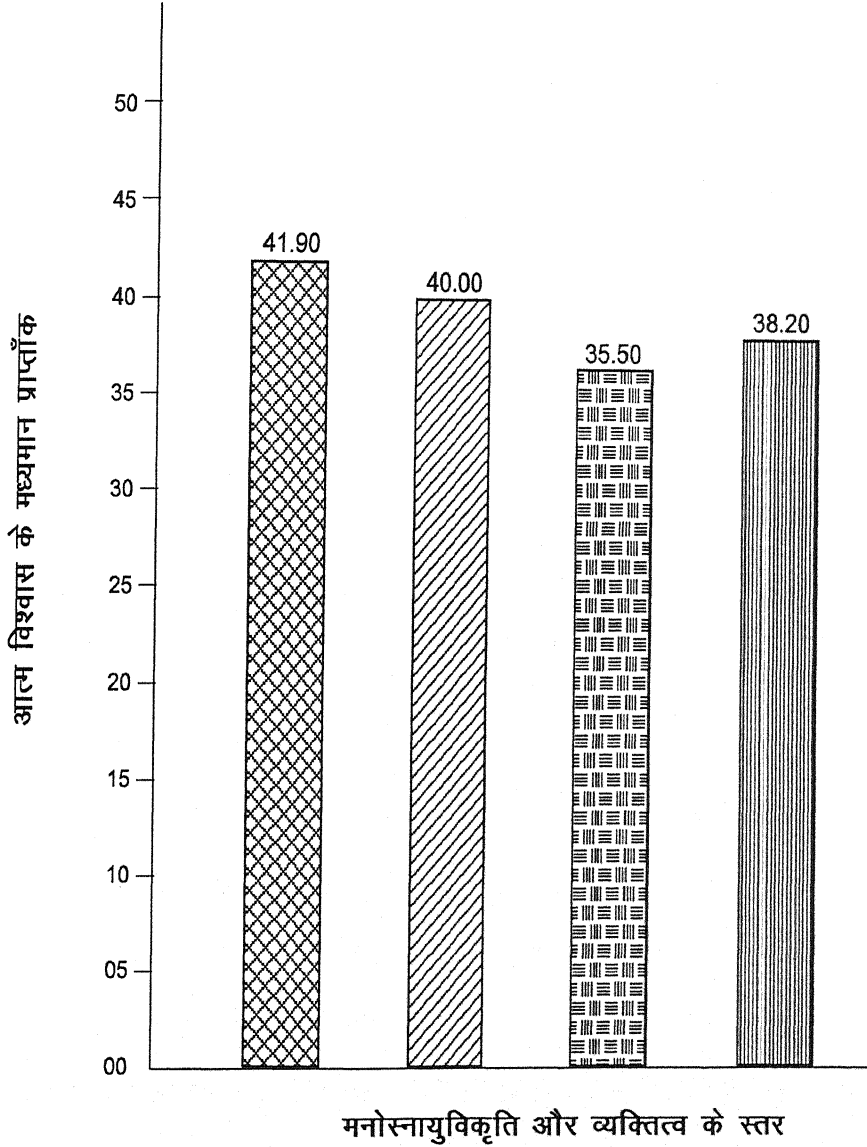
चित्र–39 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अन्तर्बर्हि) पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक

मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का आत्म विश्वास पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.39 में दिये गये।

तालिका 4.39 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का आत्म विश्वास पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	353.64	1	353.64	17.52
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	2.105	1	2.105	0.10
अर्न्तक्रिया : AxB	109.46	1	109.46	5.42
समूहान्तर्गत	2220.5	110	20.18	0.05 स्तर पर 3.94 0.01 स्तर पर 6.90

तालिका 4.39 से ज्ञात होता है कि–

(1) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) आत्म विश्वास को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.10)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) आत्म विश्वास को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 17.52)

(3) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव आत्म विश्वास को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 5.42)

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर मनोस्नायुविकृति एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.40 में मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) से सम्बन्धित स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.40 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
	कुल संख्या	49	12	61
बहिर्मुखी	मध्यमान प्रा0	37.3	33.5	38.6
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	8.6	4.42	5.10
	कुल संख्या	35	17	52
अन्तर्मुखी	मध्यमान प्रा0	35.8	26.8	35.3
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	5.5	13.9	5.54
	कुल संख्या	84	29	113
योग	मध्यमान प्रा0	37.6	34.1	36.7
	प्रा0वि0	5.44	5.04	5.57

तालिका 4.39 से स्पष्ट होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 37.6) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 34.1) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 38.6) अन्तर्मुखी व्यक्तितत्व के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 35.3) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 37.3) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 26.8) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
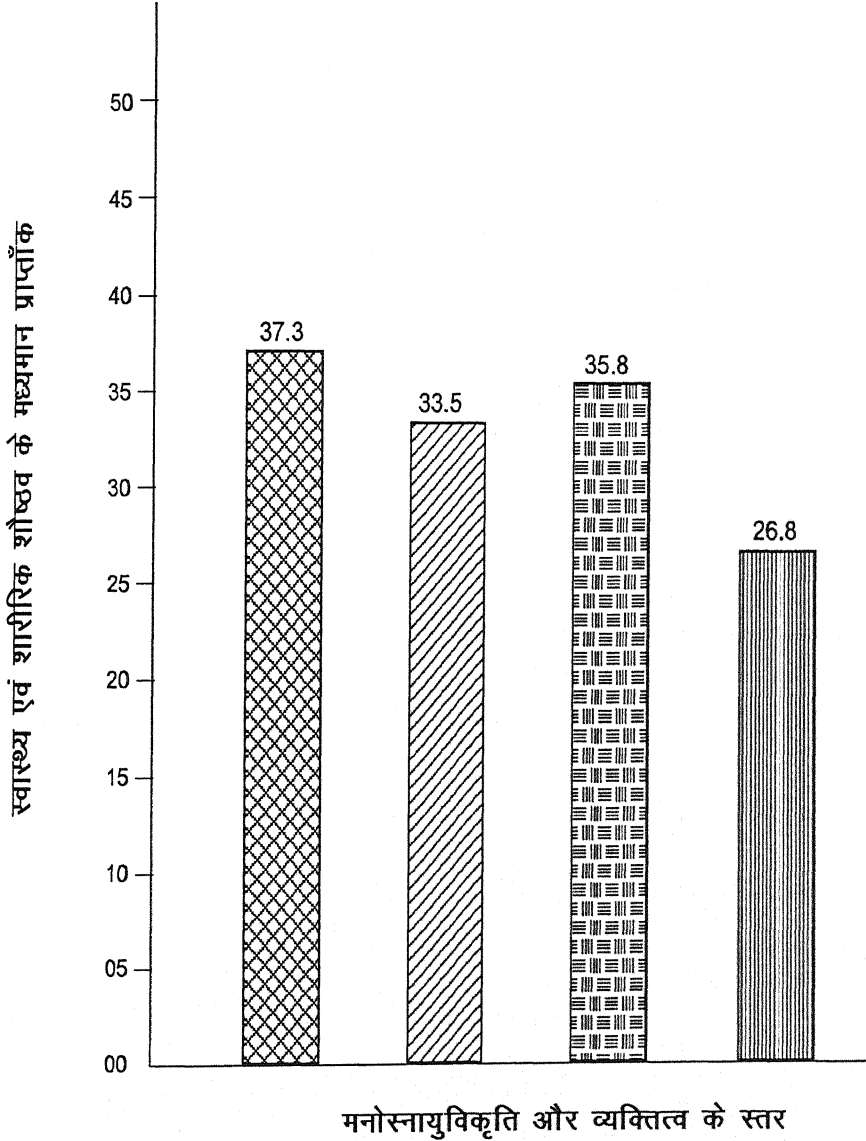
चित्र–40 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अन्तर्बर्हि) पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक

मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.40 में दिये गये।

तालिका 4.40 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी / अन्तर्मुखी)	353.64	1	353.64	4.72
B मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न)	863.1	1	863.1	11.52
अर्न्तक्रिया : AxB	141.04	1	141.04	1.88
समूहान्तर्गत	8239.7	110	74.91	0.05 स्तर पर 3.94 0.01 स्तर पर 6.90

तालिका 4.40 से ज्ञात होता है कि–

(1) मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 11.52)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 4.72)

(3) मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 1.88)

सामाजिकता पर मनोस्नायुविकृति एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.41 में मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) से सम्बन्धित सामाजिकता के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.41 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	49	12	61
	मध्यमान प्रा0	40.9	39.3	40.9
	प्रा0वि0	4.7	3.74	4.52
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	35	17	52
	मध्यमान प्रा0	37.8	36.3	38.17
	प्रा0वि0	3.9	9.5	3.89
योग	कुल संख्या	84	29	113
	मध्यमान प्रा0	39.7	38.8	39.45
	प्रा0वि0	4.70	4.27	4.59

तालिका 4.40 से स्पष्ट होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 39.7) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 38.8) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 40.9) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 38.17) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 40.9) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 36.3) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
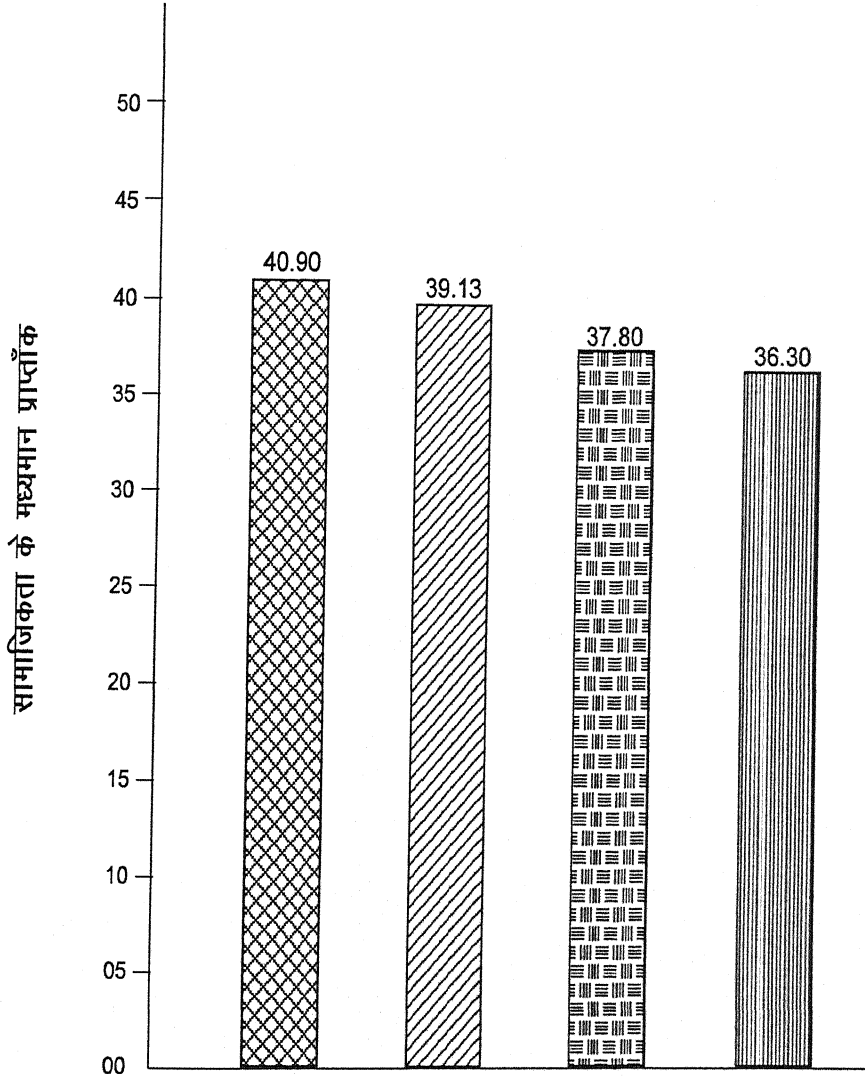
चित्र–41 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक

मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का सामाजिकता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.41 में दिये गये।

तालिका 4.41 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का सामाजिकता पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	246.29	1	246.29	8.12
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	98.94	1	98.94	3.26
अर्न्तक्रिया : AxB	52.63	1	52.63	1.73
समूहान्तर्गत	3337.2	110	30.34	0.05 स्तर पर 3.94 0.01 स्तर पर 6.90

तालिका 4.41 से ज्ञात होता है कि–

(1) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) सामाजिकता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 3.26)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) सामाजिकता को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात = 8.12)

(3) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव सामाजिकता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 1.73)

संवेगात्मक स्थिरता पर मनोस्नायुविकृति एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.42 में मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) से सम्बन्धित संवेगात्मक स्थिरता के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.42 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	49	12	61
	मध्यमान प्रा0	34.9	32.6	34.56
	प्रा0वि0	5.4	5.42	5.67
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	35	17	52
	मध्यमान प्रा0	31.5	26.1	31.6
	प्रा0वि0	7.6	8.5	5.16
योग	कुल संख्या	84	29	113
	मध्यमान प्रा0	33.2	30.7	32.6
	प्रा0वि0	6.78	4.67	6.40

तालिका 4.42 से स्पष्ट होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 33.2) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 30.7) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 34.56) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 31.6) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 34.9) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 26.1) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
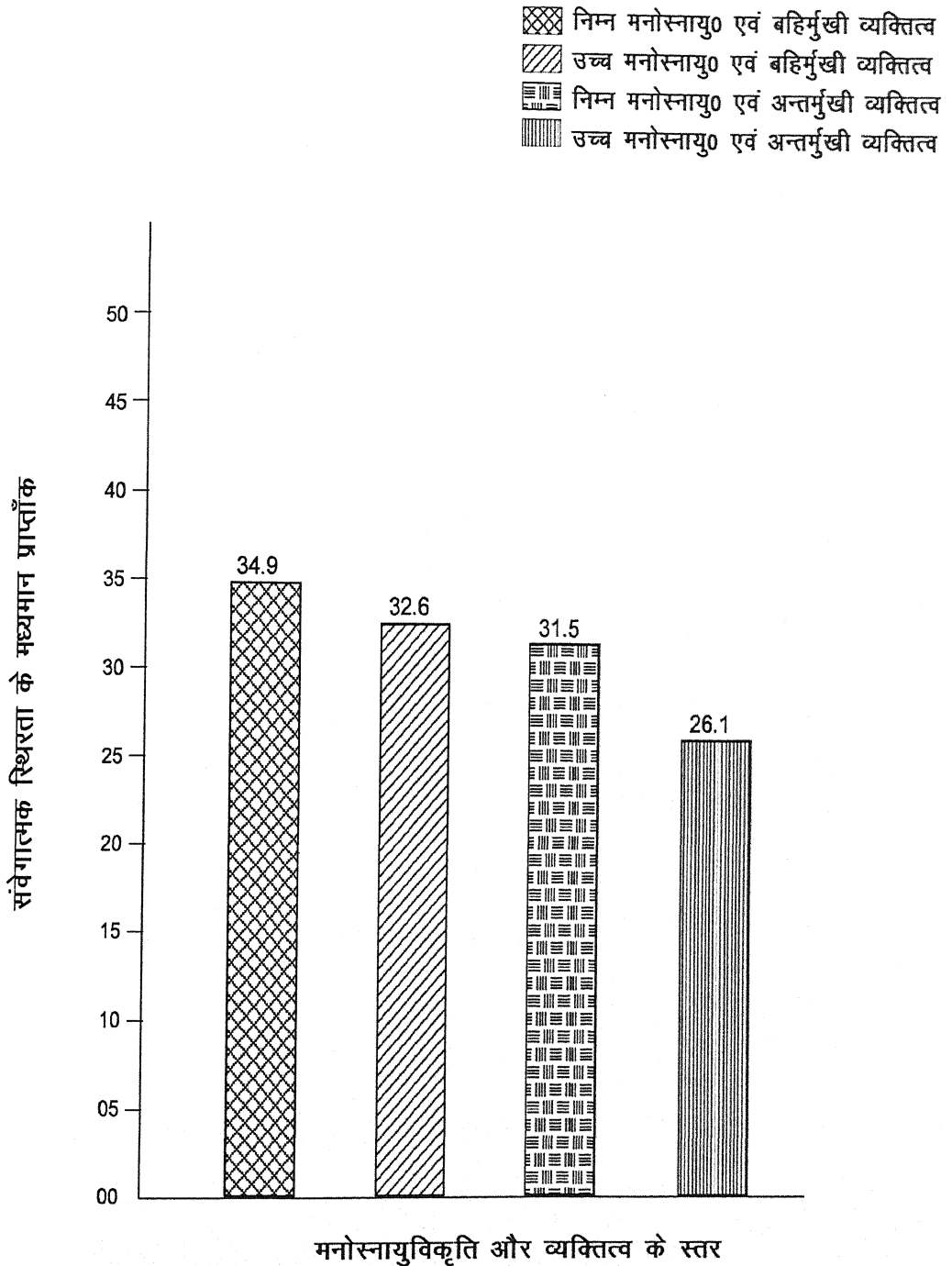
चित्र–42 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) और व्यक्तित्व (अन्तर्बर्हि) पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक

मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का संवेगात्मक स्थिरता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.42 में दिये गये ।

तालिका 4.42 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का संवेगात्मक स्थिरता पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	513.62	1	513.62	5.14
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	311.54	1	311.54	3.12
अर्न्तक्रिया : AxB	52.63	1	52.63	0.53
समूहान्तर्गत	10997.1	110	99.97	0.05 स्तर पर 3.94 0.01 स्तर पर 6.90

तालिका 4.42 से ज्ञात होता है कि–

(1) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) संवेगात्मक स्थिरता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 3.12)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) संवेगात्मक स्थिरता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात = 5.14)

(3) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव संवेगात्मक स्थिरता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 0.53)

मानसिक स्वास्थ्य पर मनोस्नायुविकृति एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.43 में मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) से सम्बन्धित मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.43 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	49	12	61
	मध्यमान प्रा0	34.9	40.08	42.7
	प्रा0वि0	5.04	5.09	5.40
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	35	17	52
	मध्यमान प्रा0	39.7	36.5	40.0
	प्रा0वि0	8.10	9.04	5.21
योग	कुल संख्या	84	29	113
	मध्यमान प्रा0	42.5	36.4	41.7
	प्रा0वि0	5.04	6.09	5.26

तालिका 4.43 से स्पष्ट होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 42.5) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 36.4) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 42.7) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 40.0) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 34.9) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 36.5) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
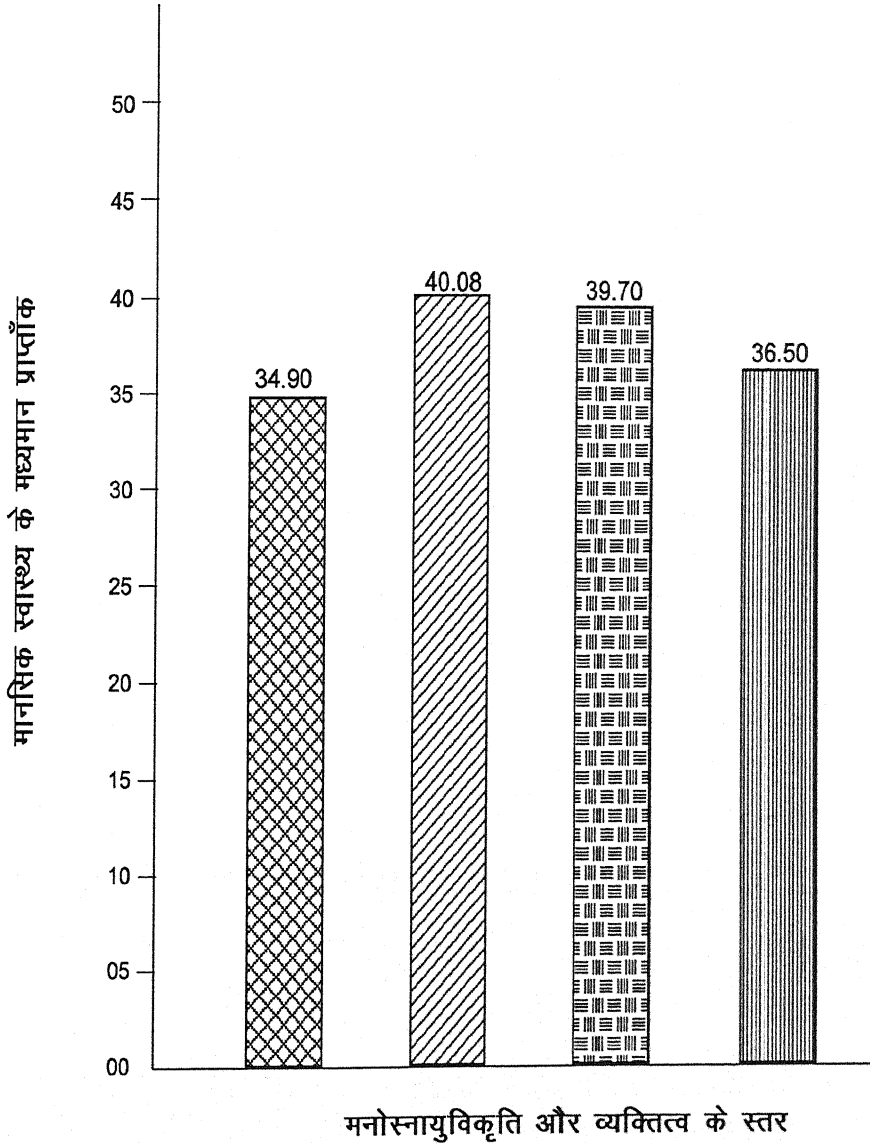
चित्र–43 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक

मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.43 में दिये गये।

तालिका 4.43 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	8.42	1	8.42	0.18
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	23.16	1	23.16	0.49
अर्न्तक्रिया : AxB	368.4	1	368.4	7.72
समूहान्तर्गत	5246.2	110	47.69	0.05 स्तर पर 3.94 0.01 स्तर पर 6.90

तालिका 4.43 से ज्ञात होता है कि–

(1) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) मानसिक स्वास्थ्य को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.49)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) मानसिक स्वास्थ्य को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 0.18)

(3) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात= 7.72)

स्वभावगत विशेषताओं पर मनोस्नायुविकृति एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.44 में मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) से सम्बन्धित स्वभावगत विशेषताओं के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.44 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
	कुल संख्या	49	12	61
बहिर्मुखी	मध्यमान प्रा0	40.7	37.6	39.8
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	4.4	4.36	4.18
	कुल संख्या	35	17	52
अन्तर्मुखी	मध्यमान प्रा0	37.2	31.8	37.9
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	5.10	9.62	5.47
	कुल संख्या	84	29	113
योग	मध्यमान प्रा0	39.18	38	38.8
	प्रा0वि0	4.63	4.95	4.96

तालिका 4.44 से स्पष्ट होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 39.18) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 38.0) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 39.8) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 37.9) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 40.7) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 31.8) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
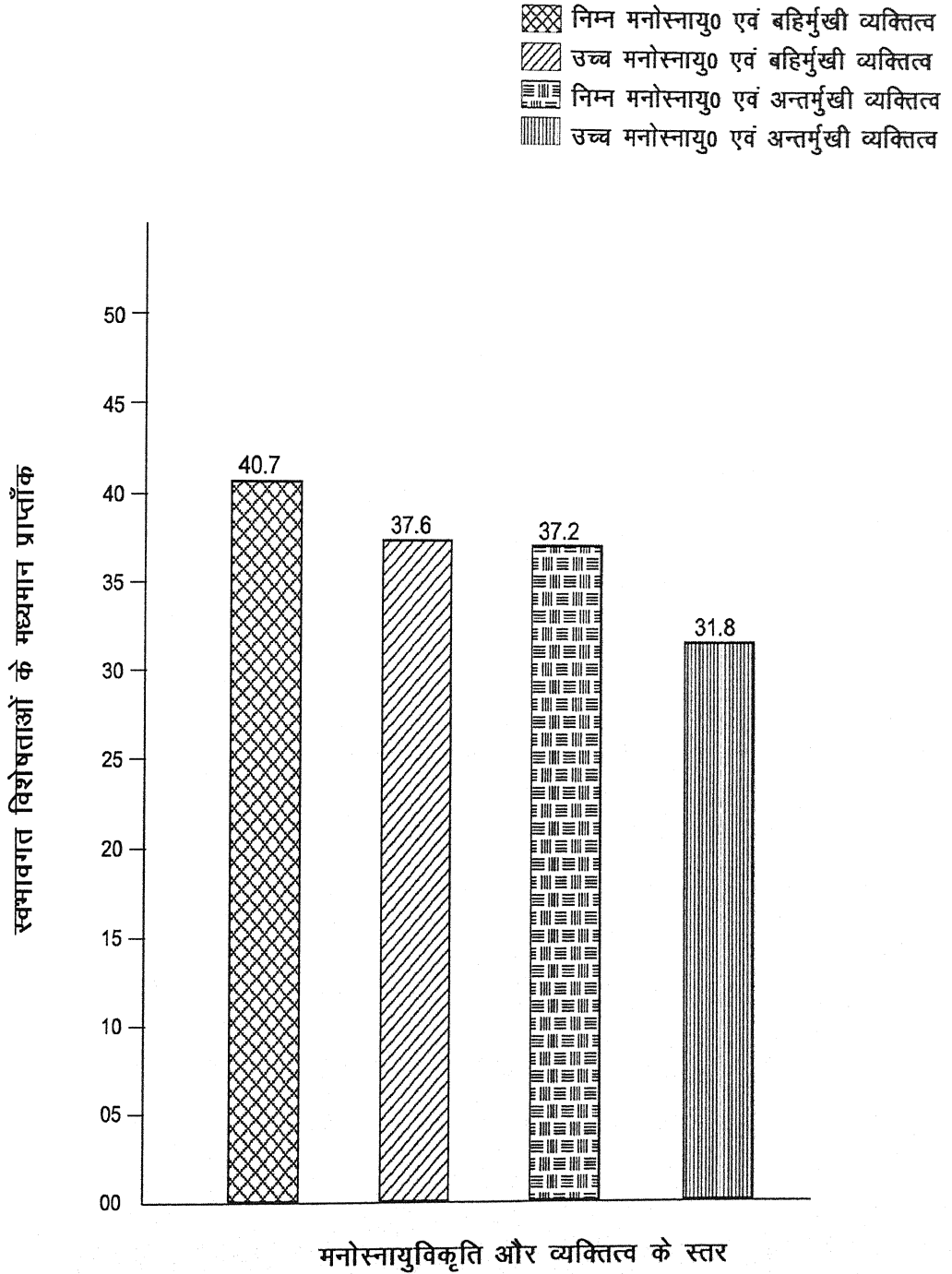
चित्र–44 : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्तांक

मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का स्वभावगत विशेषतायें पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.44 में दिये गये ।

तालिका 4.44 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का स्वभावगत विशेषतायें पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	454.68	1	454.68	8.94
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	383.11	1	383.11	7.53
अर्न्तक्रिया : AxB	23.16	1	23.16	0.46
समूहान्तर्गत	5594.2	110	50.86	0.05 स्तर पर 3.94 0.01 स्तर पर 6.90

तालिका 4.44 से ज्ञात होता है कि–

(1) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) स्वभावगत विशेषतायें को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती (एफ अनुपात = 7.53)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) स्वभावगत विशेषतायें को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात = 8.94)

(3) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव स्वभावगत विशेषतायें को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 0.46)

श्रेष्ठता की भावना पर मनोस्नायुविकृति एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.45 में मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) से सम्बन्धित श्रेष्ठता की भावना के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.45 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		मनोस्नायुविकृति		योग
		उच्च	निम्न	
	कुल संख्या	49	12	61
बहिर्मुखी	मध्यमान प्रा0	28.9	28.7	28.9
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	5.9	6.17	6.01
	कुल संख्या	35	17	52
अन्तर्मुखी	मध्यमान प्रा0	26.9	20.8	26.48
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	7.10	5.33	5.69
	कुल संख्या	84	29	113
योग	मध्यमान प्रा0	27.9	27.3	27.9
	प्रा0वि0	5.82	6.13	

तालिका 4.44 से स्पष्ट होता है कि निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 27.9) उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 27.3) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 28.9) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 26.48) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावनों के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 28.9) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि निम्न अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च मनोस्नायुविकृति के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 20.8) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
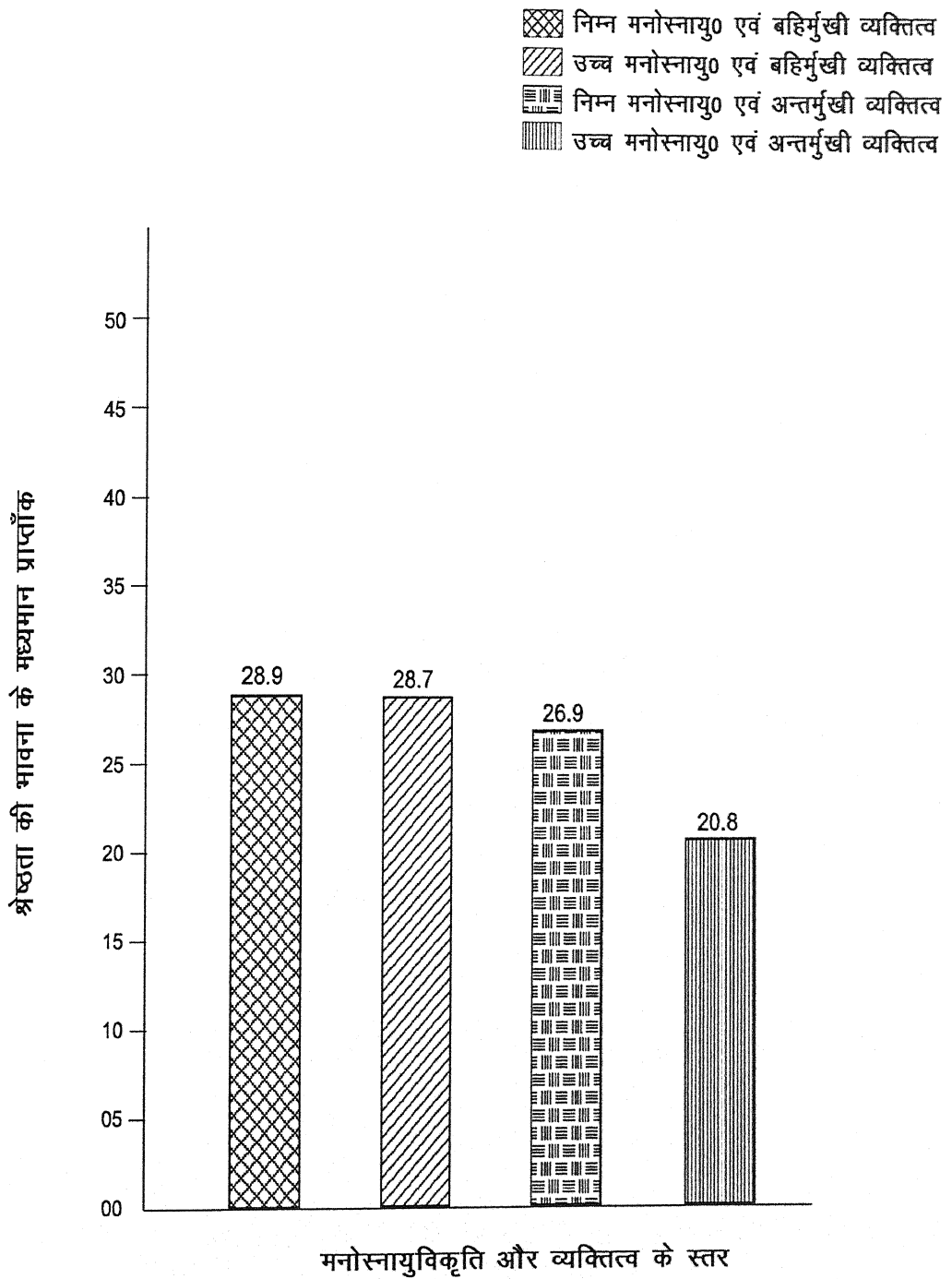
चित्र–45 : मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक

मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का श्रेष्ठता की भावना पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.45 में दिये गये ।

तालिका 4.45 : एफ अनुपात : मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का श्रेष्ठता की भावना पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	515.72	1	515.72	7.93
B मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न)	208.4	1	208.4	3.20
अर्न्तक्रिया : AxB	183.14	1	183.14	2.81
समूहान्तर्गत	7157.1	110	65.06	0.05 स्तर पर 3.94 0.01 स्तर पर 6.90

तालिका 4.45 से ज्ञात होता है कि–

(1) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) श्रेष्ठता की भावना को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 3.20)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) श्रेष्ठता की भावना को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात = 7.93)

(3) मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव श्रेष्ठता की भावना को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 2.81)

3- आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) का अध्ययन करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। Q_1 और Q_3 के मूल्यों के आधार पर निम्न चार समूह प्राप्त किये हैं।

(1) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व (N= 16)

(2) उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व (N= 19)

(3) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व (N= 41)

(4) उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व (N= 12)

अनुसंधानकर्ता जानना चाहता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा (निम्न / उच्च) और व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) का आत्म प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ता है। और साथ ही साथ इन दोनों परिवर्तियों का आत्म प्रत्यय पर अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव क्या है।

आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.46 में उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) से सम्बन्धित आत्म प्रत्यय के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.46 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		उपलब्धि अभिप्रेरणा		योग
		उच्च	निम्न	
	कुल संख्या	16	19	35
बहिर्मुखी	मध्यमान प्रा0	309.12	307.2	307.7
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	24.64	34.80	31.08
	कुल संख्या	41	12	53
अन्तर्मुखी	मध्यमान प्रा0	276.73	274.58	280.8
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	49.32	21.11	25.44
	कुल संख्या	57	31	88
योग	मध्यमान प्रा0	284.8	286.06	288.1
	प्रा0वि0	45.60	58.43	42.26

तालिका 4.46 से स्पष्ट होता है कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 286.06) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 284.8) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 307.7) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 280.8) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 307.2) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न उपलबिध अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 276.73) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
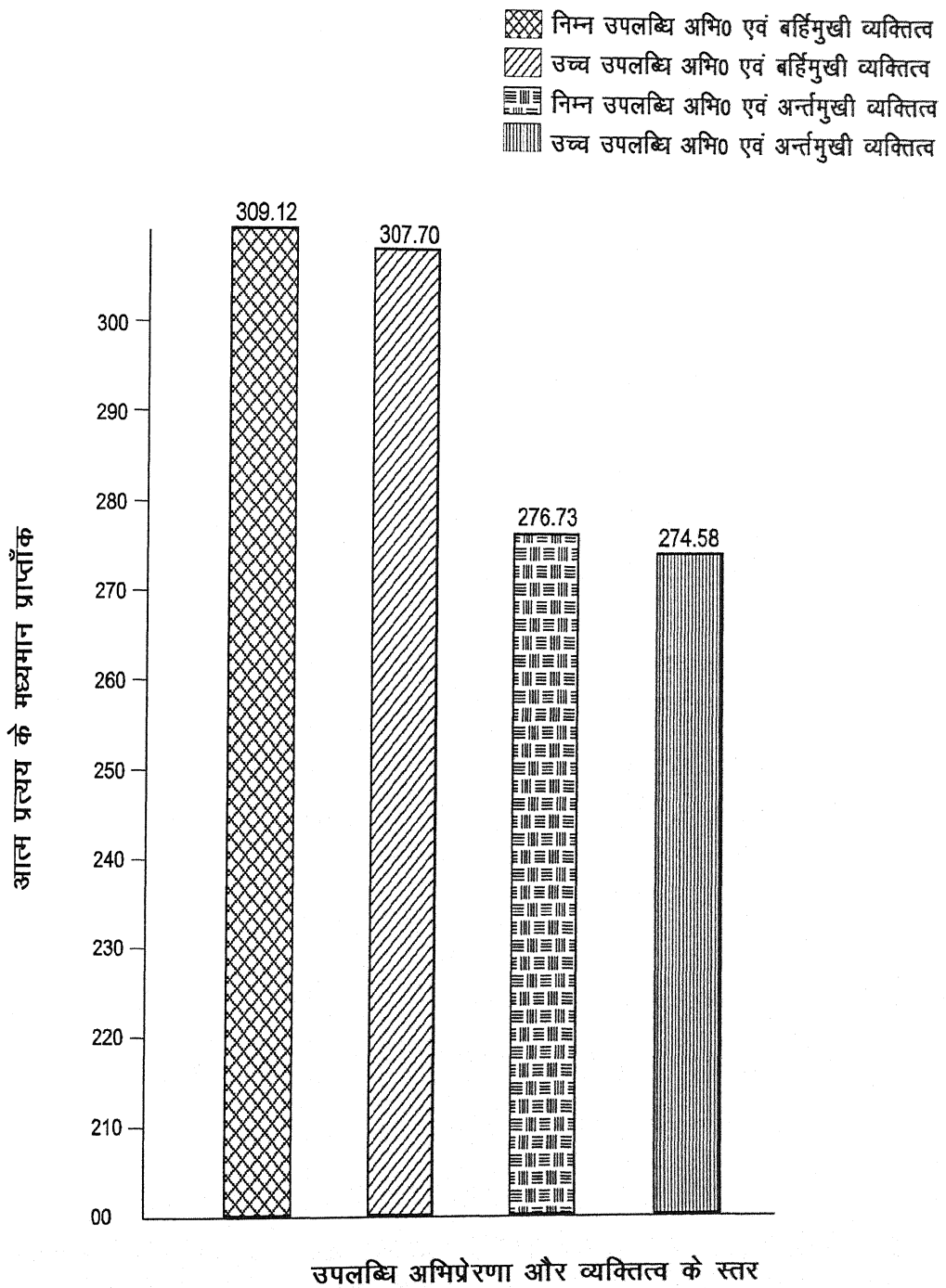
चित्र–46 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का आत्म प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका नं0– 4.46 में दिये गये।

तालिका 4.46 : एफ अनुपात : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का आत्म प्रत्यय पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	20128.2	1	20128.2	9.008
B उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	80.01	1	80.01	0.035
अर्न्तक्रिया : AxB	00	1	00	00
समूहान्तर्गत	189924.3	85	2234.4	0.05 स्तर पर 3.96 0.01 स्तर पर 6.96

तालिका 4.46 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) आत्म प्रत्यय को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.035)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) आत्म प्रत्यय को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 9.008)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव आत्म प्रत्यय को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 00)

बौद्विक योग्यता पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.47 में उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) से सम्बन्धित बौद्धिक योग्यता के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.47 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		उपलब्धि अभिप्रेरणा		योग
		उच्च	निम्न	
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	16	19	35
	मध्यमान प्रा0	38.68	37.89	38.2
	प्रा0वि0	3.81	7.17	6.15
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	41	12	53
	मध्यमान प्रा0	32.48	34.41	33
	प्रा0वि0	4.83	5.29	6.75
योग	कुल संख्या	57	31	88
	मध्यमान प्रा0	33.68	36.90	34.6
	प्रा0वि0	6.81	6.91	6.92

तालिका 4.47 से स्पष्ट होता है कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 36.90) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 33.68) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 38.2) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 33.00) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 37.89) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न उपलबिध अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 32.48) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
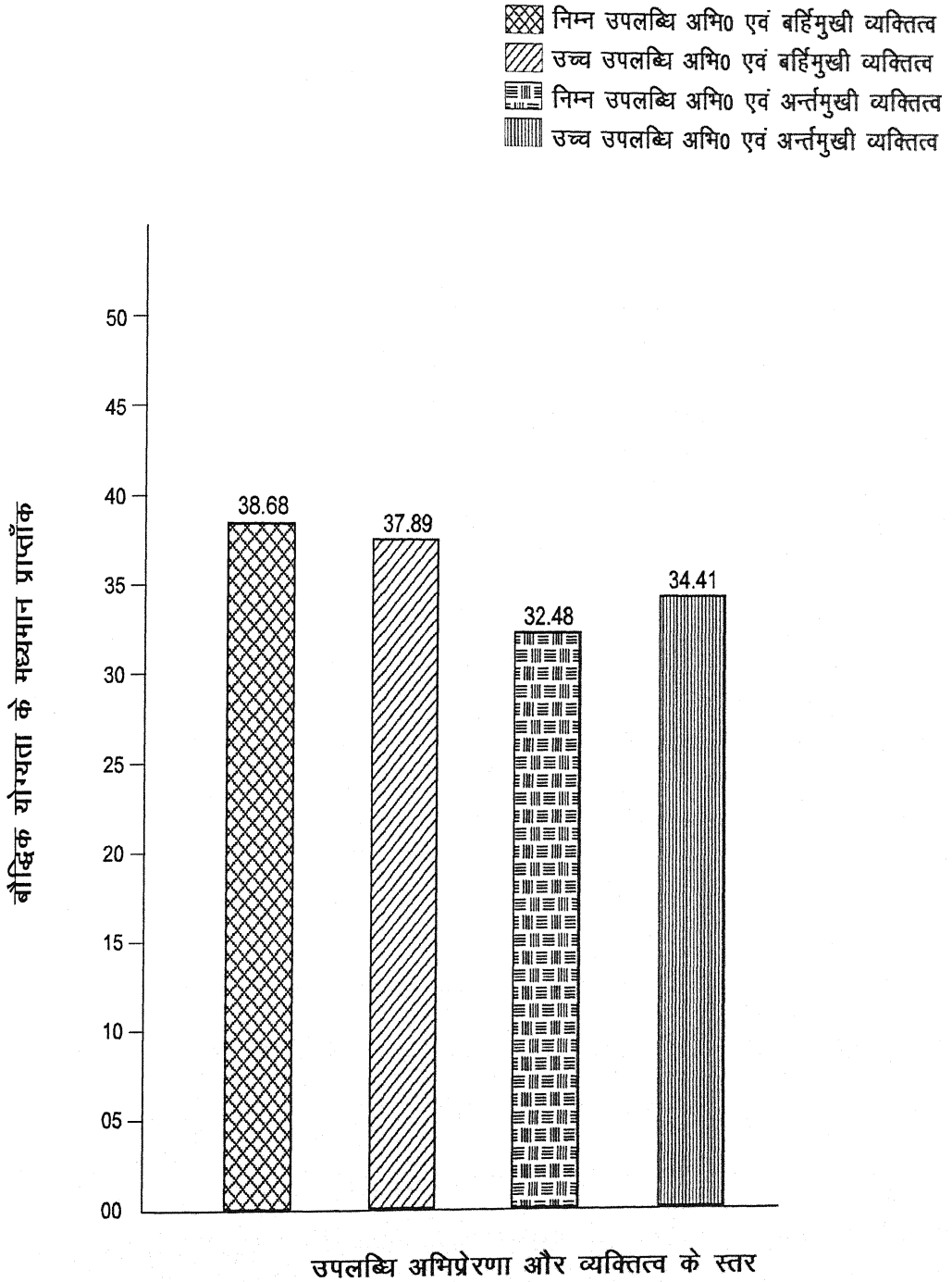
चित्र–47 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अन्तर्बर्हि) पर बौद्धिक योग्यता का प्रभाव के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का बौद्धिक योग्यता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.47 में दिये गये।

तालिका 4.47 : एफ अनुपात : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का बौद्धिक योग्यता पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	445.8	1	445.8	2.54
B उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	5.72	1	5.72	0.033
अर्न्तक्रिया : AxB	34.29	1	34.29	0.19
समूहान्तर्गत	14926.5	85	175.6	0.05 स्तर पर 3.96 0.01 स्तर पर 6.96

तालिका 4.47 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) बौद्धिक योग्यता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.033)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) बौद्धिक योग्यता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 2.54)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव बौद्धिक योग्यता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 0.19)

आत्म विश्वास पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.48 में उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) से सम्बन्धित आत्म विश्वास के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.48 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		उपलब्धि अभिप्रेरणा		योग
		उच्च	निम्न	
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	16	19	35
	मध्यमान प्रा0	41.76	41.3	41.38
	प्रा0वि0	3.62	3.83	3.74
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	41	12	53
	मध्यमान प्रा0	38.48	38.16	38.58
	प्रा0वि0	4.86	3.89	4.85
योग	कुल संख्या	57	31	88
	मध्यमान प्रा0	39.22	40.09	39.53
	प्रा0वि0	4.76	4.15	4.57

तालिका 4.48 से स्पष्ट होता है कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 40.09) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 39.22) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का बौद्धिक योग्यता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 41.38) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 38.58) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 41.3) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न उपलबिध अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.48) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
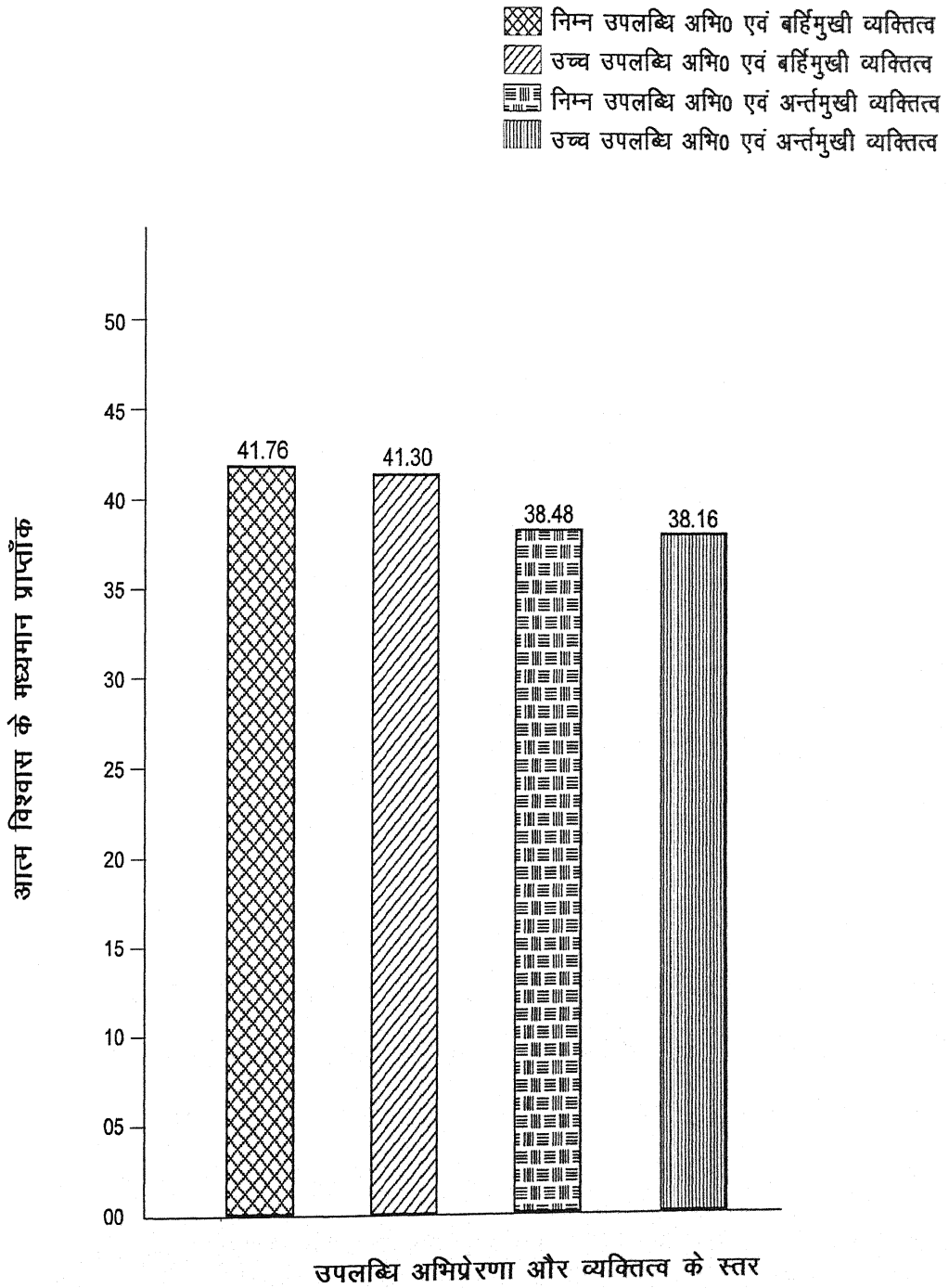
चित्र–48 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) और व्यक्तित्व (अन्तर्बर्हि) पर आत्म विश्वास के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का आत्म विश्वास पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.48 में दिये गये ।

तालिका 4.48 : एफ अनुपात : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का आत्म विश्वास पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	196.2	1	196.2	2.75
B उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	3.81	1	3.81	0.05
अर्न्तक्रिया : AxB	1.91	1	1.91	0.027
समूहान्तर्गत	6064.2	85	71.34	0.05 स्तर पर 3.96 0.01 स्तर पर 6.96

तालिका 4.48 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) आत्म विश्वास को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.05)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) आत्म विश्वास को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 2.75)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव आत्म विश्वास को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 0.027)

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.49 में उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) से सम्बन्धित स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.49 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		उपलब्धि अभिप्रेरणा		योग
		उच्च	निम्न	
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	16	19	35
	मध्यमान प्रा0	37.12	39	38.37
	प्रा0वि0	3.68	5.83	4.70
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	41	12	53
	मध्यमान प्रा0	36	34.66	35.71
	प्रा0वि0	6.01	4.06	5.66
योग	कुल संख्या	57	31	88
	मध्यमान प्रा0	36.40	37.32	36.70
	प्रा0वि0	5.45	5.63	5.53

तालिका 4.49 से स्पष्ट होता है कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 37.32) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 36.40) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 38.37) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 35.71) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 39.00) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न उपलबिध अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 37.12) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
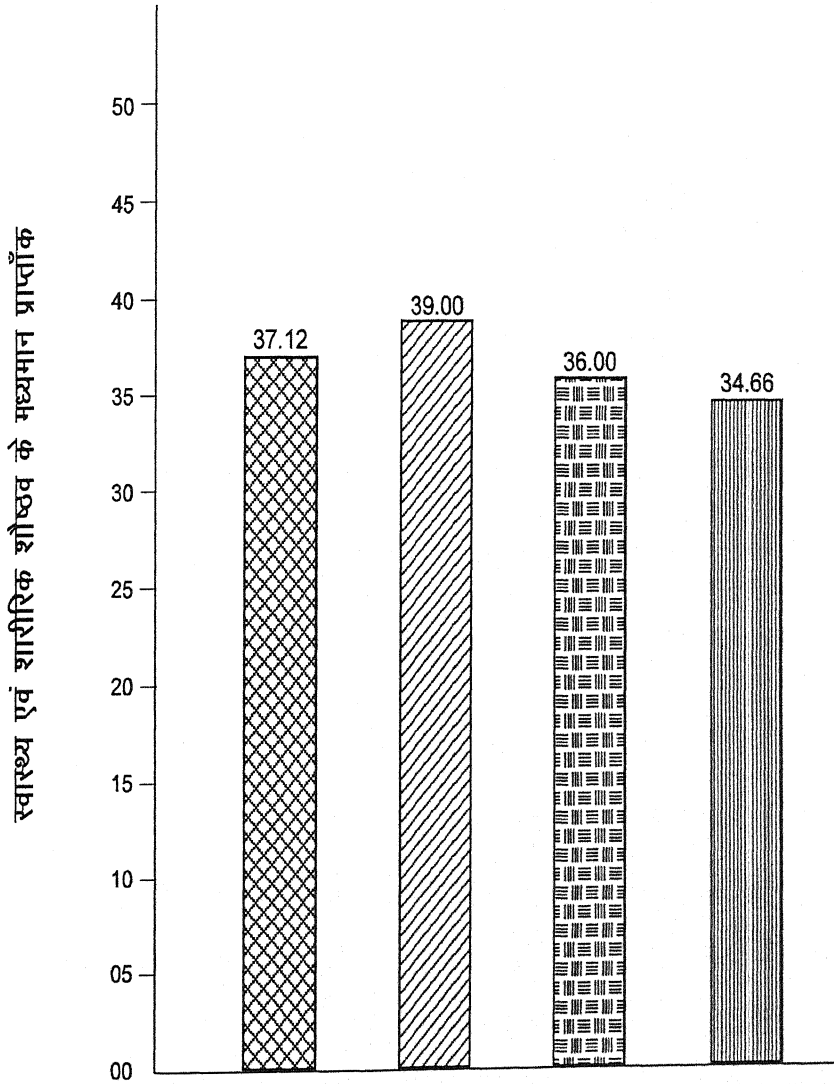
चित्र–49 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.49 में दिये गये ।

तालिका 4.49 : एफ अनुपात : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	142.88	1	142.88	0.74
B उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	1.91	1	1.91	0.00
अर्न्तक्रिया : AxB	47.63	1	47.63	0.25
समूहान्तर्गत	16411.1	85	193.07	0.05 स्तर पर 3.96 0.01 स्तर पर 6.96

तालिका 4.49 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.00)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 0.74)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 0.25)

सामाजिकता पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.50 में उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) से सम्बन्धित सामाजिकता के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.50 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		उपलब्धि अभिप्रेरणा		योग
		उच्च	निम्न	
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	16	19	35
	मध्यमान प्रा0	43	40.73	41.85
	प्रा0वि0	3.02	3.98	3.62
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	41	12	53
	मध्यमान प्रा0	37.65	34.41	37.64
	प्रा0वि0	7.10	4.36	4.72
योग	कुल संख्या	57	31	88
	मध्यमान प्रा0	39.77	38.29	39.34
	प्रा0वि0	4.34	5.29	4.74

तालिका 4.50 से स्पष्ट होता है कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 38.29) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 39.77) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 41.85) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 37.64) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 40.73) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न उपलबिध अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 37.65) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
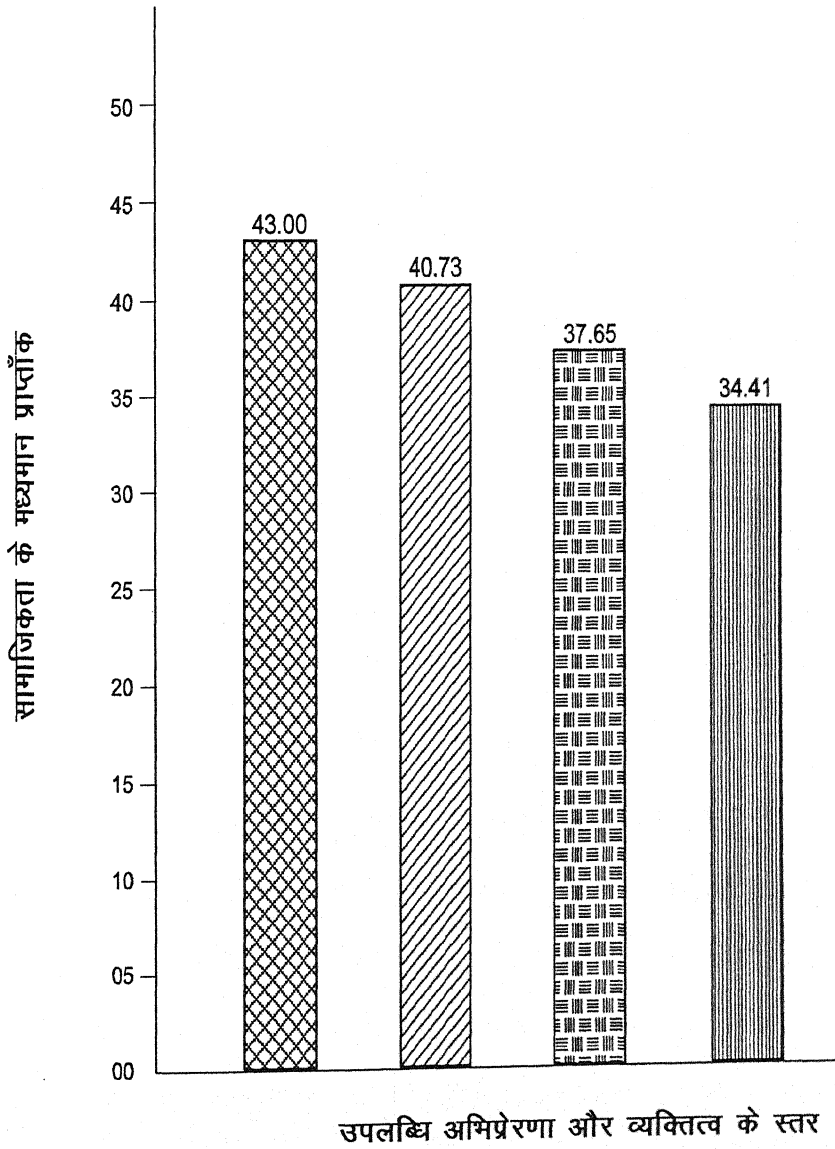
चित्र–50 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर सामाजिकता के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का सामाजिकता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.50 में दिये गये ।

तालिका 4.50 : एफ अनुपात : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का सामाजिकता पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	649.61	1	649.61	20.12
B उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	144.78	1	144.78	4.49
अर्न्तक्रिया : AxB	1.91	1	1.91	0.06
समूहान्तर्गत	243.8	85	32.28	0.05 स्तर पर 3.96 0.01 स्तर पर 6.96

तालिका 4.50 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) सामाजिकता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 4.49)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) सामाजिकता को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 20.12)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव सामाजिकता को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 0.06)

संवेगात्मक स्थिरता पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.51 में उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) से सम्बन्धित संवेगात्मक स्थिरता के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.51 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		उपलब्धि अभिप्रेरणा		योग
		उच्च	निम्न	
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	16	19	35
	मध्यमान प्रा0	33.12	35.78	34.67
	प्रा0वि0	4.15	6.00	5.00
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	41	12	53
	मध्यमान प्रा0	30.80	29.91	30.68
	प्रा0वि0	75.70	4.51	5.52
योग	कुल संख्या	57	31	88
	मध्यमान प्रा0	31.26	33.5	32.05
	प्रा0वि0	5.17	6.19	5.65

तालिका 4.51 से स्पष्ट होता है कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 33.5) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 31.26) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 34.67) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 30.68) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 35.78) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न उपलबिध अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 30.80) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
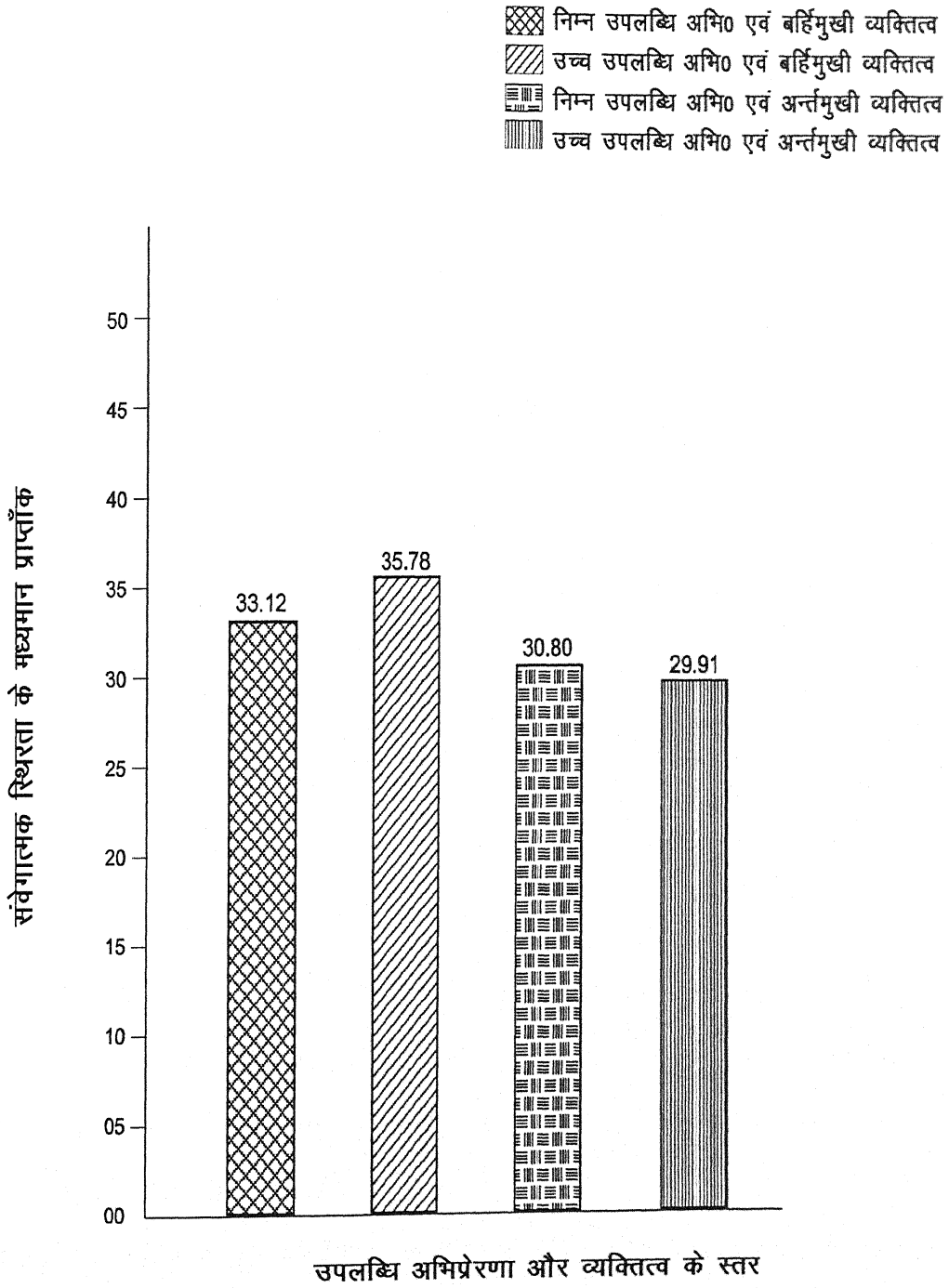
चित्र–51 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर संवेगात्मक स्थिरता के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का संवेगात्मक स्थिरता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.51 में दिये गये।

तालिका 4.51 : एफ अनुपात : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का संवेगात्मक स्थिरता पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	320.0	1	320.0	2.28
B उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	15.24	1	15.24	0.11
अर्न्तक्रिया : AxB	57.15	1	57.15	0.41
समूहान्तर्गत	11938.5	85	140.45	0.05 स्तर पर 3.96 0.01 स्तर पर 6.96

तालिका 4.51 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) संवेगात्मक स्थिरता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.11)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) संवेगात्मक स्थिरता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है (एफ अनुपात = 2.28)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव संवेगात्मक स्थिरता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 0.41)

मानसिक स्वास्थ्य पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.52 में उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) से सम्बन्धित मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.52 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		उपलब्धि अभिप्रेरणा		योग
		उच्च	निम्न	
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	16	19	35
	मध्यमान प्रा0	45.31	43.05	40.62
	प्रा0वि0	3.09	4.75	7.05
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	41	12	53
	मध्यमान प्रा0	39.49	39.91	40.5
	प्रा0वि0	7.39	4.53	4.82
योग	कुल संख्या	57	31	88
	मध्यमान प्रा0	41.98	42.06	42.40
	प्रा0वि0	4.96	4.86	

तालिका 4.52 से स्पष्ट होता है कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 42.06) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 41.98) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 40.62) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 40.05) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 43.05) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न उपलबिध अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 39.48) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
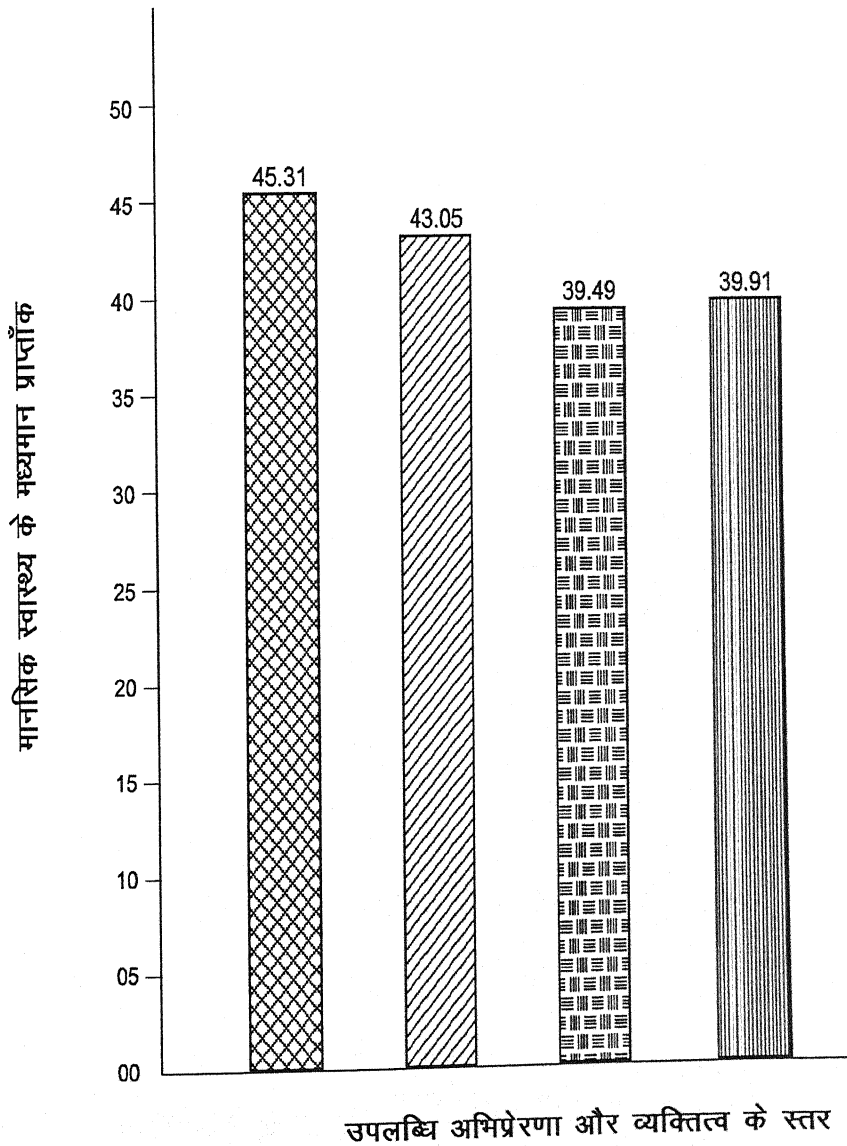
चित्र–52 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अन्र्तबर्हि) पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.52 में दिये गये।

तालिका 4.52 : एफ अनुपात : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	381	1	381	10.54
B उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	15.24	1	15.24	0.42
अर्न्तक्रिया : AxB	34.29	1	34.29	0.95
समूहान्तर्गत	3073.4	85	36.16	0.05 स्तर पर 3.96 0.01 स्तर पर 6.96

तालिका 4.52 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) मानसिक स्वास्थ्य को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 0.42)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) मानसिक स्वास्थ्य को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 10.54)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अन्र्तक्रियात्मक प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 0.95)

स्वभावगत विशेषताओं पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.53 में उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) से सम्बन्धित स्वभावगत विशेषताओं के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.53 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		उपलब्धि अभिप्रेरणा		योग
		उच्च	निम्न	
	कुल संख्या	16	19	35
बहिर्मुखी	मध्यमान प्रा0	40.37	40.05	39.89
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	4.09	3.37	3.83
	कुल संख्या	41	12	53
अन्तर्मुखी	मध्यमान प्रा0	38.36	34.08	37.81
व्यक्तित्व	प्रा0वि0	4.44	10.89	4.43
	कुल संख्या	57	31	88
योग	मध्यमान प्रा0	38.43	37.70	37.82
	प्रा0वि0	6.46	7.23	7.91

तालिका 4.53 से स्पष्ट होता है कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 37.70) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.43) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 39.89) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 37.81) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 40.05) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न उपलबिध अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का स्वभावगत विशेषतायें के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 38.36) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।

निम्न उपलब्धि अभि0 एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व
उच्च उपलब्धि अभि0 एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व
निम्न उपलब्धि अभि0 एवं अर्न्तमुखी व्यक्तित्व
उच्च उपलब्धि अभि0 एवं अर्न्तमुखी व्यक्तित्व

उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के स्तर
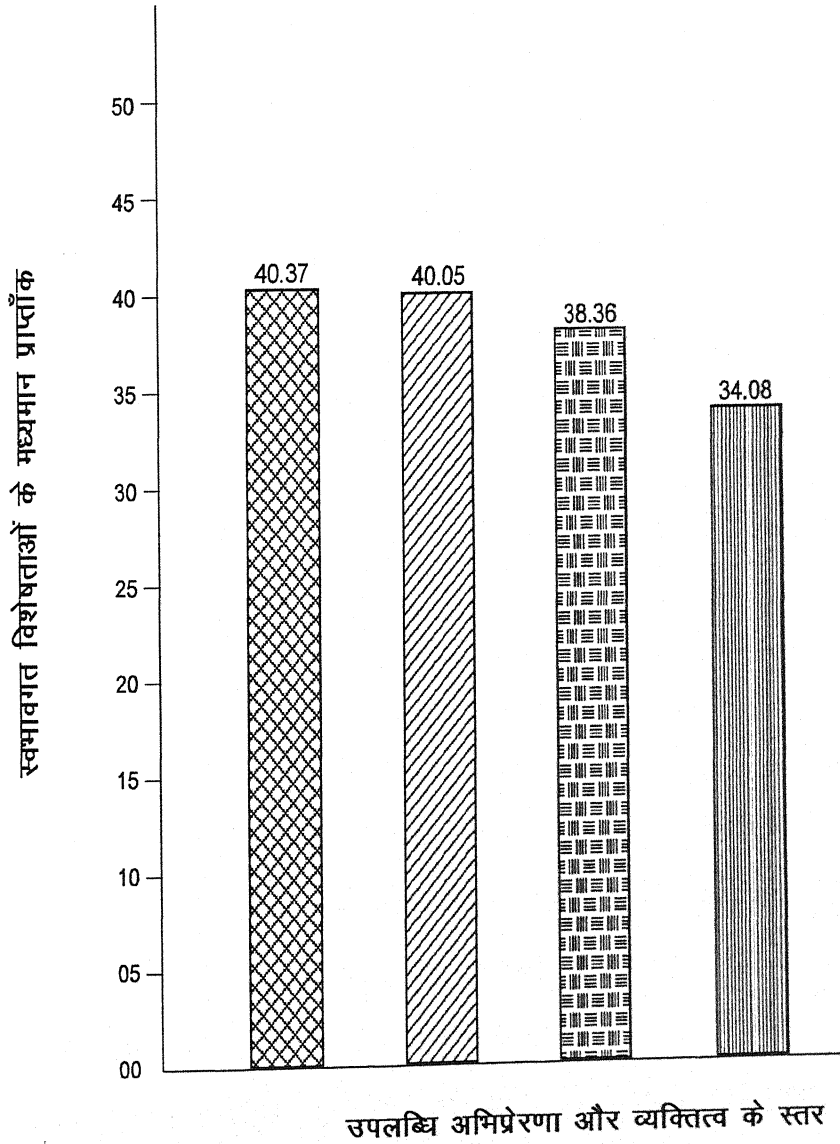
चित्र–53 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर स्वभावगत विशेषताओं के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का स्वभावगत विशेषतायें पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.53 में दिये गये।

तालिका 4.53 : एफ अनुपात : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का स्वभावगत विशेषतायें पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	304.8	1	304.8	9.54
B उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	102.87	1	102.87	3.22
अर्न्तक्रिया : AxB	70.49	1	70.49	2.21
समूहान्तर्गत	2715.1	85	31.94	0.05 स्तर पर 3.96 0.01 स्तर पर 6.96

तालिका 4.53 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) स्वभावगत विशेषतायें को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 3.22)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) स्वभावगत विशेषतायें को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 9.54)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव स्वभावगत विशेषतायें को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 2.21)

श्रेष्ठता की भावना पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

तालिका 4.54 में उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) से सम्बन्धित श्रेष्ठता की भावना के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4.54 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) एवं व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) से सम्बन्धित श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक और प्रामाणिक विचलन के मान

व्यक्तित्व		उपलब्धि अभिप्रेरणा		योग
		उच्च	निम्न	
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	16	19	35
	मध्यमान प्रा0	28	30.73	29.17
	प्रा0वि0	4.83	4.62	4.90
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	कुल संख्या	41	12	53
	मध्यमान प्रा0	25.60	26.16	26.13
	प्रा0वि0	7.07	5.04	5.82
योग	कुल संख्या	57	31	88
	मध्यमान प्रा0	26.6	28.9	27.43
	प्रा0वि0	5.78	5.36	5.72

तालिका 4.54 से स्पष्ट होता है कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 28.9) निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 26.6) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 29.17) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावनों के मध्यमान के प्राप्तांक (मध्यमान = 26.13) से अधिक है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व और उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों के श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 30.73) तुलनात्मक रूप से सबसे अधिक है जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और निम्न उपलबिध अभिप्रेरणा के प्रयोज्यों का श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक (मध्यमान = 25.60) तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।
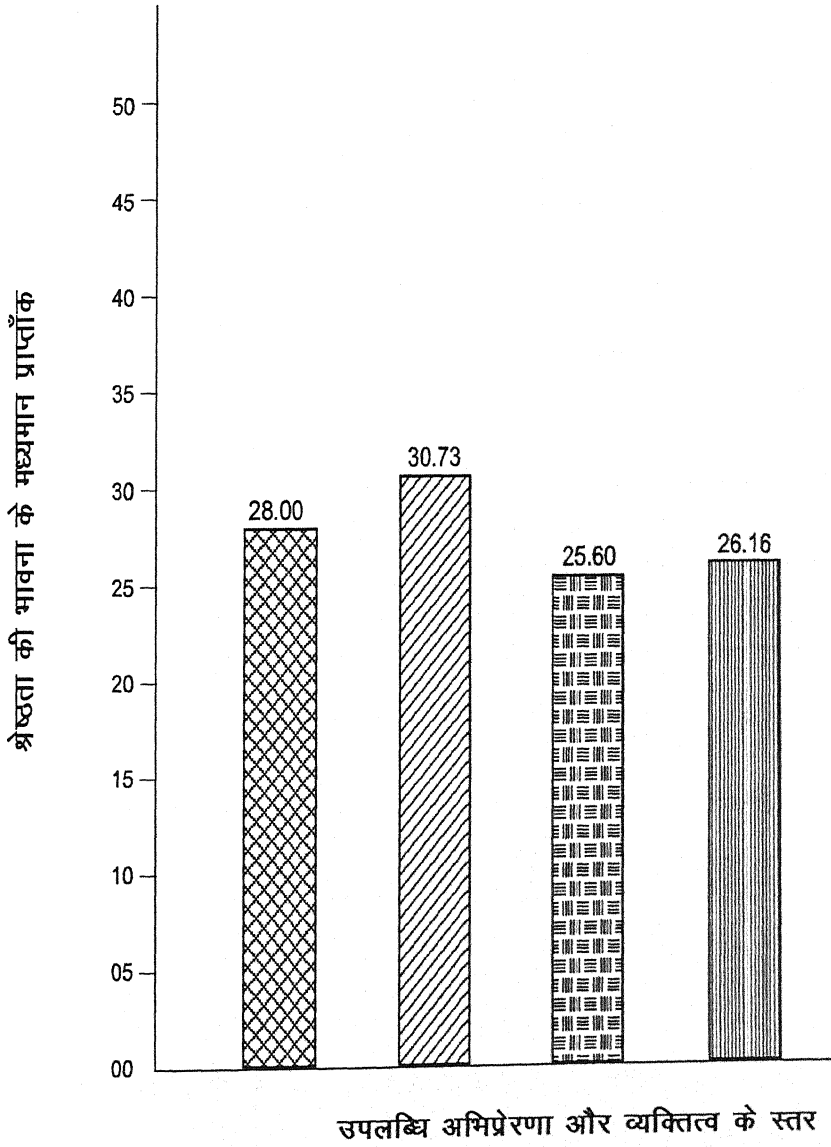
चित्र–54 : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) और व्यक्तित्व (अर्न्तबर्हि) पर श्रेष्ठता की भावना के मध्यमान प्राप्तांक

उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का श्रेष्ठता की भावना पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिये 2x2 कारक विश्लेषण द्वारा एफ अनुपात का मान ज्ञात किया गया परिणाम तालिका 4.54 में दिये गये।

तालिका 4.54 : एफ अनुपात : उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) का श्रेष्ठता की भावना पर प्रभाव

प्रसरण का श्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A व्यक्तित्व (बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी)	232.41	1	232.41	6.29
B उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न)	51.44	1	51.44	1.39
अर्न्तक्रिया : AxB	19.05	1	19.05	0.52
समूहान्तर्गत	3139.2	85	36.93	0.05 स्तर पर 3.96 0.01 स्तर पर 6.96

तालिका 4.54 से ज्ञात होता है कि–

(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) श्रेष्ठता की भावना को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती (एफ अनुपात = 1.39)

(2) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) श्रेष्ठता की भावना को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 6.29)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव श्रेष्ठता की भावना को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात= 0.52)

अध्याय-पंचम

अध्याय–५

विवेचना और निष्कर्ष

प्रदत्तों के विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर प्रस्तुत अध्याय में निष्कर्षात्मक व्याख्या और परिणामों को प्रस्तुत किया जा रहा है जिसको निम्नलिखित छैः भागों में प्रस्तुत किया गया है।

(1) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव

(2) आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

(3) आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व का प्रभाव

(4) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

(5) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

(6) आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

(1) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव :

निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक सबसे अधिक हैं। जबकि उच्च मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक सबसे कम हैं। जिससे स्पष्ट है कि निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय अच्छा होता है। अर्थात व्यक्तित्व संगठित रहता है।

सामाजिकता और मानसिक स्वास्थ्य आत्म प्रत्यय के इन दो भागों पर मनोस्नायुविकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि एफ अनुपात क्रमशः 2.85 और 1.05 सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है। आत्म प्रत्यय के अवशेष छैः भाग बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, आत्म विश्वास, स्वास्थ्य एवं शारीरिक

शौष्ठव, संवेगात्मक स्थिरता, स्वभावगत विशेषतायें, श्रेष्ठता की भावना पर एफ अनुपात 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।

मनोस्नायुविकृति आत्म प्रत्यय को समग्र रूप से भी प्रभावित करती है। निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक 290.69 है जबकि उच्च मनोस्नायुविकृति प्राप्तांक 273.91 है। मध्यमान प्राप्तांकों में यह अन्तर 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर निम्न परिणाम प्राप्त किये गये हैं।

1. मनोस्नायुविकृति, आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 15.78, 0.01 स्तर पर सार्थक)
2. निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय सुसंगठित होता है।
3. आत्म प्रत्यय के उपभाग बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, आत्म विश्वास, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, संवेगात्मक स्थिरता, स्वभावगत विशेषतायें, श्रेष्ठता की भावना पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव है। निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक अपेक्षाकृत काफी कम हैं। जबकि औसत और उच्च मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक अधिक हैं। यह अन्तर 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।

गुप्ता (1982), गुप्ता (1983), प्रताप और भार्गव (1983) ने अपने अध्ययन में पाया कि चिन्ता अथवा मनोस्नायुविकृति और आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है। वर्मा और ठाकुर (1993) के अनुसार नकारात्मक दृष्टिकोंण और सकारात्मक दृष्टिकोंण वाले व्यक्तियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता। करूणानिधि (1996) ने भी विभिन्न समस्याओं और आत्म सम्मान के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया इसके विपरीत एलैग्जेण्डर और राजेन्द्र (1992) के अनुसार उच्च आत्म प्रत्यय वाले प्रयोज्यों का समायोजन अच्छा होता है।

अतः **परिकल्पना 1– "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।" अस्वीकृत की जाती है।** इसका तात्पर्य यह है कि मनोस्नायविकृति आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती हैं।

(2) आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव :

उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है। उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक सबसे अधिक है। जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के प्राप्तांक सबसे कम हैं। (एफ अनुपात = 5.19, 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।) उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय के अनुभाग वौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर (एफ अनुपात = 6.22), स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव (एफ अनुपात 7.51) और श्रेष्ठता की भावना (एफ अनुपात = 9.78) को भी 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

इन सभी तीनों क्षेत्रों में उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक क्रमशः 35.65, 35.94 एवं 27.94 है। आत्म प्रत्यय के शेष अनुभाग आत्म विश्वास, सामाजिकता, संवेगात्मक स्थिरता मानसिक स्वास्थ्य, स्वभागगत विशेषतायें उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित नहीं करते।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार निम्न परिणाम प्राप्त किये गये है।

1. उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को 0.01 स्तर पर प्रभावित करती है।
2. उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर पर आत्म प्रत्यय सुसंगठित होता है।
3. आत्म प्रत्यय के अनुभाग वौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव एवं श्रेष्ठता की भावना उपलब्धि अभिप्रेरणा को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित है। उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के तीन अनुभाग–बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, श्रेष्ठता की भावना पर मध्यमान प्राप्तांक सर्वाधिक है।
4. निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक अपेक्षाकृत काफी कम हैं।
5. उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय के छैः अनुभागों को आत्म विश्वास, सामाजिकता, संवेगात्मक स्थिरता, मानसिक स्वास्थ्य, स्वभावगत विशेषतायें को प्रभावित नहीं करती हैं।

प्रसाद (1978), श्रीवास्तव (1981), गुप्ता (1982), गुप्ता (1983), गौतम एवं सिंह (1992) ने अपने अध्ययन में पाया कि आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। प्रसाद और सिन्हा (1978) ने उच्च उपलब्धि वाले प्रयोज्यों में वास्तविक आदर्श आत्म कम पाया जब कि सिंह गुप्ता एवं गर्ग (1980) जैन एवं तिवारी (1983) के अनुसार उपलब्धि आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है। सन्धु (1986) ने पाया कि शैक्षिक क्षेत्र अथवा खेलकूद के क्षेत्र में प्राप्त उच्च उपलब्धि का आत्म सम्मान से कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं था। माथुर (1986) के अनुसार उच्च आत्म प्रदर्शन वाले प्रयोज्यों में उपलब्धि अभिप्रेरणा भी अधिक होती है।

अतः **परिकल्पना 2– "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।" अस्वीकृत की जाती है।** इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है।

(3) आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व का प्रभाव :

अन्तर्मुखी प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक बहिर्मुखी प्रयोज्यों के आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक से कम है। प्राप्तांकों का यह झुकाव आत्म प्रत्यय एवं उसके शेष सभी आठ अनुभागों में भी है। इससे स्पष्ट है कि बहिर्मुखी प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय अन्तर्मुखी प्रयोज्यों की तुलना में अधिक अच्छा होता है।

अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी प्रयोज्यों के आत्म प्रत्यय एवं इसके सभी अनुभागों के मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य टी मान 0.01 स्तर पर सार्थक है।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर निम्न परिणाम प्राप्त किये गये हैं।

1. व्यक्तित्व प्रकार आत्म प्रत्यय को प्रभावित करते हैं।
2. बहिर्मुखी प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक अन्तर्मुखी प्रयोज्यों की तुलना में अधिक है। (टी मान = 4.00)
3. आत्म प्रत्यय के शेष सभी आठों अनुभागों जैसे बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, आत्म विश्वास, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, सामाजिकता, संवेगात्मक

स्थिरता, मानसिक स्वास्थ्य, स्वभावगत विशेषतायें, श्रेष्ठता की भावना व्यक्तित्व के मध्यमान प्राप्तांक बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की तुलना में सार्थक रूप से अधिक है। मध्यमान प्राप्तांकों का यह अन्तर 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।

त्रिपाठी (1978) ने अपने अध्ययन में उच्च और निम्न आत्म प्रदर्शन वाले प्रयोज्यों के व्यक्तित्व कारकों में अन्तर पाया जबकि श्रीवास्तव (1994) के अनुसार विभिन्न व्यक्तित्व मूल्यों का आत्म प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

अतः **परिकल्पना 3– "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व का कोई प्रभाव नहीं पड़ता" अस्वीकृत की जाती है।** इसका तात्पर्य है कि व्यक्तित्व आत्म प्रत्यय को प्रभावित करता हैं।

(4) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभावः

मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) आत्म प्रत्यय को प्रभावित नहीं करते हैं। प्रस्तुत भाग में आत्म प्रत्यय और इसके आठों प्रकारों पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। 2x2 कारक विश्लेषण की सांख्यकीय का प्रयोग किया गया है कि–

1. उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च/निम्न) आत्म प्रत्यय को समग्र रूप से एवं उसके सभी आठ उप प्रकारों को 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करती है।

2. मनोस्नायुविकृति (उच्च/निम्न) आत्म प्रत्यय को समग्र रूप से एवं उसके सभी आठ उप प्रकारों को 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करती है।

3. उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं मनोस्नायुविकृति का आत्म प्रत्यय एवं उसके सभी आठ उप प्रकारों पर कोई अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रसाद एवं सिन्हा (1978) ने उच्च उपलब्धि वाले प्रयोज्यों में वास्तविक आदर्श आत्म कम पाया जबकि सिंह, गुप्ता एवं गर्ग (1980), जैन एवं तिवारी के

अनुसार उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है। गुप्ता (1983) उपलब्धि अभिप्रेरणा और चिन्ता का आत्म प्रत्यय पर सम्मिलित रूप से कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

वर्मा एवं ठाकुर (1993) के अनुसार नकारात्मक दृष्टिकोंण और सकारात्मक दृष्टिकोंण वाले व्यक्तियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता। एलैग्जेण्डर एवं राजेन्द्र (1992) के अनुसार उच्च आत्म प्रत्यय वाले प्रयोज्यों का समायोजन अच्छा होता है। गौतम एवं सिंह (1992) ने अपने अध्ययन में पाया कि आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

अतः **परिकल्पना 4– "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।"** स्वीकृत की जाती है।

(5) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का प्रभाव :

इस भाग में मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का आत्म प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। मनोस्नायुविकृति का आत्म प्रत्यय (समग्र) पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता किन्तु आत्म प्रत्यय के चार प्रकार– बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, सामाजिकता एवं स्वभावगत विशेषतायें, मनोस्नायुविकृति से प्रभावित होती हैं। निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के उक्त चारों प्रकारों पर मध्यमान प्राप्तांक उच्च मनोस्नायुविकृति की तुलना में काफी अधिक है। बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, सामाजिकता एवं स्वभावगत विशेषतायें पर एफ अनुपात क्रमशः 25.84, 11.52, 8.12, 7.53 है। सभी चारों एफ अनुपात 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। आत्म प्रत्यय के शेष चार प्रकारों आत्म विश्वास, संवेगात्मक स्थिरता, मानसिक स्वास्थ्य एवं श्रेष्ठता की भावना पर मनोस्नायुविकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

व्यक्तित्व प्रकार भी आत्म प्रत्यय (समग्र) को प्रभावित नहीं करता है। किन्तु आत्म प्रत्यय के चार प्रकार– बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर (एफ अनुपात

= 13.66), आत्म विश्वास (एफ अनुपात = 17.64), स्वभावगत विशेषतायें (एफ अनुपात = 8.94) और श्रेष्ठता की भावना (एफ अनुपात = 7.93) 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। जबकि शेष दो प्रकार स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव (एफ अनुपात = 4. 72) संवेगात्मक स्थिरता (एफ अनुपात = 5.14) 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से व्यक्तित्व प्रकार से प्रभावित है। आत्म प्रत्यय के इन सभी छैः भागों में बहिर्मुखी व्यक्तित्व के मध्यमान प्राप्तांक, अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के मध्यमान प्राप्तांकों में अधिक हैं। इसका तात्पर्य यह है कि बहिर्मुखी व्यक्तित्व अधिक संगठित होता है।

मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व प्रकार आत्म प्रत्यय को आंशिक रूप से प्रभावित करते हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से पड़ता है। (एफ अनुपात = 7.72) जबकि आत्म विश्वास 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित होता है। (एफ अनुपात = 5.42) आत्म प्रत्यय समग्र रूप से एवं उसके शेष छैः प्रकार– बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, सामाजिकता, संवेगात्मक स्थिरता, मानसिक स्वास्थ्य पर मनोस्नायुविकृति का कोई सार्थक अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ता।

उपर्युक्त विवेचना और व्याख्या के माध्यम से निम्न परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

1. मनोस्नायुविकृति आत्म प्रत्यय (समग्र) को प्रभावित नहीं करती है।
2. आत्म प्रत्यय के चार उपभाग– बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, सामाजिकता, स्वभावगत विशेषतायें, मनोस्नायुविकृति से 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित होती हैं।
3. आत्म प्रत्यय के चार उपभाग– आत्म विश्वास, संवेगात्मक स्थिरता, मानसिक स्वास्थ्य और श्रेष्ठता की भावना पर मनोस्नायुविकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय (समग्र) एवं उसके सभी आठों प्रकारों

पर मध्यमान प्राप्तांक उच्च मनोस्नायुविकृति पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों की तुलना में अधिक हैं।

5. व्यक्तित्व आत्म प्रत्यय (समग्र) को प्रभावित नहीं करता है।

6. आत्म प्रत्यय के दो उपभाग सामाजिकता और मानसिक स्वास्थ्य पर व्यक्तित्व का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

7. बौद्धिक योग्यता और शैक्षिक स्तर, आत्म विश्वास, स्वभावगत विशेषतायें, श्रेष्ठता की भावना, व्यक्तित्व प्रकार से 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित हैं।

8. इसी प्रकार स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव एवं संवेगात्मक स्थिरता भी व्यक्तित्व प्रकार से 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित होती है।

9. बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर आत्म प्रत्यय (समग्र) एवं उसे सभी आठों प्रकारों पर मध्यमान प्राप्तांकों, अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर आत्म प्रत्यय (समग्र) एवं उसके सभी आठों प्रकारों पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों की तुलना में अधिक है।

10. मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का अन्र्तक्रियात्मक प्रभाव व्यक्तित्व के सिर्फ दो प्रकार पर है। आत्म विश्वास (एफ अनुपात = 5.42, 0.05 स्तर पर सार्थक) एवं मानसिक स्वास्थ्य (एफ अनुपात = 7.42) 0.01 स्तर पर सार्थक है।

त्रिपाठी (1978) ने अपने अध्ययन में उच्च और निम्न आत्म प्रदर्शन वाले प्रयोज्यों के व्यक्तित्व कारकों में अन्तर पाया जबकि श्रीवास्तव (1994) के अनुसार विभिन्न व्यक्तित्व मूल्यों का आत्म प्रत्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रताप एवं भार्गव (1983) ने अपने अध्ययन में पाया कि चिन्ता अथवा मनोस्नायुविकृति और आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है। वर्मा और ठाकुर (1993) के अनुसार नकारात्मक दृष्टिकोंण और सकारात्मक दृष्टिकोंण वाले व्यक्तित्यों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता। करूणा निधि (1996) ने भी विभिन्न समस्याओं और आत्म सम्मान के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया इसके विपरीत एलैग्जेण्डरी एवं राजेन्द्र के अनुसार उच्च आत्म प्रत्यय वाले प्रयोज्यों का समायोजन अच्छा होता है।

अतः **परिकल्पना 5– "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व प्रकारों का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।"** अस्वीकृत की जाती है।

(6) आत्म-प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव :

प्रस्तुत भाग में उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के आत्म प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को किसी भी स्तर पर प्रभावित नहीं करती है। आत्म प्रत्यय के एक क्षेत्र सामाजिकता पर ही उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव पड़ता है। उच्च उपलब्धि वाले किशोर छात्रों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक 39.77 है। जबकि निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा वाले किशोर छात्रों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक 38.29 है (एफ अनुपात = 4.49) 0.01 स्तर पर सार्थक है।

व्यक्तित्व प्रकार आत्म प्रत्यय को प्रभावित करता है। बहिर्मुखी किशोर छात्रों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक 307.7 है, जबकि अन्तर्मुखी किशोर छात्रों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक 280.8 है। एफ अनुपात = 8.08 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसी क्रम में आत्म प्रत्यय के चार प्रकार– सामाजिकता, मानसिक स्वास्थ्य, स्वभावगत विशेषतायें एवं श्रेष्ठता की भावना व्यक्तित्व से प्रभावित है। इन चारों क्षेत्रों में बहिर्मुखी किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय प्राप्तांक से अधिक है। मध्यमान प्राप्तांकों का यह अन्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर नहीं हो रहा है। आत्म प्रत्यय के अथवा (आत्म प्रत्यय समग्र) आठों क्षेत्रों में उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्तित्व के अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव से सम्बन्धित एफ अनुपात 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

उपरोक्त विवेचना और व्याख्या के आधार पर निम्न परिणाम ज्ञात किये जा सकते हैं।

1. उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को समग्र रूप से प्रभावित नहीं करती है।

2. उपलब्धि अभिप्रेरणा किशोर छात्रों की सामाजिकता को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

3. आत्म प्रत्यय के सात क्षेत्र उपलब्धि अभिप्रेरणा से प्रभावित नहीं होते हैं।

4. व्यक्तित्व किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय को 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है।

5. व्यक्तित्व किशोर छात्रों के सामाजिकता, मानसिक स्वास्थ्य, स्वभावगत विशेषतायें, श्रेष्ठता की भावना 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

6. बहिर्मुखी किशोरों के आत्म प्रत्यय प्राप्तांक अन्तर्मुखी किशोरों के आत्म प्रत्यय प्राप्तांक से अधिक है।

7. किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव नहीं है।

गौतम एवं सिंह ने अपने अध्ययन में पाया कि आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। प्रसाद एवं सिन्हा (1978) ने उच्च उपलब्धि वाले प्रयोज्यों में वास्तविक आदर्श आत्म कम पाया जबकि सिंह, गुप्ता और गर्ग (1980) जैन एवं तिवारी (1986) ने पाया कि उपलब्धि आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है। त्रिपाठी (1978) ने अपने अध्ययन में उच्च और निम्न आत्म प्रदर्शन वाले प्रयोज्यों के व्यक्तित्व कारकों में अन्तर पाया जबकि श्रीवास्तव (1994) के अनुसार विभिन्न व्यक्तित्व मूल्यों का आत्म प्रत्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। माथुर (1986) के अनुसार उच्च आत्म प्रदर्शन वाले प्रयोज्यों में उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक होती है।

अतः **परिकल्पना 6 – "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।"** आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है।

आगामी अध्ययन हेतु सुझाव :

प्रस्तुत अनुसंधान के आधार पर यह तथ्य पाया गया कि किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय का मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) पर प्रभाव पड़ता है। किन्तु कुछ बिन्दु ऐसे भी है जिनके आधार पर इस अध्ययन को आगे बढ़ाया जा सकता है। ये बिन्दु निम्नलिखित हो सकते हैं।

1. आत्म प्रत्यय और समायोजन के संदर्भ में भी इस प्रकार का एक अध्ययन किया जा सकता हैं
2. व्यक्तित्व के अन्य पहलू लेकर इस सन्दर्भ में विस्तृत अध्ययन सम्भव है।
3. आत्म प्रत्यय और चिन्ता स्तर का अध्ययन इस संदर्भ में किया जा सकता है।
4. आत्म प्रत्यय व्यक्तित्व कारकों से प्रभावित होता है। इस संदर्भ में आगे अध्ययन किया जा सकता है।
5. समायोजन और पारिवारिक पृष्ठभूमि आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है।
6. आत्म प्रत्यय पर सामाजिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक कारकों का क्या प्रभाव पड़ता है। इस पर संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
7. विभिन्न जातियों के किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन इस संदर्भ में किया जा सकता है।
8. व्यक्तित्व समायोजन में किशोर छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत विभिन्न परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन इस संदर्भ में किया जा सकता है।

अध्याय-षष्ठम्

अध्याय–८

संक्षिप्तीकरण

समस्या :

आत्म व्यक्तित्व के विकास की एक केन्द्रीय और मौलिक विशेषता है। इसकी उत्पत्ति भाषा के विकास के साथ होती है और कुछ समय के बाद यह मनुष्य के व्यवहार का एक विशेष रूप ग्रहण करता है। आत्म व्यक्तित्व का एवं व्यक्ति के व्यवहार का महत्वपूर्ण निर्धारक है। आत्म का विश्वास सदैव सामाजिक संदर्भ में होता है। न्यूकाम्ब ने आत्मा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुये लिखा है कि ''आत्म अधिक विस्तृत प्रत्यय है जिसका सम्बन्ध व्यक्ति के स्वयं के प्रत्यक्षीकरण से है। यह प्रत्यक्षीकरण सामाजिक सन्दर्भ में किया जाता है। बालक अपने चारों ओर के वातावरण में जैसा अपने आपको देखता है और जिस प्रकार उसके परिवार के लोग और परिचित उसे देखते हैं। इसी आधार पर वह अपने आत्म प्रत्यय का निर्माण करता हैं यही कारण है कि आत्म प्रत्यय को दर्पण प्रतिमा भी कहा गया है। आत्म प्रत्यय में दो प्रकार की आत्म प्रतिमायें पायी जाती हैं। पहली प्रकार की आत्म प्रतिमायें मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के संदर्भ में होती हैं। इन प्रतिमाओं में साहस, ईमानदारी, स्वतंत्रता, आत्म विश्वास, आंाकाक्षायें आदि विशेषतायें व योग्यतायें होती हैं। इन प्रतिमाओं में समायोजन का गुण भी सम्मिलित होता है। एक बार आत्म प्रत्यय बनने के बाद यद्यपि ये स्थिर होते हैं। परन्तु नये अनुभवों के बैठने के साथ–साथ इसमें संशोधन व परिवर्धन भी होता है। आत्म प्रत्ययों में क्रमबद्धता भी पाई जाती है।

सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने कई प्रकार के व्यक्तित्व की चर्चा की है। युग ने गुणों के आधार पर व्यक्तित्व का विभाजन किया है। युंग का विभाजन निम्न है–

(1) अन्तर्मुखी, (2) बहिर्मुखी

अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के लोग अपना अधिक समय कल्पना और चिन्तन में बिताते हैं। ऐसे व्यक्ति एकान्त में रहना पसन्द करते हैं। इनमें भावुकता अधिक पायी जाती है। ये व्यक्ति नियमित जीवन बिताने वाले होते हैं। ये व्यक्ति अपने कार्यो को योजनाबद्ध करते हैं। ये किसी प्रकार का जोखिम नहीं उठाना चाहते हैं। नैतिकता का बड़ा ख्याल रहता है अतः ये विश्वसनीय होते हैं। ये लोगों से अलग-अलग रहते हैं और निराशावादी होते हैं। अधिकांश दार्शनिक व कलाकार अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं। बहिर्मुखी व्यक्तित्व ऐसे व्यक्ति संस्था व समूह में रहना पसन्द करते हैं। और व्यवहार कुशल होते हैं। विभिन्न परिस्थितियों में कुशलता और साहस के साथ समस्या का समाधान निकाल लेते हैं। इनमें भावुकता कम व सक्रियता अधिक पाई जाती है। बहिर्मुखी व्यक्ति प्रायः हास्यप्रद, हाजिर जबाब, परिवर्तन प्रिय व निश्चित प्रकृति के होते हैं। साथ ही संवेगशील होते हैं और प्रायः क्रोध व आक्रोश के शिकार हो जाते हैं आमतौर से राजनैतिक नेता और समाज सुधारक सेना तथा पुलिस के अधिकारी बहिर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं।

मनोस्नायुविकृति शब्द का अर्थ उन विचारों से है जो केवल मानसिक कारणों से ही उत्पन्न होते हैं। ऐसे विकारों से पीड़ित व्यक्ति के जीवन में असमायोजन संवेगात्मक असन्तुलन विश्वासहीनता व हीनता की भावना निरन्तर घर किये रहती है। जीवन के संघर्षो कठिनाइयों उत्तरदायित्वों व चुनौतियों से ऐसे व्यक्ति बचने का भरसक प्रयास करते हैं। वे अपनी कमजोरियों व न्यूनताओं को भली भाँति जानते हुये भी उन पर नियंत्रण स्थापित करने में अपने आप को असमर्थ पाते हैं। शारीरिक स्तर पर ऐसे विकारों से पीड़ित व्यक्तियों को सिर दर्द, पेट दर्द, निद्रा, अभाव, भूख अभाव, शक्ति अभाव, थकान व दिल की घड़कन तेज जैसी शिकायत साधारणतया बनी रहती है। ऐसे विकारों के अन्तर्गत व्यक्ति में असुरक्षा, अनिश्चितता, आत्म केन्द्रिता, अप्रसन्नता, अपराध भावना तथा आत्म भर्तसना जैसी अनेक नकारात्मक भाव घर किये रहते हैं। ये व्यक्ति पर्यावरण के साथ समायोजन नहीं कर पाते लेकिन इनमें कोई गम्भीर दोष दृष्टिगत नहीं होता।

आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति तनाव चिन्ता और प्रतिबल परिस्थितियों से ग्रस्थ है जिसके कारण उसमें कुण्ठा की आवृत्ति और मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कुण्ठा की परिस्थिति में व्यक्ति तनाव व परेशानी का अनुभव करता है। इस प्रकार कुण्ठा संवेगात्मक प्रतिबल की वह अतिरंजित अवस्था है। जिसमें व्यक्ति तनाव परेशानी चिन्ता व दबाव का मिले जुले रूप का अनुभव करता है। इसकी मुख्य विशेषता व्याकुलता क्लेश और क्रोध है। प्रेरणात्मक व्यवहार व लक्ष्य प्राप्ति व्यवहार के कठिन व असम्भव बाधाओं के कारण कुण्ठा की उत्पत्ति होती है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्ति की अपेक्षाकृत रूप से वह स्थायी प्रवृत्ति है। जो उपलब्धि या सफलता प्राप्ति के सम्बन्ध में होती है। ये प्रेरणायें जिन लोगों में अधिक होती हैं वह लोग ऐसे कार्यों को करना अधिक पसन्द करते हैं। जिसमें उनकी प्रशंसा हो अध्ययनों में यह देखा गया है कि इस अभिप्रेरणा की अधिकता वाले लोगों में दो प्रकार की प्रवृत्तियां साथ–साथ सक्रिय रूप से देखी जाती हैं। (1) सफलता प्राप्ति प्रवृत्ति (2) विफलता परिहार प्रवृत्ति। इस उपलब्धि से सम्बन्धित निष्पादनों को इन दो प्रवत्तियों के अतिरिक्त परिस्थितिपरक कारक भी निर्धारित करते हैं। इन कारकों में दो प्रमुख हैं। प्रयोज्य को दिया गया कार्य तथा दूसरा है इस कार्य से सम्बन्धित लक्ष्य प्रोत्साहन मूल्य यहां लक्ष्य प्रोत्साहन मूल्य से तात्पर्य कि दिये हुये कार्य का निष्पादन करने के बाद कार्य के फलस्वरूप व्यक्ति को कितनी गर्व लाभ या कितनी वाह–वाह प्राप्त होती है।

उपयुक्त संदर्भ में प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व प्रकार किस प्रकार आत्म प्रत्यय को प्रभावित करते हैं। अतः अनुसंधान कर्ता ने निम्नलिखित शोध समस्या का चयन किया है–

"किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के संदर्भ में एक अध्ययन"।

व्यक्तित्व का विकास काफी हद तक प्रारम्भिक वर्षों में हुये विकास पर निर्भर करता है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि बालक को जो कुछ भी बनना होता

है वह अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में ही बन जाता है। जीवन के प्रारम्भिक वर्ष जीवन रूपी भवन की नींव होते हैं। यदि नींव कमजोर हो गई तो, भवन निश्चित रूप से कमजोर होगा। बीज से अंकुर निकलते ही यदि उसकी सुरक्षा नहीं हुयी तो आगे चलकर उसका विकास बाधित होगा ही। फ्राइड तथा अन्य मनोवैज्ञानिकों ने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों को बाद के मनोवैज्ञानिक विकास के लिये महत्वपूर्ण माना है।

फ्राइड का मत है कि शिशु के सामान्य मनोयोनिक विकास में बाधा डालने वाली शैशवकालीन अतृप्त इच्छायें बाद में उत्पन्न विभिन्न मानसिक रोगों के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है। विकृत पारिवारिक स्थितियों का भी प्रभाव बालक के विकास पर पड़ता है। शिशु जैसे–जैसे बढ़ता है। वह समाज में माँ के अतिरिक्त अन्य लोगों के संपर्क में आता है। अतः यह आवश्यक है कि उसमें समायोजन की क्षमता का भी विकास हो।

मनोस्नायुविकृति के अन्तर्गत हल्की मानसिक व्याधियां निहित होती हैं। अतः मनोस्नायुविकृति के रोगी के लक्षण हल्के और साधारण प्रकार के होते हैं। यदि इन रोगियों की मानसिक चिकित्सा की जाये तो ये शीघ्र ही ठीक हो जाते हैं। कोई आवश्यक नहीं कि इन्हें अस्पताल में भर्ती किया जाये।

वह प्रायः अर्न्तद्वन्द से युक्त रहता है। इसी कारण से उसे कहीं–कहीं अपना समायोजन कर सकने में कठिनाई पड़ती रहती है। और जब कहीं साधारण सा प्रतिबल आ जाता है तो उसका साहस उसके हाथ से छूटता हुआ प्रतीत होता है। तात्पर्य यह है कि मनोस्नायुविकृति का रोगी का व्यवहार असमायोजित होता है। वास्तविकता से इनका सम्बन्ध कम ही रहता है। व्यक्तित्व में हल्का सा विघटन सम्भावित रहता है। ये चिन्ता, खेद एवं अपराध भावना से ग्रस्त रहते हैं। व्यवहार में ये प्रभाविकता पूर्ण होते हैं। आत्म सम्मान, स्नेह और सुरक्षा के अभाव से ग्रसित रहते हैं। दूसरों की समस्याओं का समाधान कौन कहे, वह अपनी ही समस्याओं के समाधान में व्यस्त रहता है। असहायता एवं असुरक्षा की भावना उससे दूर नहीं हटती। उसकी अपनी आशायें होती हैं, भावनायें होती है, महत्वाकांक्षायें होती हैं। वह आत्म केन्द्रित रहता है। इसलिये दूसरों की परवाह नहीं करता, फिर भी अपने

को नितांत असहाय एवं असुरक्षित समझकर दूसरों का संरक्षण और कृपा प्राप्त करना चाहता है।

परिवर्तियों का वर्णन :

प्रस्तुत अध्ययन में चार परिवर्तियों का अध्ययन किया गया है। यह चार परिवर्त्य निम्नलिखित हैं।

1. आत्म प्रत्यय
2. मनोस्नायुविकृति
3. उपलब्धि अभिप्रेरणा
4. व्यक्तित्व

उपरोक्त परिवर्तियों का विस्तृत विवरण नीचे दिया जा रहा है

1. आत्म प्रत्यय :

आत्म प्रत्यय से तात्पर्य अन्य व्यक्तियों से अर्न्तक्रिया के परिणाम स्वरूप हमारी कार्यों व विचारों की चेतना से है। मनुष्य एक सामाजिक परिवेश में रहता है। व्यक्तित्व के क्रमशः विकास में उसकी अन्य व्यक्तियों से अन्तः क्रिया होती है। यह अन्तः क्रिया सामाजिक समूहों में उसके पदों और उसके अनुकूल भूमिकाओं से निर्धारित होती है। इस अन्तः क्रिया के परिणामस्वरूप यह विशिष्ठ प्रकार से सोचता व व्यवहार करता हैं इसके मूल में जो चेतना है वह आत्म चेतना और समाज चेतना दोनों से मिलकर बनी है। यही व्यक्ति का आत्म है। इस प्रकार आत्म जन्म–जात नहीं होता। सामाजिक परिस्थितियों से और अन्य व्यक्तियों से अर्न्तक्रिया के द्वारा आत्म का विकास होता है। ये संयुक्त भी होती है और विभाजित भी।

आत्म का उदय तादात्म और प्रत्याशा से होता है। तादात्म व प्रत्याशा की सबसे पहली अभिव्यक्ति बालक व माता की अन्तः क्रिया में होती है। शिशु की समस्त शारीरिक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकतायें उसकी माता से पूरी होती हैं। अतः वह अपनी माता से तादात्म कर लेता है। तादात्म से तात्पर्य मनोवैज्ञानिक दृष्टि से एक रूप हो जाने

से ही वह माता के संकेतों को समझता हैं और उनके अनुकूल प्रत्याशी प्रतिक्रियायें दिखलाता है। उदाहरण के लिये शिशु यह समझता है कि कब उसकी माता उसे दूध पिलायेगी कब सुलायेगी इत्यादि और माता में इस उद्‌देश्य की क्रिया दिखाई देते ही शिशु प्रत्याशी प्रतिक्रियायें करने लगता है। यही स्वः का उदय है। वह समझ जाता है कि माता किस व्यवहार से संतुष्ठ है और किस व्यवहार से असन्तुष्ट है।

बालकों के आत्म प्रत्यय में दो प्रकार की प्रतिमायें होती हैं। पहली आत्म प्रतिमायें शारीरिक आत्म–प्रतिमायें हैं। इन आत्म–प्रतिमाओं का विकास पहले होता है। इनका सम्बन्ध बालकों की शारीरिक बनाबट और रंग रूप से है। दूसरी आत्म प्रतिमायों में बालकों की भावनायें, विचार, संवेग, साहस, ईमानदारी, स्वतंत्रता, आत्म–विश्वास, योग्यतायें तथा आँकाक्षायें आदि सम्मिलत होती हैं। बालक की आयु जैसे–जैसे बढ़ती जाती है। वैसे वैसे शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रतिमायें आपस में एक दूसरे से सात्मीकृत हो जाती है।

फ्रैन्क और फ्रैन्क (1956) एक छोटा बालक अपने सम्बन्ध में सोचना और अनुभव करना उसी प्रकार सीखता है। जैसे की अन्य लोग उसको परिभाषित करते हैं। अपने प्राइवेट संसार में मनुष्य कर्ता के रूप में कार्य करने के लिये अपने आत्म के सम्बन्ध में उसी प्रकार की प्रतिमा को विकसित करता है जैसा कि उसके माता–पिता, अध्यापक और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति उसको समझते हैं और उसके बारे में बोलते हैं। इन लोगों के द्वारा दिया गया दण्ड प्रशंसा और प्रेम उसकी इस प्रतिमा विकास को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है।

बालक अपने चारों ओर के वातावरण में जैसा अपने आपको देखता है और जैसा उसके परिवार के लोग और परिचित उसे देखते हैं। इसी आधार पर वह अपने आत्म प्रत्यय का निर्माण करता है। यही कारण है कि आत्म प्रत्यय को दर्पण प्रतिमा कहा गया है। हरलॉक का विचार है कि जब कभी–कभी परिवार के लोग बालक को शैतान समझने लगते हैं तथा खेल के साथी भी इसी प्रकार का मत बना लेते हैं तो बालक का आत्म प्रत्यय भी इसी प्रकार का बनता है। जिसमें वह अपने आपको एक शैतान के बच्चे के रूप में देखता है। चूंकि बच्चा कम अनुभवों वाला

होता है इसलिये दूसरे लोग उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं। एक बार आत्म–प्रत्यय बनने के बाद यद्यपि यह स्थिर होते हैं, परन्तु नये अनुभवों के बढ़ने के साथ–साथ इनमें भी संशोधन और परिवर्धन होता है। आत्म प्रत्यय में क्रमबद्धता पाई जाती है। बालक के प्रारम्भिक अवस्था में जो आत्म प्रत्यय बनते हैं उन्हें प्राथमिक आत्म प्रत्यय कहा जाता है। यह आत्म प्रत्यय माता–पिता के शिक्षण के आधार पर अथवा परिवार के सदस्यों के शिक्षण के आधार पर बनते हैं। इन प्राथमिक आत्म प्रत्यय में भी शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दोनों प्रकार की आत्म प्रतिमा पाई जाती है। जब बालक दूसरे बालकों के साथ खेलना प्रारम्भ करता है, स्कूल जाना प्रारम्भ करता है। जब उसमें पहले से बने प्राथमिक प्रत्ययों का संशोधन और परिवर्धन होने लगता है। इस अवस्था के आत्म प्रत्यय, उद्दीपक आत्म प्रत्यय कहे जाते हैं। इस प्रकार के आत्म प्रत्यय बहुधा इस बात पर आधारित होते हैं कि दूसरे लोग बालक को किस प्रकार और किस दृष्टि से देखते हैं। बहुधा यह देखा गया है कि बालकों का प्राथमिक आत्म प्रत्यय अधिक अनूकूल होता है और द्वितीयक आत्म प्रत्यय उतना उनके अनुकूल नहीं होता। अध्ययनों में यह देखा गया है कि समय–समय पर बालक अपने आत्म प्रत्ययों में अपने सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों के मूल्यों नियमों और प्रतिमानों के अनुसार संशोधन करते रहते हैं।

लगभग तीन–चार वर्ष की अवस्था तक बालक सेक्स सम्बन्धी अन्तर समझने ही नहीं लगता है, बल्कि वह बालों और कपड़ों के रखरखाव के आधार पर लड़के–लड़कियों और स्त्री–पुरूषों को अलग–अलग पहचानने लगता। जब वह स्कूल जाना प्रारम्भ करता है तो उसके यह अन्तर और अधिक स्पष्ट हो जाते हैं, परन्तु वयःसन्धि अवस्था में वह दो सेक्स के अन्तर को पूर्णतः पहचान जाता है। बालक जब स्कूल जाना प्रारम्भ करता है उस समय तक स्त्री व पुरूष सेक्स के कार्यो को भी जानने लग जाता है। लगभग चार साल का बालक अपने जातीय और प्रजातीय अन्तरों को भी इसलिये पहचानने लग जाता है कि खेल के साथी और दूसरे लोग उससे उसकी जाति और प्रजाति के अनुसार व्यवहार करने लग जाता है। जब वह स्कूल जाने लग जाता है तब वह अपने परिवार की प्रतिष्ठा और अपने परिवार के सामाजिक और आर्थिक स्तर का भी ज्ञान प्राप्त कर लेता है। स्कूल जाने

तक वह यह समझने लगता है कि परिवार की और उसकी प्रतिष्ठा तथा सामाजिक आर्थिक स्तर माता–पिता के व्यवसाय से निर्धारित होता है। वह इन अर्थों को अपने आत्म प्रत्यय से जोड़ लेता है।

2. मनोस्नायुविकृति :

आज का युग संघर्षशील है। सामाजिक दृष्टिकोंण से मानसिक रोग एक जटिल समस्या है। वैसे तो मानसिक रोग का इतिहास काफी प्राचीन है। परन्तु वैज्ञानिक स्तर पर मानसिक रोगों को समझने का प्रयास कुछ समय पूर्व ही हुआ है। 14वीं शताब्दी में सर्वप्रथम अमेरिका में एक मानसिक अस्पताल की स्थापना हुयी तथा यहीं से ही वैज्ञानिक स्तर पर मानसिक रोग के कारण एवं उसके उपचार पर अनुसंधान शुरू हुये मुख्यतः मानसिक रोगों को दो भागों में बांटा गया है।

1. मनोस्नायुविकृति
2. मनोविकृति

सामान्यतः मनोस्नायुविकृति जीवन शैली का गलत अनुकूलन है जिसके चिन्ता व छुटकारा दो प्रमुख लक्षण होते हैं। इस प्रकार के रोगियों की जीवन शैली में दो प्रमुख विकृतियां पायी जाती हैं।

1. वास्तविकता का गलत मूल्यांकन तथा समस्याओं के समाधान के स्थान पर उससे बचने की पद्धति।

2. अपने आपसे हार जाने की प्रकृति से पीड़ित रहना यह ज्ञानात्मक, संवेगात्मक व प्रक्रियाओं से सम्बन्धित मानसिक विकृतियों का हल्का प्रकार है। दूसरे शब्दों में यह मानसिक एवं स्नायु से सम्बन्धित विकृतियां हैं जिसमें रोगी मानसिक रूप से तो अवस्थ्य रहता है लेकिन उसे आस–पास के वातावरण आदि के बारे में पूर्ण ज्ञान होता है। चिकित्सा के दृष्टिकोंण से भी यह एक साधारण मानसिक रोग है। इसका साधारण डाक्टर के इलाज की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक उपाय अधिक उपयोगी है। ये विकृतियां मनोवैज्ञानिक कारणों से उत्पन्न होती हैं। इन रोगियों का सम्बन्ध वातावरण की वास्तविकता से बना रहता है। इनका व्यवहार सामाजिक आदर्शों के

अनुरूप ही होता है। रोगी अन्य रोगों की दुखी चिन्तन व आन्तरिक अर्न्तद्वन्द आदि में घिरा नहीं होता ऐसे रोगियों की मृत्यु बहुत कम होती है। इन्हें मानसिक चिकित्सालयों में भर्ती कराने की अपेक्षा एक मनोचिकित्सक की अधिक आवश्यकता होती है। इस सम्बन्ध में ब्राउन का कथन है कि–

''वे व्यक्ति जो चेतन व अचेतन संघर्षो के कारण कुछ ऐसे कार्य नहीं कर पाते जो कि एक सामान्य व्यक्ति अपनी योग्यता व संस्कृति के कारण करने की क्षमता रखता है। इसका सम्बन्ध सामाजिकता से होता है।'' हर्मी (1937) ने बताया कि बहुत सी प्रतिक्रियायें जो कि हमें एक संस्कृति में मनोस्नायुविकृति से सम्बन्धित दिखाई पड़ती हैं तो दूसरी संस्कृति में वे पूर्णतः सामान्य क्रियायें होती हैं। अतः मनोस्नायुविकृति व्यक्ति वह होता है जो इस प्रकार का व्यवहार करता है जो व्यवहार उस संस्कृति में अन्य व्यक्ति नहीं करते हैं। प्रो0 रोजन एवं ग्रेगरी का मत है– कि जहाँ व्यक्ति स्नेह सुरक्षा व आत्म सम्मान आदि से सम्बन्धित आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। वहाँ साथ–साथ एक सीमा तक चिन्ता व अपराध की भावना में भी मुक्त रहना चाहता है। पर्याप्त मात्रा में उपयुक्त आवश्यकताओं की संतुलित में जिस व्यक्ति में कमी होती है। वे इस रोग के अंतर्गत आते हैं। इस प्रकार के रोगी व्यक्ति अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति या सामना करने में सुरक्षात्मक दृष्टिकोंणों को अपनाता है। यह बुद्धि व विवेक के साथ बात करता है। संक्षेप में मनोस्नायुविकृतियां में प्रायः व्यक्ति आंशिक रूप से कार्य करने में अयोग्य हो जाता है तथा उसके मौलिक लक्षणों का सम्बन्ध चिन्ता से होता है। क्योंकि यह एक हल्के प्रकार की विकृति है तथा इस प्रकार के अधिकांश रोगियों को मानसिक अस्पताल में भर्ती कराने की आवश्यकता नहीं होती है। अतः इसकी निश्चित संख्या का अनुमान लगाना असम्भव है। जहाँ तक भारत का प्रश्न है। यह कहना कठिन है कि इस प्रकार के रोगियों की संख्या कितनी है क्योंकि भारत मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान न के बराबर दिया जाता है। अमेरिका में प्रथम बार जो मानसिक रोगी मानसिक अस्पतालों में प्रवेश करते हैं उसमें 45 प्रतिशत रोगी मनोस्नायुविकृति के रोगी होते हैं।

कौलमैन ने कैटिल व स्किनर तथा मैकमिलन के सर्वेक्षण के आधार पर बताया कि अमेरिका में करीब 10000000 से भी अधिक व्यक्ति इस रोग से पीड़ित

हैं। कॉलमैन ने यह भी बताया कि जितने भी व्यक्ति शारीरिक शिकायतों को लेकर डॉक्टर के पास जाते हैं उनमें से आधे से अधिक व्यक्ति मनोस्नायुविकृति के रोग से पीड़ित होते हैं यह रोग पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक तथा आयु के दृष्टिकोण से पूर्ण यौवनावस्था में अधिक होता है।

जैसा कि हम जानते हैं कि मनोस्नायुविकृति एक रोग न होकर मानसिक व स्नायु सम्बन्धी सरल विकृतियां हैं। ये समाज से सम्बन्धित होती हैं तथा एक सामाजिक संस्कृति में जो प्रतिक्रियायें मनोस्नायुविकृति के समान लगती हैं तो वही प्रतिक्रियायें अन्य संस्कृति में सामान्य लोगों की प्रतिक्रियायें होती हैं। अतः निश्चित रूप` मनोस्नायुविकृति के सामान्य लक्षणों का पता नहीं लगाया जा सकता लेकिन इसके विकास क्रम में पर्याप्त समानता दिखाई पड़ती है इसके विकास क्रम पर संक्षेप में प्रकाश डालने के बाद प्रमुख सामान्य लक्षणों की विवेचना करेंगे। कॉलमैन के अनुसार इसका विकास क्रम निम्न प्रकार है–

1. व्यक्तित्व का दोषपूर्ण विकास जैसे अपरिपक्वता विरूपण आदि जिसके फलस्वरूप व्यक्तित्व संरचना में विशिष्ट दोषों का समावेश हो जाता है।
2. व्यक्ति जीवन की साधारण कठिनाइयों का सामना करने में भी हिचकिचाता है उसे डर सा लगने लगता है।
3. इस स्थिति के कारण व्यक्ति में तीव्र चिन्तायें जागृत होने लगती हैं।
4. इस स्थिति से बचाव करने के प्रयास में अनेक प्रकार की मनोस्नायुविकृति लक्षणों की उत्पत्ति हो जाती है।
5. इसके कारण व्यक्ति की कार्यक्षमता में ह्रास, थकान एवं असन्तोष आदि अन्य गौण लक्षण हो जाते हैं।

3. उपलब्धि अभिप्रेरणा :

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का मत है कि प्रत्येक के व्यवहार की व्याख्या अभिप्रेरणाओं और 'अन्तर्नोद' के द्वारा की जा सकती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों

का यह भी विचार है कि कोई भी अभिप्रेरणा या अर्न्तर्नोद मूल और शुद्ध रूप से अकेले प्राणियों के व्यवहार का संचालन नहीं करते हैं। बल्कि विभिन्न अभिप्रेरणों और अर्न्तर्नोदों की अन्तः क्रिया प्राणी के व्यवहार के संचालन के लिये उत्तरदायी है। अभिप्रेरणा एक उपकल्पनात्मक प्रक्रिया है जो व्यवहार के निर्धारण से सम्बन्धित होती है। अभिप्रेरणा शब्द से प्राणी की सभी प्रकार की अभिप्रेरणात्मक प्रक्रियाओं या प्रक्रमों का बोध होता है। मैक्डोनल्ड (1952) ने अभिप्रेरणा को परिभाषित करते हुये लिखा है– ''व्यक्ति के अन्दर होने वाला शक्ति परिवर्तन ही अभिप्रेरणा है, जो प्रभावात्मक उदोलन और पूर्वानुमान लक्ष्य अनुक्रियाओं द्वारा वर्णित होता है।'' गिलफर्ड (1957) के मतानुसार– ''अभिप्रेरक एक विशेष आन्तरिक कारक अथवा स्थिति है, जो किसी क्रिया को शुरू करने एवं जारी रखने की प्रवृति रखता है।''

अभिप्रेरणा एक आन्तरिक कारक या स्थिति अथवा तत्परता है जो किसी क्रिया या व्यवहार को आरम्भ करने की प्रवृत्ति जागृत करती है। यह व्यवहार की दिशा तथा मात्रा भी निश्चित करती है। अभिप्रेरणा के सम्बन्ध में वैज्ञानिक अध्ययनों का प्रारम्भ मैग्यूगल से (1908) प्रारम्भ होता है। इसके अनुसार अभिप्रेरित व्यवहार का कारण मूल प्रवृत्तियां हैं। इस सिद्धान्त की पुष्टि को लेकर अनेक प्रायोगिक अध्ययन हुये और इस अध्ययन श्रृंखला के फलस्वरूप अर्न्तर्नोद सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ।

आवश्यकता, अर्न्तर्नोद तथा प्रलोभन :

प्रत्येक प्राणी की कुछ न कुछ आवश्यकतायें होती हैं। आवश्यकताओं की सन्तुष्टि और असन्तुष्टि से व्यक्ति का व्यवहार प्रभावित होता है। भोजन, पानी, यौन, हवा, नींद आदि कुछ मौलिक आवश्यकतायें हैं, जिनकी सन्तुष्टि आवश्यक है। यह देखा गया है कि जब प्राणी को इन आवश्यकताओं से वंचित रखा जाता है तो प्राणी की क्रियाशीलता बढ़ जाती है। बोरिंग और उसके साथियों के अनुसार आवश्यकता शरीर की कोई जरूरत या अभाव है। जिसके कारण शारीरिक तनाव या असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है। इस तनाव में ऐसा व्यवहार उत्पन्न करने की प्रवृत्ति होती है जिससे आवश्यकता के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाला असन्तुलन समाप्त जाता है। अर्न्तर्नोद व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करता है, परन्तु दिशा नहीं व्यवहार को दिशा वे

आदते प्रदान करती है। जो एक दी हुई परिस्थिति में कार्यरत् है। हिल्गार्ड और बोवर (1966) ने आवश्यकता अर्न्तर्नोद और प्रलोभन में अन्तर स्पष्ट करते हुये कहा है कि आवश्यकता– अर्न्तर्नोद को जन्म देती है। अर्न्तर्नोद बढ़े हुये तनाव की वह दशा है जो कार्य और आरम्भिक व्यवहार को अग्रसर करती है। उद्दीपक बाह्य वातावरण की वह कोई भी वस्तु है जो आवश्यकता को सन्तुष्ट करती है और इस प्रकार की क्रिया के द्वारा अर्न्तर्नोद को कम कर देती है।

अभिप्रेरणा और उदोलन :

व्यक्ति के समस्त व्यवहार का कारण केन्द्रीय नाडी संस्थान का विशेष रूप से सक्रियकरण अथवा उदोलन होना है। प्रत्येक व्यक्ति में प्रत्येक समय में कुछ न कुछ मात्रा में सक्रियकरण या उदोलन पाया जाता है। यह देखा गया है कि व्यक्ति जागृत अवस्था में अधिक सर्तक, सजग, सक्रिय तथा क्रियाशील होता है। दूसरी ओर निद्रावस्था में उसकी ये विशेषतायें कम या समाप्त हो जाती है। प्रत्येक अभिप्रेरित व्यवहार के लिये एक निश्चित मात्रा में उदोलन की आवश्यकता होती है। अतः उदोलन की अनुपस्थिति में व्यक्ति का अभिप्रेरित व्यवहार असम्भव है। प्राणी की प्रत्येक क्रिया उदोलन के कारण ही प्रारम्भ होती है। प्राणी विशिष्ठ दिशा में व्यवहार विशिष्ठ उद्दीपक संकेतों के कारण करता है। उदोलन अनेक कारकों तथा उनकी अन्तः क्रियाओं पर निर्भर करता है। बाह्य उद्दीपक आन्तरिक संवेग तथा संज्ञानात्मक तत्व आदि कुछ प्रमुख कारक हैं जो उदोलन को प्रभावित करते हैं। लक्ष्य प्राप्ति में बाधक उद्दीपक अथवा व्यक्ति के लिये महत्वपूर्ण या सार्थक उद्वीपक उसके उदोलन को बढ़ावा देते हैं। सक्रियकरण वादी मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि भिन्न–भिन्न कार्य निष्पादनों के लिये भिन्न–भिन्न स्तर के सक्रियकरण की आवश्यकता होती है। यदि सक्रियकरण इस आवश्यक स्तर से कम होता है तो व्यक्ति कार्य निष्पादन करने में असमर्थ रहता है। उदोलन स्तर और व्यवहार कुशलता को यदि ग्राफ पेपर पर प्रदर्शित किया जाये तो उल्टे यू अक्षर के समान वक्र प्राप्त होता है। उदोलन के दैहिक आधारों के सम्बन्ध में अनेक अध्ययन हुये जिनके कई महत्वपूर्ण तथ्यों का पता चला है। उदाहरण के लिये लिण्डस्ले (1951) के अनुसार मस्तिष्क का

एक विशेष भाग, जिसे Reticular Formation या जलीय आकार कहते हैं। यह भाग उदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह आकार मेडयूला से हाइपोथैलेमस तक फैला होता है। ज्ञानवाही नाड़ियों में सूचना प्राप्त होने पर यह भाग उदोलित या सक्रिय होताहै। रेटीकुलर भाग का सम्बन्ध कार्टेक्स से भी होता है। अतः रेटीकुलर के सक्रिय होने से कार्टेक्स का सक्रिय होना स्वभाविक है। फ्रैन्च (1955) ने इस दिशा में अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि कार्टेक्स और रेटीकुलर दोनों भाग पारस्परिक सम्बद्धता के आधार पर कार्य करते हैं।

4. व्यक्तित्व :

लगभग 2000 वर्ष पूर्व व्यक्तित्व के लिये Persona शब्द का उपयोग किया जाता था। Persona शब्द का अर्थ है। नकाव (Mask) अथवा वेश–भूषा। Persona शब्द के अनुसार व्यक्तित्व का अर्थ वाह्य गुणों से लगाया जाता है। व्यक्तित्व से सम्बन्धित सैंकड़ों परिभाषायें जिनका वर्णन आलपोर्ट (1937) ने किया है। आलपोर्ट ने इन परिभाषाओं को छः समूहों में बांटा। तत्पश्चात निम्न परिभाषा प्रस्तुत की–

"व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो व्यक्ति के वातावरण के प्रति अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है" –'आलपोर्ट' (1937)

इस परिभाषा की कुछ महत्वपूर्ण विशेषतायें है–

(अ) इस परिभाषा में व्यक्तित्व को गत्यात्मक संगठन के रूप में स्वीकार किया गया है। यह देखा गया है कि संसार की प्रत्येक वस्तु में कुछ न कुछ परिवर्तन होते रहते हैं। अतः कहा जा सकता है संसार परिवर्तनशील है। व्यक्तित्व भी इस गुण से प्रभावित है। किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व स्थिर नहीं होता उसमें समय–समय पर वातावरण की अन्तः क्रियाओं के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं।

(ब) इस परिभाषा की द्वितीय महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें व्यक्तित्व को मनोदैहिक गुणों के रूप में स्वीकार किया गया है। मनोदैहिक में मानसिक व शारीरिक दोनों प्रकार के गुण सम्मिलित हैं।

(स) इस परिभाषा में व्यक्तित्व को निर्धारक के रूप में स्वीकार किया गया है।

व्यक्तित्व व्यक्ति की अनुक्रियाओं को प्रभावित करता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के समायोजन आदि को भी प्रभावित करता है।

(द) व्यक्तित्व व्यक्ति के वातावरण के प्रति समायोजन को अपूर्व ढंग से करवाता है। यह देखा गया है कि वातावरण की विभिन्न परिस्थितियों में सभी व्यक्तियों का समायोजन समान नहीं होता है। वातावरण की विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्रत्येक व्यक्ति का समायोजन उनके व्यक्तित्व के अनुसार भिन्न भिन्न प्रकार से होता है। मन की परिभाषा आलपोर्ट की परिभाषा का एक अंग है। मन ने विभिन्न मनोदैहिक गुणों को अपनी परिभाषा में लिखा है, साथ ही साथ यह स्वीकार किया जाता है कि व्यक्तित्व इन मनोदैहिक गुणों का अत्यधिक विशेषता पूर्ण संगठन है।

उपरोक्त परिभाषा के साथ ही एक और महत्वपूर्ण परिभाषा आइजनेक (1970) की भी है–

''व्यक्ति की अभिप्रेरणात्मक व्यवस्थाओं का व्यक्तित्व सापेक्ष रूप से वह स्थिर संगठन है जिसकी उत्पत्ति जैविक अर्न्तनोंद, सामाजिक तथा भौतिक वातावरण की अन्तः क्रिया के फलस्वरूप होती है।'' —'आइजनेक' (1970)

व्यक्तित्व की यदि विस्तृत रूप से परिभाषा की जाये तो यह व्यक्ति के व्यवहार की सम्पूर्ण विशेषता है, जिसका दर्शन उसके विचारों, आदतों, अभिव्यक्ति के ढंग, अभिवृतियों, रूचियों, कार्य करने के ढंग तथा जीवन के प्रति व्यक्तिगत दार्शनिक दृष्टिकोणों के द्वारा होता है। उपर्युक्त व्यक्तित्व की परिभाषा से यदि पूर्णता और वैज्ञानिक दृष्टिकोंण से देखी जाये तो आलपोर्ट (1937) तथा आइजनेक (1970) की परिभाषायें अधिक उपयुक्त प्रतीत होती हैं। उपर्युक्त परिभाषाओं से यह काफी कुछ स्पष्ट हो जाता है। कि व्यक्तित्व में किस प्रकार के गुण सम्मिलित हैं।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व में शारीरिक और संज्ञानात्मक दोनों प्रकार के गुण सम्मिलित हैं परन्तु उसमें अधिकांश और मुख्य गुण प्रभावोत्पादक संज्ञानात्मक गुण, स्थायी भाव, अभिवृत्तियां, मानसिक ग्रन्थियां तथा अचेतन मनोरचनायें रूचियां और विचार आदि होते हैं। ये

सभी गुण व्यक्ति के विशिष्ट तथा भिन्न दिखाई देने वाले व्यवहार का निर्धारण करते हैं।

व्यक्तित्व के प्रकार :

युंग का वर्गीकरण–

युंग एक सुविख्यात मनोवैज्ञानिक है उसने मानसिक वृतियों के आधार पर व्यक्तित्व के प्रकारों का गहन अध्ययन करके अपने सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तियों को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता हैं

1. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व
2. बहिर्मुखी व्यक्तित्व

1. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व :

अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के लक्षणों, स्वभाव, आदतें, अभिवृत्तियां और अन्य चालक वाह्य रूप से प्रगट नहीं होते इसलिये इनको अन्तर्मुखी कहा जाता है। इनका विकास वाह्य रूप से न होकर आन्तरिक रूप में होता है।

इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले मनुष्य अपने आप में अधिक रूचि रखते हैं। इनका झुकाव अन्दर की तरफ होता है वे अपने को बाह्य रूप से प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करने में असफल होते हैं। उनमें आन्तरिक विश्लेषण की मात्रा बहुत अधिक होती है। उनकी मानसिक शक्ति का विशेष रूप से विकास होता है वे दूसरे लोगों और बाह्य वातावरण से एक विशेष प्रकार से ही अपना अनुकूलन कर पाते हैं। वे संकोची होने के कारण अपने विचारों से ही अपना अनुकूलन कर पाते हैं। वे संकोची होने के कारण अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। उनके और साथियो के बीच में एक प्रकार की दीवार एक तरह का पर्दा होता है। वे आवश्यकता से अधिक शर्मीले व झेपने वाले होते हैं। उनमें अर्न्तक्रियात्मक प्रक्रिया सदैव गतिशील अवस्था में विद्यमान रहती है वे कल्पना के संसार में उड़ान

लेते हैं और कभी कभी आदर्शवादी बन जाते हैं। इस व्यक्तित्व के मनुष्य दार्शनिक और विचारक भी होते हैं।

2. बहिर्मुखी व्यक्तित्व :

बहिर्मुखी व्यक्तित्व का मनुष्य अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्य के विपरीत होता है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्यों का झुकाव वाह्य तत्वों की ओर होता हैं वे अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं। वे संसार के भौतिक और सामाजिक लक्ष्यों में विशेष रूचि रखते हैं। यद्यपि इनका अपना आन्तरिक जीवन होता है। पर वे वाह्य पक्ष को और अधिक आकर्षित रहते हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व के मनुष्य वाह्य सामंजस्य के प्रति सदैव सचेत रहते हैं। और कार्यो एवं कथनों में अधिक विश्वास रखते हैं। इस व्यक्तित्व के लोग अधिकांश रूप में सामाजिक, राजनैतिक या व्यापारिक नेता होते हैं।

अध्ययन का महत्व :

आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति तनाव चिन्ता और प्रतिबल परिस्थितियों से ग्रस्त है। जिसके कारण उसमें कुण्ठा की आवृत्ति और मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कुण्ठा की परिस्थिति में व्यक्ति तनाव व परेशानी का अनुभव करता है। इस प्रकार कुण्ठा संवेगात्मक प्रतिबल की वह अतिरंजित अवस्था है जिससे व्यक्ति तनाव परेशानी चिन्ता व दबाव का मिले जुले रूप का अनुभव करता है। इसकी मुख्य विशेषता व्याकुलता क्लेस और क्रोध है। प्रेरणात्मक व्यवहार व लक्ष्य प्राप्ति व्यवहार के कठिन व असम्भव बाधाओं के कारण कुण्ठा की उत्पत्ति होती है। जो कि केवल मानसिक कारणों से ही उत्पन्न होते हैं ऐसे विकारों से पीड़ित व्यक्ति के जीवन में अपसमायोजन संवेगात्मक असन्तुलन विश्वासहीनता व हीनता की भावना निरंतर घर किये रहती है। जीवन के संघर्षो, कठिनाइयों उत्तरदायित्वों व चुनौतियों से ऐसे व्यक्ति बचने का भरसक प्रयास करते हैं। ये अपनी कमजोरियों व न्यूनताओं को भलीभांति जानते हुये भी उन पर नियंत्रण स्थापित करने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं। शारीरिक स्तर पर ऐसे विकारों से पीड़ित व्यक्तियों को सिर दर्द, पेट दर्द, निद्रा अभाव, भूख अभाव, शक्ति अभाव, थकान व दिल की धड़कन तेज जैसी

शिकायत साधारणतया बनी रहती है। ऐसे विकारों के अन्तर्गत व्यक्ति में असुरक्षा, अनिश्चिता आत्म केन्द्रित, अप्रसन्नता, अपराध भावना तथा आत्म भर्त्सना जैसी अनेक नकारात्मक भाव घर किये रहते हैं। ये व्यक्ति पर्यावरण के साथ समायोजन नहीं कर पाते लेकिन इनमें कोई गम्भीर दोष भी दृष्टिगत नहीं होता।

प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश्य किशोर दात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी) के प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अनुसंधान के द्वारा जो परिणाम प्राप्त होगें। वे परिणाम किशोर छात्रों को अधिक उत्तम प्रकार से समझने में सहायक सिद्ध होगें। अतः प्रस्तुत अनुसंधान का महत्व बहुत अधिक है।

लक्ष्य एवं उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. अध्ययन करना कि व्यक्तित्व आत्म प्रत्यय को प्रभावित करता हैं

परिकल्पना :

उपर्युक्त लक्ष्य एवं उद्देश्य के अनुसार निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

(1) किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(2) किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(3) व्यक्तित्व का प्रकार किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है।

(4) किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(5) किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व प्रकारों का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(6) किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलबिध अभिप्रेरणा व व्यक्तित्व प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन की सीमायें :

प्रस्तुत अध्ययन में किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा व व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य व्यवहार की नैदानिक व्याख्या करना नहीं है।

– प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के जनपद जालौन के भौगोलिक क्षेत्र से सम्बन्धित है।

– प्रस्तुत अध्ययन में इण्टरमीडिएट कक्षाओं में अध्ययनरत् 15 से 18 वर्ष की आयु वर्ग के छात्र छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

अनुसंधान पद्वति :

अनुसंधान पद्धति का वर्णन निम्न शीर्षकों के अर्न्तगत किया जा रहा है।

1. जनसंख्या
2. प्रतिदर्श
3. अनुसंधान अभिकल्प
4. परीक्षण विवरण
5. प्रदत्तों का विवरण
6. सांख्यकीय विश्लेषण

1. **जनसंख्या :** जनसंख्या के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के जनपद जालौन के शहरी क्षेत्रों में अध्ययनरत् इण्टरमीडिएट कक्षाओं में (कक्षा 11 एवं 12) में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

2. **प्रतिदर्श :** प्रस्तुत अनुसंधान में 300 छात्र और 300 छात्राओं को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया है। प्रतिदर्श का चयन हेतु क्रमबद्ध यादिच्छक पद्धति का प्रयोग किया गया है। निम्नलिखित तालिका में प्रतिदर्श चयन का प्रदर्शन किया गया है।

तालिका–1 प्रतिदर्श चयन का प्रदर्शन

जनपद के सभी क्षेत्रों से प्रतिदर्श का चयन किया गया है। तालिका 2 में उन महाविद्यालयों की सूची है जिनसे प्रदत्तों का संकलन किया गया है। न्यादर्श चयन हेतु विद्यालय रजिस्टर से प्रत्येक पांचवे छात्र/छात्राओं का चयन किया गया।

तालिका नं0–2 प्रतिदर्श चयन हेतु विद्यालयों की सूची

क्रं.सं.	विद्यालयों के नाम	छात्र	छात्रायें
1.	राजकीय बालिका इण्टर कालेज, उरई	–	60
2.	आर्य कन्या इण्टर कालेज, उरई	–	60
3.	सनातन धर्म इण्टर कालेज, उरई	60	–
4.	डीए0वी0 इण्टर कालेज, उरई	60	–
5.	श्री कृष्णा इण्टर कालेज, पिरौना	–	60
6.	ठक्कर बाबा इण्टर कालेज, कालपी	60	–
7.	अमरचन्द्र माहेश्वरी इण्टर कालेज, कोंच	60	–
8.	कमला नेहरू इण्टर कालेज, कोंच	–	60
9.	आर्य कन्या इण्टर कालेज, जालौन	–	60
10.	बुन्देलखण्ड इण्टर कालेज, माधौगढ़	60	–
	योग	**300**	**300**

3. **अनुसंधान अभिकल्प** : प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश्य आत्म प्रत्यय का मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के सन्दर्भ में अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व के प्रभाव से सम्बन्धित होने के कारण एक्स पोस्ट फैक्टो प्रकार का अध्ययन है। अर्थात प्रस्तुत अध्ययन अन्वेषक प्रकृति का है। स्वतंत्र परिर्वत पहले से ही विद्यमान है तथा अन्वेषक का कार्य आश्रित परिवर्त का परीक्षा के साथ प्रारम्भ होता है। स्वतंत्र परिवर्त का अध्ययन आश्रित परिवर्त के साथ पारस्परिक सम्भावित सम्बन्धों के संदर्भ में किया जाना है।

स्वतंत्र परिवर्त–

(1) मनोस्नायुविकृति

(2) उपलब्धि अभिप्रेरणा

(3) व्यक्तित्व

आश्रित परिवर्त :

(1) आत्म प्रत्यय

4. **परीक्षण विवरण** : परिकल्पना निर्माण और प्रतिदर्श के चयन के पश्चात प्रदत्त संग्रह हेतु अगला आवश्यक पद उपर्युक्त परीक्षण का चयन है। उपयुक्त परीक्षण का चयन समस्या के उद्देश्यों पर निर्भर करता है। प्रस्तुत अध्ययन का सम्बन्ध इण्टरमीडिएट कक्षाओं में अध्ययनरत् 15 से 18 वर्ष के आयु वर्ग की छात्र/छात्राओं से है। अतः निम्नलिखित परीक्षणों का उपयोग प्रदत्त संग्रह हेतु किया गया है।

(1) आत्म प्रत्यय मापनी (तारेश भाटिया, सुमन त्रिपाठी)

(2) मनोस्नायुविकृति परीक्षण (ओनियाल और विष्ट)

(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण (तारेश भाटिया)

(4) व्यक्तित्व अनुसूची (तारेश भाटिया)

5. **प्रदत्त संग्रह** : अध्ययन हेतु वांछित प्रतिदर्श का चयन जिन विद्यालयों से किया गया है। उनकी सूची ऊपर दी जा चुकी है। छात्र/छात्राओं का चयन समान संख्या में किया गया है। सर्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाचार्य से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित करके उन्हें अध्ययन का महत्व और उपयोगिता समझाई गई सभी प्रधानाचार्य और साथ ही साथ अध्यापकों ने प्रस्तुत अनुसंधान के प्रति अपनी रूचि प्रकट की और प्रदत्तों के संग्रह हेतु सभी आवश्यक सुविधायें उपलब्ध करायी।

प्रदत्त संग्रह हेतु निम्न प्रक्रिया का अनुपालन किया गया। सबसे पहले अनुसंधानकर्ता ने छात्रों/छात्राओं के एक समूह को लक्ष्योन्मुख भाषण दिया। उन्हें शोध अध्ययन के उद्देश्य के विषय में बतलाया गया। उपस्थित पंजिका से प्रत्येक पांचवे छात्र/छात्रा का चयन किया गया। छात्र/छात्रा के समूह पर आत्म प्रत्यय अनुसूची, का मनोस्नायुविकृति परीक्षण, उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण व व्यक्तित्व परीक्षण का प्रशासन किया गया। छात्रों को यह विश्वास दिलाया गया कि उनके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रखे जायेगें। इसलिये सभी छात्र निर्भय होकर निसंकोंच सही सूचनायें दें।

इस प्रकार उपर्युक्त सभी चारों परीक्षण के प्रशासन में लगभग दो घन्टे का समय लगा। अनुसंधानकर्ता ने शोध कार्य में एकरूपता बनाये रखने के उद्देश्य से प्रशासन और फलांकन स्वयं ही की, फलांकन प्रक्रिया विवरण पुस्तिका में ही अंकित निर्देशों के अनुसार ही की गयी। सबसे पहले छात्रों के समूह को आत्म प्रत्यय परीक्षण दिया गया। छात्रों से कहा कि वे उत्तर पत्र पर सामान्य सूचनाओं की पूर्ति करें और परीक्षण में दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें इसके पश्चात अनुसंधानकर्ता ने भी निर्देशों को पढ़कर सुनाया और सभी सन्देह दूर किये। इस परीक्षण के प्रशासन में लगभग 40 मिनट का समय लगा। प्रशासन के पश्चात छात्रों से परीक्षण वापस लिया गया। इसके पश्चात प्रयोज्यों को डा0 तारेश भाटिया का बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी परीक्षण दिया गया और कहा गया कि परीक्षण में दिये गये निर्देशों को पढ़ें। इस परीक्षण में 30 प्रश्न है जिनके दो सम्भावित उत्तर हैं। उनमें से किसी केवल एक जिससे भी आप अधिक सहमत हों के आगे बने आयत में सही

(✓) का निशान लगायें और दूसरे को खाली छोड़ दें। इस परीक्षण के प्रशासन में 10 मिनट का समय लगा। अगला परीक्षण देने से पूर्व छात्रों को 10 मिनट का विश्राम दिया गया।

इसके पश्चात प्रयोज्यों को उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण दिया गया। छात्रों से कहा गया कि वे मुख पृष्ठ पर दी गयी वांछनीय सूचनाओं को भर लें व निर्देशों को भी ध्यान से देख लें। परीक्षण में 25 कथन हैं जिनके दो सम्भावित उत्तर हैं। छात्र अपने से सम्भावित कथन पर सही (✓) का निशान लगायें समय की कोई सीमा न होने के बावजूद भी छात्रों ने इस परीक्षण को 10 मिनट में पूरा कर लिया। इसके पश्चात छात्रों को डा0 ओनियाल और विष्ठ का मनोस्नायुविकृति परीक्षण दिया गया। छात्रों से कहा गया कि वे उत्तर पत्र पर सामान्य सूचनाओं की पूर्ति करें व परीक्षण में दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें। परीक्षण में 70 प्रश्न हैं। जिनके पांच सम्भावित उत्तर हैं। सदैव, बहुदा कभी–कभी, बहुत कम, कभी नहीं। छात्र जिस प्रकार से भी अधिक सहमत हों उसके आगे बने आयत में सही (✓) का निशान लगा दें। इस परीक्षण प्रशासन में लगभग 40 मिनट का समय लगा। सम्पूर्ण प्रदत्तों का संकलन करने के पश्चात सांख्यकीय गणना के आधार पर निष्कर्षों को ज्ञात करने के लिये अनुसंधानकर्ता अब तत्पर हो गया।

6. **सांख्यकीय विश्लेषण :** प्रस्तुत अध्ययन की सांख्यकीय गणनाओं में वर्णात्मक और आनुमानिक दोनों ही सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। वर्णात्मक सांख्यकीय तकनीकी के अंतर्गत मध्यमान, प्रामाणिक विचलन और चतुर्थांश विचलन की गणना की गई है। आनुमानिक सांख्यकीय के अंतर्गत टी मान और एफ अनुपात की गणना शामिल है। मनोस्नायुविकृति परीक्षण उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण एवं व्यक्तित्व परीक्षण की स्थानीय व्याख्याओं और वर्गीकरण हेतु चतुर्थांश विचलन का प्रयोग किया गया। आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव जानने के लिये टी मान की गणना की गयी। जब कि उपरोक्त में से किन्हीं दो परिवर्तियों का आत्म प्रत्यय पर अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव ज्ञात करने के लिये 2X2 कारक विश्लेषण का प्रयोग किया गया है।

विवेचना और निष्कर्ष :

प्रदत्तों के विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर निष्कर्षात्मक व्याख्या और परिणामों को निम्नलिखित छैः भागों में प्रस्तुत किया गया है।

(1) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव

(2) आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

(3) आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व का प्रभाव

(4) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

(5) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

(6) आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव

(1) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव : सांख्यकीय विश्लेषण के आधार पर निम्न परिणाम प्राप्त किये गये हैं।

1. मनोस्नायुविकृति, आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है (एफ अनुपात = 15.78, 0.01 स्तर पर सार्थक)

2. निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय सुसंगठित होता है।

3. आत्म प्रत्यय के उपभाग बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, आत्म विश्वास, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, संवेगात्मक स्थिरता, स्वभावगत विशेषतायें, श्रेष्ठता की भावना पर मनोस्नायुविकृति का प्रभाव है। निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक अपेक्षाकृत काफी कम हैं। जबकि औसत और उच्च मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक अधिक हैं। यह अन्तर 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।

गुप्ता (1982), गुप्ता (1983), प्रताप और भार्गव (1983) ने अपने अध्ययन में पाया कि चिन्ता अथवा मनोस्नायुविकृति और आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक

सम्बन्ध नहीं है। वर्मा और ठाकुर (1993) के अनुसार नकारात्मक दृष्टिकोंण और सकारात्मक दृष्टिकोंण वाले व्यक्तियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता। करूणानिधि (1996) ने भी विभिन्न समस्याओं और आत्म सम्मान के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया इसके विपरीत एलैग्जेण्डर और राजेन्द्र (1992) के अनुसार उच्च आत्म प्रत्यय वाले प्रयोज्यों का समायोजन अच्छा होता है।

अतः **परिकल्पना 1– ''किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।'' अस्वीकृत की जाती है।** इसका तात्पर्य यह है कि मनोस्नायविकृति आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती हैं।

(2) आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव : सांख्यकीय विश्लेषण के आधार निम्न परिणाम प्राप्त किये गये है।

1. उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को 0.01 स्तर पर प्रभावित करती है।

2. उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर पर आत्म प्रत्यय सुसंगठित होता है।

3. आत्म प्रत्यय के अनुभाग वौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव एवं श्रेष्ठता की भावना उपलब्धि अभिप्रेरणा को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित है। उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के तीन अनुभाग–बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, श्रेष्ठता की भावना पर मध्यमान प्राप्तांक सर्वाधिक है।

4. निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म प्रत्यय के मध्यमान प्राप्तांक अपेक्षाकृत काफी कम हैं।

5. उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय के छैः अनुभागों को आत्म विश्वास, सामाजिकता, संवेगात्मक स्थिरता, मानसिक स्वास्थ्य, स्वभावगत विशेषतायें को प्रभावित नहीं करती हैं।

प्रसाद (1978), श्रीवास्तव (1981), गुप्ता (1982), गुप्ता (1983), गौतम एवं सिंह (1992) ने अपने अध्ययन में पाया कि आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। प्रसाद और सिन्हा (1978) ने उच्च उपलब्धि वाले

प्रयोज्यों में वास्तविक आदर्श आत्म कम पाया जब कि सिंह गुप्ता एवं गर्ग (1980) जैन एवं तिवारी (1983) के अनुसार उपलब्धि आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है। सन्धु (1986) ने पाया कि शैक्षिक क्षेत्र अथवा खेलकूद के क्षेत्र में प्राप्त उच्च उपलब्धि का आत्म सम्मान से कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं था। माथुर (1986) के अनुसार उच्च आत्म प्रदर्शन वाले प्रयोज्यों में उपलब्धि अभिप्रेरणा भी अधिक होती है।

अतः **परिकल्पना 2– "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।" अस्वीकृत की जाती है।** इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है।

(3) आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व का प्रभाव : सांख्यकीय विश्लेषण के आधार पर निम्न परिणाम प्राप्त किये गये हैं।

1. व्यक्तित्व प्रकार आत्म प्रत्यय को प्रभावित करते हैं।

2. बहिर्मुखी प्रयोज्यों का आत्म प्रत्यय मध्यमान प्राप्तांक अन्तर्मुखी प्रयोज्यों की तुलना में अधिक है। (टी मान = 4.00)

3. आत्म प्रत्यय के शेष सभी आठों अनुभागों जैसे बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, आत्म विश्वास, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, सामाजिकता, संवेगात्मक स्थिरता, मानसिक स्वास्थ्य, स्वभावगत विशेषतायें, श्रेष्ठता की भावना व्यक्तित्व के मध्यमान प्राप्तांक बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की तुलना में सार्थक रूप से अधिक है। मध्यमान प्राप्तांकों का यह अन्तर 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।

त्रिपाठी (1978) ने अपने अध्ययन में उच्च और निम्न आत्म प्रदर्शन वाले प्रयोज्यों के व्यक्तित्व कारकों में अन्तर पाया जबकि श्रीवास्तव (1994) के अनुसार विभिन्न व्यक्तित्व मूल्यों का आत्म प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

अतः **परिकल्पना 3– "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर व्यक्तित्व का कोई प्रभाव नहीं पड़ता" अस्वीकृत की जाती है।** इसका तात्पर्य है कि व्यक्तित्व आत्म प्रत्यय को प्रभावित करता हैं।

(4) आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभावः प्रस्तुत भाग में आत्म प्रत्यय और इसके आठों प्रकारों पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। 2x2 कारक विश्लेषण की सांख्यकीय का प्रयोग किया गया है। सांख्यकीय विवेचना के आधार पर निम्न परिणाम प्राप्त किये गये हैं–

1. मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) आत्म प्रत्यय को प्रभावित नहीं करते हैं।
2. उपलब्धि अभिप्रेरणा (उच्च / निम्न) आत्म प्रत्यय को समग्र रूप से एवं उसके सभी आठ उप प्रकारों को 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करती है।
3. मनोस्नायुविकृति (उच्च / निम्न) आत्म प्रत्यय को समग्र रूप से एवं उसके सभी आठ उप प्रकारों को 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करती है।
4. उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं मनोस्नायुविकृति का आत्म प्रत्यय एवं उसके सभी आठ उप प्रकारों पर कोई अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रसाद एवं सिन्हा (1978) ने उच्च उपलब्धि वाले प्रयोज्यों में वास्तविक आदर्श आत्म कम पाया जबकि सिंह, गुप्ता एवं गर्ग (1980), जैन एवं तिवारी के अनुसार उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है। गुप्ता (1983) उपलब्धि अभिप्रेरणा और चिन्ता का आत्म प्रत्यय पर सम्मिलित रूप से कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

वर्मा एवं ठाकुर (1993) के अनुसार नकारात्मक दृष्टिकोंण और सकारात्मक दृष्टिकोंण वाले व्यक्तियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता। एलैग्जेण्डर एवं राजेन्द्र (1992) के अनुसार उच्च आत्म प्रत्यय वाले प्रयोज्यों का समायोजन अच्छा होता है। गौतम एवं सिंह (1992) ने अपने अध्ययन में पाया कि आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

अतः **परिकल्पना 4– "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और उपलब्धि अभिप्रेरणा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।"** स्वीकृत की जाती है।

(5) **आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का प्रभाव** : सांख्यकीय विवेचना और व्याख्या के माध्यम से निम्न परिणाम प्राप्त हुये।

1. मनोस्नायुविकृति आत्म प्रत्यय (समग्र) को प्रभावित नहीं करती है।

2. आत्म प्रत्यय के चार उपभाग– बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव, सामाजिकता, स्वभावगत विशेषतायें, मनोस्नायुविकृति से 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित होती हैं।

3. आत्म प्रत्यय के चार उपभाग– आत्म विश्वास, संवेगात्मक स्थिरता, मानसिक स्वास्थ्य और श्रेष्ठता की भावना पर मनोस्नायुविकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

4. निम्न मनोस्नायुविकृति पर आत्म प्रत्यय (समग्र) एवं उसके सभी आठों प्रकारों पर मध्यमान प्राप्तांक उच्च मनोस्नायुविकृति पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों की तुलना में अधिक हैं।

5. व्यक्तित्व आत्म प्रत्यय (समग्र) को प्रभावित नहीं करता है।

6. आत्म प्रत्यय के दो उपभाग सामाजिकता और मानसिक स्वास्थ्य पर व्यक्तित्व का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

7. बौद्धिक योग्यता और शैक्षिक स्तर, आत्म विश्वास, स्वभावगत विशेषतायें, श्रेष्ठता की भावना, व्यक्तित्व प्रकार से 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित हैं।

8. इसी प्रकार स्वास्थ्य एवं शारीरिक शौष्ठव एवं संवेगात्मक स्थिरता भी व्यक्तित्व प्रकार से 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित होती है।

9. बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर आत्म प्रत्यय (समग्र) एवं उसे सभी आठों प्रकारों का मध्यमान प्राप्तांकों, अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर आत्म प्रत्यय (समग्र) एवं उसके सभी आठों प्रकारों पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों की तुलना में अधिक है।

10. मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव आत्म प्रत्यय के सिर्फ दो प्रकार पर है– आत्म विश्वास (एफ अनुपात = 5.42, 0.05 स्तर पर सार्थक) एवं मानसिक स्वास्थ्य (एफ अनुपात = 7.42) 0.01 स्तर पर सार्थक है।

त्रिपाठी (1978) ने अपने अध्ययन में उच्च और निम्न आत्म प्रदर्शन वाले प्रयोज्यों के व्यक्तितव कारकों में अन्तर पाया जबकि श्रीवास्तव (1994) के अनुसार विभिन्न व्यक्तितव मूल्यों का आत्म प्रत्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रताप एवं भार्गव (1983) ने अपने अध्ययन में पाया कि चिन्ता अथवा मनोस्नायुविकृति और आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है। वर्मा और ठाकुर (1993) के अनुसार नकारात्मक दृष्टिकोंण और सकारात्मक दृष्टिकोंण वाले व्यक्तितत्यों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता। करूणा निधि (1996) ने भी विभिन्न समस्याओं और आत्म सम्मान के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया इसके विपरीत एलैग्जेण्डरी एवं राजेन्द्र के अनुसार उच्च आत्म प्रत्यय वाले प्रयोज्यों का समायोजन अच्छा होता है।

अतः **परिकल्पना 5– "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर मनोस्नायुविकृति और व्यक्तित्व प्रकारों का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।"** अस्वीकृत की जाती है।

(6) आत्म–प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का प्रभाव : सांख्यकीय विवेचना और व्याख्या के आधार पर निम्न परिणाम प्राप्त किये गये हैं।

1. उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म प्रत्यय को समग्र रूप से प्रभावित नहीं करती है।
2. उपलब्धि अभिप्रेरणा किशोर छात्रों की सामाजिकता को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है।
3. आत्म प्रत्यय के सात क्षेत्र उपलब्धि अभिप्रेरणा से प्रभावित नहीं होते हैं।
4. व्यक्तित्व किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय को 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है।
5. व्यक्तित्व किशोर छात्रों के सामाजिकता, मानसिक स्वास्थ्य, स्वभावगत विशेषतायें, श्रेष्ठता की भावना को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

6. बहिर्मुखी किशोरों के आत्म प्रत्यय प्राप्तांक अन्तर्मुखी किशोरों के आत्म प्रत्यय प्राप्तांक से अधिक है।

7. किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव नहीं है।

गौतम एवं सिंह ने अपने अध्ययन में पाया कि आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। प्रसाद एवं सिन्हा (1978) ने उच्च उपलब्धि वाले प्रयोज्यों में वास्तविक आदर्श आत्म कम पाया जबकि सिंह, गुप्ता और गर्ग (1980) जैन एवं तिवारी (1986) ने पाया कि उपलब्धि आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है। त्रिपाठी (1978) ने अपने अध्ययन में उच्च और निम्न आत्म प्रदर्शन वाले प्रयोज्यों के व्यक्तित्व कारकों में अन्तर पाया जबकि श्रीवास्तव (1994) के अनुसार विभिन्न व्यक्तित्व मूल्यों का आत्म प्रत्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। माथुर (1986) के अनुसार उच्च आत्म प्रदर्शन वाले प्रयोज्यों में उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक होती है।

अतः **परिकल्पना 6 – "किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।"** आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है।

आगामी अध्ययन हेतु सुझाव :

प्रस्तुत अनुसंधान के आधार पर यह तथ्य पाया गया कि किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय का मनोस्नायुविकृति, उपलब्धि अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी) पर प्रभाव पड़ता है। किन्तु कुछ बिन्दु ऐसे भी है जिनके आधार पर इस अध्ययन को आगे बढ़ाया जा सकता है। ये बिन्दु निम्नलिखित हो सकते हैं।

1. आत्म प्रत्यय और समायोजन के संदर्भ में भी इस प्रकार का एक अध्ययन किया जा सकता हैं

2. व्यक्तित्व के अन्य पहलू लेकर इस सन्दर्भ में विस्तृत अध्ययन सम्भव है।

3. आत्म प्रत्यय और चिन्ता स्तर का अध्ययन इस संदर्भ में किया जा सकता है।

4. आत्म प्रत्यय व्यक्तित्व कारकों से प्रभावित होता है। इस संदर्भ में आगे अध्ययन किया जा सकता है।

5. समायोजन और पारिवारिक पृष्ठभूमि आत्म प्रत्यय को प्रभावित करती है।

6. आत्म प्रत्यय पर सामाजिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक कारकों का क्या प्रभाव पड़ता है। इस पर संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।

7. विभिन्न जातियों के किशोर छात्रों के आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन इस संदर्भ में किया जा सकता है।

8. व्यक्तित्व समायोजन में किशोर छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत विभिन्न परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन इस संदर्भ में किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

REFERENCES

Alexander Joseph, E. and Rajendran, K : Influence of self-concept, Sex area and parents education on students, Adjustment Prob lems, Journal of Educational research and extension, 1992 28(3) 129-137.

Anant, S.S. : Self and mutual perception of Salient personality traits of different cast groups journal of cross-Cultural psychol ogy, 1970 (1), 41-52.

Anastasi, A : Psychological testing (3rd ed.) the MacMillan & Co., London, 452-460.

Anjuli : A Socio-Psychological Study of Self-concept of Dalit Student's. Indian-Journal of Psychometry and Education. 1995, 26(1), 49-56.

Bhargava, V.P., Manulal Achievement motivation test national psy chological corporation, Agra, 1998.

Dawnie, N.M. and Heath, E.W. : Basic statistical methods (3rd ed.) : Harperand Rwo Publishers, New York, 1970.

Dixit, R.C. and J.D. Moorjani : Self-concept and Level of aspiration as related to the socio-economic back wardness among young children psycho-Lingua, 1981, 11(2), 133-140.

Ferguson, G.A. Statistical analysis in psychology and education mcgraw Hill, Koya-Kusha, 1976.

Festinger, L. & Katz, D. : Research method in the behavioral sciences, Amerien Publishing Co. Ltd. New Delhi.

Freeman, F.S. : Theory and Practice of Psychological testing oxford & I. B. H. Publishing Co. Bombay, 1968.

Garrett, H.E. : Statistics in Psychology and Education Vakils, Feffer and Simons Pvt. Ltd., Bombay, 1967.

Gautam, Singh, Bala & Singh, Kaluinder : A Study of certain personality correlates of intellectual giftedness among Navoday, Vidyalaya student of Himachal Pradesh, Journal of Education and Psychology, 1992, 49(3-4), 40-44.

Guiford, J.P. : Psychometric methods (2nd ed.) McGraw Hill, New York, 1954, 374.

Guiford, J.P. & Fruchter, B : Fundamental Statistics in Psychology and Education (6th ed.) McGraw Hill, Koyakusha, 1978.

Gupta Naim C. Crosscultural : Comparison of Self Concept Among Amorical and Indian College Student. D.E.I. Research Journal of Education and Psychology, 1989.

Gupta, Akhilesh : A Study of Achievement motivation and stress among science and art undergraduate student. Unpublished field study report in psychology under supervision of Dr. Taresh Bhatia, Reader, Dept. of Psychology, D.V. College, Orai (U.P.)

Gupta, M : A Study of relationship between self concept of student, teachers and their supervisors rating, teacher education, 1982, 16(18&19), 38-47.

Gupta, V.K. : A study of the effect of Socio-cultural factors on self-concept of High School Student, Progress of Education 1982, 56(8), 188-191.

Gupta, V.K. : Impact of anxiety and achievement motivation on self-concept of High-School students. Indian Psychological Review, 1983, 23 (3), 26-29.

Gupta, V.K. : Impact of anxiety and achievement motivation on self concept of High-school students, Indian psychological Review, 1983, 23(3), 26-29.

Gyanani T.C. : Self-concept of the adolescent in relation to cast. Religion and gender differences, Prachi journal of psycho-cultural dimensions, April 1999, Vol 15 NO.-1, 29-36.

Hall, C.S. and Lindzey, G : Theory of Personality, John Wiley & Sons, 1978, 205-240.

Jeyakantham, B : Relationship between self-concept and academic achievement experiments in education, 1979, 7(3), 42-46.

Jogawar, V.V. : Development of Self-Concept during adolescence Asian Journal of Psychology and Education, 1962, 9(1), 3-7.

Karlinger, F.N. : Foundation of behavioural Research, Surjeet Publications Delhi, 1978.

Karuna nidhi, and Nandnini, S Getha and Priscilla, S. perceived Prob lems and gender differences in Relation of Self-esteem adolescents. Journal of Psychology Researchers 1996 (Jan and May) 40 (1 and 2) 74-80.

Kshetrapal, V. S., Amita Gupta : Need Patterns and Self concept of Hostlers and Day-Scholars. Indian Journal of clinical Psychology, 1986, 13(2), 19-96.

Kushwaha, Ram Kumar : A Study of the effect of Adjustment and Sex on Self-concept among intermediate students, Unpublished field study report of psychology under the supervision of Dr. Taresh Bhatia, Reader, Dept. of Psychology D.V. College, Orai.

Lather, A.S., Goyal : S & Bhargav, D. Security-In Security and Self confidence. Diminsions of Personlaity of Adolesecents. Prachi Journal of Psycho-cultural Deminsions (2000) . Vol.16(2) p.75-84.

Mathur, S : Relationship between need achievement and self disclo sure among adolescents. Indian-Journal of clinical Psychology, 1986, 13(2) 149-153.

Maikhuri, R. and Pande, S.K. Self-concept of Adolescents in Relation to their Academic Achievement. Psycho-Linguva (1997), Vol. 27(2) p.121-124.

Mishra, K.N. : Achievement motivation Level of Primary school children, Anxiety and academic achievement, The Ihdian Journal of social work, 1997, (Jan) 58(1), 24-34.

Mukerjee, R : The effect of mother based family on the amount of self-disclosure. Research in psychology, 1982, 1(1), 47-51.

Murphy, G : An Introduction to Psychology, OxFord and IBH Indian Edition Calcutta, 1964.

Murray, H. et.al. : Exploration in Personality, OxFord University Press, New York, 1938, 142-242.

Pal, R & G Tiwari : Self-concept and Level of Aspiration in High and Low Achiving Higher secondary pupils. Indian Psychological Review, 1985, 27(1-4) 17-22.

Prasad, M.B. and Sinha, B.P. : Self as a dimension of need for achievement. Psychology studies, 1978, 23 (1) 49-55.

Pratap, S. & K Bhargava : Self disclosure as related to personality. Indian Journal of clinical psychology 1983, 9, 233-236.

Rang Kappa, K.T. : Effect of self concept on achievement in mathematics, Psycho-Lingua, 1994, 24(1), 43-48.

Sanandu Raj, H.S.I. Thomas : Masculinity Feminity in Relation self-esteem and Adjustment : Deferential logist, 1984, 3(2), 87-92.

Saraswat, R.K. : Manual Self-concept Questtionnair, National Psy chological corporation Agra, 1998.

Sen, A.K. and Saxena, P. : Self concept among upper and scheduled caste school students. Prachi Journal of Psycho-cultural Dimensions, 1997 Vol-13. No.2.

Singh R.R. : Relationship between achievement and Self concept, Indian educational Review, 1987, 32 (1), 35-41.

Singh, B & Kumar, S : The effect of Slef-concept, Social-economic status and emotional security on fluency and Flexibility, Manodarpan, 1988, 4 (1&2), 47-54.

Singh, M.B., Gupta, JP and Garg, A : Self-concept in School adolescents, Social Science Research Journal, 1980, 5(3), 119-125.

Singh, R.P. & V.S. Chauhan : Effect of Family background on self disclosure. Indian journal of clinical psychology, 1985, 10(3), 313-318.

Singh, Y.V. and Singh, H.M. : Manual Personality inventory. National Psychological corporation Agra, 1998.

Srivastava, B.N. : The effect of Self-esteem and academic performance on alienation among students in an Indian educational environment. Journal of Social psychology, 1981, 115, 9-14.

Tickoo, Sangeeta and Jagdish : Relationship between achievement motivation and mental health among school student. Indian journal of psychometry and Education. 1997, 28(2) 137-141.

Tripathi, A.D. : Personality patterns of high and low self-discloses, Psychological studies 1978, 23 (1), 43-48.

Tripathi, Suman : A Study of Self-concept as a function of happi ness, Values and Types of Personality, Unpublished Ph.D Thesis under the supervision of Dr. Taresh Bhatia Bundelkhand University, Jhansi.

Uniyal, M.P. and Bisht, Abha Rani : Manual neurosis Measurement scale. National Psychological Corporation Agra, 1998.

Verma, O.P. of Thakur Meeta : Self-concept of socially stigmatized individuals psycho-Lingua, 1993, 23(1).

Verma, Subhash : A Study of the effect of mental health and Sex on Self concept among Intermediate students, Unpublished field study Report under the supervision of Dr. Taresh Bhatia : Reader Deptt of Psychology, D.V. College, Orai (U.P.)

Vijaya Laxmi : Educational Maturity of Father as Related to academic self concept and academic motivation, Psycho-Lingva 1997, 27, 1, 61-64.

परिशिष्ट

परिशिष्ट- अ

आत्म प्रत्यय मापनी, मनोस्नायुविकृति परीक्षण उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण एवं व्यक्तित्व (अंर्त/बर्हि) प्रश्नावली से मूल प्राप्तांक

क्र0 सं0	छात्र / छात्रायें	आत्म प्रत्यय मापनी									मनोस्नायु विकृति	उपलब्धि अभिप्रेरणा	अर्न्तमुर्खी / बर्हिमुखी व्यक्तित्व
		A	B	C	D	E	F	G	H	योग			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1.	छात्रायें	44	43	42	42	32	46	40	24	313	144	42	20
2.	"	34	40	40	38	33	49	43	25	302	137	42	24
3.	"	38	39	38	40	30	41	44	30	300	155	37	16
4.	"	39	40	40	33	27	37	39	29	286	130	32	19
5.	"	42	44	37	38	42	46	33	30	312	123	32	22
6.	"	44	46	30	47	32	42	42	23	306	174	28	21
7.	"	37	38	39	44	36	39	39	26	298	158	28	20
8.	"	30	33	29	37	30	38	35	26	258	169	43	17
9.	"	36	36	38	32	35	37	37	26	277	130	15	14
10.	"	41	43	35	44	25	37	32	28	285	222	24	16

ii

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
11	छात्रायें	38	34	38	43	30	36	37	34	290	148	24	18
12.	''	40	39	39	41	33	45	39	33	309	132	34	19
13.	''	30	35	38	34	23	41	37	21	259	161	38	11
14.	''	24	39	29	33	27	46	41	21	260	183	24	12
15.	''	41	38	34	45	28	38	36	33	293	194	30	17
16.	''	37	42	28	42	37	46	43	14	289	134	34	14
17.	''	30	28	27	42	26	34	34	27	248	129	20	18
18.	''	34	36	32	37	29	34	37	32	271	106	46	18
19.	''	44	37	37	49	40	43	41	37	328	106	34	24
20.	''	41	43	35	43	26	37	36	22	283	186	24	16
21.	''	31	37	36	43	32	33	37	26	275	179	24	15
22.	''	34	37	43	44	33	35	34	30	290	163	26	18
23.	''	39	32	40	32	40	36	29	32	280	81	26	15
24.	''	32	32	33	21	39	39	32	29	257	64	32	15
25.	''	42	41	40	43	41	42	43	30	332	79	42	25

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
26.	छात्रायें	35	43	36	45	37	44	39	23	302	130	36	24
27.	"	27	35	37	32	35	41	35	29	271	156	40	13
28.	"	31	39	28	34	22	47	44	30	375	157	26	11
29.	"	31	37	31	40	23	42	42	24	270	168	30	15
30.	"	32	40	35	41	26	37	38	27	276	193	26	16
31.	"	49	33	42	44	38	33	34	31	304	143	28	16
32.	"	32	32	25	29	29	38	30	17	232	187	28	17
33.	"	33	29	31	39	27	46	40	23	278	174	38	18
34.	"	36	40	37	37	33	42	39	34	298	196	34	18
35.	"	34	44	30	41	31	50	42	25	297	205	32	19
35.	"	34	44	30	41	31	50	42	25	297	205	32	19
36.	"	39	49	38	41	35	45	38	31	318	173	28	14
37.	"	46	46	49	37	37	41	38	33	327	157	38	22
38.	"	41	47	42	40	38	49	48	30	335	117	24	16
39.	"	36	35	33	32	31	31	37	24	259	184	38	14
40.	"	39	36	37	33	42	32	31	33	283	151	38	10

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
41.	छात्रायें	26	36	28	31	30	36	38	22	247	151	38	11
42.	''	36	43	40	43	30	50	47	28	317	211	38	16
43.	''	23	43	31	43	25	43	46	24	278	209	28	12
44.	''	32	42	38	49	24	47	48	25	305	189	40	18
45.	''	42	44	39	44	31	46	45	27	318	140	44	17
46.	''	30	41	37	40	24	44	40	26	282	172	36	10
47.	''	35	34	32	31	35	36	32	33	268	171	39	10
48.	''	30	38	38	40	32	42	37	31	197	158	36	14
49.	''	30	35	39	32	26	49	41	24	276	151	32	17
50.	''	41	42	42	42	39	46	41	53	266	125	30	21
51.	''	36	41	27	38	30	47	44	22	285	194	40	10
52.	''	31	38	34	36	33	43	38	23	276	172	36	19
53.	''	37	40	42	44	34	43	41	30	311	167	34	25
54.	''	28	37	28	47	24	42	39	23	268	167	38	17
55	''	33	40	37	43	31	42	38	25	289	142	28	12

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
56	छात्रायें	39	39	41	38	46	42	32	38	315	121	26	17
57	"	29	34	37	38	27	36	32	25	265	188	20	14
58	"	28	33	30	33	26	36	35	26	247	196	32	11
59	"	42	42	40	38	37	44	38	29	310	154	42	16
60	"	40	40	29	38	30	43	42	22	284	147	32	12
61	"	33	39	32	39	24	39	39	28	273	141	30	13
62	"	42	41	40	36	41	39	41	32	312	161	36	16
63	"	26	34	39	39	34	39	38	24	273	159	26	15
64	"	31	42	31	47	29	42	34	26	281	156	34	15
65	"	40	41	41	39	34	41	40	27	303	132	28	20
66	"	37	45	31	37	21	45	42	30	288	186	24	15
67	"	37	35	35	35	34	40	29	26	271	202	26	16
68	"	39	40	37	34	37	42	33	23	290	159	32	18
69	"	36	39	28	36	26	41	38	28	272	199	32	20
70	"	39	39	41	40	34	34	36	33	296	124	36	22

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
71	छात्रायें	28	34	38	38	32	39	42	29	280	164	32	8
72	,,	35	42	40	38	38	40	40	23	297	160	24	17
73	,,	30	31	32	28	30	38	38	22	236	182	44	12
74	,,	29	34	30	34	25	39	39	20	249	156	34	13
75	,,	32	47	35	43	32	50	50	25	312	145	28	19
76	,,	29	30	38	37	32	37	38	25	266	148	32	15
77	,,	38	35	35	35	43	37	34	36	292	199	32	16
78	,,	40	36	36	38	26	41	35	26	278	156	34	17
79	,,	27	32	32	39	29	40	40	20	264	214	26	16
80	,,	36	34	34	46	22	48	43	15	281	154	34	17
81	,,	30	37	38	41	26	39	37	28	276	125	28	16
82	,,	26	34	28	38	23	39	33	22	243	187	30	10
83	,,	41	40	34	34	34	35	37	28	293	117	32	15
84	,,	44	42	32	33	38	46	43	33	317	166	28	16
85	,,	37	39	38	39	29	39	40	25	286	209	26	13

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
86	छात्रायें	36	40	40	41	32	43	37	21	290	140	28	21
87	"	29	41	35	39	30	44	41	17	276	195	38	16
88	"	36	34	40	30	29	35	32	20	256	181	32	11
89	"	32	29	31	32	27	33	33	28	265	158	28	07
90	"	23	34	22	35	24	37	36	17	228	243	28	08
91	"	40	44	35	32	38	40	35	29	293	151	35	15
92	"	32	36	37	41	22	42	44	25	281	168	44	17
93	"	28	37	28	36	22	38	33	21	240	149	32	09
94	"	42	41	38	39	35	44	36	36	311	162	28	23
95	"	44	43	37	42	26	45	43	32	312	175	44	19
96	"	43	45	37	46	25	46	41	29	306	156	44	23
97	"	38	42	41	40	35	49	40	31	316	133	26	17
98	"	19	40	28	36	27	39	32	18	239	179	32	16
99	"	47	44	40	44	34	48	48	22	337	141	30	21
[illegible]	"	32	41	32	33	33	40	40	31	272	164	36	12

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
101	छात्रायें	43	38	34	38	31	40	40	28	297	157	28	10
102	''	38	44	42	35	30	48	44	29	310	128	42	20
103	''	36	37	35	46	28	48	44	23	297	199	32	19
104	''	42	44	38	44	29	43	43	32	315	156	36	15
105	''	30	39	33	40	26	45	49	26	288	241	24	12
106	''	19	38	32	42	18	46	38	19	225	183	28	11
107	''	32	38	38	45	28	48	47	26	262	182	36	17
108	''	34	36	38	37	28	43	36	23	275	184	26	15
109	''	39	47	35	44	35	48	47	36	331	168	32	20
110	''	31	34	30	35	22	39	29	24	244	136	32	16
111	''	36	33	42	42	41	34	31	26	285	142	28	18
112	''	35	40	37	32	32	39	36	29	280	150	24	14
113	''	38	42	35	41	36	42	40	28	302	157	22	19
114	''	43	44	41	34	39	46	46	24	316	144	30	14
115	''	24	39	32	41	24	37	34	16	247	192	15	14

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
116	छात्रायें	40	40	37	37	32	43	36	31	296	182	32	15
117	"	28	35	38	38	32	40	40	34	285	129	26	18
118	"	29	38	30	43	24	49	45	20	270	194	32	19
119	"	36	38	34	39	34	40	42	25	288	157	34	11
120	"	34	46	48	40	43	50	43	29	338	192	28	14
121	"	28	33	32	40	26	42	35	21	257	127	32	14
122	"	26	33	30	36	21	38	32	23	239	147	32	13
123	"	22	37	35	40	32	39	40	28	268	154	24	15
124	"	29	39	25	38	23	44	41	18	257	177	28	13
125	"	38	36	34	31	32	37	38	28	274	151	28	15
126	"	32	36	33	35	31	33	31	29	261	147	42	14
127	"	48	45	41	41	29	46	42	31	352	136	42	21
128	"	43	45	37	43	34	46	47	23	278	141	34	22
129	"	40	46	35	32	31	37	36	33	280	135	48	16
130	"	33	37	35	38	32	42	38	36	291	162	26	16

x

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
131	छात्रायें	28	38	31	39	28	41	38	25	268	188	28	11
132	"	44	41	39	41	30	42	37	33	307	147	28	18
133	"	33	43	42	36	32	34	40	21	286	154	38	18
134	"	43	43	43	41	38	46	37	31	372	165	16	22
135	"	48	49	37	46	32	45	46	36	339	127	34	21
136	"	41	34	37	37	38	32	33	32	284	144	32	13
137	"	38	30	38	35	34	35	30	29	264	165	32	11
138	"	36	35	39	32	36	39	37	33	287	146	32	25
139	"	33	35	35	40	32	42	38	32	287	175	28	19
140	"	35	39	31	34	34	43	41	23	280	134	26	20
141	"	36	42	35	43	28	50	48	25	307	121	24	21
142	"	24	38	39	44	32	45	40	23	285	166	34	16
143	"	38	38	35	30	35	40	40	36	292	165	28	13
144	"	43	40	40	35	35	38	38	32	302	181	34	19
145	"	44	44	39	42	37	46	43	25	320	147	30	21

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
146	छात्रायें	31	37	36	43	32	42	32	21	274	142	34	17
147	"	40	43	41	42	35	48	39	36	324	164	34	14
148	"	43	46	36	39	32	46	45	23	310	142	32	22
149	"	46	44	41	44	33	48	47	22	325	135	30	19
150	"	28	39	35	44	24	42	41	28	281	193	36	15
151	"	31	35	21	35	24	38	39	23	246	189	38	12
152	"	42	43	38	45	33	47	41	27	316	178	32	22
153	"	31	36	29	39	24	49	31	22	246	189	32	15
154	"	37	34	33	40	32	43	40	24	283	196	36	18
155	"	30	31	29	30	23	35	34	22	234	185	32	16
156	"	30	32	30	40	26	39	39	27	263	218	26	19
157	"	37	32	38	28	30	35	32	22	254	166	32	19
158	"	35	40	31	43	32	42	40	26	283	171	30	22
159	"	33	40	35	40	36	42	43	21	286	193	36	21
160	"	40	42	36	37	32	42	39	31	300	108	40	15

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
161	छात्रायें	35	38	42	46	32	41	36	23	295	199	39	20
162	"	29	32	35	40	30	44	36	28	272	141	40	20
163	"	39	31	35	29	30	34	38	29	265	202	32	15
164	"	35	33	38	36	31	40	34	27	274	151	20	14
165	"	50	50	50	50	43	50	42	42	377	104	36	25
166	"	42	36	45	42	43	38	28	62	334	139	32	14
167	"	47	48	45	43	43	45	41	39	351	152	36	21
168	"	32	37	33	38	31	39	38	33	281	151	16	16
169	"	44	47	42	47	26	44	47	26	283	224	28	18
170	"	37	36	38	38	29	39	31	30	278	145	34	19
171	"	27	34	30	42	18	43	36	16	246	189	44	13
172	"	28	42	28	32	30	42	46	22	270	227	28	10
173	"	46	47	41	50	32	59	44	33	358	187	28	17
174	"	36	36	33	34	34	39	39	31	282	144	38	14
175	"	27	38	36	38	33	38	34	22	266	191	22	13

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
176	छात्रायें	44	40	40	39	34	40	44	28	309	141	30	16
177	"	37	41	40	41	37	49	50	33	328	174	20	13
178	"	36	39	35	38	32	42	41	30	288	161	22	15
179	"	27	31	37	39	27	40	41	27	299	174	16	15
180	"	32	40	31	41	30	42	45	25	286	204	20	13
181	"	35	38	32	44	26	43	39	32	289	153	36	22
182	"	31	41	25	46	21	39	45	20	268	167	24	18
183	"	40	38	40	42	35	43	38	26	302	176	32	16
184	"	37	35	37	35	29	38	36	24	271	170	36	17
185	"	35	35	29	41	17	41	31	25	244	152	32	19
186	"	38	40	41	41	43	38	41	33	315	149	38	22
187	"	31	28	33	31	28	33	39	28	251	160	36	15
188	"	32	35	39	38	30	41	36	33	284	145	24	14
189	"	25	33	35	37	24	38	33	21	246	213	32	15
190	"	33	38	35	39	29	47	43	25	289	135	36	14

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
191	छात्रायें	22	36	40	42	30	37	40	20	272	178	36	14
192	"	42	46	34	46	29	50	44	25	296	149	42	16
193	"	50	50	50	50	43	50	46	38	377	108	38	23
194	"	31	39	32	39	28	40	36	29	274	219	28	14
195	"	28	30	37	33	36	35	36	25	250	171	30	11
196	"	30	32	34	38	22	33	37	23	279	181	28	15
197	"	28	48	37	47	29	48	47	24	268	128	26	09
198	"	39	43	44	40	32	40	33	32	303	150	18	16
199	"	35	32	37	40	27	44	42	24	281	136	30	20
200	"	28	36	30	40	24	40	38	24	260	224	24	12
201	"	38	42	43	40	32	40	40	31	306	132	16	16
202	"	32	37	28	36	28	38	40	30	269	203	26	13
203	"	29	40	33	35	33	43	39	27	279	167	22	12
204	"	24	29	23	28	18	30	32	22	196	179	26	12
205	"	35	41	40	39	39	43	42	31	301	169	36	10

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
206	छात्रायें	37	39	39	40	27	42	42	31	267	155	36	09
207	"	29	33	27	42	23	39	32	32	252	175	26	19
208	"	29	46	27	47	33	43	41	18	304	210	16	13
209	"	31	38	32	41	31	38	39	20	270	140	26	15
210	"	27	45	41	42	34	46	46	28	309	201	26	13
211	"	46	49	41	36	41	50	46	30	334	213	36	15
212	"	35	33	39	32	32	33	32	30	266	170	30	13
213	"	27	31	32	29	25	38	33	18	233	160	28	07
214	"	35	31	37	41	22	40	43	20	279	243	34	11
215	"	28	30	26	27	22	34	24	29	222	136	38	14
216	"	34	36	30	40	25	44	43	25	277	203	22	15
217	"	43	37	38	37	33	43	42	28	301	155	32	19
218	"	36	37	33	38	31	38	29	31	273	182	36	15
219	"	32	38	40	41	33	37	34	28	283	191	32	13
220	"	30	42	38	44	36	48	44	22	304	187	26	16

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
221	छात्रायें	27	34	31	25	22	30	37	19	225	225	34	19
222	"	30	42	38	44	36	48	44	26	308	187	26	18
223	"	40	36	36	39	32	40	39	32	294	154	32	18
224	"	39	45	36	42	30	46	39	22	298	160	42	16
225	"	30	39	33	38	32	38	33	32	275	174	32	22
226	"	35	43	35	46	34	47	41	29	340	148	28	16
227	"	36	33	30	39	23	41	40	27	279	194	32	17
228	"	29	38	31	40	28	44	38	26	274	147	40	21
229	"	41	44	41	45	30	48	35	29	313	127	28	16
230	"	32	34	31	37	25	35	36	23	253	175	32	17
231	"	33	36	35	40	33	45	40	27	259	214	36	19
232	"	43	47	34	41	35	42	46	27	315	146	20	18
233	"	33	44	39	47	31	44	37	22	297	183	22	19
234	"	42	49	43	42	31	49	50	28	334	152	32	16
235	"	35	34	36	41	23	40	37	26	272	181	28	16

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
236	छात्रायें	32	39	32	40	31	47	43	23	289	192	34	19
237	"	29	41	32	39	27	41	43	22	294	184	32	13
238	"	31	39	29	38	32	44	43	26	302	154	28	16
239	"	32	39	24	34	13	40	40	24	247	219	28	15
240	"	35	38	37	37	31	41	40	31	240	166	34	13
241	"	30	45	31	42	32	40	42	21	283	190	34	19
242	"	33	35	24	40	23	41	35	24	255	154	46	16
243	"	28	38	30	41	33	41	36	23	270	196	24	11
244	"	22	33	30	39	28	34	33	24	243	203	32	21
245	"	34	41	36	36	31	42	40	25	285	150	32	17
246	"	38	41	49	43	37	39	34	33	314	171	32	22
247	"	32	30	37	30	35	36	34	28	262	132	30	22
248	"	25	33	34	35	30	44	43	19	263	209	26	12
249	"	36	46	42	45	33	43	43	25	313	180	26	14
250	"	27	38	29	40	29	41	41	27	272	208	20	11

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
251	छात्रायें	32	40	31	37	26	41	42	21	270	168	30	16
252	"	37	30	33	38	33	36	32	34	273	177	26	12
253	"	38	44	40	49	37	50	46	33	338	158	26	27
254	"	38	44	35	48	24	48	45	30	312	176	42	18
255	"	50	50	50	50	43	50	42	42	377	198	36	23
256	"	33	32	30	28	27	38	41	26	255	200	42	11
257	"	42	41	38	40	36	39	36	32	304	235	36	21
258	"	42	46	40	44	37	48	42	32	331	200	40	21
259	"	31	38	42	39	37	42	33	23	285	145	36	15
260	"	31	39	30	41	32	43	41	28	285	220	24	11
261	"	35	40	32	36	20	42	41	19	265	165	42	14
262	"	44	36	41	38	31	37	37	26	290	220	34	18
263	"	36	40	33	41	25	47	43	19	284	217	40	13
264	"	37	41	33	44	33	43	37	26	244	172	40	23
265	"	38	44	43	39	25	44	42	22	297	208	40	19

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
266	छात्रायें	34	27	30	38	32	36	32	24	253	142	22	15
267	"	34	43	33	41	35	42	37	35	300	136	32	14
268	"	37	42	40	40	36	46	35	28	304	168	22	18
269	"	30	45	33	44	34	42	42	19	289	191	36	15
270	"	29	32	30	46	27	37	33	15	249	180	38	16
271	"	43	47	48	39	37	48	47	28	337	124	40	17
272	"	35	43	43	37	36	43	35	24	298	147	30	16
273	"	34	41	31	41	29	40	37	24	277	187	24	16
274	"	47	43	48	44	35	38	44	33	332	170	32	18
275	"	34	34	36	38	34	40	40	29	255	182	26	16
276	"	30	30	35	36	34	38	34	20	262	176	22	15
277	"	32	34	34	33	35	34	38	28	268	215	26	12
278	"	27	32	33	37	34	36	35	31	265	169	38	18
279	"	35	40	38	41	35	44	43	27	302	158	30	17
280	"	32	42	24	38	32	45	42	28	283	169	34	13

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
281	छात्रायें	31	31	29	32	26	35	36	23	243	202	26	15
282	"	48	45	40	37	46	48	36	34	334	120	46	17
283	"	34	37	35	38	27	39	37	29	276	142	32	20
284	"	38	44	38	42	24	48	42	28	304	154	24	19
285	"	38	47	34	48	34	44	41	23	304	158	20	18
286	"	33	31	36	43	23	39	37	23	265	198	20	14
287	"	35	34	29	39	22	42	38	27	266	166	32	12
288	"	45	41	30	47	36	48	43	20	316	126	36	21
289	"	28	36	21	39	24	39	38	15	240	228	26	12
290	"	28	41	29	33	30	40	39	25	265	174	30	13
291	"	40	39	36	31	39	42	39	22	282	221	20	18
292	"	46	49	41	36	41	50	46	30	332	213	28	16
293	"	27	31	32	29	25	38	33	18	233	243	34	15
294	"	32	38	40	41	37	33	34	28	283	225	22	14
295	"	33	44	39	37	31	44	37	22	297	154	26	20

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
296	छात्रायें	32	39	32	40	31	47	43	25	289	219	32	15
297	"	30	32	37	30	35	36	34	28	262	208	20	18
298	"	44	36	41	38	31	37	37	26	290	190	28	14
299	"	38	44	43	39	25	44	42	22	297	203	32	20
300	"	29	32	30	46	26	38	33	15	249	132	34	15
301	छात्र	45	45	45	34	44	50	49	32	353	140	30	20
302	"	27	48	30	45	22	48	46	14	280	136	28	17
303	"	41	37	35	36	32	45	41	29	296	171	34	14
304	"	38	39	40	39	34	45	37	27	299	179	30	18
305	"	40	41	38	37	34	30	35	30	286	137	40	14
306	"	28	42	31	40	23	47	44	22	277	165	30	16
307	"	43	40	32	43	38	37	38	23	294	148	40	16
308	"	45	40	45	38	40	39	38	23	308	140	32	18
309	"	32	42	29	37	24	45	39	23	271	169	26	14
310	"	27	33	37	42	28	39	37	20	263	174	30	21

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
311	छात्र	30	35	35	34	34	41	32	23	264	165	34	19
312	"	32	38	32	32	24	38	40	26	262	219	36	13
313	"	32	41	30	39	29	30	35	29	273	150	26	15
314	"	19	44	28	45	26	47	46	17	272	169	32	11
315	"	19	44	28	45	26	47	46	17	272	169	32	11
316	"	39	36	38	39	34	43	35	30	293	101	36	18
317	"	44	39	43	38	43	41	34	38	320	343	38	22
318	"	47	47	48	49	41	47	46	27	372	137	30	25
319	"	32	44	36	43	32	45	44	24	300	163	32	25
320	"	34	43	40	36	32	38	31	34	324	167	32	15
321	"	40	40	42	37	40	41	38	33	311	113	32	23
322	"	41	38	27	48	39	42	37	32	304	151	26	17
323	"	34	43	41	44	37	49	38	35	331	147	38	21
324	"	42	44	34	41	29	42	46	28	306	137	42	20
325	"	32	39	37	40	32	40	37	27	313	148	38	16

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
326	छात्र	40	43	36	39	32	41	41	30	302	116	30	19
327	"	48	43	44	37	29	30	45	27	322	147	38	17
328	"	42	42	40	42	40	44	41	31	322	117	36	22
329	"	40	42	29	39	35	38	38	27	288	171	36	17
330	"	36	41	38	39	32	40	40	23	295	115	36	21
331	"	40	39	38	31	39	38	37	29	291	128	38	19
332	"	35	42	34	44	38	40	43	29	305	155	32	20
333	"	41	42	39	39	40	41	36	29	307	135	32	17
334	"	39	39	32	40	44	41	41	29	311	136	28	16
335	"	33	31	33	32	27	35	32	30	253	125	32	18
336	"	23	40	25	31	29	38	42	20	247	231	34	16
337	"	29	30	41	29	29	43	33	22	256	161	40	15
338	"	35	33	37	37	29	37	34	27	269	196	22	16
339	"	36	36	31	40	25	41	42	28	279	123	40	16
340	"	31	31	36	31	34	36	27	33	259	205	26	15

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
341	छात्र	28	37	32	39	34	47	34	17	268	151	32	14
342	''	31	36	33	38	28	40	30	29	265	201	30	14
343	''	32	39	39	38	36	45	38	23	260	135	36	16
344	''	24	38	30	39	23	45	45	17	261	233	34	21
345	''	36	44	39	32	35	44	40	26	296	168	26	18
346	''	41	44	30	36	27	42	47	23	288	154	46	13
347	''	35	38	39	35	37	40	37	25	257	131	46	21
348	''	33	41	38	43	30	44	46	22	297	125	30	19
349	''	31	35	29	35	30	35	37	29	261	134	42	15
350	''	38	36	39	35	38	43	35	25	289	127	34	18
351	''	28	40	35	29	36	47	40	20	265	187	24	14
352	''	33	38	33	43	35	36	36	21	275	160	22	16
353	''	36	33	34	41	36	43	35	29	287	174	28	21
354	''	35	39	30	41	31	42	44	22	284	197	28	07
355	''	33	41	40	39	31	46	37	22	289	153	28	12

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
356	छात्र	33	34	36	36	31	38	33	28	269	154	44	17
357	"	34	42	34	38	30	40	35	24	277	147	28	18
358	"	27	35	37	37	38	35	36	25	260	157	34	21
359	"	38	34	31	38	33	39	34	28	275	183	24	17
360	"	36	44	30	39	34	45	41	25	294	148	38	16
361	"	29	38	31	37	24	42	42	18	261	169	28	12
362	"	30	35	32	40	35	50	40	30	292	141	26	12
363	"	40	30	35	32	40	42	45	30	294	230	30	19
364	"	31	39	29	34	32	42	36	21	264	142	28	01
365	"	24	38	38	42	21	43	39	37	282	210	38	24
366	"	33	38	37	40	33	42	36	28	287	168	30	19
367	"	37	32	28	40	31	43	40	28	289	134	36	19
368	"	34	36	38	36	36	39	35	28	282	177	38	18
369	"	24	35	27	41	22	42	42	23	256	192	30	13
370	"	34	39	36	38	33	38	35	30	283	140	32	22

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
371	छात्र	37	40	38	36	31	40	40	30	292	146	36	12
372	"	34	35	40	35	42	35	50	40	311	159	30	21
373	"	50	35	45	32	40	42	35	93	342	170	34	14
374	"	34	30	40	25	30	33	42	50	284	167	32	16
375	"	43	35	40	30	32	33	34	40	287	157	36	20
376	"	37	44	34	44	30	40	35	25	289	211	40	19
377	"	40	35	32	30	34	40	24	32	267	182	28	16
378	"	40	35	33	40	30	32	35	34	278	168	36	15
379	"	42	40	35	33	30	45	35	35	295	178	38	13
380	"	30	37	34	33	30	30	35	32	365	136	24	18
381	"	30	34	38	40	35	22	30	33	292	147	30	16
382	"	20	20	32	35	35	24	27	29	232	154	38	20
383	"	30	35	32	35	41	32	40	32	276	194	34	14
384	"	24	39	40	30	32	35	30	33	263	208	36	16
385	"	35	30	32	40	35	33	35	40	280	122	36	22

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
386	छात्र	33	32	34	42	20	43	44	22	270	201	34	18
387	"	36	41	40	34	40	37	40	27	295	124	32	17
388	"	32	42	43	34	35	38	40	34	298	125	32	19
389	"	42	41	38	40	36	39	36	32	304	235	36	21
390	"	34	27	30	38	32	36	32	24	253	242	22	15
391	"	37	42	40	40	37	46	35	28	304	168	38	18
392	"	43	47	48	39	37	47	35	24	318	147	34	16
393	"	48	45	40	37	46	48	36	34	334	120	46	17
394	"	38	44	38	42	24	48	42	28	304	154	24	19
395	"	45	47	30	47	36	48	43	20	316	126	26	21
396	"	32	38	40	41	37	33	34	28	283	225	22	14
397	"	45	40	45	38	40	39	38	23	308	140	32	18
398	"	39	43	33	44	33	48	41	18	299	153	28	13
399	"	32	44	36	43	32	45	44	24	300	163	21	25
400	"	27	31	32	29	25	38	33	18	233	243	34	15

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
401	छात्र	29	32	30	46	26	38	33	15	249	132	34	15
402	″	27	48	30	45	22	48	46	14	280	136	28	17
403	″	32	38	32	32	42	38	40	29	273	150	26	15
404	″	39	43	33	44	33	48	41	18	299	153	28	13
405	″	36	41	38	39	32	40	40	29	295	115	36	21
406	″	42	44	40	37	30	34	30	31	288	198	22	17
407	″	38	44	43	39	25	44	42	22	297	203	34	15
408	″	32	41	30	39	29	38	35	29	273	169	30	10
409	″	42	44	34	41	29	42	46	28	306	137	42	19
410	″	42	44	40	42	40	44	41	31	322	117	36	18
411	″	40	42	29	39	35	38	38	27	288	171	34	16
412	″	31	36	33	38	28	40	30	29	265	201	30	15
413	″	37	34	33	40	32	43	40	24	283	196	36	20
414	″	40	42	36	37	36	42	39	31	300	108	40	14
415	″	27	38	36	38	33	38	34	22	266	191	22	15

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
416	छात्र	32	37	33	38	31	39	38	31	279	151	28	20
417	"	30	39	33	40	26	26	45	49	288	241	24	20
418	"	39	47	35	44	35	48	47	36	331	168	32	16
419	"	40	40	37	37	32	43	36	31	296	194	32	17
420	"	34	46	48	40	43	50	43	29	338	142	28	14
421	"	41	43	37	37	38	32	33	32	284	144	34	15
422	"	42	43	38	45	33	47	41	27	316	178	32	22
423	"	37	36	38	38	29	39	31	30	278	145	34	19
424	"	50	50	50	50	43	50	46	38	377	108	38	20
425	"	38	42	35	41	36	42	40	28	302	157	22	21
426	"	29	38	30	43	24	49	45	20	270	158	24	18
427	"	33	38	34	31	32	39	34	20	261	195	30	14
428	"	39	39	33	41	29	27	42	25	295	179	40	20
429	"	37	36	42	37	28	38	38	27	283	159	34	21
430	"	23	31	32	27	27	28	32	24	224	197	30	14

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
431	छात्र	28	42	29	38	27	43	42	21	270	210	30	16
432	"	27	35	32	36	29	29	37	34	252	139	40	23
433	"	30	38	34	26	32	35	41	25	231	159	30	20
434	"	29	25	31	32	26	36	37	22	238	214	28	11
435	"	26	42	32	37	33	42	33	29	274	163	38	20
436	"	29	36	27	36	37	38	31	23	257	260	42	22
437	"	41	44	39	39	42	46	45	27	320	163	20	09
438	"	27	37	45	34	35	38	35	29	300	150	36	23
439	"	45	41	44	30	34	43	37	34	308	145	44	21
440	"	38	45	46	36	37	40	42	24	308	233	36	10
441	"	29	30	29	31	24	34	32	24	232	194	30	18
442	"	40	40	42	41	34	46	35	24	304	163	36	17
443	"	55	36	32	37	32	40	36	23	271	131	36	14
444	"	27	35	29	38	29	43	40	24	265	178	36	20
445	"	40	39	36	36	38	39	34	29	299	161	38	12

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
446	छात्र	30	42	45	41	35	38	35	29	295	129	36	14
447	"	43	46	42	43	38	48	47	32	339	159	26	22
448	"	46	50	34	47	29	50	43	19	317	143	32	22
449	"	36	40	32	39	30	42	41	30	290	162	32	18
450	"	45	47	35	45	46	49	47	25	339	195	36	19
451	"	34	38	38	41	34	45	42	26	298	131	30	20
452	"	32	38	31	33	34	37	40	30	275	142	28	14
453	"	32	37	33	41	32	39	37	31	287	202	28	16
454	"	22	40	27	37	32	41	34	24	257	155	28	08
455	"	28	30	32	33	35	31	35	23	245	162	30	10
456	"	34	46	35	39	28	44	38	24	288	203	22	12
457	"	31	32	43	37	36	36	38	30	283	138	32	19
458	"	34	45	32	42	30	44	46	23	246	123	42	23
459	"	22	37	31	36	16	40	41	18	241	180	20	17
460	"	33	41	41	36	34	46	32	36	299	181	34	17

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
461	छात्र	26	42	38	37	30	46	37	18	274	142	28	19
462	"	30	41	35	38	26	39	35	22	266	189	48	10
463	"	40	40	42	41	34	46	35	24	304	163	26	20
464	"	36	37	38	35	34	39	36	30	295	124	32	22
465	"	32	38	39	40	31	42	43	32	297	167	36	17
466	"	36	39	35	40	31	42	41	24	288	152	30	18
467	"	27	35	29	38	29	43	40	24	265	178	26	09
468	"	35	36	32	37	32	40	36	23	271	131	36	14
469	"	37	37	32	41	38	45	37	27	294	159	28	15
470	"	32	39	38	48	25	42	39	21	264	171	28	22
471	"	34	39	39	34	31	39	34	26	276	184	36	14
472	"	31	37	28	42	23	42	45	20	268	230	36	17
473	"	34	43	38	39	33	44	37	22	290	160	28	20
474	"	22	25	33	31	24	34	32	21	222	161	20	14
475	"	38	39	35	42	32	40	40	26	292	147	28	20

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
476	छात्र	29	29	29	32	35	42	36	22	254	171	28	11
477	''	36	31	36	35	31	34	35	25	263	142	36	20
478	''	27	36	20	34	25	43	40	27	252	160	30	14
479	''	38	38	28	37	23	37	36	28	265	186	36	17
480	''	33	35	27	31	26	43	38	29	262	192	38	14
481	''	40	39	36	36	38	39	34	29	299	161	34	14
482	''	40	43	38	42	32	48	42	31	316	207	30	19
483	''	43	46	42	43	38	48	47	32	339	159	40	18
484	''	24	30	33	33	24	33	35	23	235	198	40	10
485	''	27	36	25	40	30	46	42	19	264	188	34	14
486	''	30	36	43	37	35	41	37	29	288	140	32	15
487	''	34	40	34	43	35	41	36	27	290	149	30	19
488	''	33	39	34	38	28	39	37	28	276	207	26	15
489	''	27	34	30	30	27	39	32	24	243	187	15	14
490	''	32	39	34	40	29	37	41	31	273	169	22	19

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
491	छात्र	34	37	43	44	31	43	47	24	303	132	20	12
492	"	40	40	44	43	34	45	40	29	315	129	40	19
493	"	30	42	45	41	35	38	35	29	295	145	20	13
494	"	37	39	35	40	34	43	34	34	296	162	24	17
495	"	32	35	30	32	23	41	42	23	258	188	29	11
496	"	82	35	33	44	32	42	37	25	282	152	30	18
497	"	40	40	46	47	42	48	38	31	331	174	40	16
498	"	26	38	35	40	26	33	40	19	257	199	38	13
499	"	34	43	29	38	28	40	37	23	272	228	32	15
500	"	36	40	32	39	30	42	41	30	290	162	34	23
501	"	40	39	39	37	38	41	34	27	295	138	34	17
502	"	35	38	39	34	36	42	42	30	296	122	34	14
503	"	30	40	38	38	30	39	35	24	274	130	38	20
504	"	36	46	46	46	39	50	45	15	323	132	28	16
505	"	29	37	42	43	34	39	42	28	294	165	24	19

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
506	छात्र	39	40	40	40	39	41	38	32	303	142	20	15
507	"	15	28	31	23	21	38	37	17	210	174	28	08
508	"	35	47	34	43	33	46	44	25	307	162	30	19
509	"	33	33	36	38	30	39	38	29	276	179	36	14
510	"	46	50	34	47	29	50	43	18	317	143	36	20
511	"	35	36	38	27	28	35	33	33	263	151	42	12
512	"	49	45	40	38	44	48	40	38	342	212	34	20
513	"	30	35	29	38	24	36	39	23	254	208	18	11
514	"	44	39	40	39	40	42	45	29	318	141	38	21
515	"	32	38	35	40	34	40	41	23	283	158	30	19
516	"	38	26	36	46	32	43	35	27	283	152	36	20
517	"	33	38	34	31	32	39	34	20	261	178	22	14
518	"	45	47	35	45	46	49	47	25	339	195	30	20
519	"	31	31	28	37	26	37	31	23	244	150	28	14
520	"	30	32	33	32	30	36	36	26	257	217	26	13

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
521	छात्र	30	32	35	32	30	36	36	36	257	158	48	14
522	"	34	38	38	41	34	45	42	26	298	131	34	17
523	"	30	33	39	41	36	36	36	28	279	191	29	18
524	"	39	39	33	41	29	27	42	25	295	179	40	17
525	"	23	35	30	41	23	43	40	20	255	226	28	15
526	"	28	42	29	38	27	43	42	21	270	210	30	13
527	"	32	36	42	34	34	38	39	24	279	163	30	18
528	"	25	38	28	42	23	50	34	25	265	168	30	21
529	"	34	40	31	38	32	48	42	28	293	188	32	13
530	"	35	32	38	36	22	38	32	37	270	177	34	17
531	"	29	46	39	42	34	31	35	23	279	181	26	16
532	"	30	32	33	45	24	44	42	16	266	153	34	13
533	"	31	43	37	40	36	44	41	23	295	152	40	16
534	"	38	38	36	40	38	38	38	31	297	165	24	14
535	"	38	34	32	31	31	44	40	27	274	139	44	12

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
536	छात्र	17	31	26	44	13	37	33	16	217	238	38	19
537	″	37	36	42	37	28	38	38	27	283	159	34	17
538	″	37	45	31	38	37	40	35	31	294	156	30	14
539	″	31	36	33	42	24	37	30	20	253	162	36	12
540	″	23	31	32	27	27	28	32	24	224	197	30	17
541	″	29	25	31	32	26	36	37	22	238	214	28	08
542	″	25	38	39	40	23	44	40	24	270	154	34	17
543	″	25	40	31	39	23	39	41	23	261	153	34	15
544	″	37	40	27	28	30	34	39	34	269	188	22	12
545	″	26	42	32	37	33	42	33	29	274	163	38	14
546	″	13	22	24	30	22	34	39	18	192	241	30	15
547	″	27	35	32	36	29	29	37	34	252	139	40	17
548	″	41	39	33	35	36	39	34	26	283	146	36	14
549	″	22	46	26	46	14	50	48	14	266	152	28	17
550	″	45	42	42	41	30	44	35	30	309	125	36	19

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
551	छात्र	19	29	35	49	25	42	41	21	261	171	25	19
552	"	30	38	34	26	32	35	41	25	231	159	30	19
553	"	36	33	42	32	28	35	33	30	269	162	22	19
554	"	32	28	37	33	30	40	31	23	254	163	32	18
555	"	31	37	37	27	33	42	33	21	261	185	42	13
556	"	32	36	33	35	29	38	38	26	267	159	32	19
557	"	30	41	33	37	16	38	36	21	251	215	28	08
558	"	24	33	31	41	26	37	41	25	258	158	26	13
559	"	29	31	30	37	32	40	38	25	262	157	30	15
560	"	37	41	33	36	30	27	32	36	272	213	18	12
561	"	32	36	33	35	29	38	38	26	267	159	32	19
562	"	30	41	33	37	16	38	36	21	251	215	28	08
563	"	24	33	31	41	26	37	41	25	258	158	26	13
564	"	29	31	30	37	32	40	38	25	262	157	30	15
565	"	37	41	33	36	30	27	32	36	272	213	18	12

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
566	छात्र	41	28	31	35	28	34	37	17	260	163	34	11
567	"	26	37	22	44	19	45	42	16	251	180	26	14
568	"	34	38	31	46	30	45	42	20	286	172	28	19
569	"	25	45	36	46	18	45	43	18	276	136	32	23
570	"	35	39	36	41	28	38	39	27	283	155	26	12
571	"	31	38	37	36	24	34	43	31	274	132	28	13
572	"	27	38	34	42	31	39	35	33	279	141	34	22
573	"	22	46	29	46	20	50	49	14	276	175	40	08
574	"	32	38	34	42	29	29	37	25	266	151	26	19
575	"	39	39	43	37	36	44	37	26	301	124	28	17
576	"	28	34	33	42	33	36	37	26	269	150	22	11
577	"	32	40	36	41	34	43	36	24	286	151	32	20
578	"	33	35	41	42	42	48	35	25	204	150	24	16
579	"	29	36	27	36	31	38	37	23	257	207	22	15
580	"	38	40	46	43	23	49	47	31	317	162	34	12

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
581	छात्र	40	42	49	35	27	38	35	49	315	215	26	13
582	"	41	40	37	44	39	44	38	35	318	138	26	18
583	"	41	44	39	39	42	46	45	17	320	163	28	16
584	"	35	39	40	38	28	43	41	22	286	148	18	14
585	"	40	36	35	36	38	40	35	26	286	150	32	11
586	"	27	37	43	34	35	38	35	29	200	150	22	19
587	"	33	41	36	44	27	43	35	26	285	148	28	21
588	"	36	32	36	42	28	45	48	20	297	221	21	14
589	"	36	47	39	49	24	45	29	22	301	202	30	19
590	"	37	33	45	37	29	34	31	27	273	163	24	18
591	"	41	40	36	33	41	45	40	32	308	145	26	15
592	"	33	42	34	38	31	42	41	24	286	190	24	16
593	"	39	43	36	43	31	43	37	27	297	241	40	20
594	"	39	39	42	42	40	45	41	27	315	143	28	21
595	"	43	45	38	40	40	46	40	33	325	223	48	22

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
596	छात्र	40	45	38	41	34	48	43	24	313	127	26	21
597	''	44	43	38	42	49	43	35	31	315	162	32	17
598	''	35	39	40	36	33	38	36	26	286	143	38	17
599	''	29	30	28	31	24	34	32	24	232	194	36	10
600	''	42	40	33	37	29	42	40	27	290	174	32	14

गोपनीय

[ ] कोड नं.

[ ] क्रम संख्या

SELF CONCEPT SCALE

by :

DR. TARESH BHATIA &
Reader
Department of Psychology
D.V. (Postgraduate) College
ORAI (U.P.) - 285 001

MRS. SUMAN TRIPATHI
Department of Education
Sanatan Dharm Girls Degree College
ORAI (U.P.) - 285 001

कक्षा........................ आयु .... लिंग........................

विद्यालय..

निर्देश :

आपके दैनिक व्यवहार व परिस्थितियों से सम्बन्धित कुछ कथन दिये गये हैं। प्रत्येक कथन के पाँच विकल्प दिये गये हैं - अत्यधिक सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, अत्यधिक असहमत। जिस विकल्प को आप सही समझते हैं, उस पर सही का चिन्ह ✓ लगा दें। इनमें कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है।

कृपया उत्तर पत्र भरते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखें -

1. कृपया अपना नाम कहीं न लिखें।
2. कृपया सभी प्रश्नों के उत्तर सही चिन्ह ✓ लगाकर दें।
3. प्रश्नों के उत्तर उसी क्रम में दें, जिसमें वे प्रकाशित हैं, यद्यपि आपको ऐसा लग सकता है कि कहीं-कहीं प्रश्न दोहरा दिये गये हैं।
4. कृपया उत्तर देते समय किसी दूसरे से सलाह न लें।
5. किसी प्रश्न पर अत्यधिक समय न लगायें। आपके मस्तिष्क में जो उत्तर तुरन्त एवं सर्वप्रथम आता हो, उसे ही दें।

- धन्यवाद

		अत्यधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	अत्यधिक असहमत
1a.	मुझे इस बात की खुशी है कि कक्षा के होशियार छात्रों में मेरी गिनती होती है।	☐	☐	☐	☐	☐
2b.	मैं अनुभव करता हूँ कि कोई बाधा मुझे अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने से नहीं रोक सकती है।	☐	☐	☐	☐	☐
3c.	मैं देखने में आकर्षक हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
4d.	मैं मानता हूँ कि मानवता की सेवा करना जीवन का सर्वोत्तम कार्य है।	☐	☐	☐	☐	☐
5e.	बिना किसी खास कारण के मेरी मनःस्थिति (Mood) बदल जाती है।	☐	☐	☐	☐	☐
6f.	मैं विषम परिस्थितियों में वास्तविकता के आधार पर कार्य करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
7g.	मैं अपने अधिकारों के लिये लड़ता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
8h.	मैं अनुभव करता हूँ कि मैं अपने सभी भाई-बहिनों में सबसे अच्छा हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
9a.	मैं अपने विद्यालय में एक लोकप्रिय विद्यार्थी हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
10b.	मैं बिना किसी परेशानी के कठिन परिस्थितियों का मुकाबला कर सकता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
11c.	मैं खेलकूद आदि में आगे रहता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
12d.	मेरे बहुत अधिक मित्र हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
13e.	मैं दुर्भाग्य का शिकार हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
14f.	पुराने अनुभवों के आधार पर मैं अच्छी तरह सोच-विचार कर निर्णय लेता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
15g.	अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के लिये सदैव आगे रहता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
16h.	किसी कार्य की असफलता का कारण अपने आपको मानता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐

	अत्यधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	अत्यधिक असहमत
17a. मैं कालेज का कार्य करने में थोड़ा सुस्त हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
18b. मैं एक जिम्मेदार व्यक्ति हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
19c. मैं साफ-सुथरा रहना पसन्द करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
20d. मैं एकान्त में रहना अधिक पसन्द करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
21e. चाहे जो भी स्थिति हो, मैं शान्त रहता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
22f. मन शान्त व आनन्दित बना रहे, इसका मैं सदैव ध्यान रखता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
23g. आप काफी उत्साही व्यक्ति माने जाते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
24h. मैं स्वयं अपने में सुधार लाने के लिये कठोर परिश्रम करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
25a. मैं पढ़ा हुआ जल्दी भूल जाता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
26b. मुझे अपनी योग्यता पर पूर्ण विश्वास है।	☐	☐	☐	☐	☐
27c. यदि मेरे चेहरे की बनावट और अच्छी होती तो मेरा प्रभाव अधिक होता।	☐	☐	☐	☐	☐
28d. नये मित्रों को बनाने में पहल करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
29e. किसी संवेगात्मक आघात से बाहर आने में मुझे काफी समय लग जाता है।	☐	☐	☐	☐	☐
30f. कभी-कभी हास्य-विनोद की बातें करके हँसने-हँसाने का प्रयास करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
31g. किसी कार्य में आप घंटों सक्रिय रूप से जुटे रह सकते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
32h. मेरी बात मित्रों द्वारा नहीं मानी जाती है।	☐	☐	☐	☐	☐
33a. मैं विद्यालय की विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
34b. सही समय पर सही बात करना मेरे लिये कठिन हो जाता है।	☐	☐	☐	☐	☐
35c. मुझे खेल देखने की अपेक्षा खेलना अधिक पसन्द है।	☐	☐	☐	☐	☐

	अत्यधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	अत्यधिक असहमत
36d. किसी सामाजिक कार्यक्रम में खूब आनन्द आता है।	☐	☐	☐	☐	☐
37e. मुझे जल्दी ही गुस्सा आ जाता है।	☐	☐	☐	☐	☐
38f. चिन्ता व तनाव से दूर एक खुशहाल जीवन गुजारने का निरन्तर प्रयास करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
39g. मैं शान्त व गम्भीर स्वभाव का माना जाता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
40h. मेरी कमियाँ ही मेरी चिंता का कारण हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
41a. मेरा पढ़ाई में मन नहीं लगता है।	☐	☐	☐	☐	☐
42b. नई परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास के साथ कार्य कर सकता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
43c. मैं अक्सर बीमार रहता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
44d. दूसरों का दुःख अपना दुःख मानते हुये बेसहारा लोगों की मदद करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
45e. मुझे जल्दी ही रोना आ जाता है।	☐	☐	☐	☐	☐
46f. मैं कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने की योग्यता रखता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
47g. मैं विषम परिस्थितियों में भी शान्त रहता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
48h. कभी-कभी सोचता हूँ कि मैं किसी योग्य नहीं हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
49a. अध्यापक द्वारा कक्षा में प्रश्न पूछे जाने पर मैं चिन्तित व परेशान हो जाता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
50b. मैं अपने को एक सफल व्यक्ति मानता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
51c. मुझे पेट की गड़बड़ी के कारण परेशानी होती है।	☐	☐	☐	☐	☐
52d. मैं मिलनसार तथा हँसमुख स्वभाव का हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
53e. मैं जल्दी घबरा जाता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
54f. मैं स्वयं अपने भविष्य के निर्माण का प्रयास करता हूँ और मुझे अपने पर विश्वास है।	☐	☐	☐	☐	☐

	अत्यधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	अत्यधिक असहमत
55g. अधिकांश व्यक्ति आपके निर्णयों पर भरोसा रखते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
56h. मुझमें कोई कमी है।	☐	☐	☐	☐	☐
57a. प्रायः परीक्षा में मेरे कम अंक आते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
58b. मुझे यदि मौका मिले तो मैं देश व समाज के लिये बहुत कुछ कर सकता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
59c. अपनी शारीरिक कमी को छिपाने का प्रयास करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
60d. अधिक से अधिक लोगों से मेल-मिलाप रखना बहुत पसन्द करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
61e. मैं कठिनाइयों से जूझने की अपेक्षा भाग जाना अधिक पसन्द करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
62f. चुनौती व जिम्मेदारीपूर्ण कार्य करने में मुझे प्रसन्नता होती है।	☐	☐	☐	☐	☐
63g. आप किसी कार्य को व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भावना से पूरा करते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
64h. मेरी छोटी गलती भी दूसरों द्वारा बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताई जाती है।	☐	☐	☐	☐	☐
65a. मैं कठिन परिस्थितियों में भी सरलता से निर्णय लेने की योग्यता रखता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
66b. मैं बिना किसी प्रोत्साहन के लम्बे समय तक थकान भरे कार्य कर सकता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
67c. मुझे इस बात का दुःख है कि मेरा शरीर नाजुक है।	☐	☐	☐	☐	☐
68d. अपरिचित लोगों से जल्दी ही मेल-जोल बढ़ा लेता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
69e. असफलताओं के कारण मैं स्वयं को हीन समझने लगा हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
70f. सामाजिक स्थिति के परिवर्तित होने पर स्वयं को उसी प्रकार परिवर्तित कर लेता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐

	अत्यधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	अत्यधिक असहमत
71g. किसी पहेली अथवा समस्या का समाधान जब तक प्राप्त नहीं हो जाता है, तब तक निरन्तर जुटा रहता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
72h. ईश्वर का स्मरण कर किसी कार्य को प्रारम्भ करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
73a. मैं दूसरे की सहायता के बिना अपना कार्य पूरा नहीं कर पाता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
74b. मैं अपने लिये कठिन लक्ष्य का निर्धारण करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
75c. मेरी शारीरिक कमी मेरी प्रगति में बाधक है।	☐	☐	☐	☐	☐
76d. मैं अपने सहपाठियों में लोकप्रिय हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
77e. मैं अक्सर तनावग्रस्त रहता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
78f. सामाजिक कल्याण सम्बन्धी कार्यों में मेरी रुचि है।	☐	☐	☐	☐	☐
79g. अधूरे काम मुझे परेशान करते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
80h. कभी-कभी अनुभव करता हूँ कि मुझे कोई पसन्द नहीं करता है।	☐	☐	☐	☐	☐

FACTORS		SCORES	LEVEL	REMARK
a				
b				
c				
d				
e				
f				
g	(i)			
	(ii)			
	(iii)			
	(iv)			
	(v)			
h				
TOTAL				

N M S

M. P. UNIYAL (Srinagar Garhwal)
ABHA RANI BISHT (Almora)

कृपया निम्न सूचनायें भरें :—

नाम .... आयु— .... लिंग ....

जाति .... धर्म .... कक्षा ....

विद्यालय का नाम .... जनपद अल्मोड़ा

निर्देश (Instructions)

आगे के पृष्ठों पर दैनिक जीवन से सम्बन्धित कई वाक्यों की एक सूची है। आपसे निवेदन है कि आप इनको ध्यानपूर्वक पढ़कर बताइये कि प्रत्येक वाक्य में वर्णित स्थिति को आप किस सीमा तक अनुभव करते हैं।

इस मापनी को भरने का तरीका इस प्रकार है; उदाहरण के लिये यह वाक्य दिया जा रहा है :—

वाक्य	सदैव (Always)	बहुधा (Often)	कभी कभी (Sometimes)	बहुत कम (Rarely)	कभी नहीं (Never)
● मैं चलते-चलते यह भूल जाता हूँ कि मुझे कहाँ जाना है।	☐	☐	☐	☐	☐

यदि आप हमेशा भूलते हैं तो "सदैव" के नीचे बने खाने ( ) में सही का चिह्न (✓) लगाइये। इसी प्रकार पाँच विकल्पों में से जो भी आपके ऊपर लागू होवे उसके नीचे वाले खाने में सही का चिह्न (✓) लगाइये। इनमें से न कोई वाक्य सही है और न कोई गलत। अतएव प्रत्येक वाक्य को ध्यानपूर्वक पढ़िये और जो बात आप पर जिस मात्रा में लागू होती हो उसके नीचे वाले खाने (☐) में सही चिह्न (✓) लगाइये। आपके उत्तर गुप्त रखे जायेंगे।

SCORING TABLE

Areas→	AR	DIR	CR	FR	O–CR	Dep. R	TOTAL
Scores→							

ANKUR PSYCHOLOGICAL AGENCY
22/481, Indira Nagar, LUCKNOW-16 (U. P.)

वाक्य	सदैव (Always)	बहुधा (Often)	कभी-कभी (Sometimes)	बहुत कम (Rarely)	कभी नहीं (Never)
1. छोटी-छोटी बातें भी मेरे को परेशान करती रहती हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
2. मुझे ऐसे विचार परेशान किये रहते हैं, जिनसे मेरा कोई सम्बन्ध नही होता।	☐	☐	☐	☐	☐
3. मुझे इस बात की आशंका बनी रहती है कि कहीं मेरी मृत्यु न हो जाये।	☐	☐	☐	☐	☐
4. नहाने के बाद मुझे लगता है कि मैं अस्वच्छ हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
5. अजनबी लोगों के बीच बोलते समय मैं तुतलाने लगता/लगती हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
6. सोते समय मुझे खटिया से गिरने का भय लगता है।	☐	☐	☐	☐	☐
7. मुझे लगता है कि मेरे इर्द-गिर्द हर व्यक्ति मुझसे अधिक महत्वपूर्ण है।	☐	☐	☐	☐	☐
8. किसी छोटी सी चिन्ता के कारण मुझे नींद नहीं आती।	☐	☐	☐	☐	☐
9. थोड़े से परिश्रम से ही मेरी सांस फूलने लगती है।	☐	☐	☐	☐	☐
10. मुझे इस बात की चिन्ता लगी रहती है कि कहीं मैं पागल न हो जाऊं।	☐	☐	☐	☐	☐
11. किसी से मतभेद होने पर मैं परवाह नहीं करता/करती हूं।	☐	☐	☐	☐	☐
12. मुझे निराश होते देर नहीं लगती है।	☐	☐	☐	☐	☐
13. मेरे दिमाग में फिजूल का विचार ऐसी जड़ पकड़ लेता है कि मैं चाह कर भी छुटकारा नही पा पाता/पाती हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
14. अनहोनी घटनाओं के घटित होने की बात मैं नहीं सोचता/सोचती हूं।	☐	☐	☐	☐	☐
15. छत या ऊँची जगह से नीचे देखने पर भी मैं सामान्य रहता/रहती हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
16. मुझे अपने गले में घुटन महसूस होती है।	☐	☐	☐	☐	☐
17. मुझे मित्रों के बीच भी अच्छा नही लगता है।	☐	☐	☐	☐	☐
18. आत्म-हत्या के विचार को मैं अपने दिमाग से निकाल नहीं पाता/पाती।	☐	☐	☐	☐	☐
19. यात्रा के समय मुझे यह डर लगा रहता है कि कहीं मेरे पहुंचने से पहले ही बस या ट्रेन छूट न जाये।	☐	☐	☐	☐	☐
20. मुझे ऐसा लगता है कि मेरे भविष्य का जीवन वर्तमान से महत्वपूर्ण होगा।	☐	☐	☐	☐	☐
21. मुझे अपने बीमार होने का सन्देह होता है।	☐	☐	☐	☐	☐
22. मुझे सब जगह उदासी सी छायी लगती है।	☐	☐	☐	☐	☐
23. मैं इस बात की बिल्कुल चिन्ता नहीं करता/करती हूं कि लोग मेरी बुराई तो नहीं कर रहे हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
24. मुझे अकेलेपन से डर लगता है।	☐	☐	☐	☐	☐
25. [illegible] होने पर भी मुझे कम सुनाई देता है।	☐	☐	☐	☐	☐

वाक्य	सदैव (Always)	बहुधा (Often)	कभी-कभी (Sometimes)	बहुत कम (Rarely)	कभी नहीं (Never)
26. किसी कार्य को शुरू करने पर उसके पूरा न हो जाने तक तरह-तरह की चिन्तायें मुझे सताती हैं।					
27. सुबह-सोकर उठने पर मैं ताजगी अनुभव करता/करती हूँ।					
28. अपने विषय में अपने लोगों द्वारा निर्णय लिया जाना मुझे अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण लगता है।					
29. भीड़ देखकर मुझे भय लगता है कि कहीं मैं भीड़ में दब न जाऊँ।					
30. पिछली कुछ घटनायें कोशिश करने पर भी मुझे याद नहीं आती हैं।					
31. मेरा जी नहीं मिचलाता है।					
32. मैं अपने को बड़ा भाग्यहीन समझता/समझती हूँ।					
33. कारण हो या न हो, चिन्ता करना मेरी आदत हो गई है।					
34. मैं निर्णय लेने में देर नहीं करता/करती हूँ।					
35. रात में बिना कारण कई बार मैं चौंक उठता/उठती हूँ।					
36. मैं कुछ बेकार के कार्य करने को बाध्य हो उठता/उठती हूँ जैसे बार-बार हाथ धोना, वस्तुओं या व्यक्तियों को गिनना, खम्भों को थपथपाते रहना आदि।					
37. मैं एक स्थान पर बहुत देर तक जमकर बैठ सकता/सकती हूँ।					
38. लोगों के बीच मेरा मुँह लाल हो जाता है।					
39. मुझे रात में सोते-सोते बड़बड़ाने की आदत है।					
40. मैं अपने शरीर के अंग (हाथ, पैर या अन्य) को निरर्थक हिलाता या मोड़ता या झुकाता/हिलाती या मोड़ती या झुकाती नहीं हूँ।					
41. दुनिया में मेरे समान पापी कोई नहीं है।					
42. मैं हर हाल में खुश रहता/रहती हूँ।					
43. जरा सी आहट से ही मैं चौंक उठता/उठती हूँ।					
44. यदि मैं कोई निर्णय नहीं लेता/लेती हूँ तो मुझे यह चिन्ता घेरे जाती है कि कहीं वह निर्णय गलत न हो।					
45. प्रियजनों की मृत्यु के बारे में मैं नहीं सोचता/सोचती हूँ।					
46. जिन्दगी मेरे लिये बोझ है।					
47. बन्द कमरे में मैं बुरी तरह से घबड़ा जाता/जाती हूँ।					
48. मैं कार्य में रुचि लेता/लेती हूँ।					
49. मुझे शरीर के कुछ अंगों में संवेदना अनुभव नहीं होती है।					
50. मैं किसी बात को जल्दी भाव कर बैठा/बैठी हूँ।					

वाक्य	सदैव (Always)	बहुधा (Often)	कभी-कभी (Some-times)	बहुत कम (Rare-ly)	कभी नहीं (Never)
51. मुझे बेहोशी आ जाती है।	☐	☐	☐	☐	☐
52. मैं लाल रंग नहीं देख सकता/सकती हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
53. मैं अपना मन एक स्थान पर आसानी से स्थिर कर लेता/लेती हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
54. कोई बीमारी न होने पर भी मेरे शरीर में दर्द रहता है।	☐	☐	☐	☐	☐
55. लोगों के बीच में निर्भय होकर अपनी बात रख देता/देती हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
56. मुझे रात में भयानक सपने दिखाई देते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
57. खुली जगहों में मुझे घबड़ाहट होती है।	☐	☐	☐	☐	☐
58. मेरी पाचन शक्ति ठीक रहती है।	☐	☐	☐	☐	☐
59. मैं एकान्त में अपने से ही बातें करने लगता/लगती हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
60. निरर्थक (साधारण) सी बात भी मुझे उत्तेजित कर देती है।	☐	☐	☐	☐	☐
61. मेरे ऊपर इतनी मुसीबतें रहती हैं कि उन्हें दूर नहीं किया जा सकता।	☐	☐	☐	☐	☐
62. यदि कोई मेरी आलोचना करता है तो मैं हँसी में उड़ा देता/देती हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
63. मैं अपनी चिन्ताओं में इतना मशगूल रहता/रहती हूँ कि मुझे सामने की चीजें धुंधली दिखती हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
64. कोई बीमारी न होने पर भी मेरा सिर भारी रहता है।	☐	☐	☐	☐	☐
65. समूह के बीच जाते हुये मुझे लज्जा आती है।	☐	☐	☐	☐	☐
66. तरह-तरह की बीमारियों के नाम सुनकर मुझे यह डर लगता है कि कहीं ये सब मुझे ही न हो जायें।	☐	☐	☐	☐	☐
67. लोगों के बीच में खुल बोलता/बोलती हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
68. ठण्डे दिनों में भी मुझे आसानी से पसीना आ जाता है।	☐	☐	☐	☐	☐
69. मुझे ऐसी चीज से भय लगता है जिससे कोई भयभीत नहीं होता है।	☐	☐	☐	☐	☐
70. किसी कार्य को शुरू करने की बात सोचते ही मैं थक जाता/जाती हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐

Archna Printers, 403, Subhash Puram, Bodla, Agra-282 007

कोड नं.

क्रम संख्या

गोपनीय

A.M.T.

by :

DR. TARESH BHATIA
Reader, Dept. of Psychology
D.V.(PostGraduate) College
ORAI (U.P.) - 285 001

आयु --

लिङ्ग --

शैक्षिक योग्यता --

जाति --

धर्म --

शहरी/ग्रामीण --

निर्देश :

आपके दैनिक व्यवहार व परिस्थितियों से सम्बन्धित कुछ कथन दिये गये हैं। प्रत्येक कथन के साथ दो सम्भावित उत्तर दिये गये हैं। जिस उत्तर को आप सर्वाधिक उपयुक्त समझते हैं उस केवल एक पर सही का चिन्ह (✓) लगाइये।

इनमें से कोई भी उत्तर गलत या सही नहीं है। परीक्षण का उद्‌देश्य केवल आपकी प्रतिक्रियाओं को जानना है। बिना किसी संकोच के उत्तर दीजिये।

18. मैं ऐसे व्यक्तियों को पसन्द करता हूँ जो कि हैं –
(a) समाज सुधारक।
(b) अपने क्षेत्र के सफल वैज्ञानिक।

19. शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये –
(a) सुखमय जीवन व्यतीत करना।
(b) सफलता के नये कीर्तिमान स्थापित करना।

20. मेरे जीवन–साथी में गुण होने चाहिये–
(a) कार्य के प्रति उत्तरदायित्व की भावना के।
(b) सुन्दरता व धार्मिक भावना के।

21. मेरे लिये ईश्वर का अर्थ है –
(a) वैज्ञानिक ज्ञान की खोज।
(b) भक्तिभाव से ईश्वर की उपासना।

22. वह कार्य मुझे पसन्द है जिसमें –
(a) काम कम करना हो और आराम अधिक मिले।
(b) कठिन परिश्रम से अपनी योग्यता का प्रमाण दिया जा सके।

23. मैं उन लोगों की अपेक्षा अपने को अच्छा मानता हूँ जो कि –
(a) सामाजिक कार्यों से दूर रहते हैं।
(b) बिना किसी उद्देश्य के जीवन व्यतीत करते हैं।

24. मैं चाहता हूँ कि लोग मुझे पहचानें –
(a) विभिन्न उपलब्धियों के साथ एक सफल व्यक्ति के रूप में।
(b) समाज सुधारक के रूप में।

25. मैं खुश होता हूँ –
(a) जब एक कठिन कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करता हूँ।
(b) दुःखी लोगों का दुःख दूर करने पर।

गोपनीय

कोड नं.

क्रम संख्या

E.I.I.

Constructed and Standardized by :
DR. TARESH BHATIA
Department of Psychology
D.V. (Postgraduate) College
ORAI (U.P.) - 285 001

निर्देश :

आपके दैनिक व्यवहार व परिस्थितियों से सम्बन्धित कुछ कथन दिये गये हैं। एक समान स्थिति में अलग-अलग व्यक्ति अपने-अपने ढंग से व्यवहार करते हैं। आप इन कथनों को एक-एक कर पढ़िये और निश्चय कीजिये कि कथन में कही गई बात आपके लिये सही है या गलत। यदि कथन में कही बात सही है तो 'हाँ' के खाने पर सही का चिन्ह ✓ लगाइये। इसी प्रकार यदि कही गई बात सही नहीं है तो 'नहीं' के खाने पर सही का चिन्ह ✓ लगाइये।

बिना किसी संकोच के यथाशीघ्र उत्तर दीजिये।

	कथन	हाँ	नहीं
1.	मैं एकान्त प्रिय हूँ।	☐	☐
2.	मेरी सामाजिक कार्यक्रमों व उत्सवों में रुचि नहीं है।	☐	☐
3.	मैं क्रोध आने पर चुप रहता हूँ।	☐	☐
4.	अधिक से अधिक लोगों से मेल-मिलाप रखना पसन्द करता हूँ।	☐	☐
5.	अपरिचित लोगों से जल्दी ही मेल-जोल बढ़ा लेता हूँ।	☐	☐
6.	बिना झिझक के लोगों के बीच अपनी बात रख सकता हूँ।	☐	☐
7.	मैं बातूनी तथा हँसमुख हूँ।	☐	☐
8.	मैं अपनी आलोचना से दुःखी होकर चुपचाप बैठ जाता हूँ।	☐	☐
9.	किसी समूह का नेतृत्व करना पसन्द करता हूँ।	☐	☐
10.	मुझ में व्यवहार कुशलता की कमी है।	☐	☐

कथन	हाँ	नहीं
जिस समूह में हल्ला व शोर-शराबा हो उसमें रहना पसन्द करता हूँ।		
चुटकुले सुनाने की अपेक्षा सुनना अधिक पसन्द करता हूँ।		
सामाजिक कार्यक्रमों का नेतृत्व करना मुझे पसन्द नहीं है।		
जबकि लोग मुझे देख रहे हों मैं तब भी अच्छा कार्य कर सकता हूँ।		
मैं जनता के सामने भाषण देना पसन्द नहीं करता हूँ।		
मेरे बहुत अधिक मित्र नहीं हैं।		
मैं अधिकांश समय प्रसन्न रहता हूँ।		
मैं समूह में चुपचाप बैठना पसन्द नहीं करता हूँ।		
किसी पार्टी अथवा निमंत्रण में जाने की अपेक्षा घर में रहना पसन्द करता हूँ।		
छोटे-छोटे मामलों में निर्णय लेने से पहले बहुत अधिक सोच-विचार करते हैं।		
किसी पत्र को भेजने से पहले बार-बार लिखते व पढ़ते हैं।		
जटिल समस्याओं को सुलझाना और उनका समाधान खोजना अच्छा लगता है।		
23. अधिकांश समय परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहार करते हैं।		
24. विषम परिस्थितियों का सामना करने की अपेक्षा उनसे बचने का प्रयास करता हूँ।		
25. सामाजिक कल्याण के कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेता हूँ।		
26. पुराने दुःखद दिनों की याद कर दुःखी होता हूँ।		
27. विपरीत लिंग (Opposite Sex) के सदस्य से बातचीत करने में संकोच का अनुभव करता हूँ।		
28. धन खर्च करने की अपेक्षा उसका संचय करने में विश्वास करता हूँ।		
29. दिवा स्वप्नों तथा काल्पनिक संसार मे खोये रहता हूँ।		
30. शान्त व निर्जन स्थान पर छुट्टियाँ बिताना पसन्द है।		

❁ ज्ञान-पथ के दस आलोक ❁

1. ईश्वर तो एक शक्ति (पावर) है, न उसका कोई नाम है न रूप। जिसने जो नाम रख लिया वही ठीक है।
2. उसके प्राप्त करने के लिये गृहस्थी त्याग कर जंगल में भटकने की आवश्यकता नहीं, वह घर में रहने पर भी प्राप्त हो सकता है।
3. अभी तुमने ईश्वर देखा नहीं है, इसलिये उसे प्राप्त करने के लिये पहले उससे मिलो जिसने ईश्वर देखा है। वही तुम्हें ईश्वर का दर्शन करा सकता है।
4. अपने जीवन में आन्तरिक प्रसन्नता लाओ। यह बहुत बड़ा ईश्वरीय गुण है।
5. ज्ञान में शान्ति है, वह तुम्हें बाहर से नहीं मिलेगी। ज्ञान अन्तर में है। उसके लिये आन्तरिक साधन करने होंगे।
6. अधिक समय तुम संसार के कामों में लगाओ, थोड़ा समय इधर दो। लेकिन इतने समय के लिये तुम संसार को भूल जाओ।
7. दो काम साधक के लिये बहुत ही आवश्यक है- एक तो अपने परिश्रम से भोजन कमाना और दूसरा अपने मन को हर समय काम में लगाये रखना।
8. ज्ञान अनन्त है। यदि एक गुरू उसे पूरा न कर सके तो दूसरे गुरू से प्राप्त करना चाहिये। परन्तु पूर्ण आत्म-ज्ञानी गुरू मिल जाने पर दूसरा गुरू नहीं करना चाहिये।
9. दुनिया के सारे काम करो लेकिन सेवक बनकर, मालिक बनकर नहीं।
10. संसार में महमान बनकर रहो। यहाँ की हर वस्तु किसी और की समझो। मैं और मेरा छोड़कर तू और तेरा का पाठ सीखो।

- पूज्य गुरूदेव